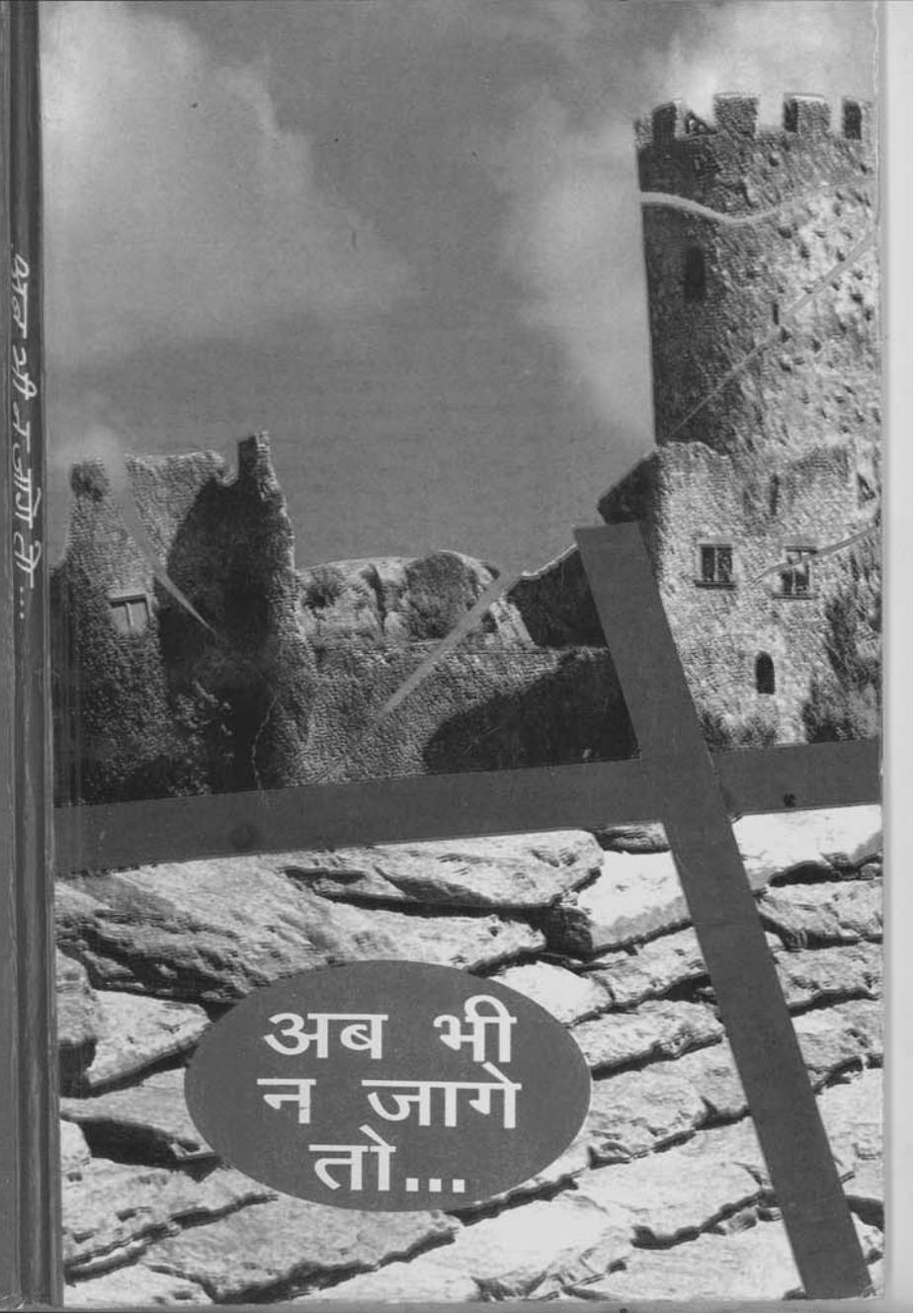
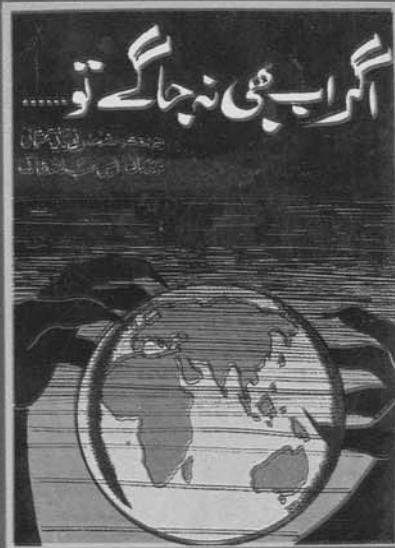


जिस पुस्तक ने उदू
जगत में तहलका मचा
दिया और लाखों
भारतीय मुसलमानों को
अपने हिन्दू भाईयों
एवं सनातन धर्म के
प्रति अपने दृष्टिकोण
को बदलने पर
मजबूर कर दिया था
उसका यह हिन्दी
रूपान्तर है। महान
सन्त एवं विद्वान

मौलाना आचार्य शम्स नवेद उस्मानी के धार्मिक
तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित पुस्तक के लेखक हैं,
धार्मिक तुलनात्मक अध्ययन के जाने माने लेखक और
स्वर्गीय सन्त के प्रिय शिष्य एस. अब्दुल्लाह तारिक़ ।
स्वर्गीय मौलाना ही के एक योग्य शिष्य जावेद अन्जुम
(प्रवक्ता अर्ध शास्त्र) के हाथों पुस्तक के अनुवाद द्वारा
यह संभव हो सका है कि अनुवाद में मूल पुस्तक के असल
भाव का प्रतिबिम्ब उतर आए। इस्लाम की ज्योति में
मूल सनातन धर्म के भीतर झाँकने का सार्थक प्रयास हिन्दी
प्रेमियों के लिए प्रस्तुत है ।



famous hindi book: 'ab bhi na jage to'

E-book by: umarkairanvi@gmail.com

antimawtar.blogspot.com --- islaminhindi.blogspot.com –

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

उस परमेश्वर के नाम से जो अत्यन्त दयावान व कृपावान है।

अगर

अब भी न जागै

तो... ००००० !



विचारक

मौ० शम्स नवेद उस्मानी रह०

लेखक

एस० अब्दुल्लाह तारिक 'इन्जीनियर'

अनुवादक

जावेद अन्जुम

प्रकाशक

रौशनी पब्लिशिंग हाउस

वाजार नसरुल्लाह खाँ, रामपुर - २४४९०१ (यू०पी०)

⑥ इस पुस्तक के सर्वाधिकार लेखक द्वारा सुरक्षित हैं। इसलिए कोई भी सज्जन इस पुस्तक के प्रस्तुत अनुवाद की सामग्री आंशिक या पूर्ण रूप से तोड़-मरोड़ कर या किसी अन्य भाषा में छापने व प्रकाशित करने का बिना आज्ञा कष्ट न करें।

कम्पोजिंग: प्रगति कम्प्यूटर ग्राफिक्स, मुरादाबाद

Produced by : Ahle Qalam, New Delhi-25 Tel. : 6946997

मूल्य:

₹ 50/-

मूल उर्दू पुस्तक के बहुत से विषयों पर पाठकों के प्रश्नों व शकाओं के समाधान हेतु स्व० स्व० शम्स नवेद उस्मानी रह० ने कुछ संक्षिप्त नोट प्रकाशित कराने का इरादा किया था किन्तु अपने निधन से कुछ समय पूर्व अन्तिम बार मुझे यह निर्देश दिया कि पुस्तक में निम्न संशोधन कर दिए जाएं:-

1. कुछ भाग अपूर्ण होने के कारण निकाल दिए जाएं और बाद में जब सम्भव हो विस्तारपूर्वक उन्हें अलग पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जाए।
- अतः प्रस्तुत अनुवाद में उन्हें सम्मिलित नहीं किया गया है।
2. अन्य अध्यायों से संबन्धित पाठकों के शंका समाधान हेतु, मैं एक अतिरिक्त अध्याय लिखकर पुस्तक के अन्त में शामिल कर दूँ।
- अपनी व्यस्तता के कारण मैं अभी तक मौलाना की यह इच्छा पूरी करने में असमर्थ रहा हूँ। भविष्य में इन्शा अल्लाह मूल उर्दू पुस्तक व उसके अनुवादों में उक्त अध्याय सम्मिलित कर दिया जाएगा।

—एस० अब्दुल्लाह तारिक

३ वारचर्यजनक खण्डनका

४ हिन्दुओं और मुस्लिमों के समाज और भौतिक-मूल्य

५ इन्द्रजीव और वायुजीवका

६ इन्द्र और वायु

७ इन्द्र व वायु का विवरण

८ इन्द्र व वायु का विवरण

९ इन्द्र व वायु का विवरण

१० इन्द्र व वायु का विवरण

११ इन्द्र व वायु का विवरण

१२ इन्द्र व वायु का विवरण

१३ इन्द्र व वायु का विवरण

१४ इन्द्र व वायु का विवरण

१५ इन्द्र व वायु का विवरण

१६ इन्द्र व वायु का विवरण

१७ इन्द्र व वायु का विवरण

१८ इन्द्र व वायु का विवरण

१९ इन्द्र व वायु का विवरण

२० इन्द्र व वायु का विवरण

२१ इन्द्र व वायु का विवरण

२२ इन्द्र व वायु का विवरण

२३ इन्द्र व वायु का विवरण

२४ इन्द्र व वायु का विवरण

२५ इन्द्र व वायु का विवरण

२६ इन्द्र व वायु का विवरण

२७ इन्द्र व वायु का विवरण

२८ इन्द्र व वायु का विवरण

२९ इन्द्र व वायु का विवरण

३० इन्द्र व वायु का विवरण

३१ इन्द्र व वायु का विवरण

३२ इन्द्र व वायु का विवरण

३३ इन्द्र व वायु का विवरण

३४ इन्द्र व वायु का विवरण

३५ इन्द्र व वायु का विवरण

३६ इन्द्र व वायु का विवरण

३७ इन्द्र व वायु का विवरण

३८ इन्द्र व वायु का विवरण

३९ इन्द्र व वायु का विवरण

४० इन्द्र व वायु का विवरण

४१ इन्द्र व वायु का विवरण

४२ इन्द्र व वायु का विवरण

४३ इन्द्र व वायु का विवरण

४४ इन्द्र व वायु का विवरण

४५ इन्द्र व वायु का विवरण

४६ इन्द्र व वायु का विवरण

४७ इन्द्र व वायु का विवरण

४८ इन्द्र व वायु का विवरण

४९ इन्द्र व वायु का विवरण

५० इन्द्र व वायु का विवरण

५१ इन्द्र व वायु का विवरण

५२ इन्द्र व वायु का विवरण

५३ इन्द्र व वायु का विवरण

५४ इन्द्र व वायु का विवरण

५५ इन्द्र व वायु का विवरण

५६ इन्द्र व वायु का विवरण

५७ इन्द्र व वायु का विवरण

५८ इन्द्र व वायु का विवरण

५९ इन्द्र व वायु का विवरण

६० इन्द्र व वायु का विवरण

६१ इन्द्र व वायु का विवरण

६२ इन्द्र व वायु का विवरण

६३ इन्द्र व वायु का विवरण

६४ इन्द्र व वायु का विवरण

६५ इन्द्र व वायु का विवरण

६६ इन्द्र व वायु का विवरण

६७ इन्द्र व वायु का विवरण

६८ इन्द्र व वायु का विवरण

६९ इन्द्र व वायु का विवरण

७० इन्द्र व वायु का विवरण

७१ इन्द्र व वायु का विवरण

७२ इन्द्र व वायु का विवरण

७३ इन्द्र व वायु का विवरण

७४ इन्द्र व वायु का विवरण

७५ इन्द्र व वायु का विवरण

७६ इन्द्र व वायु का विवरण

७७ इन्द्र व वायु का विवरण

७८ इन्द्र व वायु का विवरण

७९ इन्द्र व वायु का विवरण

८० इन्द्र व वायु का विवरण

८१ इन्द्र व वायु का विवरण

८२ इन्द्र व वायु का विवरण

८३ इन्द्र व वायु का विवरण

८४ इन्द्र व वायु का विवरण

८५ इन्द्र व वायु का विवरण

८६ इन्द्र व वायु का विवरण

८७ इन्द्र व वायु का विवरण

८८ इन्द्र व वायु का विवरण

८९ इन्द्र व वायु का विवरण

९० इन्द्र व वायु का विवरण

९१ इन्द्र व वायु का विवरण

९२ इन्द्र व वायु का विवरण

९३ इन्द्र व वायु का विवरण

९४ इन्द्र व वायु का विवरण

९५ इन्द्र व वायु का विवरण

९६ इन्द्र व वायु का विवरण

९७ इन्द्र व वायु का विवरण

९८ इन्द्र व वायु का विवरण

९९ इन्द्र व वायु का विवरण

१०० इन्द्र व वायु का विवरण

स्वरूपर्णण

इन सभी पर सलाम !!!



अनुव्रहम

Produced by: Alka Goyal, New Delhi. Tel.: 6546227

पृष्ठ

समर्पण

3

अपनी धुन में मगन एक मुसाफिर

9

धर्मपरायणता का सन्देश

12

प्रस्तुति से पूर्व

15

दो शब्द

16

अ०: 1 इन्क़िलाब की भविष्यवाणी:

17

❖ काबे का अपमान ❖ निरन्तर अज़ाब (दिव्य प्रकोप)

❖ क्या व्यापक स्तरीय यातना अभी शेष है? ❖ कौम के परिवर्तन की चेतावनी

❖ क्या हम अल्लाह की सूची में मोसिन (आस्तिक) हैं?

❖ वह कौन सी कौम हो सकती है?

अ०: 2 हिन्दू कौम का नबी (ईशदूत):

29

❖ कृष्ण मेनन, आश्चर्य की मुद्रा में!

❖ ह० नूह अलै० की उम्मत (पन्थ) का नबी भी खोया हुआ है।

❖ 'हिन्दू' ह० नूह अलै० की कौम है। ❖ कुरआन की गवाही

अ०: 3 कुरआन में हिन्दू कौम का जिक्र (उल्लेख): 36

❖ कुरआन पर आरोप

❖ कुरआन में सब कौमों के नामों पर शोध कार्य नहीं हुआ।

❖ ह० नूह अलै० की कौम ही साविईन हैं।

अ०: 4 समता और आदिकालीन सम्बन्धः:

42

❖ धार्मिक प्रवृत्तियों एवं सम्बन्धों का निरीक्षण आवश्यक है।

❖ आश्चर्यजनक समानता

❖ हिन्दुओं और मुसलमानों के समान जीवन—मूल्य

❖ सम्बन्ध अनादिकाल से होते हैं।

❖ ह० आदम अलै० हिन्दुस्तान में

❖ ह० नूह अलै० हिन्दुस्तान में

❖ कुछ अन्य ईशदूत, हिन्दुस्तान में

❖ अरब व हिन्द भौगोलिक दृष्टि से कभी एक थे।

❖ धूल की पत्तों पर नई पालिश नहीं चढ़ेगी।

अ०: 5 सर्वप्रथम दिव्य ग्रन्थ—वेद

65

❖ वेद का परिचय ❖ पवित्र कैसे मानें?

❖ एक कलाम (वाणी), दूसरे कलाम की ज्योति में

❖ अभी और परखिये। ❖ अन्तिम गवाही शेष है।

❖ अव्वलीन सहाइफ के नाम से ढूँढिये।

❖ आदि—ग्रन्थ मौजूद हैं। ❖ वेद ही आदि—ग्रन्थ हैं।

अ०: 6 सृष्टि रचना का आरम्भ—हज़रत अहमद सल्ल०

87

❖ हकीकते अहमदी (अहमदी तत्व) ❖ अहमदी तत्व प्रत्येक पवित्र ग्रन्थ में है।

❖ तर्क संगत प्रमाण ❖ विज्ञान मार्गदर्शन पर आश्रित है।

❖ सरवरे कायनात (जगतगुरु) सल्ल० ही सृष्टि का आरम्भ है।

❖ कुरआन से भी प्रमाणित है।

अ०: 7 वेदों में अग्नि—रहस्य

102

अ०: 8 इस्लाम और हिन्दू धर्म—नामों की समानता 104

❖ हिन्दू मत का इस्लामी नाम

❖ अल्लाह नाम सब धर्मों में है। ❖ रहमान और रहीम भी

अ०: 9 वैदिक धर्म में तौहीद (एक—ईश्वर—वाद) 109

❖ हिन्दू धर्म में एक—ईश्वर—वाद की धारणा

अ०: 10 वैदिक धर्म और रिसालत (ईशदूत—पद) 114

❖ ईशदूतों के वृत्तांत

- ❖ वेदों में ह० नूह अलै० का वृत्तांत
- ❖ वेदों में ह० मोहम्मद सल्ल० का वृत्तांत

अ०: 11 वैदिक धर्म और आधिकारिक जीवन)

- ❖ पारलौकिक जीवन का धर्म विश्वास (अकीदा) तथा पुनर्जन्म ०१३८ पृष्ठ १२३
- ❖ हिन्दू शोधकर्ताओं की स्त्रीकृति
- ❖ वेदों में जन्मत (स्वर्ग) का वृत्तांत
- ❖ दोज़ख (नरक) का वर्णन ❖ आवागमन की यथार्थता
- ❖ आवागमन की पृष्ठभूमि में एक और तथ्य

अ०: 12 वेदों की कुछ अन्य शिक्षाएं १३५

- ❖ जुए का निषेध ❖ मद्य निषेध
- ❖ व्याज का निषिद्ध होना
- ❖ विवाह सस्कारों में सरलता का आदेश
- ❖ पुरुषों को स्त्रियों के वस्त्र पहनने पर रोक
- ❖ नारी के घरेलू जीवन का आदेश ❖ नारी की लज्जा के आदेश

अ०: 13 हृदीसें और पुराणः भविष्यवाणियों की समानता १३७

- ❖ हृदीस ❖ हरिवंश पुराण और विष्णु पुराण

अ०: 14 वैदिक धर्म में काबे की हकीकत १३९

अ०: 15 वेदों में ह० मोहम्मद सल्ल० का मकामे महमूद (परमपद) १४४

अ०: 16 वैदिक धर्म में काना दज्जाल (अन्धक आसुर) १४६

अ०: 17 यह रहस्य, रहस्य क्यों रहे? १४९

- ❖ हिन्दुओं में चली आ रही कुछ निगूढ़ बातें
- ❖ मुसलमानों की लापरवाही

अ०: 18 पूर्व ग्रन्थों में आस्था १५३

- ❖ यह गलतफ़हमी दूर कीजिए।

- ❖ दीन केवल इस्लाम है लेकिन!

❖ कोई भी पूर्व ग्रन्थ निरस्त नहीं किया गया है।

❖ कुरआन से पूर्व के ग्रन्थों पर ईमान लाने का तात्पर्य

❖ यह प्रतिकूलता क्यों प्रतीत हो रही है?

❖ क्या हड्डीसों में भी परस्पर विरोध है?

❖ यथार्थ पुष्ट भूमि में देखिये।

अ०: 19 दावत (अहान) की कार्यशैली १६१

❖ क्या हिन्दू अहले किताब (पूर्व ग्रन्थ वाले) हैं?

❖ अहले किताब नहीं उभिय्यीन हैं।

❖ आह्वान की कार्यशैली-हड्डीसों की रौशनी में

❖ कुरआन की ज्योति में

❖ हिन्दू धर्म को उस की खोई हुई मौलिकता दीजिये।

❖ ऐतिहासिक विडम्बनारं

❖ काश मुसलमान यह समझ लें कि!

❖ कम से कम इतना तो कीजिये।

❖ अमरीकियों का उदाहरण

❖ सारांश ❖ हिन्दू धर्म-पंडित जानते हैं!

❖ युग परिवर्तित होने ही बाला है।

❖ दलीले खुदावन्दी (ईश्वरीय प्रमाण) ❖ मुसलमानों का कर्तव्य

अ०: 20 उन्हे स्वयं भी तलाश है! १८१

अ०: 21 कसौटी केवल कुरआन १८३

प्रस्तुति के बाद

संकेत चिह्न



अपनी धून में प्रगान्न एक मुस्सापिंडर

भारत के एक नगर 'रामपुर' के अंगूरीबाग मुहल्ले में विगत पन्द्रह वर्षों से एक व्यक्ति दो कमरों पर आधारित एक छोटे से किराए के मकान में रह रहा है। उसके समय का अधिकांश हिस्सा इबादत, रात को जागने, इन्सानों पर रोने और किताबों में निमग्न रहने में गुजरता था। बाकी बचे समय में वह सोचता था।

ह० मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल० तो 'इत्तदाए तख्लीके कायनात' (रचनाओं में आदि-सृष्टि) भी थे, फिर उन को दूसरे धर्मों के अनुयायी अपना नदी (ईशदूत) क्यों स्वीकार नहीं करते?

पहले जो लोग मुसलमान के चरित्र से प्रभावित नहीं भी होते थे, कलामे इलाही (ईशवाणी) के शब्द सुनकर ही उन के दिल की दुनिया बदल जाती थी। वे कुरआन की भाषा जानते थे और महसूस कर लेते थे कि यह मानव वाणी नहीं है। अनुवाद होने के बाद केवल सन्देश बाकी रह जाता है, लेकिन शब्द ईश्वर के बजाय इन्सानों के हो जाते हैं। अनुवादों से वांछित प्रभाव नहीं पड़ता। दुखद बात यह भी है कि अधिकांश मुसलमानों ने स्वयं कुरआन को छोड़ दिया।

बहुत से लोग आज भी सत्य को स्वीकार कर रहे हैं। हजारों की संख्या में, लेकिन विश्व की जनसंख्या में उन का अनुपात एक लाख में एक का भी तो नहीं! विश्वस्तरीय क्रान्ति तो केवल कौमों (जातियों) के सदधर्म पर लौटने से ही आ सकती है। कौमें क्यों नहीं आतीं?

पिछली रद्दोबदल की हुई किताबों पर मुसलमान कैसे ईमान लाएं? जो स्वयं मूलधर्म पर कायम न रहे, वे कुरआन में अपनी आस्था कैसे व्यक्त करें?

वे क्या कारण थे जो लोगों को दीने फ़ितरत (स्वभाव नियत कर्म के धर्म) से

दूर ले गए और अन्य मातौं को लोगों ने अपनाना शुरू कर दिया? वर्तमान में प्रचलित विभिन्न भूमतान्तरों की अस्ल बुनियाद क्या है? जब तक कारणों का पता नहीं चलेगा, सही पहचान कैसे होगी, उपचार कैसे होगा? क्या मानवता पर मानव के हाथों अत्याचार यूँ ही जारी रहेगा?

क्या अल्लाह के बन्दे (दास) धर्म के नाम पर इसी तरह खून बहाते रहेंगे?

कुरआन और हडीस ने जिस की भविष्यावाणी की थी, वह विश्वस्तरीय क्रान्ति कैसे आएगी? क्या वर्तमान काल की पहचान तथा समस्याओं का समाधान कुरआन में है?

तलाश ने उस को समाधान प्रस्तुत किया। कुरआन ने जवाब दिया-

"निस्सन्देह आदि ग्रन्थों में कुरआन का विषय है।" (कु: 26-196)

हडीसों ने उसे बताया :

"अन्तिम युग (कलियुग) में सत्त्वधर्म को पाने वाली क़ौम अपने ही ग्रन्थों में सत्य को पाने के बाद ईमान लाएगी।" – (अहमद, दारमी, रजीन, बेहकी)

और फिर वह नहीं रुका। रिसर्च को उसने अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया। अल्लाह का नाजिल किया हुआ (अवतरित) कलाम जो सदियों के अन्तराल में खो गया था, उसको अल्लाह के अन्तिम और शुद्ध कलाम 'कुरआन' की ज्योति में पढ़ा तो दूरियां सिमटती चली गयीं। धूल साफ़ होती गई। हक्क (सत्य) और बातिल (असत्य) स्पष्ट होता चला गया, उसने अपने प्रश्न का उत्तर पा लिया था। फिर चौदहवीं सदी हिजी के अन्त में 1979 ई० में उसे एक और तीव्र मानसिक आघात लगा। इस बार उपद्रव 'काबे' में हुआ था। 'मेहदी' होने के एक दावेदार ने चौदह दिन तक काबे को पद्दलित किया और चौदह सौ वर्ष में पहली बार काबा, अजानों, नमाजों और तवाफ़ (परिक्रमा) से वंचित रहा। 'काबा' जिसे उस व्यक्ति के अध्ययन के अनुसार कुरआन ही नहीं, बल्कि समस्त ईश्वरीय ग्रन्थ पृथ्वी का पहला घर और जमीन की जड़ मानते हैं, उस काबे के लुटने के परचात उस की नज़र में मानो क़्यामते सुगरा (नैमित्तिक प्रलय) का आरम्भ हो गया। जब जमीन की जड़ हिल गई तो पूरे विश्व में भूकम्प ज़रूर आएगा। उस समय तक वह व्यक्ति एक स्कूल में अध्यापक था लेकिन इस दुर्घटना से उस के पूरे अस्तित्व में एक ज़लज़ला सा आ गया। उस ने फिर सोचा 'उपद्रव, अल्लाह के घर में घुस आया और तुम्हें अपनी रोटी रोज़ी की चिन्ता है!

नौकरी से उसने निर्धारित समय से पूर्व ही रिटायरमेंट ले लिया और अपना

कुल समय अपने 'स्वामी' को समर्पित करने का फैसला कर लिया। अब समय आ गया था कि पिछले छँवें की अथक मेहनत में ईश्वर ने जो ज्ञान उसे दिया था, उसे दूसरों तक भी पहुंचाए। आमदनी कठिनाई से जीवन यापन के क्रांतिकारी, लेखन की योग्यता सीमित, उसके दिल का दर्द शब्दों के रूप में प्रकट होता था। वह सङ्कों पर निकल खड़ा हुआ। हर परिचित को रोकता था, रो-रो कर मानवता के दर्द की फ़र्रयाद करता था और घर जाकर अध्ययन एवं शोधकार्य से जो समय बचता था उस में अल्लाह के दरबार में गिर्गिड़ाता था।

आकाश की आँख ने इस बार एक अद्भुत दृश्य देखा। जो लोग उसे अत्यन्त बुद्धिमान व्यक्ति समझते थे, वह दीवाना बताने लगे। जो उस की पारसाई की क़स्में खाते थे, वे उसे अवसरवादी और सरकार का पिट्ठू कहने लगे और जिन को कल तक उसके मुत्तकी (संयमी) होने का अटल विश्वास था, वे उसे गुमराह (पथभ्रष्ट) कह कर पुकारने लगे। बहुत से लोग सहमत भी हुए, उस की बातें सुनने के लिये उस के पास आना शुरू किया लेकिन उसके 'मिशन' का साथ देना? यह मार्ग तो आशंकाओं, परीक्षा और आज्ञामाइश से परिपूर्ण दिखाई देता था। प्रशंसा और सहानुभूति की हद तक तो ठीक, लेकिन आहान कर्ता बनने के लिए सरफ़रोशी की भावना भी आवश्यक थी। इसके लिये वे अभी तैयार नहीं थे।

आज केवल कुछ धुनी लोग ही उस के साथ हैं जिन्होंने उसके मार्गदर्शन में सत्त्वर्धम के लिये अपने आप को समर्पित कर दिया है।

उस व्यक्ति को रामपुरवासी 'शास्त्र नवेद उस्मानी' के नाम से याद करते हैं।

—एस० अब्दुल्लाह तारिक

—मौ० जोहर्मद अली जौहर

**यह शहादत वहे उलफ़्त में क़दम रखना है।
लोग आसान समझते हैं मुसलमाँ होना॥**

शास्त्रपरायणाता का सन्देश

(मौ० शास्त्र नवेद उस्मानी की एक तक़ीर (प्रवचन) के संपादित अंश)

ह० मोहम्मद सल्ल० की एक हदीस* का अभिप्राय जो मैं ने समझा है उसे अपने शब्दों में बयान करता हूं। हिसाब के दिन एक व्यक्ति को 'समस्त शासकों के शासक' के सामने पेश किया जाएगा। उम्र भर सजदे (साप्टांग) किये थे, माथे पर बड़ा सानिशान पढ़ गया था, माला जपते जीवन व्यतीत हुआ था मगर 'मालिक' के स्वभाव को नहीं पहचाना, मानव से प्रेम नहीं किया जो मालिक की सबसे प्रिय रचना है। तो जानते हो क्या होगा?

ईश्वर पूछेगा—“तुम कौन हो? तुम मेरे कैसे दोस्त हो? मैं भूखा था, मैंने रोटी मांगी थी, तुमने रोटी न दी।”

वह कहेगा—“हे प्रभु! यह क्या सुन रहा हूं? मैं ने तो पढ़ा था कि तू खिलाने वाला है, खाता नहीं!”

लीजिये! ज्ञान का खोखलापन सामने आ गया।

जयाब मिलेगा—“हां, लेकिन वह मेरा एक बन्दा जो भूखा था, तुम ने उसे रोटी क्यों नहीं भेजी? अगर उसे देते तो आज मेरे पास पाते।”

मैं इस हदीस का अर्थ यह भी समझता हूं कि—परमेश्वर हम लोगों से पूछेगा “मैं भटक रहा था, तुमने मुझे रारता नहीं बताया?”

लोग कहेंगे—“स्वामी! आप कब भटकते हैं?” फ़रमाएगा “मेरे बन्दे भटक रहे थे और पवित्र कुरआन की आध्यात्मिक रोज़ी तुम्हारे पास थी। ह० मोहम्मद सल्ल० के पावन

* महामदी कथन अर्थात ह० मोहम्मद सल्ल० के कथन

चरित्र की जीवन्त तस्वीर तुम्हारे पास थी। कितने इन्सान थे जो सतपुरुष को ढूँढ रहे थे, ज्ञान की वास्तविकता को तलाश कर रहे थे। वह जो भटक रही थी एक 'कौम' और ज्ञान को ढूँढती फिर रही थी, अगर तुम उसे देते तो आज मेरे हाथ में पाते।'

विद्या बिना गुरु के व्यर्थ है। तुम्हारे पास कुरआन की विद्या है, इसे अल्लाह के रसूल सल्लू८ से सीखो, उन की सुन्नत (पद्धति) से समझो।

हमारे साथ रहने वाली कौम, हमारे पड़ोसी धर्म को मानने वाली कौम के पास भी ज्ञान की एक किताब है। लेकिन बिना गुरु के ज्ञान कुछ नहीं कर सकता।

इस कौम के मज़ाब में लिखा है—गुरु साक्षात् लक्षण होता है, धर्म का व्यावहारिक चित्र होता है, सतपुरुष होता है। इन के धर्म में यह विकार उत्पन्न हो गया कि इन का नबी (ईशादूत) खो गया। हिन्दुओं को यह नहीं मालूम कि इन का पहला धर्म प्रवर्तक कौन था? अत्यधिक धार्मिक कौम है, उच्च कोटि का बलिदान करने वाली। तुम तो 'बुज्जू' करते हो सुबह को, वह भी कभी—कभी, वे रात को स्नान करते हैं। जो हिन्दू हैं वे 'मूर्ति' के लिये रात को उठते हैं, तीन बजे और तुम 'खुदा' के लिये सुबह को नहीं उठते! हमारे पास और तो कुछ है नहीं, एक सन्देश है ईश्वर का, और तो सब हम खो चुके। कम से कम यह उन इन्सानों तक पहुंचा दें जो इसे ढूँढ रहे हैं। इस की सहायता से उन का 'सन्देष्टा' ढूँढ कर उन्हें दें। प्रातः तीन बजे उठने वाली कौम को यदि इस के रसूल (सन्देष्टा) की वास्तविकता मालूम हो जाए, अपने कलिमे (ब्रह्मसूत्र) की असलियत का ज्ञान हो जाए और यह पता चल जाए कि इन का 'असली खुदा' कौन है, तो जो 'कृत्रिम खुदा' के सच्चे दास बन सकते हैं वे 'असली खुदा' के कैसे उच्चकोटि के भक्त होंगे।

जिस की दावत करना हो, उस के स्वभाव के अनुरूप ही भोजन परोसना पड़ेगा। बकरी को खिलाना हो तो क्या मांस दोगे? हर एक का भोजन अलग है, प्रत्येक कौम का धार्मिक भोजन और स्वभाव अलग—अलग है।

इस कौम की एक प्रकृति है। यदि इन को विश्वास हो जाए कि कोई इन के ज्ञान से परिचित है और इतना जानता है कि उस को वास्तविक ज्ञान है, तो ज्ञान के आगे शीश झुका देंगे, झुटलाएंगे नहीं। किन्तु यह अवश्य देखेंगे कि ज्ञान पहुंचाने वाला प्रेम भाव से सेवा कर रहा है या व्यापार कर रहा है। निष्कपट्टा के बिना न खुदा स्वीकार करता है और न ही बन्दा (सेवक), निष्काम योग चाहिये। सकाम योग पर धिक्कार.. बन्दे की ओर से भी और खुदा की तरफ से भी—सच्ची मित्रता का आश्वासन दिलाना होगा लेकिन सच्चे मन के साथ।

कुरआन पिछले धर्मों को धोने वाला है। हर धोने वाले का एहसान माना जाता है। लेकिन इस धोने वाले का नहीं मानते! क्योंकि हम ने यह सिद्ध ही कब किया है कि दूसरों के ज्ञान को कुरआन ने धोया है। किसी के ज्ञान को धोकर तो दिखाओ कि 'एक एवं अद्वितीय' (एक है और दूसरे की साझेदारी के बिना है), यह 'ब्रह्म सूत्र' कहलाता है—'कलिमा' कहलाता है। हम मुसलमान कलिमे के बगैर मुसलमान नहीं हो सकते—आप हिन्दू कैसे हो गए? अगर मैं 'ला इला—ह इलल्लाह' का इनकार कर दूँ, नास्तिक हो जाऊंगा। तुम अपने ब्रह्म सूत्र को माने बिना हिन्दू कैसे हो?

मैं ने एक हिन्दू भाई से कहा “एक ब्रह्म द्वितीय नास्ति नेह ना नास्ति किंचन” (एक ही खुदा है दूसरा नहीं है, नहीं है, नहीं है—अंशभर भी नहीं है) पहले इस में आस्था रखो तब ही तो 'हिन्दू' होगे। यह तो वेदान्त का ब्रह्म सूत्र है और हम इसे पढ़ रहे हैं।

मैंने उनसे कहा मैं इसे पढ़ता हूँ—“एक ब्रह्म द्वितीय नास्ते” अब मैं इसे दूसरी भाषा में पढ़ता हूँ—“*There is no god but God. One without second*” फिर इसे एक और भाषा में पढ़ता हूँ—“लाइला—ह—इलल्लाह”。 मैंने तीन भाषाओं में ईश्वर की गवाही दी, तीन बार पुरस्कार मिलेगा। मुफ्ती इलायास साहब बैठे थे, उन्होंने भी पढ़ा। मौलाना इस्माईल बैठे थे, उन्होंने भी पढ़ा। अब मैंने उस हिन्दू भाई से कहा, “क्या इस में कोई अन्तर है?” कहा—“कुछ नहीं!” मैंने कहा, “क्या आप अरबी में पढ़ सकते हैं? जैसा कि हम सबने संस्कृत में डट कर पढ़ा।” उसने कहा “क्यों नहीं?” उसने कलिमा पढ़ा।

आज का युवा खुले जहन का है। लेकिन ज्ञान के प्रकाश में ही ज्ञान की बात करो—कुरआन से धो कर सिद्ध करो।

मैं एक हिन्दू ज्ञानी के पास गया। मैंने कहा “आप के पास लोग मूर्तियां देखने आते हैं, यात्रा पर। बताइये हमारे बारे में क्या विचार है आप का? हम किस लिये आए हैं? हम भी एक मूर्ति की वजह से आए हैं।”

कहने लगे—“आप के यहां तो मूर्ति नहीं मानी जाती।” मैंने कहा—“आप स्वयं मिट्टी से बने हैं। यह ईश्वर ने आप की मूर्ति बनाई है। मैं अपने ईश्वर की बनाई हुई मूर्ति के दर्शन करने आया हूँ। आप के धर्म में यह आदेश है कि नासिका (नाक) के अगले भाग पर दृष्टि जमाओ और किसी ओर न देखो। हर उस जगह देखा जा रहा है जहां देखने से रोका गया था और उस जगह देखने को तैयार नहीं जहां कहा गया था।”

मैंने कहा—“हम सजदे (साष्टांग) में इसी नाक की ओर दृष्टि जमाते हैं। अपनी मूर्ति को देख कर वह ‘मूर्तिकार’ याद आ जाता है। यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ईश्वर का एक मन्दिर है, मस्सिज्ड है, जो चाहें कह लें। इस में ईश्वर की बनाई हुई मूर्तियाँ हैं। इन को देख कर ईश्वर याद आ जाता है। हम जो बनाएंगे, उसे देख कर हम याद आएंगे, हर वस्तु अपने निर्माता की याद दिलाती है। उस खुदा की बनाई हुई अपने शरीर की मूर्ति की नाक के अगले भाग पर दृष्टि जमा कर हम यह सोचते हैं कि इस जीवित मूर्ति को बनाने वाले हैं मूर्तिकार! हमारा पूज्य तो तू है और इस को पवन से पालने वाले! हमारा प्रभु तो तू है और इस वायु को रोक कर भारने वाले! तू ही हमारे प्राणों का स्वामी है। तू ही हमारा ‘ब्रह्मा’ है— हमें जन्म देने वाला है, हमारा ‘विष्णु’ भी तू ही है— हमें पालता है, और तू ही हमारा ‘शिव’ है— हमें मृत्यु देता है। तू ही हमारा कर्ता है, तू ही हमारा भर्ता है और तू ही हमारा सहर्ता है। तेरे ही हाथ में जन्म, तेरे ही हाथ में जीवन और तेरे ही हाथ में मृत्यु है।

यह जो कहा तो वह अत्यन्त भावुक और सजलनयन हो गए।

जिसने पड़ोसी का हक़ अदा नहीं किया, हुजूर (सल्ल०) ने सौमन्ध खा कर कहा था कि वह मुसलमान नहीं। पालने का कर्तव्य हमारा नहीं, लेकिन जो हम कर सकते हैं वह करें। एक रोटी है तो आधी वाजिब हो गई। यदि केवल एक 'कलिम' की बात बताने का सामर्थ्य है तो इतना ही कर दें। अगर इतना कर सकते हैं कि दो चार वेदान्त की गुणियां खोल दे तो यह करें। लेकिन अगर आप अपने लिये टीक कर रहे हैं और पड़ोसी को नहीं दे रहे हैं तो आप की आधी रोटी हराम (वर्जित) हो गई। पड़ोसी में मजहब का प्रतिबन्ध नहीं।

कौमे, कौमों की पड़ोसी होती हैं। धर्म, धर्म का हमसाया होता है। पूरो दुनिया तुम्हारी ओर देख रही है—कर्तव्य का पालन करो!

यह दौर अपने वराहीम की तलाश में है।
सनमकदा है जहाँ लाइला-ह-इल्लल्लाह॥

-३-

प्रस्तुति से पूर्व

अलहम्दो लिल्लाह (सारी प्रशंसाएं बस अल्लाह के लिये हैं), मौलाना शास्त्र नवेद उसमानी के पन्द्रह वर्षीय चिंतन—मनन एवं अध्ययन के एक खड़ का सारांश आप की सेवा में प्रस्तुत है। इन लेखों का क्रम उद्दृष्टि साप्ताहिक 'अखबारे नौ-नई दिल्ली' में धारावाहिक आरम्भ हुआ था। इन की लोकप्रियता और उपादेयता को देखते हुए आवश्यक संस्थाधनों और विस्तारण के बाद हमारी यह कोशिश हाजिर है।

मैं न सहित्यकार हूं और न लेखक—अपनी अल्पज्ञता के साथ यह ख़्याल भी आता है कि सम्बोधित लोगों की बड़ी संख्या विभिन्न मस्लियों (मतों) से सम्बन्धित उन व्यक्तियों पर आधारित है जिन से एक मजुब में रहते हुए परस्पर सहयोग की आशा तो दूर की बात है, उन में से हर एक ने अपने—अपने तरीके को ही धर्म का स्थान दे रखा है। यदि अन्तर्यामी ईश्वर की अनन्त कृपा हमारे साथ न होती और अपने बहुत से साथियों का निरन्तर सहयोग प्राप्त न होता तो मैं कदापि इस कृषिल न था कि मौलाना की सेवाओं को लिखित रूप में क्रमबद्ध कर सकता जिन को मैंने पिछले एक वर्ष के दौरान उन की विभिन्न वार्ताओं के टेस्स, उन के लिखाए हुए नोट्स, वृष्टान्तों और मौखिक व्याख्याओं की सामग्री में से एकत्रित किया है।

इस पेशकश में अगर कुछ हिस्से अस्पष्ट रह गए हों तो यह त्रुटि मौलाना के अध्ययन और शोध कार्य की नहीं बल्कि लिखने वाले की सीमित योग्यताओं पर इसका संपर्क दर्थित है।

यह स्पष्टीकरण भी जरूरी है कि इन लेखों का उद्देश्य न तो साधारण मुसलमानों को वेद पढ़ने के लिये प्रेरित करना है और न ही दिलचस्प जानकारी एकत्रित करना; बल्कि आङ्गन के उस पहलू की ओर ध्यान आकर्षित करना मूल उद्देश्य है जिस की तरफ़ अभी तक समुचित ध्यान नहीं दिया जा सका है। यदि कुछ हृदयों में हम 'वास्तविक काम' करने की हल्की सी लगन भी पैदा कर सकें, तो यह हमारा बहुत बड़ा सौभाग्य होगा।

ईश्वर हमारी मेहनत को स्पीकार करे और हमारे उन सभी सहयोगियों पर

शुभचिन्तकों को अज्ज (प्रतिकार का दान) दे जिन के अमूल्य सहयोग का साक्षी इस किताब का प्रत्येक शब्द है—‘आमीन’!

—एस० अब्दुल्लाह तारिक

दो शब्द

‘अगर अब भी न जागे तो ...’ का हिन्दी अनुवाद कई वर्ष पहले लगभग पूरा हो चुका था और स्व० शम्स साहब (चचा मियां) की यह तीव्र अभिलाषा थी कि हिन्दी व अंग्रेजी संस्करण जल्द से जल्द प्रकाशित हो; लेकिन कुछ विपरीत परिस्थितियां इस पुनीत कार्य में बाधक बनी रहीं। ईश्वर की कृपा से कुछ समय पूर्व किताब छापने का पक्का इरादा कर लिया गया और मैंने एक बार फिर अनुवाद का अवलोकन किया तथा कुछ हिस्से संशोधन के बाद टाइप के लिए तैयार हो गए। पच्चीस अगस्त १९९३ को अचानक ही प्रातःकाल ईश्वर की ओर से उन की वापसी का निमन्त्रण आ गया और मुझे गमगीन दिल से उनके नाम के साथ ‘स्वर्गीय’ शब्द को बढ़ाना पड़ा। बेशक हमेशा जीवित रहने वाला अस्तित्व केवल ‘अल्लाह’ का है। हम सभी उस के फैसले पर पूरी तरह राजी (सहमत) हैं।

सब कहाँ, कुछ ला-लओ गुल में नुमायाँ हो गई।

खाक में, क्या सूरतें होंगी कि पिनहाँ हो गई॥

इस पुस्तक का हिन्दी अनुवाद पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। इस का मूल कारण यह है कि शम्स साहब के लिए इससे बड़ी श्रद्धांजलि कोई नहीं हो सकती कि उनके काम को आगे बढ़ाया जाए और मुझे यह यकीन है कि उन्होंने मानवता की भलाई के लिये जो स्वप्न देखे थे, उन को साकार करने में यह संस्करण एक महत्वपूर्ण कड़ी सिद्ध होगा।

— जावेद अन्जुम



अध्याय : १

इन्निकूलाब्ब की भविष्यवाणी

काबे का अपमान :

बैतुल मक्दस पर यहूदियों के अतिक्रमण की खेदपूर्ण घटना पर प्रतिष्ठित विद्वान मौलाना सय्यद अली मिया ने निम्नलिखित शब्दों में अपनी संवेदना प्रकट की थी:

(उर्दू से अनुवाद) “यह शर्मनाक परायज और सारी दुनिया के सामने बदनामी आखिर क्यों हुई? जबकि कल तक नुसरते इलाही (ईश्वर की सहायता) चन के साथ में थी, चमत्कार प्रकट होते थे, दिव्य सेनाएं उन के लिये उत्तरती थीं।”

उस दिन से आज तक विश्व के समस्त मुसलमान हाथ उठा कर फरयाद कर रहे हैं कि हे परमेश्वर! किब्ब-ल-ए अब्वल* हमे वापस दिला दे, लेकिन प्रार्थनाएं खाली वापस आ रही हैं। सायद सहायता आना सचमुच बन्द हो गई! हालात विपरीत होते चले गए यहाँ तक कि बैतुल हराम (काबा) का अपमान भी आरम्भ हो गया। पहली मुहर्रम १४००हिज्री (२० नवम्बर १९७९) का अशुभ दिन मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह कहतानी के मेहदी# होने के दावे से आरम्भ हुआ और आने वाले पन्द्रह दिन १४०० वर्षीय इस्लामी इतिहास का ‘अन्धकारमय युग’ बन गए जिन में बैतुल हराम, मानव के रक्त से नहलाया जाता रहा। काबे की दीवारे गोलियों से छलनी होती रही और निरन्तर पन्द्रह दिन तक काबा नमाज, अजान और तवाफ (परिक्रमा) से विद्यत रहा। इन पन्द्रह दिनों में विश्व के मुसलमानों की निगाहें अदृश्य सेनाओं की प्रतीक्षा में आकाश को निहारती रही। पहले भी तो ईश्वर के दरबार की ओर से अपने घर की सुरक्षा के लिये अबरहा^अ के लक्षकर को नष्ट करने के लिये सहायता आई थी। इस बार अद्यावील

* मुसलमानों का पहला किश्तिना जो यरोशलाम में है, जिसे बैतुल मक्दस कहते हैं।

एक युगान्तरकारी रहस्यमय व्यवितात्व जो ५० मोहम्मद सल० का सहनामी होगा और जिसके आने की भविष्यवाणी स्वयं हुजूर (सल्ल०) ने साकेतिक भाषा में की है।

^अ एक राजा जिसने काबे पर आक्रमण किया था।

(काली चिंडिया) की सेना न आई। ईश्वर का दूत (सल्ल०) 1400 वर्ष पहले ही बता चुका था कि इस घर के पासबान(द्वारपाल) हीं जब मर्यादा भंग करने पर उत्तर आएं तो रस्सी में ढील दे दी जाएगी और उन्हें अपने आमालनामे (कर्म लेखा) पर अतिरिक्त कालिमा पोतने का अवसर दिया जाएगा। निस्सन्देह, विश्व नेतृत्व के पद के योग्य वे न रह जाएंगे।

“ह० अबू हुरैरा रजि० से रिवायत है कि वह व्यक्ति रुक्न (ह-जरे-अस्वद)* और मकान (मकाने इब्राहीम) के बीच बैतृत (शपथ) लेगा और इस घर का अपमान इस के घरबालों के अतिरिक्त कोई नहीं कर सकेगा। फिर जब इस की मर्यादा भंग हो जाए तो यह मत पूछना अब अरबों का विनाश कब होगा।”²

यह रिवायत ‘अरजकी’ ने भी ‘तारीख मकान में दर्ज की है और ‘हाकिम’ ने इसे शुद्ध हड्डी स ठहराया है।

काबे की दुर्घटना का पन्द्रह दिवसीय इतिहास साक्षी है कि नकली मेहदी ने हजरेअस्वद और मकाने इब्राहीम के बीच अपनी शपथ ली थी। एक और हड्डी देखिये:

“ह० अबू हुरैरा रजि० का कथन है कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से जो सत्यवादियों के अखंड सत्यवादी थे, सुना कि आप ने फ़रमाया—मेरी उम्मत (पंथ) कुरैश के सर फिरे नौजवानों के हाथों विनष्ट होगी।”

—(बुखारी—किताबुल फितन)

घटनाएं साक्षी हैं कि काबे की दुर्घटना के जिम्मेदार व्यक्तियों की टोली में शामिल सभी नौजवान थे जो बीस से बाईस वर्ष की आयु वर्ग के थे। इतना ही नहीं, इस कथामते सुग्रास (भौमिक प्रलय) के प्रारम्भ का माध्यम कोन व्यक्ति बनेगा, यह भविष्यवाणी भी भी जा चुकी थी।

“ह० अबू हुरैरा रजि० कहते हैं कि रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया—क़्यामत (प्रलय) उस समय तक नहीं आएगी जब तक ‘क़हतान’ से एक व्यक्ति प्रकट न हो लेगा जो लोगों को अपने स्तोंटे से हांकेगा।”³

मौ० अहमद अली सहारनपुरी ने बुखारी शारीफ की इस हड्डीस के फुटनोट में लिखा है :

“इन्सानों को जानवरों के झुंड की तरह हंकाने का अभिप्राय उन्हें वश में करना है जिस का संकेत सरकार एवं सत्ता की ओर हो सकता है।”⁴

* एक पवित्र काला पन्थर जो काबे की दीवार में लगा हुआ है और जिसे तीर्थ यात्री छूते हैं।

निरन्तर अजाब (दिव्य प्रकोप) :

मौ० अली मिया का यह विश्लेषण कि अल्लाह की मदद का आना बन्द हो गया, क्या विश्व के समस्त मुसलमानों के लिये जबरदस्त झटका नहीं है और रसूले अकरम सल्ल० की इस भविष्यवाणी पर कि ‘अपनों के हाथों ‘बैतुल हराम’ की बैइज्जती के बाद अरबों का विनाश आरम्भ होगा’, यदि हम आस्था रखें तो क्या यह खबर विश्व स्तर पर बहुत बड़े परिवर्तनों की चेतावनी देने वाली नहीं है? पूरे विश्व के मुसलमानों की दुर्दशा की कहानी पर एक नज़र डालिये।

मुसलमान न केवल आज उन देशों में जहां वे अत्यस्थित्यक हैं, बल्कि मुस्लिम बहुसंख्यक देशों में भी इबादतगाहों की असुरक्षा, जान-माल, मान-मर्यादा, राजनैतिक और आर्थिक हर प्रकार की समस्याओं से ग्रस्त हैं। भोपाल की गैस त्रासदी जबलपुर, जमशेदपुर से आरम्भ होने वाले साप्रदायिक दर्गों का अन्तहीन क्रम, बाबरी मस्जिद के विध्वंस की कष्टसूचक घटना, फ़िलपाइन, चीन, रूस, मगोलिया के मुसलमानों पर घोर अत्याचार, पाकिस्तान के जातीय दर्गे, इज़राइल के हाथों दस गुनी अधिक संख्या वाले अरबों का रौद्रा जाना, अरबों के फ़िलिस्तीनियों पर अत्याचार और फिर फ़िलिस्तीनियों का आपस में एक दूसरे को हलाक करना, तुर्की, मिस्र, सीरिया, लीबिया, अलजीरिया, इडोनेशिया और मलेशिया में बहुत बड़े पैमाने पर इस्लामी संगठनों से संबद्ध व्यक्तियों पर अत्याचार, अफ़गानिस्तान के मुसलमानों का शोक व प्रलाप, ईरान व इराक के दस वर्ष चलने वाले युद्ध में काम आने वाले अनगिनत लोग, इथोपिया व सूडान का भयानक अकाल, यूरोप, अफ़्रीका व एशिया की समस्याओं से ग्रस्त मुसलमान! दुर्दशा की यह तस्वीर क्या दर्शा रही है?

‘ह० सौबान मौला रजि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि क़रीब है कि और उम्मतें (पंथ) तुम्हारे ऊपर निरन्तर आएंगी जैसे खाने वाले, कटोरे पर आते हैं। एक व्यक्ति ने कहा कि हम लोग शायद उस जानाने में कम होगे। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया—‘नहीं, तुम उस जमाने में बहुत बड़ी संख्या में हो गे, लेकिन तुम ऐसे होगे जैसे दरिया के पानी पर झाग। अल्लाह तआला तुम्हारे भय को दुश्मनों के दिलों से निकाल देगा और तुम्हारे दिलों में सुर्स्ती ढाल देगा। एक व्यक्ति बोला कि हे रसूलुल्लाह (सल्ल०)! सुर्स्ती क्यों होगी? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया संसार से मोह तथा मृत्यु के भय से।’⁵

क्या व्यापक स्तरीय यातना अभी शेष है?

व्यापक रूप से होने वाले अपमान के इस युग को आज हम अजाब का नाम देते हैं। लेकिन यह परिस्थितिया अगर विपत्ति का केवल प्रारम्भ मात्र हुई तो? यदि ईश्वर द्वारा भेजी गई यातनाएं इस से भी भयकर हुई तो? पिछली अवज्ञाकारी कौमों

पर जब प्रकोप आया तो वे जीवन पटल से मिटा दी गई। क्या उम्मते शोहम्मदी (शोहम्मद सल्ल० का पंथ, मुसलमान) को इस अंजाम से डरने की ज़रूरत नहीं है? दिव्य कुरआन से मालूम कीजिये :

“वह आकाश से धरती तक हर कार्य की व्यवस्था करता है (फिर यह (कार्य की व्यवस्था) उस के पास एक दिन में लौटेगी जिस की मिक्दार (अवधि) तुम्हारी गणना से एक हजार वर्ष की होगी” — (कु: 32-5)

बहुत से मुफ्सिसीरीन (भाष्यकार) इस आयत से क़्यामत (महाप्रलय) के दिन का तात्पर्य लेते हैं; यद्यपि सूरए मआरिज में क़्यामत के बिन की अवधि “यौमिन का—न मिक्दारहु खुम्सी—न अल—फ स—नतिन” के शब्दों में वर्णित हुई है यानी वह एक दिन तुम्हारे पचास हजार वर्ष के बराबर होगा। ईश्वर का आदेश लागू होने वाला एक दिन दिव्य कुरआन ने एक हजार वर्ष के बराबर बताया है।

इस ‘एक दिन’ की व्याख्या सूरए हज्ज की आयात 46, 47 व 48 में देखिये :

“सो क्या यह लोग जमीन में चले फिरे नहीं कि इन के दिल ऐसे हो जाते जिन से यह समझने लगते या कान ऐसे हो जाते जिन से यह सुनने लगते। वास्तविकता यह है कि आंखें अन्धी नहीं हो जातीं बल्कि दिल जो सीनों में है वे अन्धे हो जाया करते हैं और (हे शोहम्मद) आप से यह लोग अजाब (यातना) की जल्दी मचा रहे हैं (अर्थात् अजाब की खबर पर विश्वास नहीं कर रहे हैं) यद्यपि अल्लाह अपने बावे के खिलाफ नहीं करेगा और आप के परमेश्वर के पास एक दिन एक हजार वर्ष के बराबर है, तुम लोगों की गिनती के अनुरूप। और कितनी ही बस्तियां थीं जिन्हें मैंने मुहलत प्रदान की थी और वे नाफरमान (अवज्ञाकारी) थीं। फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया और मेरी तरफ़ (सबकी) वापसी ही है।”

‘सूरए सबा’ की 29 व 30 दीं आयतों भी देख लीजिये :

“और कहते हैं कि बाद कब पूरा होगा। कह दीजिये कि तुम्हारे लिये एक दिन का बाद है। उससे न एक घड़ी पीछे हट सकते हो और न (एक घड़ी) आगे बढ़ सकते हो।”

तीनों जगह की आयतों को सामने रख कर चिन्तन करने की आवश्यकता है। क्या इन से यह स्पष्ट नहीं होता कि अल्लाह, पृथ्वी पर जो तदबीर (व्यवस्था) लागू करता है, वह उस को अपने एक दिन या हमारे एक हजार वर्ष के बाद उठा लेता है और फिर नई व्यवस्था भेजता है। जो लोग यह समझ रहे हैं कि अजाब केवल पिछली

उम्मतों के लिये थे और अब क़्यामत तक के लिये मुहलत है, वे यह जान लें कि एक हजार वर्ष की अवधि का अल्लाह का बाद है।

अभी जल्दी न कीजिये—यह न पूछिये कि एक हजार वर्ष तो बीत चुके, मुहलत इस के बाद भी क्यों मिली हुई है? ‘अबूदाऊद’ की निम्नलिखित हीस पर दृष्टिपात कर लें :

“ह० सअद बिन वक्तास रजि०, नबी करीम (सल्ल०) से रिवायत करते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया: निश्चित रूप से मैं उम्मीद रखता हूं कि मेरी उम्मत अपने पालनकर्ता की नज़र में इतनी असहाय और तुच्छ नहीं हो जाएगी कि उस का ‘पालनकर्ता’ उस को आधे दिन की भी मुहलत प्रदान न करे।

ह० सअद बिन वक्तास रजि० से पूछा गया कि आधा दिन कितना होता है? उन्होंने जवाब दिया कि पांच सौ वर्ष।”

शेख जलालुद्दीन स्योती रह० की रिसर्च के अनुसार संसार में यह उम्मत आँहजरत (सल्ल०) के विसाल (देवलोक गमन) के बाद पन्द्रह सौ वर्ष तक रहेगी।*

निश्चित अवधि के पश्चात अतिरिक्त मुहलत का उल्लेख ‘सूरए अशुआरा’—आयात 204 से 209 में किया गया है।

कौम के परिवर्तन की चेतावनी :

अब यहां एक गम्भीर चिन्तन का विषय यह है कि डर नबी के आने के बाद उस की उम्मत का यह कर्तव्य होता है कि ईश्वर के भेजे हुए नवीनतम ज्ञान के मार्गदर्शन में पिछली समस्त कौमों के उद्घार के लिये खड़ी हो। यही ‘विश्व नेतृत्व’ का पद कहलाता है। ह० शोहम्मद सल्ल० के अवतरण के साथ ही बनी इसाईल (यहूदी कौम) को अपदस्थ करके ‘उम्मते शोहम्मदी’ को क़्यामत तक विश्व की जातियों की अगुआई प्रदान की गई थी। अब रहती दुनिया तक कोई नया रसूल (सन्देश्य) नहीं आना था और शोहम्मद सल्ल० की उम्मत को ही दुनिया के बिंगाड़ को दूर करने का काम पूरा करना था। क्या उम्मत अपनी वर्तमान शोचनीय दशा में इस मन्सब के योग्य है?

लेकिन नेतृत्व का पद तो इसी उम्मत का रहना चाहिये क्यों कि रसूले अकरम (सल्ल०) ‘खा-त-मुन्दिरीन’ (अन्तिम सन्देश्य) हैं !

तमाम कड़ियां फिर एकत्रित कीजिये!

* यह स्पष्टीकरण अल्लाह नवाब कुत्बुद्दीन खाँ रह० वेलवी ने ‘मिशकात शरीफ’ के अध्याय कुरबस्साअतः मैं वर्ज इस हीस पर उर्दू भाष्य में की है।

उम्मते मोहम्मदी पर पन्द्रह सौ वर्ष बाद अजाब की चेतावनी, काबे की अप्रतिष्ठा के बाद अरबों के (आध्यात्मिक) विनाश की खबर, अपदस्थिता के पूरे संकेत—लेकिन विश्व का नेतृत्व फिर भी ज्यों दा त्यों!

लिखते हुए क़लम काँपता है। लेकिन क्या यह तमाम सूचनाएं एक ही बात की ओर संकेत नहीं कर रही हैं?

‘कौम का परिवर्तन’—जिस की कई जगह पवित्र कुरआन ने भविष्यवाणी की है—अर्थात् मोहम्मद सल्ल० की उम्मत, विश्व के नेतृत्व की पुनः योग्य बनेगी। एक दूसरी कौम के सत्त्वर्ध्म स्वीकार करने के रूप में।

कौम के परिवर्तन से सबन्धित कुछ आयतों का अनुवाद देखिये :

“यदि वह चाहे तो हे लोगों तुम (सब) को ले जाए और दूसरों को ले आए, और अल्लाह इस का सामर्थ्य रखता है।” — (कु० : 4-133)

“यह इस वजह से है कि अल्लाह किसी वरदान को जो उस ने किसी कौम को प्रदान किया हो, नहीं बदलता जब तक कि वही लोग उस को न बदल दें। जो कुछ उन के पास है, निस्सन्देह अल्लाह ख़ूब सुन्ने और जानने वाला है।” — (कु० : 8-53)

“सो तुम में से कुछ वे हैं जो कंजूसी करते हैं (अर्थात् धन सम्पत्ति के मोह में गिरफ्तार हो गए हैं) यद्यपि तुम को ईश्वर की राह में खर्च करने के लिये बुलाया जाता है। और जो कोई कंजूसी करता है स्वयं अपने ही साथ कंजूसी करता है। और अल्लाह तो किसी का मुहताज नहीं है, बल्कि तुम सब उस के मुहताज हो। और यदि तुम विमुख हो जाओगे तो ईश्वर तुम्हारी जगह दूसरी कौम ले आएगा, फिर वह तुम जैसे न होंगे।” — (कु० : 47-38)

“और उन (उमियों) में से आख़रीन* (के लिये भी आप सल्ल० को भेजा) जो अभी उन (पहलों) में शामिल नहीं हुए हैं और वह (अल्लाह) प्रभुत्वशाली और तत्पदर्शी है।” — (कु० : 62-3)

“हे ईमान वालो! तुम में से जो कोई अपने दीन से किर जाए तो अल्लाह शीघ्र ही एक ऐसी कौम को ले आएगा जो अल्लाह से प्रेम करते होंगे और अल्लाह उन से प्रेम करता होगा। वह आस्तिकों पर दयालु होंगे और नास्तिकों के मुकाबले पर कठोर होंगे, और वे अल्लाह की राह में जिहाद (धर्म-संघर्ष)

* बाद के युग में आने वाले

करेंगे और किसी आलोचक की आलोचना से नहीं डरेंगे। यह अल्लाह का अनुग्रह है वह जिसे चाहे प्रदान करे, और अल्लाह बड़े विस्तार वाला और बड़े ज्ञान वाला है।” — (कु० : 5-54)

“यदि तुम न निकलोगे तो अल्लाह तुम्हें एक दुख देने वाली यातना देगा और तुम्हारे बदले एक दूसरी कौम ले आएगा और तुम उसे कुछ हानि न पहुंचा सकोगे और अल्लाह हर चीज का सामर्थ्य रखता है” — (कु० : 9-39)

क्या नज़रों बिल्लाह (हम ईश्वर की शरण चाहते हैं) यह बार-बार दूसरी कौम को लाने की चेतावनी ‘भेड़िया आ गया’ वाली पुकार है? बेशक! ईश्वर का वादा अटल सत्य है। हम और आप कितना ही चाहें ईश्वरेच्छा में परिवर्तन नहीं कर सकते। हाँ, यह प्रयास करना हमारा कर्तव्य है कि यातना में पकड़े जाने वाले लोगों में हम शामिल न हों और जिस कौम को अल्लाह, मोहम्मद सल्ल० की उम्मत के दूसरे हिस्से के रूप में कौमों के नेतृत्व की पदवी से अलंकृत करेगा, उस कौम के ईमान लाने में हमारे प्रयास भी शामिल होंगे।

शर्त यह है कि हम यह जान लें कि ऐसी सौभाग्यशाली कौन सी कौम हो सकती है। रसूल (सल्ल०) की सुन्नत से तो हमें यही मार्गदर्शन मिलता है, अवलोकन कीजिये

“...जब ह० अबूज़र गिफ़ारी रजि० को मक्के में आँहजरत (सल्ल०) के हाथ पर इस्लाम लाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया मुझे एक ऐसी सरजनीन की पहचान कराई गई है जहां नख़्लिरस्तान (मरुजल) हैं और मैं समझता हूं कि वह जगह यसरिब (मदीना) के अतिरिक्त कोई और नहीं है। क्या तुम मेरा सन्देश अपनी कौम में पहुंचाओगे? शायद कि वह उन को लाभ पहुंचाए और तुम्हें भी इस का अज्ञ (प्रत्युष्कार) मिले।”⁶

पता यह चला कि अगर पहले से यह जात हो जाए कि अमुक जाति सत्त्वर्ध्म को स्वीकार करने वाली है, तो उनमें काम करने में पहल करने वालों के लिये विशेष ईश्वरीय वरदान है।

क्या हम अल्लाह की सूची में मोमिन (आस्तिक) हैं?

आगे बढ़ने से पहले अपने मन से इस भ्रम को निकाल दे कि ‘लाइलाह: इल्लल्लाह’ केवल ज़बान से कह देने भर से हम स्वर्ग के अधिकारी हो गए। यही तो यहूदी कहा करते थे कि हम यदि नरक में गए भी तो थोड़ी सी अवधि के लिये और अपने पापों की सजा के बाद सदा के लिये स्वर्ग में आ जाएंगे।

एक सर्वसम्मत हीरोइस है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया : “तुम लोग हू-ब-हू पिछली उम्मतों की तरह हो जाओगे।” सहायियों ने पूछा “पिछली उम्मतों से तात्पर्य क्या यहूदी और नसरानी (ईसाई) हैं?” आप (सल्ल०) ने फ़रमाया—और कौन?

कोई नहीं जानता कि ईश्वर की दृष्टि में हम में से कितने ‘मोमिन’ हैं और कितने ‘मुनाफ़िक़’ (कपटाचारी या पाखण्डी) और कितने अपने व्यवहार से कुफ़ करने वाले? मुनाफ़िक़ की परिभाषा समझने के लिये ह० उमर रजि० की मिसाल लीजिये।

अपने शासन काल में आप एक दिन ‘साहिबे सिरें रसूल सल्ल०’* ह० हुजैफ़ा रजि० का द्वार खटखटाते हैं चेहरा धुआं धुआं है। ह० हुजैफ़ा से फ़रमाते हैं : “ईश्वर की सौंगन्ध खा कर कहो जो मैं पूछूँगा सच बताओगे।” ह० हुजैफ़ा ने विनम्रता से कहा : “पूछें अग्रीरुल मोमिनान्!” कहा—“नहीं, ईश्वर की सौंगन्ध खाओ कि सच सच जवाब दोगे।” फिर अत्यन्त व्याकुल होकर प्रश्न किया कि “तुम्हें अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने मदीने के सभी मुनाफ़िक़ों के नाम बताए थे। सच कहना इन में मेरा नाम तो नहीं है?”

अल्लाहो अकबर! सच्यदना उमर यिन ख़त्ताब रजि० जिन को दुनिया में ही स्वर्ग प्राप्ति की शुभसूचना दी जा चुकी है, उनको अपने मुनाफ़िक़ होने का भय है। फ़रमाते थे :

“इमान, भय और आशा के बीच की मनस्थिति का नाम है। अगर मुझे मालूम हो जाए कि संसार के तमाम लोग स्वर्ग में प्रवेश करने वाले हैं, एक व्यक्ति के अतिरिक्त, तो मुझे भय रहेगा कि ‘वह व्यक्ति’ मैं ही हूं और यदि एक व्यक्ति के अतिरिक्त तमाम लोग नरक में डाले जा रहे हों तो मैं अल्लाह की करणा से यह आशा रखूँगा कि ‘वह व्यक्ति’ मैं ही हूं।”

जरा सोचिये तो सही! ईमान और निफाक़ (पाखण्ड) की कसौटी यदि इस का दसवा भाग भी ठहरायी जाए तो मुस्लिम उम्मत में कितने मोमिन निकलेंगे? और मुनाफ़िक़ों को कुरआन ने नरक के सब से निचले दर्जे की सूचना दी है (सूरे निसा: 145)

वह कौन सी कौम हो सकती है?

अब आइये उस कौम की तलाश करें जिसे परवरदिगार कौमों के नेतृत्व के

* ह० मोहम्मद सल्ल० के हमराज़

पद पर आसीन करना चाहता है। यदि अल्लाह और उस के रसूल (सल्ल०) ने इस घटनाक्रम की उमय सीमा निर्धारित करने की दिशा में मार्गदर्शन किया है तो निश्चित रूप से उस कौम के लक्षण भी बताए होंगे। इस सन्दर्भ में जिन आयतों के अनुवाद उपर दिये जा चुके हैं, उन की विभिन्न तफसीरों (भाष्य) का अवलोकन करें :

न कर 'सूरए मोहम्मद' की आयत: ३८ के सन्दर्भ में अब्दुर्रज्जाक, अब्द बिन हमीद, तिर्मिजी, इब्ने जरीर, इब्ने अबी हातिम, तिबरानी और बेहकी ने ह० अबू हुरैरा रजि० से रिवायत की है कि उन्होंने कहा : हुजूर (सल्ल०) ने यह आयत तिलावत (पाठ) फ़रमाई—“और अगर तुम पीठ फेरोगे...” तो सहायियों ने पूछा—“या रसूलुल्लाह (सल्ल०) आखिर यह कौन लोग हैं जो उस समय हमारी जगह बदल कर आएंगे जब कि हमने पीठ फेर दी हो (और यह भी कि वह हम जैसे न होंगे।” तब हुजूर (सल्ल०) ने ह० सलमान फ़ारसी (ईरानी) रजि० के कन्धे पर थपकी दी और फ़रमाया—“यह है वह और इस की कौम है वह! और सौंगन्ध है उस खुदा की जिस के कब्जे में मेरे प्राण हैं, यदि ईमान सुरक्षा* पर चला जाएगा तो इरान के यह लोग वहां तक उसे ढूढ़ते हुए पहुंच जाएंगे।”⁷

सूरए जुमा की आयत (3) के अन्तर्गत भी इसी विषय की रिवायत ‘बुखारी’ में आई है।

‘सूरए माइदा’ की आयत (५४) के सन्दर्भ में कुरआनी भाष्य—‘फ़तहुल क़दीर’ में हमें जो रिवायतें मिली हैं, उन को हम यहां नक़ल कर रहे हैं :

“इब्ने जरीर ने शुरैह बिन उबैद से रिवायत की है कि उन्होंने कहा कि जब अल्लाह ने यह आयत नाजिल (अवतरित) की तो ह० उमर रजि० ने प्रश्न किया—या रसूलुल्लाह सल्ल०! क्या मैं और मेरी कौम से अभिप्राय है? फ़रमाया—नहीं बल्कि यह व्यक्ति और इस की कौम अर्थात् अबू मूसा अशअरी रजि०”[#]

अयाज—अल—अशअरी ने रिवायत की है कि हुजूर (सल्ल०) ने ह० अबू मूसा अशअरी रजि० की ओर संकेत करके फ़रमाया : “यह व्यक्ति और इस की कौम।”

ह० अबू मूसा अशअरी रजि० से रिवायत है कि मैंने हुजूर (सल्ल०) के सामने

* तीसरा नक्षत्र—वृत्तिका

इस हीरोइस को इब्ने सउद अबी शेबा ने अपनी ‘मसनद’ में अब्द बिन हमीद, तिर्मिजी और बेहकी ने ‘दलाइल’ में रिवायत किया है तथा हाकिम ने इसे ‘सही हीरोइस’ ठहराया है।

यह आयत तिलावत की, हुजूर (सल्ल०) ने फ़रमाया – “ऐ अबू मूसा अशअरी यह तेरी कौम है, यमन की कौम”*

“ह० इब्ने अब्बास रजि० से रिवायत है कि इस आयत पर फ़रमाया—वे यमन वासियों की कौम में से हैं।”#

‘सूरए तौबा’ की आयत (3 9) के सन्दर्भ में तफ़सीर फ़तहुलक़दीर, भाग-2, पृ० 345 पर ‘अल्लामा शौकानी’ लिखते हैं:

“और इस पर विचारों में मतभेद है कि यह कौन लोग हैं? अतः यह भी कहा गया है कि वह ‘यमन’ वाले हैं और यह भी कहा गया है कि वह ‘ईरान’ वाले हैं और दलील के बिना इस जगह के निर्धारण का कोई उपाय नहीं है।”

अब आप गौर कीजिये कि क्या ‘नऊजो बिल्लाह’ सत्यवादी रसूल सल्ल० विभिन्न अवसरों पर विभिन्न सहायियों से अलग—अलग प्रकार की परस्पर विरोधी बातें कह सकते थे, कि ह० सलमान फ़ारसी रजि० से उन के मुख पर फ़ारसवासी (ईरानी) को बता दिया और ह० अबूमूसा अशअरी रजि० जो यमनवासी थे, उन के सामने यमनवासी कह दिया, यदि ऐसा नहीं है और निश्चय रूप से नहीं है (और नवी सल्ल० की पवित्र ज़बान पर सदैव सत्य बोलता था) तो फिर हमें इन दो परस्पर विरोधी नज़र आने वाली रिवायतों में सामंजस्य बैठाना पड़ेगा। विश्व में केवल भारत ही ऐसा देश है जहां यह दोनों कौमें एकत्रित हो गई हैं। ईरानी, आर्यवंश के लोग थे और उत्तरी भारत में आर्य वंश के लोग आकर आबाद हुए थे। दक्षिणी भारत के द्रविण नस्ल के निवासियों की एक बड़ी संख्या ‘यमन’ में आबाद थी। बौद्ध मत की अनुयायी सिन्धी जातियां—मेद, सिबाबजा, सियाबजा और अहामरा नामक जातियां भी यमन में आबाद थीं।^४ वहां आज भी भारतीय सभ्यता की अमिट छाप है, ‘हिन्दू’, ‘हिन्दा’, ‘श्याम’ या ‘शाम’ व ‘रियाम’ नामक वैभवशाली किले वहां मौजूद हैं।^५

इन दोनों नस्लों का एक ही देश भारत में एकत्रित होना भी ‘सूष्टा’ के कुशल प्रबन्ध का एक बेहतरीन नमूना है ताकि उस के रसूल सल्ल० की भविष्यवाणियां जो उस समय दीखने में परस्पर विरोधी लग रहीं थीं, आगे चल कर यहां सत्य सिद्ध हो सकें।

* इस हदीस को अबुल शेख, इब्ने मर्वोया, शेबा, बेहकी, इब्ने असाकर और हाकिम ने अपनी जमा में नक़ल (उद्घरित) किया है।

इस रिवायत को इब्ने अबी द्हातिम, अबुल शेख और बुखारी ने अपनी ‘तारीख’ में नक़ल किया है। (स०:फ़तहुल क़दीर, भाग : 2, पृ० : 49-50)

यहां यह बात भी उल्लेखनीय है कि ईरानवासी और उन के समर्थक केवल ह० सलमान फ़ारसी (ईरानी) रजि० से सम्बन्धित कथनों को लेकर वर्तमान ‘ईरानी क्रान्ति’ का उल्लेख करते हैं। हम उन के विषय में सद्भावना रखते हुए केवल इतना कह सकते हैं कि ह० अबू मूसा अशअरी रजि० से सम्बन्धित कथनों पर वे दृष्टिपात न कर सके होंगे जो ‘जाटों’ के सर्वप्रथम ‘कुबूले इस्लाम’ में भी ऐतिहासिक भूमिका निभा चुके हैं।^६

मौ० उबैदुल्लाह सिन्धी रह० जो ह० शाह वली उल्लाह रह० के फ़लसफ़े (दर्शन) के सब से बड़े समर्थक थे, अपनी किताब ‘शाह वली उल्लाह और उन का फ़लसफ़े’ पृ० : 166 पर ‘सूरए जुमा’ आयत (3) के सन्दर्भ में लिखते हैं :

(उर्दू से हिन्दी) “...हमारे विचार से ‘व आखरी—न : मिन्हुम’ का तात्पर्य उन से है जो ईरानवासी, भारतवासी और इसके अन्तर्गत जो उन के साथ सम्भिलित हों ...”^७

यहां ह० शाह वली उल्लाह रह० की एक भविष्यवाणी भी सुनते चलें : (उर्दू से हिन्दी) “और जिस बात का मुझे विश्वास है वह यह कि यदि मिसाल के तौर पर हिन्दुओं का भारत देश पर शासन मजबूत और हर दृष्टि से सुदृढ़ हो तब भी ईश्वर की तत्वदर्शिता के अनुरूप यह अवश्यं भावी है कि हिन्दुओं के सरदारों और नेताओं के हृदय में यह इलहाम (ईश्वरीय प्रेरणा) करे कि वे इस्लाम धर्म को अपना धर्म बना लें।”^८

शाह साहब की मुग़ल काल में की गई भविष्यवाणी का पहला भाग पूरा हो चुका है अर्थात् भारत पर व्यावहारिक रूप से हिन्दुओं का शासन स्थायी हो चुका है। ईश्वरेच्छा हुई तो इस भविष्यवाणी का अगला भाग भी पूरा होगा।

हमारा विचार है कि हमने आप के समुख वह कम से कम तर्क प्रस्तुत कर दिये हैं जो इस बात को सिद्ध करने के लिये पर्याप्त है कि ‘उम्मते मोहम्मदी’ (मोहम्मद सल्ल० का पन्थ) के दो भाग हैं—पहले भाग अर्थात् ‘वर्तमान उम्मत’ की आयु पन्द्रह सौ वर्ष है। भारत की ‘हिन्दू कौम’ इस उम्मत का दूसरा भाग अर्थात् ‘आखरीन’ है। यह कौम पूरी की पूरी इस्लाम स्वीकार कर लेगी और इस के बाद विश्व नेतृत्व के पद पर आसीन होगी।

दिल और दिमाग को झंझोड़ देने वाली इस सूचना को पा कर एक प्रतिक्रिया तो यह हो सकती है कि आप इसे कृत्रिम तानों बानों से बुनी हुई एक कल्पित कहानी ठहराकर सन्तुष्ट हो जाएं या फिर आपातकालीन परिस्थितियों में अपने आप को धिरा

हुआ पाकर स्वयं ही फैसला करें—अपने आप को सुधारें, अपने उद्देश्य पर विचार करें, और उस कौम को सत्तर्धन का निमंत्रण देने की प्रक्रिया सोचें जो विश्व की नेता बनने जा रही है। यदि उस के इमान जाने में कुछ योगदान हमारा भी शामिल हो जाए तो यह हमारे लिये कितने सौभाग्य की बात है; वरन् ईश्वर का वचन तो अटल सत्य है और वह हमारी सहायता पर कदापि आश्रित नहीं है।

‘सूरए तौबा’ की जिस आयत (39) में कौम के परिवर्तन की सूचना दी गई थी, उस की अगली आयत (40) में यह बात भी स्पष्ट कर दी गई कि:

“यदि तुम इस की (रसूल सल्लू० की) सहायता न भी करो तो (क्या हो जाएगा), अल्लाह उस की सहायता उस समय कर चुका है जब कि कुफ़्र करने वालों ने उसे (भक्ता) से निकाल दिया था, वह दो में का दूसरा था (जब वे दोनों गुफा में थे, जब वह अपने साथी से कह रहा था, गृह न करो अल्लाह हमारे साथ है।” तो अल्लाह ने उस पर अपनी ओर से शान्ति उत्तरी और उस की सहायता ऐसी सेनाओं से की जिन्हें तुम ने नहीं देखा, और ‘कुफ़्र’ करने वालों का बोल नीचा कर दिया, और अल्लाह ही का बोल ऊंचा रहने वाला है। और अल्लाह प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है।” —(कु० : 9-40)

सन्दर्भ सूची | अध्याय: 1

1. ‘आलमे अरबी का अलमिया’, पृ० : 23
2. ‘लवामे उल अनवार’, ल० : अल्लामा अस सफारीनी भाग : 2, पृ० : 122
3. ‘बुखारी’ किताब मनाकिबे कुरैश, अ० : जिके कहतानी
4. शरहुल बुखारी—अल खैरुल जारी, ल० : शेष याकूब अलबन्यानी, फुटनोट : 14
5. अबूदाऊद, बेहकी—सं० : मिशकात, अ० : तगय्यरुनास
6. ‘मरानदे अहमद’, मुस्लिम, तबरानी—सं० : ‘सीरते सरवरे अलम’, ल० : सय्यद अबुल अला मौदूदी, पृ० : 539, प्र० : इशाअते इस्लाम ट्रस्ट दिल्ली, वर्ष 1979
7. तक़ीर—फरहुल कदीर, ख० : 5, पृ० : 41
8. पत्रिका ‘मआरिफ’—आजमगद, न० : 5, ख० : 89
9. ‘सीरतुन्नबी’—ल० : मौ० शिब्ली, भाग प्रथम, पृ० : 115, 116
10. ‘जायें की इस्लामी तारीख’ ल० : मेहरबान अली बड़ौतवी, पृ० : 89
11. ‘शाह वली उल्लाह और उन का फ़लसफ़ा’ पृ० : 166, प्र० : हिन्द सागर अकादमी, लाहौर
12. ‘अलफुरक़ान’ बरेली—शाह वली उल्लाह नम्बर (द्वितीय संस्करण), पृ० : 158, वर्ष 1941

-----❖❖❖-----

अध्याय : 2

हिन्दू कौम का नबी (ईशान्दूत)

कृष्णा मेनन, आश्चर्य की मुद्रा में!

कहा जाता है कि श्री कृष्णा मेनन अपने लन्दन प्रवास के दिनों में एक दिन अपनी मित्र मंडली में बैठे हुए थे कि अचानक एक दोस्त ने उन्हें संबोधित करते हुए कहा :

“यह सामने बैठा हुआ तुम्हारा मित्र ‘यहूदी’ है। इस का कहना है कि इस के पास ईश्वर का एक ग्रन्थ है जिस का नाम ‘तौरेत’ है और यह ईश्वरीय ज्ञान का ग्रन्थ ह० मूसा अल० के माध्यम से दिया गया था।”

“मैं यह बात जानता हूं!” कृष्णा मेनन ने जवाब दिया। अब उसी मित्र ने एक दूसरे ईसाई मित्र की ओर संकेत करते हुए कहा—“यह व्यक्ति ‘ईसाई’ है और इस का कहना है कि इस के पास भी ईश्वर की एक किताब है जिसका नाम ‘इन्जील’ है और यह दिव्य ज्ञान की भेंट ईश्वर ने महात्मा ईसा मसीह के द्वारा प्रदान की थी।”

“मैं यह भी जानता हूं!” कृष्णा मेनन ने हल्की सी मुस्कुराहट के साथ कहा—मानो इन विश्वव्यापी तथ्यों को दोहराने पर उन्हें आश्चर्य हो रहा हो। लेकिन बोलने वाला पूरी गम्भीरता से बोल रहा था। उसने तीसरा विषय छेड़ते हुए, और एक मुसलमान दोस्त की ओर इशारा करते हुए कहा :

“यह हमारा मुसलमान दोस्त है और इस का कहना है कि इस के पास भी ईश्वर का एक ग्रन्थ है—‘कुरआन’, और ईश्वर ने यह ज्ञान जिस सत्पुरुष के माध्यम से दिया, उस का नाम ह० मोहम्मद सल्लू० है।”

“अरे भाई, मैं यह भी जानता हूं” कृष्णा मेनन ने आश्चर्य चकित होकर जवाब दिया।

“निस्सन्देह!” वही मित्र बोला—“हम और तुम यह सब बातें खूब जानते हैं, लेकिन मित्र! हम में से कोई यह नहीं जानता कि ‘वेद’ जिस को तुम ठीक उसी तरह ईश्वर का सबसे पहला, सबसे प्राचीन, सबसे श्रेष्ठ ज्ञान और वाणी मानते हो, उसे आदि-ग्रन्थ कहते हो उसको ईश्वर से ग्रहण करने तथा जनसाधारण तक पहुंचाने वाला सर्वप्रथम मानव-माध्यम आखिर कौन था?”

कहा जाता है कि पूरी सभा की ओर से इस बार प्रश्नवाचक मुस्कुराहट और आश्चर्य के सामने पहली बार कृष्णा मेनन सिर से पांव तक प्रश्न चिट्ठन बन गए। ५५ ऐसे चिन्तन के सन्नाटे में गुम हो गए जैसे पहली बार उन्हें यह एक ठोस सवाल महसूस हुआ हो। मानो पहली बार उन्हें अपने वैदिक विद्वानों के वर्तमान शास्त्रीय दृष्टिकोण में एक वास्तविक अन्तराल की अनुभूति हुई हो। तौरेत, इन्जील और कुरुआन के ईश्वर से मानव तक पहुंचने के माध्यम तो मालूम है, लेकिन यदि वेद देववाणी हैं तो इसे लाने वाला ईशदूत कौन था? यह घटना चाहे सच्ची हो या मात्र एक कहानी, इसमें शक नहीं है कि यह स्वाभाविक प्रश्न वैदिक धर्म के प्रत्येक अनुयायी के सीने में हजारों वर्षों से अन्दर ही अन्दर निरन्तर खटक रहा होगा।

ह० नूह अलै० की उम्मत (पन्थ) का नबी भी खोया हुआ है :

हिन्दू कौम, रामायण और महाभारत को मानवकृत रचनाएँ स्वीकार करती हैं, लेकिन वेदों के विषय में उन के विद्वानों का बहुसंख्यक मत है कि यह खुदा का कलाम (देववाणी) है। इसके बावजूद यह बताने में वे असमर्थ हैं कि वेद किस देवदूत के माध्यम से सासार में आए? अपने देवदूत को उन्होंने ‘दन्तकथाओं’ में खो दिया। विश्व की प्रत्येक धार्मिक जाति किसी न किसी व्यक्तित्व को अपने धार्मिक ग्रन्थ से सम्बन्धित मानती है; लेकिन हिन्दू जाति वह एक मात्र धार्मिक जाति है जिस का ‘वास्तविक ईशदूत’ खोया हुआ है। इस वास्तविकता को ध्यान में रखते हुए ‘बुखारी रासीफ’ की निम्नलिखित हडीस पर विचार करें।

“ह० अबू सईद रजि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया—क़्यामत के दिन ह० नूह अलै० को लाया जाएगा और उनसे पूछा जाएगा (कि उन्होंने अपनी उम्मत को अल्लाह के आदेश) पहुंचाए थे? वह अर्ज करेंगे : “बेशक हे मेरे प्रभु!” फिर ह० नूह अलै० की उम्मत से पूछा जाएगा कि क्या (नूह अलै० ने) तुम तक हमारे आदेश पहुंचाए थे? वे लोग हङ्कार करेंगे और कहेंगे—‘हमारे पास तो कोई भी डराने वाला नहीं आया था।’ और फिर (ह० नूह अलै० से) पूछा जाएगा—“तुम्हारे गवाह कौन है?” और वह कहेंगे—‘मेरे गवाह ह० मोहम्मद सल्ल० और उन की उम्मत के लोग हैं।’ और इस के बाद नबी सल्ल०

ने फ़रमाया—“तब तुम्हें पेश किया जाएगा और तुम यह गवाही दोगे कि (ह० नूह अलै० ने आदेश) पहुंचाए थे। ...फिर रसूलुल्लाह सल्ल० ने यह आयत पढ़ी—व कज़ालि—क जअलनाकुम उम—मतन व सतन लि—तकूनू शुहदा—अ अलन नासि व यकूनरसूलु अलैकुम शहीदा....”¹

अब जुरा विचार कीजिये! एक ओर तो हडीस से यह जात होता है कि ह० नूह अलै० की उम्मत अपने नबी को पहचानने से इनकार कर देगी, और दूसरी ओर हम यह जानते हैं कि समस्त धार्मिक कौमों में केवल हिन्दू कौम का नबी खोया हुआ है।

फिर सोचें—एक तरफ़ तो हम इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि हिन्दू कौम ह० मोहम्मद सल्ल० की उम्मत बनेगी और वर्तमान ‘उम्मते मोहम्मदी’ के लोग इस परिवर्तन का माध्यम बनेंगे, तथा दूसरी ओर हडीस से यह जात होता है कि ह० नूह अलै० की कौम के अपने नबी कों पहचानने से इनकार के बाद मोहम्मद सल्ल० की उम्मत यह गवाही देगी कि नूह अलै० ने अपनी कौम को ईश्वर के आदेश पहुंचाए थे—अर्थात गवाही देने वाले लोग ह० नूह अलै० की उम्मत को और उन से ह० नूह अलै० के सम्बन्ध को पहचानते होंगे। क्या यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण प्रतीत नहीं होता है कि वर्तमान हिन्दू कौम ह० नूह अलै० की उम्मत है?

‘हिन्दू’ ह० नूह अलै० की कौम है :

वैसे मी वैदिक धर्म विश्व के समस्त धर्मों में सर्वमान्य रूप से सब से प्राचीन धर्म है और ह० नूह अलै० दुनिया के सर्वप्रथम साहिते शरीअत (धर्म—नियमावली लागू करने वाले) रसूल थे।

लेकिन अभी विश्वास करने से पहले स्वयं वैदिक धर्म से मालूम करना भी आवश्यक है। अभी हम चाहे हिन्दू कौम के इस दावे को स्वीकार न करें कि वेद, ‘ईश्वर की वाणी’ हैं लेकिन यह तो देखें कि यह ग्रन्थ अपना ‘सन्देष्टा’ किसे बताते हैं? फ्रासीसी लेखक ड्यूबोइस (A.J.A. Dubois) जिसने वालीस वर्ष तक ‘हिन्दू धर्म’ और भारतीय सभ्यता का अध्ययन किया और हिन्दू धार्मिक रीति-रिवाजों पर आज तक की सब से प्रमाणित एवं विस्तीर्ण पुस्तक लिखी, उस ने अपनी पुस्तक (Hindu Manners, customs and ceremonies) जो मूल रूप से फ्रांसीसी भाषा में लिखी गई है, में जिन तथ्यों का वर्णन किया है, वे शायद पाठकों के आकर्षण का केन्द्र बनेंगे (अंग्रेजी से हिन्दी) “संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि एक महाविशिष्ट व्यक्तित्व जिससे हिन्दुओं को बड़ी श्रद्धा है और जिसे वे ‘महानूवू’ के नाम से जानते हैं, (बाढ़ की) दिभीषिका से एक नौका द्वारा बच निकले जिस में ‘सात मशहूर

ऋषि' सवार थे ...²

"... महानूदू दो शब्दों से भिलकर बना है 'महा' और 'नूदू' जो कि निस्सन्देह (ह०) नूह (अलै०) हैं। ..."³

"व्यावहारिक रूप से यह माना जाता है कि हिन्दुस्तान इस जल प्रलय के तुरन्त पश्चात आबाद हुआ था जिसने समस्त संसार को उजाड़ दिया था। ...⁴

"भारकण्डेय पुराण और भागवत में इस का बहुत स्पष्ट वर्णन है कि इस दुर्घटना में सात प्रसिद्ध तपस्ची ऋषियों के अतिरिक्त जिन की मैंने और भी अनेक स्थानों पर चर्चा की है, समस्त मानव जाति का सहार हो गया था। यह सात ऋषि एक नौका पर बैठकर विश्वस्तरीय विनाश से बच सके थे। इस नौका को स्वयं विष्णु (खुदा) चला रहा था। और एक महान व्यक्तित्व जो बच जाने वालों में था, वह 'मनु' का था, जिसको मैंने दूसरी जगहों पर सिद्ध किया है कि वह 'नूह' (अलै०) के अतिरिक्त कोई नहीं था। जहां तक मुझे मालूम है इन तमाम बहुदेवादी जातियों में किसी ने सैलाब को इतने विस्तार से वर्णित नहीं किया है और इस घटना का सविस्तार वर्णन (ह०) मूसा (अलै०) के (तौरेत में) उल्लिखित विवरणों से किसी कौम के लेखपत्रों में इतनी समानता नहीं रखता जितना कि इन हिन्दू पुस्तकों में है जिनका मैंने जिक्र किया है। यह उल्लेखनीय है कि यह गवाही हमें उस कौम में मिली है जिसके प्राचीन होने पर सब सहमत हैं। ..."⁵

ह० नूह अलै० और उन के 'जलप्रलय' की घटनाएं बहुत विस्तार के साथ भविष्य पुराण और मत्स्य पुराण में आई हैं जिनके दृष्टितं हम अगले अध्यायों में प्रस्तुत करेंगे।

'मनु' शब्द बहुत से हिन्दू धार्मिक विशाल व्यक्तित्वों के लिये इत्तेमाल हुआ है* लेकिन वेदों, पुराणों तथा अन्य धर्मग्रन्थों में सब से ज्यादा विस्तार से जिस मनु का वर्णन है, वह ह० नूह अलै० ही है। वेदों में ह० नूह अलै० का प्रसग 'मनु' के नाम से 75 बार आया है।

वेदों का अंग्रेज भाष्यकार गिरिफिथ वेद के एक मंत्र में आने वाले शब्द 'मनु'

* जैसे ह० आदम के लिये—बताया गया है कि मनु के बाएं भाग से शतरुगा अर्थात् ह० हव्या पैदा हुईं (रामचरित मानस, भाष्य हनुमान प्रसाद पोतादार, प्र०: गीता प्रेस गोरखपुर, एडी०: 15, पृ०: 154) — "हिन्दू मजहब की मालूमात-ख्वाजा हसन निजामी देहलवी, प्र०: हैंडब्लैर मशाइख—देहली, एडी०: 20, दिसम्बर 1927 पृ० 6)

की व्याख्या करते हुए लिखता है :

(अंग्रेजी से अनुवाद) "मनु (नूह) लाजवाब व्यक्तित्व और मानव जाति के प्रतिनिधि थे। समस्त मानव जाति के पिता (सैलाब के बाद दूसरे आदम की हैसियत से और पहली धर्म नियमावली के आरम्भ करने वाले थे)।"^{*}

पुराणों और वेदों में ह० नूह अलै० के विषय में सविस्तार वर्णन के अतिरिक्त इस कौम के ह० नूह अलै० से सबद्ध होने का एक अन्य महत्वपूर्ण प्रमाण हम प्रस्तुत कर रहे हैं।

अधिकांश कौमों के अपने नवी से सम्बन्ध का एक प्रमाण यह भी होता है कि वे उन के युग से अपना वर्ष या सन् गिनते हैं जैसे मुसलमान अपना 'सने हिज्री' ह० मोहम्मद सल्ल० की हिजरत से गिनते हैं और ईसाई अपना वर्ष ह० ईसा अलै० के स्वर्गवास से गिनते हैं। इसी प्रकार हिन्दू जाति अपनी महत्वपूर्ण घटनाओं के समय अवधि की गणना ह० नूह अलै० के युग से करती है। इस के लिये वे ह० नूह अलै० के सैलाब से हर साठ वर्ष के मध्यान्तर को एक इकाई या एक वर्ष मानते हैं और इन वर्षों से अपनी नहत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं की समय अवधि भापते हैं। 'ड्यूबाइस' अपनी 'उपरोक्त उल्लिखित' किताब में लिखता है :

(अंग्रेजी से अनुवाद) "हिन्दूओं का वर्तमान युग—'कलियुग' लगभग उसी काल से आरम्भ होता है जो मनु के सैलाब (महा जल प्लावन) का युग है। यह एक ऐसी घटना है जिस को वे यादगार समझते हैं और उन के लेखक इसे 'जल प्लावन' या पानी की बाढ़ का नाम देते हुए इस की स्पष्ट रूप से चर्चा करते हैं। इस वर्तमान युग की तिथि निश्चित रूप से जल प्लावन की घटना से आरम्भ होती है। ... और आश्चर्यजनक बात यह है कि हिन्दू अपने जीवन की सभी महत्वपूर्ण एवं प्रसिद्ध घटनाओं व नित्य कर्मों और अपने समस्त जन स्मारकों की तिथि या सन को एक सैलाब के अन्त से गिनते हैं ... सैलाब के बाद हर साठ वर्ष का एक वर्ष मान कर इन वर्षों से अपनी समस्त निजी और सार्वजनिक घटनाओं की समय अवधि को भापते हैं।"⁶

हिन्दू कौम का ह० नूह अलै० से विशेष सम्बन्ध होने का एक प्रमाण यह भी है कि उसके धार्मिक ग्रन्थों में 'मनु-स्मृति' का एक विशिष्ट स्थान है।

हिन्दूओं के धार्मिक इतिहास और धार्मिक ग्रन्थों का ह० नूह अलै० से विलक्षण

* गिरिफिथ की यह टिप्पणी ऋग्वेद के मन्त्र (1-13-4) के सन्दर्भ में है। कोष्ठक के शब्द लेखक के अपने हैं।

सम्बन्ध होने की कुछ मिसालें यहां प्रस्तुत की गईं। इस अध्याय के आरम्भ में ह० नूह अलै० की कौम से सम्बन्धित 'बुखारी शरीफ' की जो हडीस आ चुकी है, उसमें हम ने देखा कि नूह अलै० की उम्मत (पथ) उनको अपने नवी के रूप में नहीं पहचानती होगी और हम यह भी जान चुके हैं कि नूह अलै० से घनिष्ठ सम्बन्ध होने के बावजूद वर्तमान हिन्दू कौम कुल मिलाकर उनको नहीं जानती है। इसी हडीस से हमें यह भी ज्ञात होता है कि क़्यामत के दिन ह० मोहम्मद सल्ल० की उम्मत, ह० नूह अलै० के लिये उनकी अपनी कौम में संदेश पहुंचाने की गवाह बनेगी। और हमें यह भी मालूम है कि दूसरी हडीसों में भी इस कौम को ह० मोहम्मद सल्ल० की उम्मत बनने का संकेत दिया गया है। यह स्पष्ट है कि इन तमाम वास्तविकताओं के उजागर होने के बाद और ह० मोहम्मद सल्ल० की उम्मत में शामिल होने के बाद वही इस बात की गवाही देंगे।

लेकिन इतने प्रमाणों के बाद भी अभी अन्तिम और प्रमाणित गवाही शेष है। आइये, पवित्र क़ुरआन में देखें:

क़ुरआन की गवाही :

विश्व की समस्त जातियों को दो वर्गों में विभाजित किया गया है— सामी जातियां (Semitic Races) और गैर सामी जातियां (Non Semitic Races)। गैर सामी जातियों में 'आर्य' आते हैं तथा सामी जातियों में 'येहूदी', 'ईसाई' एवं अरब प्रायद्विष के 'बनी इस्माईल'।[★] दुनिया के दो जातियों में विभाजित होने और उन में से एक का सम्बन्ध ह० नूह अलै० से होने की पुष्टि क़ुरआन भी करता है।

"यह वे लोग हैं जिन पर अल्लाह ने कृपा की है ये सब ईशदूत थे और आदम की सन्तान से थे, और कुछ उन की सन्तान से थे जिन्हें हम ने नूह के साथ (नौका में) सवार किया और कुछ इब्राहीम व याकूब की सन्तान में से हैं, और यह सब उन लोगों में से थे जिन को हमने मार्ग दिखाया और हम ने उन को मक़बूल (चयनित) बनाया।

— (कु० : 19-58)

दिव्य क़ुरआन की इस आयत से पता चला कि ह० आदम अलै० के वंश में से ह० नूह अलै० के साथियों का वंश अलग है और ह० इब्राहीम अलै० व याकूब अलै० का वंश अर्थात् 'बनी इस्माईल' और 'बनी इस्साईल' दोनों अलग-अलग नस्ले हैं। हम जानते हैं कि 'बनी इस्माईल' व 'बनी इस्साईल' सामी वंश हैं। स्पष्ट है कि नूह अलै० के साथियों का वंश गैर सामी या 'आर्य' होना चाहिये। आर्य जाति संसार के बहुत से देशों के अतिरिक्त भारत के अधिकांश हिस्से में आवाद है।

* ईशदूत ह० इस्माईल अलै० का वंश

यहां एक प्रश्न यह उठ सकता है कि हम ह० नूह अलै० के साथियों के वंश को उन की 'उम्मत' कैसे कह रहे हैं? इस का उत्तर यह है कि किसी रसूल की उम्मत कहलाने के लिये उस के वंश से होना या न होना ज़रूरी नहीं है। 'मुसलमान' ह० मोहम्मद सल्ल० की उम्मत है यद्यपि उन में से अधिकांश 'उन' की नस्ल से नहीं हैं। मुसलमान उन की उम्मत है क्यों कि वे उन को अपना रसूल स्वीकार करते हैं। ह० मूसा अलै० की उम्मत में से जिन्होंने ह० ईसा अलै० के ईशदूत होने को स्वीकार किया, वे फिर ह० ईसा अलै० की उम्मत कहलाए। ह० नूह अलै० के साथ उन के वही साथी तूफान से बचा लिये गए थे जो उन पर ईमान लाए थे। वे उन के उम्मती (अनुयायी) थे। उनके साथियों के वंश या आर्यवंश में से वर्तमान हिन्दू धार्मिक कौम चूंकि ह० नूह अलै० के बाद आने वाले दूसरे ईशदूतों को अपना ईशदूत स्वीकार नहीं करती है, इसलिये हम ने अपने लेखों में उन को ह० नूह अलै० की उम्मत या कौम कहा है। यह एक अलग बात है कि ह० नूह अलै० को भी उन की यथार्थ पृष्ठभूमि में हिन्दू नहीं जानते हैं जिस की अभिव्यक्ति हम इन शब्दों में करते हैं कि 'उन्होंने अपने ईशदूत को दन्त कथाओं में गुम कर दिया है।'

सन्दर्भ सूची अध्याय : 2

1. बुखारी , स०: मिशकात, अ०: हिसाब वलकिसास वल मीजान
2. Hindu Manners, customs & ceremonies by Dubois, P.86
3. - do - P.48
4. - do - P.100
5. - do - P.416-417
6. - do - P.416-417

-----♦♦♦-----

"ह० अनस रज़ि० से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा: मेरे समुदाय का हाल वर्षा के सदृश है जिसके बारे में नहीं कहा जा सकता कि उसका प्रथम अच्छा है या अन्तिम अच्छा है।"

-(तिरमिज़ी)

क़ुरआन में हिन्दू कौम

कहा उल्लैख्न

कुरआन पर आरोप :

बहुत से हिन्दू सज्जन जो इस्लाम की शिक्षाओं से प्रभावित हैं और कुरआन की महिमा को स्वीकार भी करते हैं, उनको यह शिकायत करते हुए हम ने सुना है कि कुरआन में अन्य जातियों का प्रसंग तो है लेकिन हमारा जिक्र कुरआन में कही नहीं है। उन को इस शिकायत का उत्तर हम तरह-तरह की बचाव की दलीलों के रूप में देने का प्रयास करते हैं मानो हम स्वयं भी अनजाने में कुरआन पर लगे इस आरोप का समर्थन कर रहे हों।

श्री गंगा प्रसाद उपाध्याय की पुस्तक-'इस्लाम के दीपक' से एक दृष्टांत हन यहाँ उद्धृत कर रहे हैं :

“कुरआन शारीफ में कई जगहों पर तो यह कहा है कि ईश्वर विभिन्न जातियों के मार्गदर्शन के लिये विभिन्न ईशादूतों को भेजता है लेकिन विशेष रूप से किसी का प्रसंग नहीं है। तमाशे की बात यह है कि जो आदिम जातियाँ हैं, और जिन की सम्यता का इतिहास हजारों वर्ष पुराना है; जैसे हिन्दुस्तान, चीन आदि इन का कुछ भी संकेत तक नहीं! मानो इस इलाहाम (ईश्वरीय प्रेरणा) से जिस को कुरआन या पवित्र वाणी के नाम से पुकारा जाता है, सामान्य मानव समूहों का कोई सम्बन्ध है ही नहीं ...”¹

बेशक! पवित्र कुरआन के पहले संबोधित अरब के निवासी थे, लेकिन यदि कुरआन केवल चौदह सौ वर्ष पुरानी किताब नहीं है बल्कि सृष्टि के अन्तिम क्षण तक घटित होने वाले समस्त घटना चक्रों की इस में चर्चा है, तो यह कैरे सम्भव है कि उस कौम द्वा चर्चा न हो जो विश्व की प्राचीनतम धार्मिक कौम है और कुरआन के अद्दरण से हजारों वर्ष पूर्व से आज तक बहुत बड़ी सख्त्या में दुनिया में मौजूद है। यह कुरआन पर एक आरोप है। क्या हम ने कभी कुरआन में हिन्दू जाति का नाम या

परिचय तलाश करने की कोशिश की है? ठीक है, कुरआन में ‘हिन्दू’ शब्द कहीं नहीं मिलता; लेकिन क्या ‘ईसाई’ या ‘क्रिश्चियन’ शब्द मिलता है? क्या हम यह समझ लें कि ईसाइयों का भी कुरआन में जिक्र नहीं है! कुरआन में ईसाइयों के लिये नसारा शब्द का प्रयोग किया है। दुनिया का कोई ईसाई अपने आप को नसारा नहीं कहता लेकिन हम जानते हैं कि नसारा, कुरआन में उन लोगों को कहा गया है जो आज अपने आप को ईसाई कहते हैं। हो सकता है कि जो कौम अपने आप को वर्तमान में हिन्दू कहती है, उसे किसी और नाम से दिव्य कुरआन ने संबोधित किया हो।

कुरआन में सब कौमों के नामों पर शोध कार्य ही नहीं हुआ :

पवित्र कुरआन में ऐसी बहुत सी कौमों का वृत्तांत मिलता है, जिन्हे शास्त्रवक्ता (मुफस्सिरीन) आज तक निश्चित नहीं कर सके हैं जैसे अस्हाबुर्रस और कौमे तुब्बा विशेषतया साबिर्इन की चर्चा तो जगह-जगह पवित्र कुरआन में मोमिनीन (मुस्लिमों), यहूदियों और नसारा (ईसाइयों) के साथ इस रूप में की गई है मानो वे एक बहुत बड़ी कौम हों या विश्व के एकाकी समुदायों में से एक हों। उदाहरण के लिये:

“निस्सन्देह जो लोग ‘मोमिन’ हैं और जो ‘यहूदी’ हैं और ‘नसारा’ हैं और ‘साबिर्इन’ हैं, उन में से जो अल्लाह पर और अन्तिम दिन (महाप्रलय) पर ईमान लाएं और अनुकूल कर्म करें तो उन के रब के पास अज (प्रतिदान) है। न उन पर कोई भय आएगा और न वे दुखी होंगे।” — (कु० : 2-62)

इस आयत में साबिर्इन का प्रसंग, मुसलमानों, यहूदियों और ईसाइयों के साथ आया है। यही नहीं बल्कि पवित्र कुरआन में जहां जहां साबिर्इन का वृत्तांत है, इन्हीं बड़ी बड़ी जातियों के साथ है। इतनी महत्वपूर्ण जाति जिस को कुरआन ने दुनिया की बड़ी बड़ी कौमों के समकक्ष रखा हो, उस की हम आज तक खोज न कर सके; यद्यपि उन्हें मुसलमानों, ईसाइयों तथा यहूदियों के समान वर्तमान और भविष्य दोनों में विश्व की प्रमुख धार्मिक जातियों में से एक होना चाहिये। यदि हम विचार करें तो तलाश का धेरा बहुत सीमित हो जाएगा। मुसलमानों, ईसाइयों और यहूदियों के अतिरिक्त दुनिया में कितनी बड़ी-बड़ी धार्मिक कौमें और हैं? उन्हीं में से किसी एक को ‘साबिर्इन’ होना चाहिये। अब जरा एक दूसरे कोण से तलाश करें।

पवित्र कुरआन में जिन उच्चोत्साही पैगम्बरों का प्रसंग विशेष महत्व के साथ बार-बार आया है, वे ह० नूह, ह० इबाहीम*, ह० मूसा, ह० ईसा (इन सब पर शान्ति हो) और अन्तिम सन्देष्टा ह० मोहम्मद सल्ल० हैं। उदाहरण के लिये:

* ह० इबाहीम अलै० जिन्हे भविष्य पुराण में ‘अविराम’ कहा गया है।

“और जब हम ने नवियों से संकल्प लिया और (हे मोहम्मद) तुम से और नूह, इबराहीम और मरयम के पुत्र ईसा से और हमने उन से कहा बचन लिया।”

— (कु० : 33-7)

“अल्लाह ने तुम लोगों के लिये वही दीन (धर्म) निर्धारित किया जिस का उस ने नूह को हुक्म दिया था और जिस की हम ने आप के पास वस्त्य की है और जिस का हम ने इबराहीम और मूसा और ईसा को भी हुक्म दिया था...”

— (कु० : 42-13)

हम देखते हैं कि पवित्र वाणी में जिन बड़ी-बड़ी कौमों का प्रसंग एक साथ आया है वे मुसलमान, ईसाई, यहूदी और साबिईन हैं और जिन उलूलउलअज़म (उच्चोत्साही) ईशादूतों की चर्चा जगह-जगह एक साथ की गई है, वे ह० मोहम्मद सल्ल०, ह० ईसा अलै०, ह० मूसा अलै० और ह० नूह अलै० हैं। इन में से मुसलमान ह० मोहम्मद सल्ल० को अपना अन्तिम ईशादूत स्वीकार करते हैं, ईसाई ह० ईसा अलै० से और यहूदी ह० मूसा अलै० से सम्बन्धित कौम है। लेकिन ‘साबिईन’? हम नहीं जानते।

फिर सोचिये! ह० मोहम्मद सल्ल० के उम्मती मुसलमान हैं, ह० ईसा अलै० के मानने वाले ईसाई हैं, ह० मूसा अलै० की कौम यहूदी है और ह० नूह अलै० की कौम? किसी को मालूम नहीं। कहीं ऐसा तो नहीं कि उन्हीं की कौम को साबिईन कहा गया हो?*

ह० नूह अलै० की कौम ही ‘साबिईन’ हैं!

इन्हे कसीर की तफसीर (भाष्य) में अब्दुर्रहमान बिन जैद का यह कथन अंकित है कि ‘साबिईन’ अपने आप को ह० नूह अलै० के धर्म पर बताते थे।

साबिईन के बारे में ह० उमर रजि०, इमाम अबू हनीफा रह०, इमाम इस्साक, अबू जनाद, करतबी, अल्लामा इन्हे तीमिया, इमाम गजाली रह०, इमाम रागिब, मआलिम, इन्हे जरीर, इन्हे कसीर, इमाम सुहेली, अल्लामा शौकानी, काजी बैजाबी, अब्दुल माजिद दर्याबादी और सय्यद सुलेमान नदवी के विभिन्न कथनों को अपनी टीका-टिप्पणी के साथ हम निम्नलिखित पंक्तियों में इकट्ठा कर रहे हैं:

□ इराक के उस स्थान के रहने वाले लोग थे जहां इब्राहीम अलै० का जन्म हुआ था। (ह० इबराहीम अलै० के जन्म स्थान ‘उर’ और भारतीय सभ्यताओं—‘हड्पा’

* ह० इबराहीम अलै० की कौम में यहूदी, ईसाई और मुसलमान सब शामिल हैं क्योंकि सब उन पर ईमान लाते हैं और संसार में कोई ऐसी जाति नहीं है जो ह० इब्राहीम अलै० पर तो ईमान लाए और उनके बाद आने वाले किसी और नवी पर ईमान न लाती हो।

एवं ‘मोहन जोदाढ़ो’ के खंडहरों की खुदाई से यह बात सिद्ध हो चुकी है कि दोनों सभ्यताओं के बीच अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध थे)

- ‘पूर्व ग्रन्थ वाले’ थे (यह तो कुरआन में साबिईन के वृतांत से भी अन्दाज़ा होता है कि उन का जिक्र जगह-जगह ‘ईश्वरीय ग्रन्थ’ रखने वाली कौमों के साथ आया है। साबिईन के पास ह० नूह अलै० कौन से ग्रन्थ लाए, इस पर हम आगे बहस करेंगे।)
- ‘ला इला-ह इल्लल्लाह’ कहते थे लेकिन मुशरिक (बहुदेववादी) थे—(इस की चर्चा हम आगे करेंगे कि हिन्दू धर्म का कालिमा (ब्रह्मसूत्र) भी लाइला-ह इल्लल्लाह है।)
- यमन की दिशा में मुह करके नमाज पढ़ते थे (यह बात भी सभ्यताओं के अध्ययन से सिद्ध हो चुकी है कि भारतीय मूल के लोग बहुत बड़ी संख्या में यमन में आबाद थे, वहां आज भी ‘इयाम’ और ‘हिन्द’ नामक किले मौजूद हैं।)
- ‘साबिईन’—अजमी (गैर अरबी) नाम है, अरबी नहीं।
- फ़रिश्तों (देवताओं) को पूजने वाली कौम थी। (हिन्दू धर्म में बहुत से देवी-देवताओं की कल्पना वास्तव में फ़रिश्तों की कल्पना है जिन की वे पूजा करते हैं।)
- नक्त्रों तथा ज्योतिष विद्या में अत्यधिक विश्वास रखते थे। (संसार में शायद किसी कौम को ज्योतिष विद्या में इतनी दिलचस्पी नहीं रही है और ना है जितनी भारतीय हिन्दू जाति को है।)
- सितारों की पूजा करने वाले (अनेक नक्त्रों एवं ग्रहों की पूजा का प्रावधान वर्तमान हिन्दू मत का एक अंग है।)
- आग की पूजा करने वाले (अग्नि की पूजा-हवन, विवाह आदि में हिन्दू कौम में प्रचलित है।)
- जरतुश्त (पारसी), ईरानी वंश के (यह लोग भी आग के पुजारी थे और हिन्दू भी हैं। यह भी आर्य थे और उधर से ही आर्य हिन्दुस्तान में आए।)
- धार्मिक रूप से कई बार स्नान करने वाले। (स्नान का धार्मिक महत्व सब से अधिक हिन्दू मत ही में है। उन की कोई पूजा स्नान के बिना सम्पूर्ण नहीं होती। इस के अतिरिक्त विभिन्न अवसरों पर सामूहिक स्नान भी होते हैं।)

- एक धर्म से निकल कर दूसरे धर्म में प्रविष्ट होने वाले (यही हिन्दू कौम मूल सनातन धर्म (इस्लाम) को स्वीकार करेगी, यह हम पिछले अध्याय में सिद्ध कर चुके हैं।)
- आकर्षित होने और झुकने वाले (कौम के परिवर्तन के लिये हडीसों में इसी कौम की ओर संकेत है, यह पिछले अध्याय में आ चुका है।)

‘साबिईन’ के विषय में हमारे टीकाकारों और विद्वानों की इतनी विभिन्न मान्यताएं होते हुए भी यह आश्चर्य की बात है कि यह सब की सब वर्तमान हिन्दू जाति पर लागू होती हैं। विभिन्न व्याख्याकारों ने समय—समय पर अलग—अलग जातियों को ‘साबिईन’ कहा है, लेकिन इस युग में यह सब विशिष्टताएं हिन्दू कौम में एक ही जगह पाई जाती हैं। हो सकता है कि उपरोक्त उल्लिखित विशिष्टताएं या धर्म विश्वास रखने वाले समस्त समूह अतीत में प्रवास करके भारत में एकत्रित हो चुके हैं। हमारी समझ से अब इस बात में किसी सन्देह की गुंजाइश नहीं है कि साबिईन कौन हैं। यह हो सकता है कि अतीत में साबिईन की परिभाषा विभिन्न गिराहों पर लागू होती हो लेकिन कम से कम वर्तमान युग में साबिईन से अभिप्राय कौन सी कौम है, यह सर्वविदित ही है।

बात अधूरी रह जाएगी यदि हम यहां यह उल्लेख न करें कि ह० शाह वली-उल्लाह रह० भी साबिईन को आर्य वंश ही मानते थे। प्रमाण के रूप में निम्नलिखित मिसालें देखिये :

(उर्दू से अनुवाद) “... मसीह अलै० अवश्य ऐसे बुजुर्ग थे जिन्होंने इस शिक्षा को गैर इसाइली लोगों में अन्य शब्दों में साबिईन में या आर्य जातियों में भी पहुंचाने की कोशिश की।”²

(उर्दू से अनुवाद) “... ईरान उस युग में आर्य अर्थात् साबी जातियों का केन्द्र बन चुका था। इस से पहले हिन्दुस्तान इन का केन्द्रस्थल था।”³

मौ० सत्यद सुलेमान नदवी की गवाही भी देख लीजिये कि वह साबिईन को ‘प्राचीन भारतवासी’ मानते थे।

(उर्दू से अनुवाद) “... मगज़ूब (कोप के पात्र) और जाल (पथश्रष्ट) जिस तरह ‘अहले किताब’ (पूर्व ग्रन्थ वाले) हैं, अपनी प्रकृति के आधार पर वही स्थिति ‘शुर्खे अहले किताब’ (जिन पर अहले किताब होने का सन्देह हो) की भी हैं जिन के दो समूहों से कुरआन ने हम को परिचित कराया है और वह मजूस

(अनिपूजक) तथा साबिईन हैं जिन में प्राचीन ईरान तथा प्राचीन भारत के निवासी भी सम्भिलित हैं। ...”⁴

अन्त में यह भी जान लें कि एक बहुत ही अल्पसंख्या का सम्प्रदाय ईराक् और सीरिया में पाया जाता है जो अपने आप को ‘सुबी’ कहता है। यह लोग ह० यहया अलै० (बाइबिल के अनुसार यूहन्ना नवी) के बाद किसी नदी को नहीं मानते। ह० ईसा अलै० को भी नहीं मानते। ह० यहया अलै० से पूर्व आने वाले ईशदूतों को मानते हैं। इस बात की सम्भावना है कि कुरआन ने इन को भी ‘साबिईन’ कहा हो। लेकिन सत्यद सुलेमान नदवी रह० जैसे शोधकर्ता और मौ० उबैदुल्लाह सिन्धी जैसे विश्व भ्रमण करने वाले दृष्टा ने ‘साबिईन’ भारतीय वंश के लोगों को ही माना है। यद्यपि इन दोनों महानुभावों को ‘सुबी’ सम्प्रदाय के विषय में अवश्य जानकारी रही होगी। इस के अतिरिक्त ‘सुबी’ सम्प्रदाय में ‘अहले किताब’ होने के अतिरिक्त अन्य ऐसी कोई विशिष्टता नहीं पाई जाती जिस को मुफ़्सिरिन ने साबिईन से सम्बन्धित किया हो तथा जिन विशिष्टताओं का इसी अध्याय में उल्लेख किया गया है।

हमारे विचार में कुरआन के पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग चूंकि कभी—कभी एक ही समय में भिन्न—भिन्न गिरोहों के लिये और कभी—कभी विभिन्न गुणों में अलग—अलग गिरोहों के लिये हुआ है, इसलिये यह मुमुक्षु है कि इस ‘सुबी’ सम्प्रदाय पर भी कुरआनी पारिभाषिक शब्द ‘साबिईन’ लागू होता हो, लेकिन हिन्दुस्तानी धार्मिक जाति का साबिईन की परिभाषा में आना सन्देह से परे है।

सन्दर्भ सूची अध्याय : 3

1. ‘इस्लाम के दीपक’— ल०: श्री गंगा प्रसाद उपाध्याय, प्र०: ट्रैक्ट विभाग—आर्यसमाज चौक—प्रयाग, वर्ष : 1981
2. पत्रिका—‘अलफुरकान’—बरेली—शाह वली उल्लाह नमवर, पृ०: 304
3. पत्रिका—‘अलफुरकान’—बरेली—शाह वली उल्लाह नमवर, ल०: मौ० उबैदुल्लाह सिन्धी, पृ०: 310
4. अध्यक्षीय भाषण—मौ० सत्यद सुलेमान नदवी रह०, वार्षिक सम्मेलन—जगीयते उ—लमा—बम्बई फॅरवरी 1949, सं०: ‘हुक्मते इलाहिया और उ—लमाए मुफ़्सिरिन’, संकलन: अद्वौमोहम्मद रामनगरी, प०: 214, प्र०: मकतबा—निशाते—सानिया, हैदराबाद—1946

-----❖❖❖-----

“और जिसने मेरी याद से मुंह मोड़ा उसका जीवन संकीर्ण हो गया और महाप्रलय के दिन हम उसे अन्धा उठाएंगे।”

—(कु०: 20-124)



सम्पत्ता और आदिकृतीन सम्बन्धि

धार्मिक प्रवृत्तियों एवं सम्बन्धों का निरीक्षण आवश्यक है :

अरबों के आध्यात्मिक विनाश के बाद आज हम किस युग में जी रहे हैं, इस का विश्लेषण हमारे लिये नितांत आवश्यक है। एक कौम चौदह सौ वर्ष पूर्व अरब देश में परिवर्तित हुई थी, और अब दूसरी भारत में सत्धर्म पर लौटी। दोनों की धार्मिक प्रवृत्तियों और बौद्धिक विकास की तुलना करना अत्यन्त आवश्यक है। फिर हम यह भी देखेंगे कि वर्तमान हिन्दू मत—मतान्तर तथा इस्लाम में कौन—कौन से मूल्य समान हैं? और यह भी कुछ कम महत्वपूर्ण नहीं कि हम अतीत के अरब व हिन्दू के सामाजिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक एवं आध्यात्मिक सम्बन्धों का अवलोकन करें क्योंकि जिस कौम को हमें सत्धर्म का निमन्त्रण देना है, उसे पहले हर पहलू से समझना ज़रूरी है। तो आइये पहले मक्के के मुशरिकीन (बहुदेवादियों) और वर्तमान हिन्दू कौम की तुलना करें।

आश्चर्यजनक समानता :

रसूले पाक सल्ल० (पवित्र देवदूत) की एक हीस है—“इस्लाम का प्रारम्भ अजनबी होने की दशा में हुआ और फिर वह इसी प्रकार अजनबी होने की ओर लौट जाएगा जैसा कि आरम्भ में था। बस शुभ—सूचना है अजनबियों के लिये।...”¹

क्या आज हम इस्लाम के अजनबी होने के उसी दौर से नहीं गुजर रहे हैं जिस से कि रसूले खुदा सल्ल० और उन पर प्राण न्यौछावर करने वाले सहबी (सत्संगी) मक्की दौर में गुज़रे थे।

वे सैकड़ों बुतों की पूजा करते थे, यह कौम हजारों मूर्तियों की पुजारी है। उस समय से आज तक कोई अन्य जाति इतिहास में ऐसी नहीं मिलती जो सैकड़ों हजारों बुतों की पूजा करती हो।

- वे अपनी बेटियों को जीवित दफन कर दिया करते थे, यह अपनी नवविवाहित महिलाओं को जिन्दा जला रहे हैं तथा राजस्थान के कुछ क्षेत्रों में आज भी बेटियों की पैदा होते ही हत्या कर दी जाती है।
- वे रसूले खुदा सल्ल० के पास परस्पर समझौतों के सूत्र लाते थे कि तुम हमारे बुतों को बुरा न कहो, हम तुम्हारे खुदा को स्वीकार कर लेते हैं—इस कौम के लोग भी समय—समय पर ऐसे फ़ारसूले हमारे सामने पेश करते हैं कि हर एक धर्म की अच्छी बातें लेकर भानवता के धर्म को मानो। विश्व के किसी अन्य धर्म के अनुयायी, अनीश्वरवादी या साम्यवादी ऐसा नहीं कहते। वे केवल अपने पद्धति को अच्छा कहते हैं।
- उन का भी एक समुदाय ‘काबे’ का नग्नावस्था में तवाफ़ (परिक्रमा) करता था, इन के भी कुछ समुदाय नंगे होकर अपनी पूजा करते हैं।
- उन के ग्रन्थ खोए हुए थे (इब्राहीम अलै० के सहीफों का कहीं पता न था), इन का भी इशादूत खोया हुआ है। (वेदों को यह ईश्वर की वाणी कहते हैं, लेकिन यह किस पर अवतरित है इह नहीं मालूम)

कैसी आश्चर्यजनक समानता है इन दोनों कौमों की धार्मिक प्रवृत्तियों एवं रीति-प्रणालियों में, जिन के बीच आज हम हैं और वे जिन के बीच ह० मोहम्मद सल्ल० को मक्की दौर में भेजा गया था।

जिस प्रकार मक्के के मुशरिक (निश्रक) रसूलुल्लाह सल्ल० के शुभागमन के समय धर्म विश्वासों के बिगाड़ की चरम सीमा पर पहुंच गए थे, तोक उसी तरह वर्तमान हिन्दू कौम स्वीकृत मतों के विकार की आखिरी हद तक पहुंच चुकी है। इतिहास के स्वयं को दोहराने और इस कौम को तब्दीली के लिये चुने जाने पर हैरत नहीं होना चाहिये। मक्कावासियों के इस्लाम में प्रविष्ट होने से कुछ वर्ष पहले तक कोई इस की कल्पना भी नहीं कर सकता था कि इतना बड़ा चमत्कार हो जाएगा। केवल सर्वशक्तिमान अल्लाह के वादों पर रसूल सल्ल० के वफ़ादारों को अटल विश्वास था और इतिहास ने देखा कि वह चमत्कार होकर रहा।

यद्यपि वर्तमान परिवेश में यह बात असम्भव सी प्रतीत होती है लेकिन हम अल्लाह और उस के रसूल सल्ल० की भविष्यवाणियों में पूरी आस्था रखते हैं।

हिन्दुओं और मुसलमानों के समान जीवन—मूल्य :

हिन्दू विश्व की सब से ‘पहली शरीअत’ (धर्म-नियमावली) वाली कौम है और

मुसलमान 'आखरी शरीअत' वाली कौम है। इन दोनों कौमों को ईश्वर की तत्त्वदर्शिता ने एक ही देश भारत में इकट्ठा कर दिया है।

भारत के सभी बड़े मन्दिर, मस्जिदों के समान पूर्व-पश्चिम दिशा में अर्थात किलारु (काबे की ओर मुंह करके) निर्मित हुए हैं। 'ड्यूबाइस' अपनी पुस्तक में लिखता है :

(अंग्रेजी से अनुवाद) "बड़े-बड़े मन्दिरों की निर्माण शैली और ढांचा चाहे वे नए हों या पुराने, हर जगह बिलकुल एक और समान है ... प्रवेश का मुख्यद्वार पूर्व की ओर खुलता है और यह एक ऐसी विशेषता है जिस का पूरा ध्यान उन के तमाम मन्दिरों और पूजा स्थलों में रखा गया है, चाहें वे बड़े हों या छोटे..."²

मुसलमानों को तो मस्जिदों के पूर्व-पश्चिम दिशा में बनाने की वजह मालूम है लेकिन हिन्दू नहीं जानते कि उन्होंने अपने मन्दिर काबे की दिशा में क्यों निर्मित किये हैं? इस विषय में कई तरह के स्पष्टीकरण देने की कोशिश की जाती है, लेकिन सही ज्ञान किसी को भी नहीं है। कहीं ऐसा हिन्दुओं के काबे से आदिकालीन सम्बन्ध की वजह से तो नहीं है जिसे आज वे भूल गए हैं और अब मात्र परम्परा ही बाकी रह गई है जब कि वास्तविकता कहीं खोई हुई है।

- हिन्दुओं की विता अग्निदाह के समय उत्तर-दक्षिण की दिशा में रखी जाती है और यही मुसलमानों की कबरों का रुख है।
- मुसलमान हज्ज के अवसर पर जो लिबास (अहराम) पहनते हैं, वह दो अद्वितीय सिली हुई चादरों पर आधारित होता है। एक चादर तहबन्द के रूप में बांधी और दूसरी ऊपर से ओढ़ ली जाती है। हिन्दू भी तीर्थ के अवसर पर हजारों साल पहले से यही पहनावा इस्तेमाल करते चले आ रहे हैं, बल्कि यह वस्त्र उन के यहाँ इतने पवित्र माने गये हैं कि इस का बदला हुआ रूप सामान्य जीवन में पुरुषों की धोती और महिलाओं की साड़ी में नज़र आता है।
- हज्ज व उमरे के अवसर पर मुसलमानों के लिये बाल कतरवाना आवश्यक और मुंडवाना श्रेष्ठ माना गया है। हिन्दुओं में हजारों वर्ष से तीर्थ के अवसर पर सिर मुंडवाने की परम्परा चली आ रही है।
- मुसलमान हज्ज या उमरे के अवसर पर जब अहराम की हालत में होते हैं तो उन के मर्दों को जूते या ऐसे चप्पल पहनने की अनुमति नहीं होती जिससे पांव का ऊपरी भाग ढक जाए। वर्तमान में हवाई चप्पल इस उद्देश्य के लिये

इस्तेमाल किये जाते हैं ताकि चलने में कठिनाई भी न हो और पांव के ऊपरी भाग पर केवल दो पतली पट्टियाँ रहें। हिन्दू हमेशा से तीर्थ के अवसर पर लकड़ी की ऐसी खड़ाव पहनते आ रहे हैं जिस के ऊपर कोई पट्टी नहीं होती बिल्कुल सिर्फ लकड़ी का खंटी नुमा अंगूठा होता है।

- मुसलमान अकीके के अवसर पर बच्चे का नाम रखते हैं और उस के सर के बाल मुंडवाते हैं। हिन्दुओं में पहले से ही बच्चों के 'नामकरण संस्कार' के अवसर पर शीशानुड़न की प्रथा चली आ रही है।

क्या आप यह कल्पना भी कर सकते हैं कि रसूल खुदा सल्ल० ने चौदह सौ ८४ पहले यह परम्पराएं हिन्दू मत से उधार ली थीं, नज़ जो विल्लाह! (हम अल्लाह से पनाह मांगते हैं)। हकीक़त यह है कि इस कौम का काबे से पुराना सम्बन्ध है और यह दुनिया की एक मात्र धार्मिक कौम है जिसने आज तक अपनी परम्पराओं को सांकेतिक रूप में भी बाकी रखा है। अगर ह० नूह अलै० ने अपनी कौम को काबे से सम्बद्धित यह परम्पराएं दी थीं तो ह० मूसा अलै० तथा ह० ईसा अलै० ने भी अवश्य अपनी कौमों को दी होंगी। समय की लम्बी यात्रा में काबे का मूल तत्व गुम हो गया जिस के बाद दूसरी कौमों ने तो इन सांकेतिक परम्पराओं को भी खो दिया, लेकिन हिन्दू कौम ने इन को किसी न किसी रूप में जीवित रखा। इस प्रकार की सैकड़ों मिसालें हैं जिन्हें हम संक्षिप्त न होने की वजह से यहाँ पेश नहीं कर पा रहे हैं। हिन्दुओं में एक बहुत कीमती गुण है और वह यह कि अगर उन की खोई हुई वास्तविकताएं किसी तरह उन्हें वापस की जा सकें तो दूसरी तमाम कौमों की तुलना में हिन्दू कौम का इस्लाम को समझ लेना सब से आसान है।

वास्तविकता को भूल कर केवल परम्पराओं पर चलने की खराबी मुसलमानों में भी पैदा हो गई है जिसे अल्लामा इक्बाल ने यू महसूस किया था:

यह उम्मत खुराफ़ात* में खो गई।
हकीक़त रिवायात में खो गई॥

लेकिन इस उम्मत की किताब और इस का रसूल (सल्ल०) कियामत तक के लिये सुरक्षित है। मुसलमानों की खोई हुई हकीक़तें किताब व सुन्नत द्वारा मत-संशोधन कर के वापस दी जा सकती हैं। यदि वेद केवल ईश्वर का दिया हुआ ज्ञान है (जैसा कि वेदों के जानी कहते हैं) किसी व्यक्ति विशेष की रचना नहीं, तो फिर यह कहना चाहिये कि हिन्दू कौम की किताब और रसूल (सन्देश्य) दोनों खोए हुए हैं। उन

* व्यथा के काम

की खोई हुई किताब और रसूल को ढूँढ कर हम उहें सत्धर्म पर वापस ला सकते हैं।

सम्बन्ध अनादि काल से होते हैं :

सम्बन्ध पैदा नहीं किये जाते, अनादि काल से स्थापित होते हैं—केवल शारीरिक नहीं, आत्मिक भी होते हैं। यह प्रकट चाहे जब भी हों। यह नियम केवल व्यवित्तगत सम्बन्धों तक ही सीमित नहीं बल्कि कौमों और गिरोहों पर भी लागू होता है। आरम्भ से विद्यामान सम्बन्धों का नियम केवल मानव मात्र पर ही नहीं वरन् अन्य जीव—जन्मुओं, पेड़—पौधों और निर्जीव पदार्थों पर भी लागू होता है जिस को विज्ञान सिद्ध कर चुका है। इस पृष्ठभूमि में आइए देखें कि तबदील होने वाली कौम और उस के निवास स्थान भारत के ह० मोहम्मद सल्ल० के जन्म स्थान अरब और अरबी कौम के क्या सम्बन्ध हैं? इस सन्दर्भ में हम विभिन्न विख्यात शोधकर्ताओं के लेखों के कुछ सम्पादित अंश प्रस्तुत कर रहे हैं :

‘इसामसीह से 1000 वर्ष पूर्व यमन की कौम ‘सबा’ ने भी भारत से व्यापारिक सम्बन्धों को बज़बूत किया था। इतिहासकार जोसेफस ने लिखा है कि बम्बई के निकट सिपारा नामक स्थान से हजरत सुलेमान अलै० के युग में ईसा अलै० से 950 वर्ष पूर्व फ़िलिस्तीन से व्यापार हुआ। इसी तरह हिन्दुस्तानी मलमल, छीट और रुमाल आदि अरब में पसन्द किये जाते थे जिन का प्रसांग अरबी शायरी में मिलता है... मौर्य वंश के आन्ध में समस्त शिलालेख आरामी यानी अरबी शैली में लिखे हुए मिले हैं। अशोक के शिलालेख भी दाहिनी ओर से लिखे हुए मिले हैं।’³

‘अब प्रश्न यह उठता है कि आज से पांच हजार वर्ष पूर्व भारत में अरबी भाषा युधिष्ठिर के दरबार में कैसे प्रचलित हो गई? इस का जवाब यह हो सकता है कि आज से पांच हजार वर्ष पूर्व देश में दीने हनीफ (शाश्वत धर्म) का प्रचलन था।’⁴

हिन्दुस्तान का एक और सम्प्रदाय भी प्राचीन युग से अरब में पाया जाता था इस को अरबवासी मेद कहते थे।

“...इस्तखरी ने लिखा है कि सिन्ध के समस्त सीमावर्ती शहरों में नास्तिकों का धर्म ‘बौद्ध’ है और उन के साथ ही एक कौम है जिसे ‘मेद’ कहा जाता है.. जाट और मेद के बाद हिन्दुस्तान की एक और कौम अरब में प्राचीन युग से पाई जाती है, वह ‘सियाबजा’ या ‘सबाबजा’ है.... बिलाजुरी ने

‘फ़त्हुलबलदान’ में और इब्ने ख़ल्दून ने अपनी तारीख में बार—बार ‘सियाब्जा’ शब्द का प्रयोग किया है। ... अरब में हिन्दुस्तान का एक और समुदाय प्राचीन युग से आबाद था जिसे अरबवासी ‘हमरा’ ‘हमर’, ‘अहामिर’ और ‘अहामरा’ की उपाधि से याद करते थे।⁵

‘यह अद्भुत एवं आश्चर्यजनक बात है कि ‘हिन्द’ शब्द अरबों को इतना प्यारा लगा कि उन्होंने इस देश के नाम पर अपनी औरतों के नाम भी रखे। अतः अरबी शायरी में इस नाम का वही महत्व है जो फ़ारसी में ‘लैला’ व ‘शीरी’ का है।’⁶

विस्तृत वर्णन शोधकर्ताओं की पुस्तकों में भरे पड़े हैं। उर्दू में विशेषतया भौ० सय्यद सुलेमान नदवी और भौ० काजी अतहर मुबारकपुरी ने अरब—हिन्द संपर्कों पर बहुत ग्राह किताबों की रचना की है। यहां हमने नमूने के तौर पर कुछ हिस्से पेश किये हैं जिन से अरब व हिन्द के प्राचीन सम्बन्धों का अन्दाज़ा हो सकता है। यह सम्बन्ध केवल सांस्कृतिक व सामाजिक ही न थे बल्कि आध्यात्मिक भी थे। उदाहरण के लिये :

‘शोधकर्ताओं को इस में कोई सन्देह नहीं कि अरबवासी बुद्ध को ही ‘बोजासिफ़’ कहते थे।’⁷

धार्मिक सम्बन्धों और विशेषतया ईशदूतों के अवतरण या आमद के विषय में हमें अनेक उकित्यां मिलती हैं।

आज एक सामान्य कल्पना मुसलमानों के जहनों में यह है कि जिन नवियों की चर्चा कुरआन शरीफ में है, उन का सम्बन्ध केवल अरब प्रायद्वीप से था, लेकिन यह दावा करने वाले लोग यह नहीं बताते कि ह० आदम अलै० और ह० नूह अलै० अरब, मिस्र, इराक या सीरिया के किन हिस्सों में धार्मिक प्रचार के लिये भेजे गए थे? इस विषय में शोधकर्ताओं को जो कुछ मिला है वह हम संक्षेप में प्रस्तुत कर रहे हैं।

ह० आदम अलै० हिन्दुस्तान में:

एक दिलचस्प बात यह है कि श्रीलंका में सरान्दीप पर्वत पर एक बहुत बड़े पॉव का निशान मौजूद है जिसे बहुत से धर्मावलम्बी पवित्र मानते हैं। मुसलमान और ईसाई इसे ह० आदम अलै० के पॉव का निशान बताते हैं, बौद्ध धर्म के मानने वाले इसे गौतम बुद्ध के पॉव का निशान कहते हैं और हिन्दू इसे शिवजी के पैर का निशान मानते हैं। यह विचित्र कथन विल्कुल निराधार भी नहीं है। इन की कहियां हमें अरबों के इतिहास

में भी मिलती हैं।

“अरब वासियों का दावा यह है कि हिन्दुस्तान से उन का सम्बन्ध केवल कुछ हजार वर्ष का नहीं बल्कि मानव उत्पत्ति के आरम्भ से यह देश उन की ‘पैत्रिक-भूमि’ है। हवीसों व तफसीरों (भाष्यों) में जहां ह० आदम अलै० का वृत्तांत है, अनेक रिवायतों में यह बयान किया गया है कि ह० आदम अलै० जब आसमान की जन्नत से निकाले गए तो वह इसी जमीन की जन्नत में जिस का नाम ‘हिन्दुस्तान जन्नत निशान’ है, उतारे गए। सरान्दीप (लंका) में उन्होंने पहला कट्टम रखा जिस का निशान उस के एक पहाड़ पर मौजूद है। इब्ने जरीर, इब्ने अबी हातिम और हाकिम में है कि हिन्दुस्तान की इस सरजमीन का नाम जिस में ह० आदम अलै० उतारे, दजना है। क्या यह कहा जा सकता है कि यह दजना, ‘दखना’ या ‘दखन’ है जो हिन्दुस्तान के दक्षिणी भाग का मशहूर नाम है? ”⁸

अब एक सुबूत तफसीर की किताबों से भी देख लीजिये:

‘इबने अब्बास रजि० ने फ़रमाया कि आदम अलै० का ‘तनूर’ हिन्द में था।’⁹

यह उल्लेखनीय है कि कुरआन, इन्जील और तौरेत से यह रहस्य, भाष्यकारों को अभी तक नहीं मिल सका है कि ह० आदम अलै० दुनिया के किस भूभाग में उतारे गए? ऊपर लिखित रिवायतों और श्रालंका में पाँव के निशान से यह संकेत मिले हैं कि ह० आदम अलै० का अवतरण इस सरजमीन पर हो सकता है। यद्यपि यह रिवायतें कमज़ोर उहराई जाती हैं लेकिन यह बात ज़रुर विचारणीय है कि दुनिया के किसी और हिस्से के बारे में ऐसा दावा होने की रिवायतें भी हमें नहीं मिलती।

ह० नूह अलै० हिन्दुस्तान में :

कुरआन से हमें यह मालूम होता है कि तूफाने नूह (महा-जल-प्लावन जो ह० नूह अलै० के युग में आया था) के बाद ह० नूह अलै० की किश्ती जूदी पहाड़ी पर रुकी थी जो कि इराक के क्षेत्र कुर्दिस्तान में है। बाइबिल से पता चलता है कि ‘अरारात पर्वत पर उन की किश्ती ठहरी थी (जूदी पहाड़, अरारात पर्वत श्रखला की ही एक चोटी है)। लेकिन आज तक भाष्यकारों ने यह नहीं बताया कि किश्ती के रुकने के बाद ह० नूह अलै० के धार्मिक प्रचार के क्षेत्र दुनिया के कौन कौन से इलाके रहे और यह भी पता नहीं चल सका कि तूफाने नूह से पहले नूह अलै० छ. सौ वर्ष तक कहाँ रहे? तौरेत से केवल इतना मालूम होता है ह० नूह अलै० और उन के साथी तूफान

के बाद बाबुल में इकट्ठा हुए और वहाँ से पूरे पृथ्वी-पटल पर फैल गए।

‘इस लिये इस का नाम ‘बाबुल’ है क्यों कि खुदावंद ने वहाँ पर समस्त जगत वासियों की भाषाओं को गडमड कर दिया था और वहाँ से उन (ह० नूह अलै० और उन के साथियों) को खुदा ने समस्त पृथ्वी पटल पर फैलाया।’
— (तौरेत : उत्पत्ति-9, 11)

कुरआन यह बताता है कि तन्नूर से पानी उबलना आरम्भ हुआ था और यहाँ से तूफान का आरम्भ हुआ था।

‘यहाँ तक कि जब हमारा आदेश आ गया था और तन्नूर से पानी उबलना आरम्भ हुआ (तो) हम ने कहा कि इस (नौका) में हर प्रकार के जोड़ों में से दो को चढ़ालो...।’
— (कु० : 11-40)

तन्नूर शब्द अरबी भाषा का नहीं है। फ़ारसी में इस का अर्थ रोटी पकाए जाने वाला तन्नूर है। अधिकतर भाष्यकारों ने इस शब्द को इन्हीं अर्थों में इस्तेमाल किया है और कुछ ने तन्नूर से अभिप्राय जमीन की सतह लिया है अर्थात् पृथ्वी की सतह से पानी उबलना शुरू हुआ लेकिन तन्नूर शब्द से पहले कुरआन में ‘अलिफ़-लाम’ इस्तेमाल हुआ है जिस का अर्थ है, कोई खास तन्नूर इस विषय में विद्वाने की व्याख्या देखिये।

‘और अगर यह कहा जाए कि अलिफ़-लाम ‘अत्तन्नूर’ में है... इस का जवाब यह है कि यह असम्भव नहीं कि ह० नूह अलै० को वह तन्नूर मालूम हो।

हसन बसरी का बयान है कि वह तन्नूर पत्थर का था और ह० हव्वा उस में रोटियां पकाती थीं, फिर वह ह० नूह अलै० के पास आ गया था और उन से कह दिया गया था कि जब तुम देखो कि तन्नूर से पानी उबल रहा है तो अपने साथियों को लेकर किश्ती में सवार हो जाना।¹⁰

यह तन्नूर ह० आदम अलै० का था, यह बात मोहम्मद नईम मुरादायादी ने भी अपनी तफसीर में लिखी है। हम पूर्व में भी तफसीर फ़तहुल क़दीर से ह० इब्ने अब्बास रजि० का यह कथन नक़ल कर ही चुके हैं कि ह० आदम अलै० का तन्नूर हिन्द में था। आइये अब एक और पहलू से देखें। तन्नूर शब्द पर बहुत से कथन इकट्ठा करते हुए अल्लमा शौकानी ने लिखा है

“.... आठवां कथन यह है कि वह एक स्थान है जो हिन्द में है ...”¹¹

यहां यह बात दिलचस्पी से खाली न होगी कि जब हम ने भारतीय रेलवे टाइम-टेबिल में तलाश किया तो हमें तन्नूर नामक एक स्थान केरल में मिला और मानवित्र में देखा तो मालूम हुआ कि केरल के 'मलाप्पुरम' जिले में समुद्री तट पर तन्नूर स्थित है। यह भारत के परिचमी तट पर है जो अरब सागर के द्वारा अरब से अलग होता है। रिवायात की रौशनी में क्या यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यह वही स्थान है जहां से 'सैलाबे नूह' के आरम्भ होने की चर्चा कुरआन ने की है? इससे दूसरे तमाम कथनों में सामन्जस्य भी स्थापित हो जाता है। अर्थात् समुद्री तट पर जो स्थान 'तन्नूर' है वहां पृथ्वी की सतह से पानी उबलना शर्कुर हुआ था और यही जगह है आदम अलै० का 'तन्नूर' कहलाती थी।

यह ध्यान रहे कि भारतीय जाति से ह० नूह अलै० का गहरा सम्बन्ध 'मनु' की हैसियत से हम पिछले पुष्टों में पूरे प्रमाण के साथ सिद्ध कर चुके हैं। पूर्वोल्लिखित हसन बसरी रह० के कथन से 'कि जब तुम देखो कि तन्नूर से पानी उबल रहा है तो अपने साथियों को लेकर किसी में सवार हो जाना' और दूसरी सभी रिवायतों से जिन में कहा गया है कि यह तन्नूर ह० नूह अलै० का था और हिन्द में था, यह साथित होता है कि ह० नूह अलै० तूफ़ान से पहले भारत में थे। अब तूफ़ान के बाद की स्थिति पर विचार करें।

नरसिंह अग्रवाल ने अपनी किताब 'The Hindu Muslim Question' में लेखा है कि आर्य जाति भारत में मनु (ह० नूह अलै०) के साथ आई।

(अंग्रेजी से हिन्दी) "आर्य जिन को हिन्दुस्तान में फ़ादर मनु लेकर आए, 'मूर्ति-पूजा' नहीं करते थे" ॥¹²

(उर्दू से हिन्दी) 'गुजरात के एक कानून विशेषज्ञ और शोधकर्ता एम० जमां खोखरा ने वर्षों की रिसर्च के बाद रहस्योदयान्त्रिक किया है कि आदम सानी (नूह अलै०) गुजरात की भिटटी में विश्राम कर रहे हैं। उन के दावे की बुनियाद दो सौ चालीस फिट चौड़ा एक पूर्वीनतम भजार है जो गुजरात के इसी ऐतिहासिक नगर से पच्चीस मील दूर मोज़ा बड़ेला शरीफ़ के सभीपर्वती क्षेत्रों में सदियों से सब के लिये आकर्षण का केन्द्र है। गाँव से लगभग एक फ़रलांग दक्षिण में धनी झाड़ियों और छायादार वृक्षों से ढकी हुई इस नौगज़ी क़ब्र के बारे में सामान्य विचार है कि यहा ह० नूह अलै० के बेटे या पोते ह० क़बीत का मदफ़न (क़ब्र) है। लेकिन एम ज़मां खोखरा ने इलमे कश्फुलकुबूर (क़ब्र से मुर्दे के हालात मालूम करने की विद्या) के दो विद्वानों की रिवायतों से सिद्ध किया है कि क़बीत नहीं बल्कि स्वयं ह० नूह अलै० हैं....' ॥¹³

बहुत से अन्य विद्वानों (कश्फुल कुबूर) एवं बुजुर्गों के कथन इस तथ्य की पुष्टि में देने के बाद आगे लिखा है:

(उर्दू से हिन्दी) 'बड़ेला शरीफ़ एक सीमावर्ती गाँव है और गुजरात से पांच मील दूर उत्तर पूर्व में कस्बा टांडा के निकट स्थित है। यहां से छम्ब वादी का सेत्र आरम्भ होता है और चनाब व तोमी दररा इस के निकट ही बहते हैं। विभाजन से पूर्व हिन्दू, मजार को 'मनु-महर्सत' कि नाम से पुकारते थे। मनु-महर्सत संस्कृत का शब्द है और इस का अर्थ किसी वाला है। इबरानी शब्द 'नूह' से भी यही अर्थ लिया जाता है। संस्कृत की प्राचीन किताबों में अंकित है कि आदम अलै० के तूफ़ान का प्रसंग आर्यों के प्रवीन धार्मिक ग्रन्थों में आया है और इस हवाले से साथित होता है कि आरम्भ काल ही में नूह अलै० की सन्तान भारतीय उपमहाद्वीप तक फैली हुई थी। 'आईनए गुजरात' में अंकित है कि गुजरात के निवासी ह० नूह अलै० के बेटे 'हाम' की ओलाद हैं और हामियों ने कश्मीर के सभीपर्वती क्षेत्रों में बड़ी बड़ी इमारतें और ख़लाफ़ निर्मित कराए थे। समय की भूल-भुलइयों में हाम की क़ब्र के निशान भी मिट चुके हैं लेकिन शहरों और मजारों के रूप में उन के आगमन के चिन्ह यहां के विशाल सेत्र में फैले हुए हैं। बड़ेला शरीफ़ के इर्द गिर्द मिट्टी के बड़े-बड़े तूदे और टीले इस बात के गवाह हैं कि यहां कभी आदम अलै० की सन्तान की वैभवशाली बस्तियां होगी।'¹⁴

इस शोध लेख के उपरिलिखित अशों के बाद अब ज़रा यह भी देखें-

(उर्दू से हिन्दी) "... याकूत हमदी ने लिखा है 'बोकीर बिन यक़अतन बिन हाम बिन नूह' की ओलाद में सिन्ध और हिन्द दो भाई थे जिन के नाम पर यह दोनों देश मशाद्दूर हुए।"¹⁵

-(क़ाजी अतहर मुदारकपुरी)

इन सभी उकितयों और शोध लेखों से क्या इस अनुमान को बल नहीं मिलता कि नूह अलै० के तूफ़ान से पहले और बाद में भी हजरत नूह अलै० का सम्बन्ध भारत से रहा था?

ह० आदम अलै० और ह० नूह अलै० से सम्बन्धित ऊपर लिखी हुई शोध सामग्री को अगर आप अलग अलग देखें तो इन में से कुछ या हर एक को कमज़ोर कह ले लेकिन इकट्ठा होने के बाद इन की हैसियत मजबूत और प्रमाणित स्तर की बन जाती है। फिर यह भी विचारणीय है कि किसी और देश में इन नशियों के शुभआगमन या देहान्त होने के दावे हमें नहीं मिलते। यदि अपनी-अपनी जगह अफ़साने गढ़ लिए

गए तो यह बड़ी अजीब बात है कि अरबों ने भी ह० आदम अलै० और ह० नूह अलै० के भारत ही से सम्बन्धित होने की कहानियाँ गढ़ी और चीन, रॉस, जापान, यूरोप, अमरीका या आस्ट्रेलिया से सम्बन्धित नहीं बनाईं।

वैसे भी इस में आश्चर्य की क्या बात है? उस युग में इन्सानों के कद साठ-साठ मीटर लम्बे और आयु एक-एक हजार वर्ष की होती थी। ऐसे मानव अपने जीवन काल में यदि संसार के प्रत्येक भूभाग से गुजरे हों तो यह कोई हैरत की बात नहीं है। लम्बी उम्रों की उकित्या तो बहुत आम है। लम्बे कद के लिये सही बुखारी (हवीसों का संग्रह) के अध्यार्थ किताबुल अविया'में ह० अबू हुरैरा रजिं० से रिवायत की हुई हवीस देखी जा सकती है जिसमें उल्लेख है कि हज़रत आदम अलै० का कद साठ जुराइ (मीटर) था। उस समय से अब तक मनुष्य का कद निरन्तर घटता आ रहा है।

कुछ अन्य ईशादूत, हिन्दुस्तान में:

जी हाँ! ह० आदम अलै० व नूह अलै० ही नहीं, अन्य बहुत से नवियों का भारत में आगमन या उपस्थिति की अनेक उकित्यां पाई जाती हैं जिन में से कुछ का उल्लेख हम यहां कर रहे हैं :

(उर्दू से हिन्दी) "शोधकर्ताओं को इस में कोई सन्देह नहीं कि अरबवासी 'बुद्ध' को ही 'बोजासफ़' कहते थे।" १६

"आज के मशहूर विद्वान मौ० मनाजिर अहसन गीलानी को माहत्मा बुद्ध में 'नुबूवत' की झलक नज़र आती थी और वह पवित्र कुरआन के 'जुलकफ़िल' और 'कपिलवस्तु' को एक ही व्यवित्तत्व मानते थे।" १७

ए०ए० कनिंघम की पुरातन अवशेष की १८६२-६३ की रिपोर्ट में यह दर्ज है :

(उर्दू से हिन्दी) "...कनिंघम ने अयोध्या में इन तोदों की विस्तृत जानकारी देते हुए लिखा है कि मुनी और कबीर पर्वतों के बीच मुसलमानों का एक धार्मिक स्थल है जो पूर्व से परिचम तक ६४ फ़ीट है और ४७ फ़ीट चौड़ा है और इस में दो मजार हैं जो ह० रीस और ह० अर्यूब अलै० के माने जाते हैं।" १८

(उर्दू से हिन्दी) "हिन्दुस्तान की सरज़मीन भी खुदा के पैगम्बरों से ख़ाली नहीं रही है। ह० मुज़द्दिद अलिफ़ सानी रह० सरीखे महात्मा भी जो अक़ीदे में बड़े सङ्कृत हैं, हिन्दुस्तान में पैगम्बरों के आगमन को स्वीकार करते हैं और उन

को यहां के कुछ नगरों में नूरे नुबूवत (ईशादूतत्व की ज्योति) नज़र आया था।" १९

एम० ज़मां खोखरा (जिन की चर्चा हम दैनिक 'कौमी जंग' रामपुर के हवाले से कर चुके हैं) के बारे में समाचारपत्र आगे लिखता है :

(उर्दू से हिन्दी) 'एम ज़मा खोखरा ने ह० नूह अलै० के मजार या नूह अलै० के बेटे की कब्र के अलावा लम्बी चौड़ी कबरों की निशानदेही की है। उन के अनुसार ग्राम चौगानी में ह० तानूग कन्नानी थे और वह ह० यूसुफ़ अलै० के बेटे थे। 'आइनए गुजरात' में दर्ज है कि क़ाज़ी सुलतान महमूद ने इलमे क-शफ़ुलकुबूर की सहायता से गुजरात के आस पास कई मजारों की निशानदेही की है। उन का दावा है कि यह तमाम कब्रें उन बनी इस्खाइल के नवियों की हैं जो ह० मूसा अलै० और इमरान की सन्तान में से थे।

प्राचीन ऐतिहासिक हवालों से अन्दाज़ा होता है कि गुजरात, ज्ञान व विद्वत्ता की दृष्टि से यूनानी भूभाग ही नहीं बल्कि आध्यात्मिकता के रिश्ते से ईशादूतों का भवित्व (समाधि भवन) भी है। रवाल शारीफ़ के स्थान पर एक मजार मौजूद है जिस की लम्बाई सामान्य कब्र से कई फ़िट ज़्यादा है। इस के बारे में यह कहा जाता है कि यहां आदम अलै० के बेटे शीस अलै० की औलाद में से एक बुज़ुर्ग दफ़्न हैं। पसीर नगर में हमसियालान की एक तुर्बत (कब्र) है जो बस्तू नसर के हमले के दौरान अपने बेटे सहित कैद हो गए थे। उन के पूर्वज ह० हारून अलै० हैं। कर्सा टांडा में एक ईसाईली सरदार नक़ीब खुशी की कब्र है। तोमी नदी के किनारे सुलतान फ़ीनूस और फ़िनानूस की कब्रें हैं। यह दोनों बुज़ुर्ग ह० इबाहीम अलै० के बेटे अफ़ासीम की सन्तान में से बताए जाते हैं। राजा सीनादोश के बारे में मशहूर है कि वह ह० दाऊद अलै० के बेटे हैं ...एक नौ गज़ की कब्र ग्राम 'रंगड़ा' में भी है। इन शताब्दियों और युगों पुरानी कब्रों ने अगर अपनी पवित्रता और सम्मान को बनाए रखा हुआ है तो इस बारे में यही कहा जा सकता है कि यह ईशादूतों के चमत्कार हैं।'

यद्यपि ह० आदम अलै० व नूह अलै० के विषय में बयान की हुई रिवायतों की तुलना में ऊपर लिखित रितायतें ज़्यादा विश्वसनीय नहीं हैं, लेकिन किर भी चूंकि यह रिवायतें मौजूद हैं, इस लिये हम ने संक्षेप में इनका वर्णन किया है। अब ह० इसा अलै० का वृत्तांत देखिए।

ह० ईसा अलै० हिन्दुस्तान में:

ईसा अलै० के भारत में आगमन के विषय में कश्मीर और लद्दाख में बहुत सी कहावतें प्रसिद्ध हैं। रूसी और अन्द्रेज़ शोधकर्ताओं ने भी इस का उल्लेख किया है। अब हम हिन्दी पत्रिका 'कादम्बिनी' मार्च १९७३ अंक में प्रकाशित 'आवार्य रजनीश' के एक लेख 'जीसस का अज्ञात जीवन' से कुछ अंश उद्धृत कर रहे हैं :

"भारत के पास इस आशय के कई तथ्य हैं कि जीसस (ईसा) कश्मीर में एक बौद्ध मठ में ठहरे। कश्मीर में कहानियां प्रचलित हैं कि जीसस वहां थे ... ध्यान साधना में लीन फिर वह येरोशलम में प्रगट हुए। उस समय वह तीस वर्ष के थे।"

एक फ्रांसीसी लेखक अपनी किताब 'स्वर्ग का सांप' (The Serpent of Paradise) में कहता है—'कोई नहीं जानता कि तीस वर्ष के होने तक उन्होंने क्या किया और कहां रहे। एक कथा के अनुसार वह कश्मीर में रहे थे।'

...रूसी यात्री निकोलस नोरोविच ने, जो कि करीब 1887 के आस पास भारत आया था, लद्दाख गया। वहां वह बीमार पड़ गया और प्रसिद्ध हेमिस गुफा में रहा। गुफा में अपने निवास काल में वह अनेक बौद्ध ग्रन्थ पढ़ गया। उस ने इन बौद्ध ग्रन्थों में जीसस का, उन की शिक्षाओं व उन की लद्दाख यात्राओं आदि के बारे में अधिक वर्णन पाया। बाद में उसने एक पुस्तक प्रकाशित की—'लाइफ ऑफ सेंट जीसस' इस में उसने जीसस के लद्दाख एवं पूर्व के दूसरे देशों की यात्रा सम्बन्धी विवरणों का उल्लेख किया।

यह उल्लेख किया गया है कि लद्दाख से जीसस, ऊँचे पर्वतों के दर्दों में से गुजर कर बरफीले रास्तों व पिंडों को पार करते हुए कश्मीर में पहलगाम घुंच गए। वे पहलगाम (गढ़रियों का गाँव) में काफी लम्बे समय तक अपनी भेड़-बकरियों की देखभाल करते हुए रहे। यहां जीसस को इजराइल की कुछ खोई हुई जातियों के चिन्ह मिले।

ऐसा उल्लेख मिलता कि जीसस के निवास के बाद से ही यह गाँव पहलगाम के नाम से पुकारा गया। 'पहल' का कश्मीरी भाषा में अर्थ होता है, गढ़रिया और गाम का भाल बोता है—गाँव। बाद में श्रीनगर जाते हुए रास्ते में जीसस विश्राम के लिये रुके और इसमुक्कम स्थान पर उन्होंने उपदेश दिये। यह गाँव भी 'इसमुक्कम'* (जीसस के विश्राम की जगह) नाम से उन के पीछे

* इस्मुक्कम शब्द संभवतः ईसा + मुकाम से बना है।

ही पुकारा जाने लगा ।'

'कादम्बिनी' पत्रिका में प्रकाशित शांतिकुंज हरिद्वार का एक लेख 'तिष्ठती लामा के सान्निध्य में ईसा' के नाम से प्रकाशित हुआ है। इस के अंश भी हरा उद्धृत कर रहे हैं :

"यह तीस वर्ष ईसा ने कहां और किस प्रकार व्यतीत किये — यह जानने के लिये कई विद्वानों ने काफी शोध की है। शोधकर्ताओं में अग्रणी हैं रूसी विद्वान निकोलस नोरोविच, जिन्होंने लगातार चालीस वर्षों तक विभिन्न देशों की यात्रा करके शोध सामग्री संकलित की और उन निष्कर्षों को सन् 1868 में 'अननोन लाइफ ऑफ जीसस' नामक किताब के रूप में प्रकाशित कराया।

निकोलस नोरोविच अपनी शोध यात्रा के दौरान तिष्ठत भी गए और उन्होंने तिष्ठत के हिमोस बौद्ध विहार में ताङ्पत्रों पर लिखा हुआ एक प्राचीन ग्रन्थ देखा। नोरोविच ने इस बौद्ध विहार में बिताए क्षणों का विवरण इस प्रकार लिखा है 'जब मैं एक गुफा में गया तब वहां के एक लामा ने मुझे एक ऐसे देवदूत के बारे में बताया जिसे वह बुद्ध का ही एक रूप मानता था। लामा ने उस देवदूत का नाम ईसा बताया और कहा कि हम लोग ईसा का नाम बड़े सम्मान के साथ लेते हैं। उन के बारे में हमें अधिक जानकारी नहीं है, परन्तु मुख्य लामा के पास एक प्राचीन ग्रन्थ है जिस में ईसा के बारे में बहुत कुछ लिखा है।'

"किसी प्रकार नोरोविच ने यह प्राचीन ग्रन्थ देखने और उसके चित्र उतारने में सफलता प्राप्त कर ली। इस ग्रन्थ में 14 प्रकरण तथा 244 श्लोक हैं। ग्रन्थ में ईसा के बारे में जो विवरण मिलता है वह इस प्रकार है—'ईसा ज्ञान प्राप्ति की इच्छा से भारत आये। उन दिनों येर्झलम के व्यापारियों के दल व्यापार के लिये यहां आया करते थे। ईसा भी एक व्यापारी दल के साथ सिंध होते हुए भारत आए थे।'

"...ईसा सभी व्यक्तियों पर स्नेह रखते थे और उन्हें भी वैश्य, शूद्र सभी प्यार करते थे, उन दिनों वे जगन्नाथपुरी में ठहरे हुए थे। जगन्नाथ मंदिर के पुजारियों को जब यह पता चला कि ईसा शूद्रों से भी मिलते हैं तब वे उनसे अप्रसन्न रहने लगे। ईसा को जब पुजारियों की अप्रसन्नता का पता चला तब वे जगन्नाथ मंदिर छोड़ कर राजगृह चले गए छः वर्ष तक वहां रहे। इस के बाद वे नेपाल होते हुए तिष्ठत पहुंचे। सोलह वर्ष तक इस प्रकार भ्रमण

करते हुए ईरान के रास्ते अपने देश लौट गये। तिब्बत की यात्रा के दौरान उन्होंने कुछ बर्ष हिमोस बौद्ध बिहार की परंपरा में लामा के साथ भी बिताए थे.....”

“इन्जील में भी ऐसा उल्लेख मिलता है कि बैथलेहम में जब ईसा का जन्म हुआ, तब पूर्व के कोई ज्ञानी पुरुष उनका दर्शन करने के लिये बैथलेहम आए। आर्थर मिल ने इस ज्ञानी पुरुष को बौद्ध यति बताया है।”

‘क्राइस्ट इन कश्मीर’ के लेखक अजीज़ कुरैशी ने लिखा है कि उन दिनों यहूदियों की एक बड़ी जनसंख्या भारत में आकर बस गई थी, जिन के वशज अभी भी यहां पाए जाते हैं। कश्मीर के गुज्जर लोग अपने को स्त्रायिन गोत्र का बताते हैं। उनके नाम अब भी यहूदी ढंग के होते हैं। वे हिन्दू से मिलती—जुलती भाषा बोलते हैं, स्मरणीय है कि यहूदियों में भी हिन्दू भाषा ही प्रचलित है। उन के निवास स्थानों के नाम भी यहूदियों जैसे ही हैं। ईसा स्वयं भी यहूदी परिवार में जन्मे थे और उन दिनों भारत में आने वाले यहूदी व्यापारियों के साथ यहाँ आ गए थे।”

“दुराई स्वामी आयंगर द्वारा लिखित ‘लांग भिसिंग लिंक्स और मारवेलस डिस्कवरीज अबाउट आर्थन्स’ व ‘जीसस क्राइस्ट एण्ड अल्लाह’ का उल्लेख किये बिना बात अधूरी रहेगी। आयंगर ने यह पुस्तक काफी खोजबीन के बाद लिखी है। इस पुस्तक में आयंगर ने जेस्सन द्वारा लिखी गई एक पुस्तक से प्रमाण स्वरूप कई चित्र उद्धृत किये हैं।

....कितने ही चित्र हैं जिन में भारतीय संस्कृति की छाप है।”

“भविष्य पुराण के प्रसंग 3 अध्याय 22 के 21 से 26 श्लोक तक हिमालय पर ईसा से शकाधीश की भेट का वर्णन इस तरह मिलता है—

एक बार शकाधीश, हिमालय से आगे हूण देश गए, वहां उन्होंने एक सफेद पोश गोरे रंग के सन्त को पहाड़ी में धूमते हुए देखा। शकाधीश ने उन से परिचय मांगा तो सन्त ने कहा कि ईसा मेरा नाम है। मैंने कुमारी मां के गर्भ से जन्म लिया है और मैं विदेश से आया हूँ। मुझे भसीह कहा जाता है।”²⁰

उपर्युक्त लेख में इस के अतिरिक्त रमेश चन्द्र दत्त की किताब ‘प्रचीन भारत में सभ्यता का इतिहास’ और डाक्टर स्पेन्सर की ‘ईसा का अज्ञात जीवन’ के हवाले से भी ह० ईसा अलै० का भारत में आना सिद्ध किया गया है। आइये अब अन्तिम इशादूत (सल्ल०) के हिन्दुस्तान से सम्बन्ध की रिवायतों पर दृष्टिपात करें।

ह० मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल० और हिन्दुस्तान:

(उर्दू से हिन्दी) ‘रसूलुल्लाह सल्ल० के एक सहायी ह० तमीम दारी रजि० जो 9वीं हिज्जी में मुसलमान हुए, उन के बारे में एक चलती हुई रिवायत है कि कि वह दक्षिणी भारत में इस्लाम के प्रचार के लिये आए थे और यहाँ देहान्त हुआ और मद्रास के समीपवर्ती क्षेत्रों में उन की कब्र मौजूद है।’²¹

‘तबक़ात इब्ने सअद, सीरत इब्ने हशाम और तारीखे तबरी इत्यादि में है कि 19वीं सदी हिज्जी में ह० खालिद बिन वलीद रजि० नजरान से बनू हारिस का एक शिष्ट मण्डल लेकर रसूलुल्लाह सल्ल० की सेवा में हाजिर हुए ... रसूलुल्लाह सल्ल० ने शिष्टमण्डल के सदस्यों को देख कर फ़रमाया—यह कौन लोग हैं जो मानो हिन्दुस्तान के आदमी हैं।’²²

उपर लिखित रिवायतों से यह सिद्ध होता है कि आप (सल्ल०) हिन्दुस्तानियों को इतनी अच्छी तरह जानते थे कि अपरिचित लोगों की वेश-भूषा बयान करने के लिये आप (सल्ल०) ने हिन्दुस्तानियों की मिसाल दी। नीचे हम दो रिवायतें और उद्धृत कर रहे हैं जिन से आप (सल्ल०) का हिन्दुस्तानियों से परिचित होना साबित होता है।

(उर्दू से हिन्दी) “यूं तो अहं रिसालत (नबी सल्ल० के ईशादूतत्व काल) में भारत की विभिन्न जातियां अरब में मौजूद थीं मगर इन में से ‘जृत’ (जाट) और ‘सियाब्जा’ बड़ी संख्या में अरब के पूर्वी तटों और उन से लगी हुई आबादियों में रहते थे और पूरे अरब के लोग उन से भली भांति परिचित थे। स्वयं रसूलुल्लाह सल्ल० और सहाया रजि० इन को जानते और पहचानते थे। अतः तिरमिजी के अबवाबुल मिसाल में—ह० अब्दुल्लाह इब्ने मसूद रजि० के शब्द यह है—‘कुछ लोग मेरे करीब आए। वह अपने जिस्म और बालों में जाटों के सदृश थे।’²³

उक्त हवीस के बारे में इमाम तिरमिजी ने लिखा है कि यह हवीस इस तरीके से ‘हसन-सही-ग़रीब’ है।²⁴

सही बुखारी में मेराज के अध्याय में यह रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने ह० मूसा अलै० को रंग और काठी में जाट से उपमा दी है।

ह० इब्ने उमर रजि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया मैंने ह० ईसा अलै०, ह० मूसा अलै० और ह० इब्राहीम अलै० को देखा—ईसा अलै० तो सुख्ख रंग धुंधराले बालों और चौड़े सीने वाले हैं। रहे मूसा अलै०

तो वह गन्दुमी रंग और सीधे बालों वाले थे गोया (मानो) वह जूत (जाटों) में से है।²⁵

यहां तक तो हम ने वह रिवायतें पेश की हैं जिन में हिन्दुस्तानियों से आप सल्ल० की पहचान का ज़िक्र है लेकिन बात सिफ़्र परिचित होने तक ही की नहीं है बल्कि आप (सल्ल०) का इस देश से विशिष्ट सम्बन्ध, प्रेम और लगाव था—अवलोकन करें :

(उर्दू से हिन्दी) “अरबों को हिन्दुस्तान से हमेशा बड़ा लगाव रहा है... अरबों का विचार है कि ह० आदम अलौ० दुनिया में दजना के स्थान पर उतारे गए जो हिन्दुस्तान में स्थित है। नूरे मोहम्मदी, ह० आदम अलौ० की पेशानी में अमानत था। इस से साबित होता है कि मोहम्मद सल्ल० का प्राथमिक जहूर (प्राकट्य) इस सरजनीन में हुआ।²⁶

(उर्दू से हिन्दी) “एक रिवायत यह है कि स्वर्ग से चार दरया निकले हैं—नील, फ़रात, जैहून और सैहून। ‘सैहून’ के विषय में यह है कि हिन्दुस्तान के दरया का नाम है। क्या स्वर्ग के इस चौथे दरया को गंगा कहेंगे? कुछ लोगों ने इसे सिन्ध नदी बताया है।²⁷

(उर्दू से हिन्दी) “...इसी सम्बन्ध में अरबों में यह रिवायत प्रचलित है कि रसूले अकरम सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया कि मुझे हिन्दुस्तान की तरफ़ से रब्बानी (ईश्वरीय) खुशबू आती है और ह० अली रज़ि० ने भी फ़रमाया कि सब से पवित्र और सुगंधित स्थान हिन्दुस्तान है।²⁸

केवल इतना ही नहीं बल्कि रसूले अकरम सल्ल० ने हिन्दुस्तान में गज़वे* की भी खुशखबरी सुनाई है। ऐसा गज़वा जिस में शरीक हो जाने पर ही नरक की आग से सुरक्षा की शुभ सूचना दी गई है। इमाम निसाई ने ‘सुनन’ में ‘बाबे गज़वतुल—हिन्द’ के अन्तर्गत और इमाम तबरानी ने ‘मुअज़ान’ में सनदे जय्यद (मज़बूत सनद) के साथ ह० सोबान मौला रज़ि० की रसूलुल्लाह सल्ल० से रिवायत नक़्ल की है।

“रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत के दो ग्रोहों को अल्लाह तआला ने नरक की आग से सुरक्षित रखा—एक वह ग्रोह जो हिन्दुस्तान में जिहाद (धर्म संघर्ष) करेगा और दूसरा ग्रोह जो इसा अलौ० के साथ रहेगा।²⁹

“ह० अबू हुरैरा रज़ि० ने कहा कि हमें रसूलुल्लाह सल्ल० ने हिन्दुस्तान में गज़वे का वचन दिया है। यदि मैं इस में सम्मिलित हुआ तो इस में अपनी

* हक्कों बातिल की जग (देवासुर संग्राम)

जान व माल खर्च कर दूंगा, अगर मारा गया तो बेहतरीन शहीद हूंगा और अगर जीवित हुआ तो नरक से मुक्त अबू हुरैरा हूंगा।³⁰

ईश्वर हमें भी ‘गज़वए हिन्द’ के लिये स्वीकार करे! आमीन (तथास्तु)

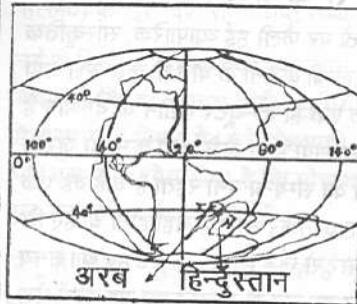
अरब व हिन्द भौगोलिक दृष्टि से कभी एक थे:

अरब व हिन्दुस्तान के बीच हजारों पृथ्वी पर फैली हुई व्यापारिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक सम्बन्धों पर आधारित एक लम्बी कहानी के बीच के कुछ अंश आप ने देखे। कहीं कहीं तो ऐसा प्रतीत होता है कि एक ही कम्प्यूटर मशीन के दो भाग हैं जिन का एक दूसरे से निरन्तर सम्पर्क अवश्यम्भवी है या जैसे कभी कभी दो जुड़वा भाइयों के बीच टेलीपेशी की मानसिक लहरों का सम्बन्ध बना रहता है चाहे वह एक दूसरे से सेकण्डों हजारों मील दूर हों। अतः यह जानकर आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि दोनों देश भौगोलिक दृष्टि से भी कभी एक दूसरे से जुड़े हुए बल्कि सटे हुए थे। समय के लम्बे अन्तराल में जो भौगोलिक परिवर्तन हुए उन के फलस्वरूप यह दोनों देश भी एक दूसरे से अलग हो गए।

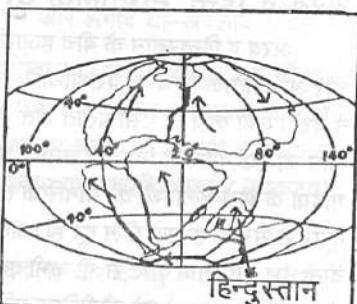
भूगर्भशास्त्रियों (Geologists) की आधुनिक खोज के अनुसार विश्व के सभी महाद्वीप अचल नहीं हैं बल्कि निरन्तर गतिमान हैं। बीस करोड़ वर्ष पहले पृथ्वी के सभी द्वीप—महाद्वीप एक दूसरे से जुड़े हुए थे और संपूर्ण भूभाग के चारों ओर समुद्र था। विभिन्न महाद्वीप इस महान भूभाग से टूट-टूट कर तैरते हुए आज वर्तमान रूप में आ पहुंचे हैं और अब भी गतिशील हैं। इस विषय पर रोनाल्ड शिलर के लेख ‘पृथ्वी के महाद्वीप खिसक रहे हैं’ (Earth Continents Are Drifting) से कुछ अंश हम प्रस्तुत कर रहे हैं। यह लेख रीडर्स डाइज़ेर्ट जुलाई १९७१ के अंग्रेजी अंक में प्रकाशित हुआ था—अगले पृष्ठ पर जो चित्र दिये जा रहे हैं वह भी रीडर्स डाइज़ेस्ट के इसी लेख से लिये गए हैं।

(अंग्रेजी से हिन्दी) “विश्व के चार अरब साठ करोड़ वर्ष की भूगर्भविद्या के इतिहास में समुद्र एक अकार्डियन बाजे की तरह फैलते और सिकुड़ते रहे हैं और महाद्वीप तूफानी समुद्र में एक पुराने जहाज के समान ढोलते रहे हैं... निश्चित रूप से इस ग्रन्जाल के कुछ भाग अभी गुम हैं और सम्पूर्ण व्यौरे पर

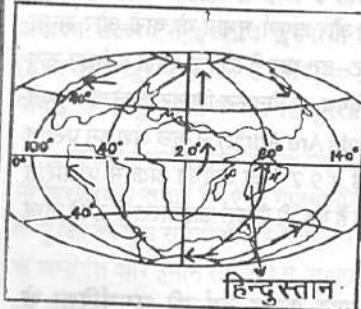
* सुनन—निसाई और इमाम अहमद, इमाम इब्ने असाकर व इमाम इब्ने करीर ने भी ‘गज़वए हिन्द’ की हड्डीस की रिवायत की है। अतः अलबदाय व अन्हाजा भाग: ९ पृ०: ९५ में है। गज़वए हिन्द के विषय में हड्डीस आई है जिसे हफ़िज़ इब्ने असाकर इत्यादी ने रिवायत किया है। गुलाम अली आजाद ने उपरोक्त दोनों रिवायतों को विस्तार के साथ सुब्दतुल मरजान पृ०: २१ में अंकित किया है।



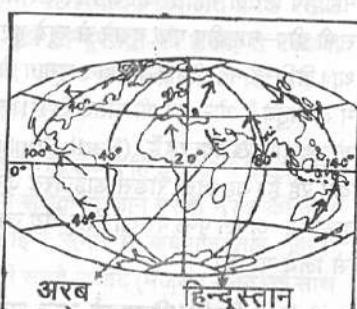
1- महाद्वीप-बीस करोड़ वर्ष पूर्व



2- दो करोड़ वर्ष तक बहने के बाद



3- गयारह करोड़ वर्ष से अधिक बहने के बाद



4- आज और अब भी गतिशील

वैज्ञानिक एकमत नहीं हो पाए हैं लेकिन एक सामान्य रूपरेखा पर वैज्ञानिकों का बहुमत इस दृष्टि से सहमत हो चुका है कि यह अब केवल एक दृष्टिकोण नहीं रहा बल्कि इसे वैज्ञानिक सत्य स्वीकार कर लिया गया है... समुद्र विज्ञान के विशेषज्ञ वैज्ञानिक 'मौरिस इबिंग' के शब्दों में यह शोधकार्य, विज्ञान और मानव जाति के लिये इतना महत्वपूर्ण है जितना कि वैज्ञानिक 'आइस्टाइन' के जैति और ऊर्जा के नियम...

पृथ्वी के सभी महाद्वीप आपस में जुड़े हुए थे। बीस करोड़ वर्ष पहले यह महान महाद्वीप दूटना आरम्भ हुआ। यहां तक कि आज के वर्तमान रूप में सात महाद्वीप और विभिन्न द्वीप अस्तित्व में आए... यह सभी महाद्वीप एक ज्बरदस्त शक्ति के द्वारा जिस का केन्द्र अज्ञात है, विभिन्न दिशाओं में बह रहे हैं और उन की रफ्तार एक सैन्टीमीटर से पन्द्रह सैन्टीमीटर वार्षिक है जो कि भूगर्भ शास्त्र (Geology) के हिसाब से एक ज्बरदस्त गति है... मिसाल के तौर पर वैज्ञानिकों को यह मालूम हुआ कि अटलांटिक महासागर की चौड़ाई बढ़ रही है। यूरोप और उत्तरी अमरीका एक दूसरे से ढाई सैन्टीमीटर वार्षिक की गति से दूर होते जा रहे हैं...। समुद्र के फर्श की चाल की गति का हिसाब लगाने के बाद वैज्ञानिक यह पता कर सके हैं कि पृथ्वी के समस्त महाद्वीप पहले किसी रूप में एक दूसरे से जुड़े हुए थे। सब से पहले एक ज्बरदस्त पूर्व-पश्चिम दराड़ पैदा हुई जिस की वजह से अफ्रीका और दक्षिणी अमरीका अलग हुए। अन्टार्कटिका और आस्ट्रेलिया पृथक हुए और हिन्दुस्तान स्वतन्त्र होकर उत्तर की दिशा से बहना आरम्भ हुआ। बीस करोड़ वर्ष में पृथ्वी ने वर्तमान रूप धारण किया... सब से आश्चर्यजनक मामला हिन्दुस्तान का है जिस ने अफ्रीका और अन्टार्कटिका से टूटने के बाद उत्तर की ओर आठ हजार आठ सौ किलोमीटर की दूरी अट्ठारह करोड़ साल में तय की और एशिया के पेट में इतने बेग से प्रविष्ट हुआ कि उस के आगे की जमीन हिनालय के रूप में ऊंची उठ आई... वर्तमान दिशाओं में वर्तमान गति से पृथ्वी के टुकड़ों का बहना जारी रहा तो हिनालय अभी और ऊँचा होगा और फिर हिन्दुस्तान एशिया में घुसते रहने से थक कर पूर्व के ओर बहना आरम्भ कर देगा...।³¹

पिछले पृष्ठ पर दिये गए मानचित्र से यह स्पष्ट है कि हिन्दुस्तान पहले वर्तमान अफ्रीका महाद्वीप से जुड़ा हुआ था। हिन्दुस्तान के अलग होने के बाद करोड़ों वर्ष के परिदर्तनों के फलस्वरूप इस जगह ने वर्तमान अरब का रूप धारण किया।

सृष्टियों में ही विद्यमान है, शेष समस्त पदार्थ निर्जीव हैं। फिर विज्ञान ने पेड़—पौधों में जीवन का होना सिद्ध किया और आज विज्ञान यह बताता है कि प्रत्येक वस्तु में जीवन है यहाँ तक कि इन में चेतना शक्ति और भावनाएं भी होती हैं (यही बात कुरआन से भी सिद्ध होती है लेकिन इस समय यह हमारा विषय नहीं है।) संसार की प्रत्येक वस्तु में जीवन होने की वैज्ञानिक पुष्टि के बावजूद शुद्ध भौतिकादी विचारधारा के लोग शायद हमारी यह बात समझने में असमर्थ हो कि संसर की सभी वस्तुओं में पारस्परिक सम्बन्ध भी हैं, दूरियां भी हैं। और अदृश्य शक्ति के नेतृत्व में विभिन्न नियमों और सिद्धान्त समूहों में बंधी हुई विभिन्न वस्तुओं में आपस में प्रेम और घृणा के सम्बन्ध भी हैं। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि अरब की सरजमीन से भारत के भौगोलिक रूप से अलग होने के बाद भी इन के बीच ऐसे सम्बन्धों की चुन्बकीय और रेडियाई लहरें स्थापित हों जिन की वजह से इन देशों में अतीत में भी गहरे आध्यात्मिक सम्पर्क रहे हैं और भविष्य में भी प्रकट होते रहेंगे।

धूल की पत्तों पर नई पालिश नहीं चढ़ेगी:

प्रबन्धकुशल ईश्वर के प्रबन्ध की तत्वदर्शिता पर जिस पहलू से भी नज़र डाले, कार्यशैली के सौन्दर्य पर अकल हैरान रह जाती है।

करोड़ों साल पहले पृथ्वी के दो टुकड़े, जो एक दूसरे से जुड़े थे, अलग होते हैं। फिर एक टुकड़े पर संसार का पहला पुरुष कदम रखता है और दूसरे पर स्वर्ण से उस की पत्ती को उतारा जाता है। (रिवायतों के अनुसार ह० हव्वा को जद्दे में उतारा गया) इस तरह संसार में बसने वाली मानव जाति के आरम्भ ही से इन दोनों हिस्सों के बीच सम्पर्कों का शुभारम्भ होता है। एक भूभाग का नाम हिन्दुस्तान और दूसरे का नाम सरजमीने अरब है। ह० नूह अलै० का तूफान एक हिस्से से शुरू होता है और यहाँ से ह० नूह अलै० फिर इसी तरफ वापस लौटते हैं।

हिन्दुस्तान की विभिन्न जातियों के लोग प्रत्येक युग में अरब के विभिन्न भागों में पाए जाते रहे हैं। पृथ्वी के एक भाग में आने वाले पैगम्बर भी दूसरे भाग से अपना सम्बन्ध बनाए रखते हैं। फिर अरब में नवी आखिरूज़्ज़मा सल्ल० (अन्तिम ईशदूत) प्रकट होते हैं, एक ऐसी कौम में जो तब्दील होने से पहले विश्वास की गुमराही की दृष्टि से विश्व की अद्वितीय कौम थी। वह स्वयं बदली और दुनिया के एक बड़े हिस्से को बदल कर मोहम्मद सल्ल० की उम्मत में शामिल किया और अब चौदह सौ साल आद अन्तिम शरीअत का झाड़ा उठाने वाली कौम को ह० नूह अलै० की कौम यानी पहली शरीअत वाली कौम के साथ हिन्दुस्तान में इकट्ठा किया जाता है। पहले वैदिकवाद फिर जैनवाद और बौद्धवाद और बाद में मुसलमान सूफ़ियों ने ह० नूह अलै०

के दौर से अब तक इस देश को आध्यात्मवाद के केन्द्र के रूप में बनाए रखा है। हजारों साल पुरानी धूल की पत्ते हटाने की ज़रूरत है। अन्दर से उजली 'ट्राफ़ी' निकलेगी, उस पर पालिश चढ़ाने में कोई कठिनाई नहीं होगी। धूल की पत्तों को हटाए बिना पालिश होना सम्भव नहीं है।

सन्दर्भ-सूची अध्याय : 4

1. 'मुस्लिम'—किताबुल इमान, अ०बदाउल इस्ला—म—गरीबा, सं०: मार्लफ़ो मुनकिर, ल०० स्यद जलालुदीन उमरी, पृ०: 218
2. 'Hindu Manners, Customs & Ceremonies' by A.J.A. Dubois P.—579
3. 'इस्लाम कामिल'—ल००: डाक्टर मोहम्मद अहमद सिद्दीकी—प्रोफेसर अरबी फ़ारसी विभाग—इलाहाबाद यूनिवर्सिटी' सं०: 'फ़ारान'—कराची, जनवरी 1959, पृ०: 1
4. 'कुफ़ तोङ'—ल००: धर्मपाल बी.ए., सं०: त्रैमासिक—आ॒काफ़, पृ०: 29
5. 'नारजील से नखील तक'—ल००: काजी अतहर मुबारकपुरी सं०: मआरिफ़ नं०५, ख०: 89
6. 'अरब हिन्द ताल्लुकात' ल००: स्यद सुलेमान नदवी, पृ०: 12-13
7. 'किताबुल फ़हरिस्त' ल००: इब्ने नदीम, पृ०: 345, सं०: 'अरब हिन्द ताल्लुकात', पृ०: 15
8. 'अरब हिन्द ताल्लुकात' ल००: स्यद सुलेमान नदवी, पृ०: 1-2
9. तफसीरकत्तुल क़दीर—अल्लामा शैक़ानी, ख०० द्वितीय, पृ०: 474
10. 'लबाबुलुवील', ख००: 3, पृ०: 189, प्रकाशित मिस्र 1331 हिज़ी, सं०: 'लुग़तुल कुरआन', संकलनकर्ता: मौ० अब्दुर्रशीद नोमानी, प्र०: 'नववुल मुसनिफ़ीन'—दिल्ली—1400 हिज़ी
11. तफसीर—फ़तहुल क़दीर, ख००: 2, पृ०: 474
12. ल००: नरसिंह अग्रवाल पृ०: 12
13. 'वैनिक कौमी ज़ंग'—रामपुर, 13 मार्च 1988 व 'वैनिक मुनसिफ़'—हैदराबाद
14. 'खिलाफ़ते राशिदा और हिन्दुस्तान' ल००: काजी अतहर मुबारकपुरी, पृ०: 25, प्र०: नववुल मुसनिफ़ीन—दिल्ली, 1972
15. 'अरब हिन्द ताल्लुकात', ल००: स्यद सुलेमान नदवी, पृ०: 115
16. पत्रिका 'मआरिफ़' लेख: शाह मुईनुदीन अहमद, न००: 3, ख०: 95, पृ०: 171
17. 'मुस्लिम इंडिया' उद्दू, अप्रैल 1988, पृ०: 15
18. 'मकत्तुवात' ख००: 1, मक्त्तुव न००: 295, सं०: इस्लाम में दूसरे मजाहिब और अहले मजाहिब की हैसियत—लेख शाह मुईनुदीन अहमद नदवी, प्र०: पत्रिका मआरिफ़ न००: 3, ख०: 95, पृ०: 171
19. 'वैनिक कौमी ज़ंग'—रामपुर, 13 मार्च 1988
20. 'कादम्बिनी' विसम्बर 1978, पृ०: 135 से 139
21. 'खिलाफ़ते राशिदा और हिन्दुस्तान' ल००: काजी अतहर मुबारकपुरी, 1972, पृ०: 47
22. 'खिलाफ़ते राशिदा और हिन्दुस्तान' ल००: काजी अतहर मुबारकपुरी, 1972, पृ०: 29-30
23. ——उपरोक्त— —
24. तिरमिज़ी शरीफ़ (उद्दू), ख००: 2, पृ०: 135, प्र०: रब्बानी बुक डिपो—दिल्ली, वर्ष: 1973

25. 'बुखारी'-किताबुल अंबिया, अ०: वज़कुरफ़िल किताबे करीम
 26. माझ्य-दुर्गमचूर, ल०: अल्लामा स्पोती, खं०: १, पृ०: ५५, सं०: सम्यद सबाहुदीन अब्दुर्रहमान, पत्रिका मआरिफ़, फरवरी १९७५, पृ०: ८७-८८
 27. 'अरब-हिन्द ताल्लुकात' ल०: मौ० सम्यद सुलेमान नववी, पृ०: २-३
 28. 'सुबहतुल मरजान फ़ी तारीखे हिन्दुस्तान' अ०: १, सं०: सम्यद सबाहुदीन अब्दुर्रहमान, पत्रिका मआरिफ़, फरवरी १९७५, पृ०: ८८
 29. 'सुनन निसाई', खं०: २, पृ०: ६३, प्र०: मुजतबाई-दिल्ली
 30. 'खिलाफ़ते रशिदा और हिन्दुस्तान'-ल० काज़ी अतहर मुदारकपुरी, प्र०: नदवतुल मुसन्निफ़ीन रेहली, १९२२, पृ०: ३६
 31. 'रीडर्स डाइजेस्ट-जुलाई १९७१, पृ०: १२७-१३४
- ❖❖❖-----

रौशन वाक्य



“बहुत बड़ी शुभकारिता है कि स्फुटा के दोरत किसी को दोरत रखें।”

(मकत्तूताते रब्बानी, मकत्तूत : ८७)



“समय काटने वाली तलवार है। नहीं मालूम, कल तक जीवित रहें या नहीं। आवश्यक काम आज करें और अनावश्यक को कल के लिये छोड़ दें।”

(मकत्तूताते रब्बानी, मकत्तूत : १३५)

अध्याय : ५

सर्वप्रथम दिव्य ग्रन्थ वेद

वेद का परिचय:

“हम सबसे आगे के ईश्वर (अग्रणी) की ही उपासना करते हैं।”

— (ऋ०: १-१—१)

“हे साक्षात ज्ञान, सब को प्रकाशित करने वाले परमेश्वर! हम को मार्गदर्शन और क्षमा के लिये सद्मार्ग से ले चल। हे सुख दाता प्रभु! दिव्यस्वरूप स्वामी! तू सब की विद्याओं, कर्मों, चिन्तन तथा परस्पर व्यवहारों से परिचित है। हम से विकार, पथश्रब्धता और पाप को दूर कर हम तेरी ही बन्दगी व स्तुति करते हैं।”

— (यजु०: ४०-१६)

“संसार का स्वामी एक ही है।”

— (ऋ०: ३-१२१-१०)

“लोगों सुनो! नराशंस (मोहम्मद सल्ल०) की लोगों के बीच अत्यंत प्रशंसा की जाएगी।”

— (अथर्व० २०-१२७-१)

“वे अन्तिम दिन (महाप्रलय) को भुला कर और ज्ञान व बृद्धि को घृणा से तुकराकर हमारी निश्चित की हुई सीमाओं को फलांग रहे हैं।”

— (ऋ०: १-४-३)

यह कुछ वेद मन्त्रों के अनुवाद है। गम्भीरता से विचार कीजिये कि क्या हिन्दू धर्म का वर्तमान प्रचलित रूप वेदों के उक्त उपदेशों के बिल्कुल विपरीत नहीं है? क्या इन उपदेशों और सूचनाओं में कुआरानी शिक्षाओं और ख्याता से जुरा सी भी असमानता आप को महसूस होती है? वेदों में ऐसी केवल कुछ मिसाले ही नहीं हैं बल्कि राम्य०

वेद इन शिक्षाओं से भरे पड़े हैं। वेदों के कुछ और वचन हम इस अध्याय के अन्त में प्रस्तुत करेंगे। इस से पहले आइए देखें कि साधारण हिन्दुओं की नज़र में वेदों का स्थान क्या है? जिन ईसाई और मुस्लिम शोधकर्ताओं ने किसी हद तक वेदों पर रिसर्च की है, वे क्या कहते हैं? आम हिन्दू मत के अनुसार:

□ वेद श्रुति ज्ञान (सुना हुआ ज्ञान या सुना जाने वाला ज्ञान) है। अज्ञात काल से वेद कहीं लिखित रूप में मौजूद नहीं थे। यह ज्ञान पंडितों की स्मरणशक्ति में था और गोपनीय मार्ग से चला आ रहा था। सब से पहले मैक्समुलर ने कठोर परिश्रम से वेदों के कंठस्थ अनेक पंडितों से सुन कर उसे लिखित रूप में संकलित किया। लिखित रूप में उपलब्ध न होने की वजह से जनमानस के लिये उन्हें पढ़ना तो मुमकिन ही न था यहां तक कि वेद सुनने की भी अनुमति हर एक हो नहीं थी।

□ सभी हिन्दू मानते हैं कि मूल रूप से वेद एक ही था लेकिन आज चार वेद मौजूद हैं। इस विषय में तरह-तरह के विचार व्यक्त किये जाते हैं। कुछ लोगों का विश्वास है कि अस्ल वेद गुम हो गया है। कुछ का मानना है कि इन चारों में ही से एक अस्ल वेद है और कुछ लोग एक वेद को इन चार भागों में विभाजित मानते हैं।

□ वेद ईश्वर-प्रेषित, यानी कलाम-इलाही है। हिन्दू लोग गहाभारत और रामायण को तो ऋषियों द्वारा रचित ग्रन्थ बताते हैं लेकिन वेद को खुदा का कलाम (वाणी) कहते हैं।

□ वेद, ब्रह्म का निज ज्ञान है।

□ वेद दो तरह की विद्याओं पर आधारित है—वेद मन्त्र श्रुति अर्थात् सुना हुआ मोहकमात् का इत्म और वेद तन्त्र श्रुति अर्थात् सुना हुआ 'सुतशाब्दिहात्' का इत्म।

□ वेद आदि ग्रन्थ है।

"आधुनिक युग में वेदों का सर्वप्रथम अन्वेषण करने वाले विद्वान् मैक्समुलर को बीस वर्ष तक अद्यक परिश्रम तथा अपार घनराशि व्यय करने पर भी केवल सायणाचार्य का भाष्य ही सर्वांगपूर्ण स्थिति में प्राप्त हो सका था। उसी के आधार पर उन्होंने सैकड़ों भारतीय पंडितों की सहायता से लुण्ठ प्राप्त: वेदों को संसार के सम्मुख बुद्धित ग्रन्थ के रूप में प्रकट किया था।"¹

(अंग्रेजी से हिन्दी) "आर्य जाति से सम्बन्धित यह सर्वप्रथम बोले जाने वाले शब्द हैं... इन का सम्बन्ध विश्व और भारत के इतिहास से है... यह पिछली पीढ़ियों की यादगार है... मानव जाति की आर्य शाखा से सम्बन्धित दीर्घकालीन ग्रन्थों के क्रम की पहली किताब है।"²

(अंग्रेजी से हिन्दी) "इन चारों वेदों का आरम्भ दिव्य समझा जाता है और यह माना जाता है कि यह सदैव से चले आ रहे... महानतम सृष्टिकर्ता से यह प्रत्यक्ष रूप से प्राप्त हुए हैं।"³

— (मैक्समुलर)

(अंग्रेजी से हिन्दी) "इन का आरम्भ कहां से हुआ, इस के कथनों में विरोधाभास है लेकिन इस पर सहमति है कि मनुष्य को ईश्वर का प्रत्यक्ष उपहार है।"⁴

— (मैक्समुलर)

(अंग्रेजी से हिन्दी) "वर्तमान रूप तक पहुंचते—पहुंचते वेद के विषयों के बारे में काफ़ी मतभेद रहे हैं।"⁵

— (विल्किन्स)

"वेदों की रचना किस ने की? यह टेढ़ा प्रश्न है। निष्ठावान हिन्दू ऐसा मानता है कि वेद अपीरुषे हैं, ईश्वर का निश्वास है। इस का तात्पर्य यह है कि वह ईश्वरीय ज्ञान है।"⁶

— (डॉ सम्पूर्णनन्द)

ईसाई स्कालर 'ड्यूबाइस' अपनी किताब के पृष्ठ 174 पर लिखता है

(अंग्रेजी से हिन्दी) "और नक़्ल करने वालों से लापरवाही या अज्ञान के कारण बड़ी तादाद में गलतियां हुई हैं।"

ह० शाह बली उल्लाह देहलवी रह० के समकालीन मिर्ज़ा मज़हर जाने जाना रह० के शाह अब्दुल अज़ीज़ रह० के नाम लिखे गए एक मकतूब (पत्र) पर टिप्पणी करते हुए प्रोफ़ेसर खलीक निजामी लिखते हैं

(उर्दू से हिन्दी) "उन्होंने हिन्दुओं को अरब के मुशरिकों (मिश्रक अद्यवा बहुदेववादी) के समान स्वीकार करने से न केवल इनकार किया है बल्कि वेद को इलहामी (ईश्वरीय) किताब मानते हुए हिन्दुओं को 'अहले किताब' का दर्जा दिया है।"⁷

(उर्दू से हिन्दी) "मज़ाहिरुल चलूम सहारनपुर के मुफ्ती मौ० मोहम्मद यह्या साहब ने एक प्रश्न के उत्तर में लिखा -ह० मिर्ज़ा मज़हर जाने जाना रह० के पत्रों में वेद के सम्बन्ध में लेख मौजूद है कि उन्होंने इस को 'आसमानी और 'इलहामी' किताब ठहराया है... और मौ० शाह अब्दुल अज़ीज़ रह० और मौ० मोहम्मद हर्ई साहब लखनवी के फ़तवाँ (धर्मदिशाओं) में इन के मुक़तदाओं (अग्रदूतों) की चर्चा है जिन को यह अवतार कहते हैं। निष्कर्ष यह है कि जो लोग मसलन आर्य अपने धर्म को आसमानी धर्म और अपनी किताब को इलहामी किताब कहते हैं, उन से उन के दावे पर दलील मांगी जा सकती है।

लेकिन बिना कारण अन्तिम रूप से इस का इनकार न किया जाए। चुनांचे हमारे उस्ताद मौ० असदुल्लाह साहब, अनुचित शब्दों का उन के लिये प्रयोग नहीं करते थे।⁸

दारुल उलूम देवबन्द के संस्थापक मौ० मोहम्मद क़सिम साहब नानौतवी का मत तो इस सिलसिले में इतनों सावधान था कि रामचन्द्र जी और कृष्ण जी की शान में भी गुस्ताखी को मना फ़रमाते थे क्यों कि उन के विचार में इन के 'ईशदू' होने की सम्भावना है।

पवित्र कैसे माने?

अब तक के अध्ययन का निचोड़ यह है कि वेदों में आस्मानी कलाम होने की सम्भावना है। कम से कम वह भाग निश्चित रूप से देववाणी है जिनमें अज्ञात काल पहले दी हुई रसूलुल्लाह सल्ल० के शुभआगमन की सूचनाएँ विद्यमान हैं। लेकिन कुल मिलाकर केवल तौहीद और आखिरत के धर्म विश्वासों की उपस्थिति इस की दलील नहीं हो सकती कि उन्हें अल्लाह की किताब के उस रद्दोबदल किये हुये रूप का भी दर्जा दिया जा सके जो तौरेत, जबूर और इन्जील का है। इस के तीन कारण हैं:

- (1) वर्तमान तौरेत, जबूर और इंजील ही को पवित्र ग्रन्थों के दर्जे पर रखने में अभी संदेह है।
- (2) कलाम के प्रमाणित होने की दलील स्वयं कलाम होता है। तौहीद और आखिरत के केवल कुछ उदाहरण मिलने से वेदों को अभी तौरेत, जबूर और इन्जील की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता।
- (3) तौरेत, जबूर और इन्जील की चर्चा कुरआन ने की है और वेदों का कुरआन में कहीं वर्णन नहीं है।

हम एक-एक करके उक्त शंकाओं का विश्लेषण कर रहे हैं :

वर्तमान तौरेत, जबूर और इन्जील को पवित्र ग्रन्थों की श्रेणी में रखने की समस्या को मौ० उबैदुल्लाह सिन्धी रह० ने बड़ी ख़ुबी के साथ हल किया है। वह लिखते हैं:

(उर्दू से हिन्दी) "...हमारे विद्वान आम तौर पर यह समझते हैं कि असली तौरेत और इन्जील गायब हो चुकी हैं... इस लिये वे इन किताबों को पवित्र मानने के लिये किसी तरह तैयार नहीं हैं। इस दृष्टिकोण से यह बुरा परिणाम निकला कि कुरआन हकीम ने जहां पूर्व ग्रन्थ वालों को अपनी किताबों पर आचरण करने का निमन्त्रण दिया और आचरण न करने का आरोप लगाया, उनकी

सही व्याख्या करने में हमारे विद्वान असमर्थ रहे..."⁹
 (उर्दू से हिन्दी) "...कुरआन अजीम की तरह ऐसी वह्य (आकाशवाणी) जिस के अर्थ व शब्द निर्धारित होकर नाजिल (अवतरित) हों और निश्चित रूप से सुरक्षित रहें, कुछ हिस्सों के अलावा किसी धर्म के ईश्वरीय ग्रन्थ में यह तरीका नहीं बरता गया। आम तौर से (उन के) धर्माचार्य किताबें अपने इजतिहाद से जमा करते हैं जो उस नवी की सीरत (जीवन चरित) और उस के कथनों को संकलित कर देती हैं। यानी इन की किताबों में वह चीज भी आ जाती है जो प्रत्यक्ष शब्दों में और निश्चित होकर नाजिल हुई। जैसे तौरेत के अहकामे अशः (दस आदेश) और इंजील के कुछ उपदेश। इस के अतिरिक्त वह चीज भी आ जाती है जो नवी अपने इजतिहाद से तालीम देता है। यह निर्णीत आदेश है कि नवी के इजतिहाद पर ईश्वर की ओर से संशोधन न हो तो वह वह्य के समान आदेश समझा जाता है।"¹⁰

(उर्दू से हिन्दी) "...कुरआन व्यय रसूलुल्लाह सल्ल० के सामने ही एक लिखित ग्रन्थ के रूप में सुरक्षित कर दिया गया और इस की परम्परा कमशः बनी रही लेकिन हदीस में जो वह्य आई, उन (विद्वानों) के मत में भी न तो हुजूर (सल्ल०) के युग में इस की किताबत हुई और न इस के लिये निस्तरताआवश्यक है। उन लोगों की परिभाषा पर यदि पिछले पवित्र ग्रन्थों को हदीस की किताबों का दर्जा दिया जाए तो इस से भी आगे की श्रेणी में इस को कल्पनातीत नहीं समझना चाहिए। अगर यह लोग इस बात को स्वीकार कर लें तो समस्त कठिनाइयां दूर हो जाएंगी।

- हमारी हदीस की किताबों में गलत रिवायतें भी मौजूद हैं, यह सर्वसम्मति से कहा जा सकता है।
- इन हदीस की किताबों में एक घटना को विभिन्न तरीकों से भी रिवायत किया गया है।
- हमारी बहुत सी हदीस की किताबों में भी कातिबों से गलतियां होती रही हैं जिन को विद्वान शोधकर्ता दुर्लक्ष करते रहते हैं।

इस के बाद अगर चार प्राचीन इंजीलों को हमारी चार हदीस की किताबों (बुखारी, मुस्लिम, अबूदाऊद, तिरमिजी) के दर्जे पर रख दिया जाए तो जरा सा भी अन्तर दिखाई नहीं देगा..."¹¹

(उर्दू से हिन्दी) "...हमारी उम्मत में पवित्र ग्रन्थों की इस प्रकार की मिसाल में

शाह साहब (वली उल्लाह रह० देहलवी) सही बुखारी व सही मुस्लिम को पेश करते हैं...

...मैं ने इन्जील की व्याख्या मिस्टर हेनरी इस्काट की उर्दू में पढ़ी, इस में चारों इन्जीलों के मतभेदों को इस तरह संकलित करने और प्राथमिकता देने की कोशिश की गई है जैसे हम हडीस की किताबों में करते हैं।'' 12

यह सच है कि जब हम गौर करते हैं तो हमें महसूस होता है कि आज तक पूर्व ग्रन्थों को पवित्र किताबों का दर्जा देने में यहीं शंकाएं रकावट बनी हैं। इन किताबों में सर्वसम्मति से कहा जा सकता है कि रद्दोबदल भी दर्ज है। प्रायः एक घटना का विभिन्न तरीकों से वर्णन किया गया है और उन की लिखाई में परिवर्तन भी होते रहे हैं जिनमें उनके स्कैलर संशोधन करते रहे हैं।

मौलाना के स्पष्टीकरण के बाद यह समझ में आता है कि पिछले ग्रन्थों को पवित्र मानने में दरअसल हिचकिचाहट ही इसलिये महसूस होती थी कि सहीफे (ग्रन्थ) का नाम आते ही हम मानसिक रूप से कुरआन से उस की तुलना आरम्भ कर देते थे लेकिन अगर हडीसों के संग्रहों को भी हम पवित्रता का दर्जा दे सकते हैं जब कि इन में वही तकनीकी त्रुटियाँ मौजूद हैं जो पिछले ग्रन्थों में हैं तो इन ग्रन्थों को पवित्र मानने में आपत्ति नहीं होगी। पिशेषतया इस बात को महेनजर रखते हुए कि कुरआन में जगह जगह इस बात का आग्रह है। और यह भी नजर में रखें कि हडीसों के संकलनों को यदि यह वरीयता प्राप्त है कि उन पर बेमिसाल रिसर्च हुई है (इस के बावजूद बड़ी संख्या में संदिग्ध हडीसें मौजूद हैं) तो हम तौरेत और इन्जील को इस दृष्टि से प्राथमिकता दे सकते हैं कि इस में कलामे इलाही (ईशावाणी) भी दर्ज होने पर सब सहमत हैं।

इस बिन्दु के स्पष्ट हो जाने के बाद अब अगर हमें वेदों के बारे में यह प्रमाण मिल सकें कि उन में दर्ज कलाम स्वयं कलामुल्लाह (ईश्वर की वाणी) होने की गवाही देता है और कुरआन से भी वेदों की पुष्टि हो जाए तो मौ० सिन्धी की बताई हुई शैली पर वेदों को भी कुतब मुक़ड़िसा (पवित्र ग्रन्थ) स्वीकार करने में कोई कठिनाई नहीं होगी।

एक कलाम (वाणी), दूसरे कलाम की ज्योति में :

कलामे इलाही स्वयं अल्लाह का कलाम होने का प्रमाण होता है। कुरआन के विषय स्वयं कुरआन की सच्चाई की सब से बड़ी दलील है। आइए वेदों के कुछ वचनों पर कुरआन की ज्योति में नजर डालें। इस सन्दर्भ में समस्त वेद मन्त्रों के अनुवाद हम ने श्री गंगा प्रसाद उपाध्याय की किताब इस्लाम के दीपक से लिये हैं:

कुरआन

अलहम्दु लिल्लाहि रबिल

आ—लमीन।

सब स्तुति अल्लाह के लिये है जो जगतों
का स्वामी है। (कुः 1-1)

अर्ह मानिरहीम

अत्यन्त कृपारील और दयावान है।
(कुः 1-5)

इहदि नस्सरातल् मुस्तकीम।

हमारा सीधे मार्ग की ओर मार्गदर्शन कर।
(कुः 1-5)

अलम तअ्लम अन्नल्ला—ह लहू

मुलकुस्समावाति वल अर्ज,
क्या तुम नहीं जानते कि आकाशों और
धरती का राज्य अल्लाह ही के लिये है,
व मा—लकुम मिन दूनिल्लाहि
मिवं वलिथ्यैं वला नसीर...
और तुम्हारा अल्लाह के सिवा कोई
संरक्षक है और न सहायक।

(कुः 2-107)

व ख—ल—क कुल—ल शैइन

और उसने हर (विद्यमान) वस्तु को पैदा
किया। (कुः 2 5-2)

व अन्फ़कू खैरलिल अन्फुसिकुम,
और अपने हित में भलाई के लिये खर्च
करते रहो। (कुः 6 4-16)

इन तुक्करिजुल्ला—ह करजन ह—
सर्नेय्युजाइफ़हु लकुम

यदि तुम अल्लाह को क़र्ज दो, अच्छा
क़र्ज तो वह उस को तुम्हारे लिये बढ़ाता
चला जाएगा। (कुः 6 4-17)

वेद

मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः

उस जगत के स्वामी के लिये बड़ी स्तुति
(ऋ०: 5-8 1-1)

वसुर्वद्यमानः

जो धारक और दयावान है।

(ऋ०: 3-34)

नय सुपथा राये अस्मान

हमको हमारे हित के लिये सीधे मार्ग पर
लगा। (यजु०: 40-16)

महोदिवः प्रथिव्यस्व सप्त्राट

वह महान, धरती एव आकाश का सप्त्राट
है। (ऋ०: 1-100-1)

नो भवत्विन्द्र ऊर्ती

वह ईश्वर हमारी सहायता करे।

(ऋ०: 1-100-1)

प्रजापति जर्नयति प्रजा इमा:

ईश्वर सब प्रजा को रचता है।

(अर्थव०: 7-19-1)

य एक इद् विद्यतेवसु मत्तय

दाशुर्वे

ईश्वर एक है। वह दयालु, दानशील पुरुष
को जीविका प्रदान करता है। (१-८४-७)

...व हु—व युतेइमु व ला युतअमु,.....
वह सब को खिलाता है। उस को खिलाया
नहीं जाता। (क्र०:6-14)

.....लै—स कमिस्लिही शैउन,.....
उस की किसी वस्तु से एकलूपता नहीं है।
(क्र०:42-11)

व लिल्लाहिल्मशरिकु वल्मगरिबु.....
और अल्लाह ही का है पूर्व भी और परिचम
भी। (क्र०:2-115)

...फ ऐ नमा तु वल्लू फ़ सम्—म
बज्हुल्लाह, इन्नल्ला—ह वासिउन
अलीम।
सो तुम जिधर भी मुह फेरो अल्लाह ही
का अस्तित्व है। अल्लाह समाई वाला
और जानने वाला है।
(क्र०:2-115)

.... व नहनु अक्—रबु इलैहि दिन
हब्लिल्वरीद।
और हम तो उस की शहरा (सांस की
नाली) से भी ज़्यादा उस के निकट है।
(क्र०:50-16)

व ला युहीतुना विशैइम भिन इल्मही
इल्ला बिनाशाआ वसि—अ कुरसियु
डुस्—समावाति वल अर्ज,.....
और वे उस के ज्ञान में से किसी चीज पर
होंयों नहीं हो सकते सिवाय उस के कि
जितना वहं चाहें। उसी का प्रभुत्व (कुर्सी)
आकाशों और धरती पर छाया हुआ है।
(क्र०:2-255)

व युनाम्बेज्जुल गै—स
और वही मैं बरसाता है। (क्र०:31-34)

अनशनन्नन्यो अभिचाक शीति
वह खाता नहीं, जीवों को खिलाने की
व्यवस्था करता है। (ऋ०: 1-164-20)

न तस्य प्रतिभा अस्ति
उस प्रभु की कोई मूर्ति नहीं बन सकती।
(यजु०:32-3)

यंस्येमा: प्रदिशः
सब दिशाएं उसी की हैं।
(ऋ०:10-121-4)

सविता पश्चातात् सविता पुरस्तात्
सवितोत्तरतात् सविताधरातात्
ससार का सृष्टा, पूर्व, परिचम, ऊपर और
नीचे सब जगह है। (ऋ०:10-36-14)
विश्वत चक्षुरुत विश्वतो मुखो
ईश्वर की आंखें हर तरफ़ हैं, ईश्वर का
मुख हर तरफ़ है। (ऋ०:10-81-3)

त्वंनो अन्तम उत त्राता
तू हम से निकटतम और रक्षक है।
(ऋ०: 5-24-1)

न यस्य द्यावा प्रथिवी अनव्यचो
न सिंघवो रजसो अन्तमानशुः।
नोत स्ववृष्टिं मदे अस्य युद्ध्यत
एको अन्यद् चकृष्टे विश्वमानुष्ट्।
न पृथ्वी न आकाश उस ईश्वर की
व्यापाकता की सीमा को पा सकते हैं। ज
आकाश के लोक, न आकाश से बरसने
वाला मैं ह, सिवाय उस ईश्वर के और कोई
दूसरा इस विश्व पर अधिकार नहीं
रखता। (ऋ०:1-52-14)

अलम त—र अन्नल फुल—क तजरी
फ़िल बहरि बिनिअमतिल्लाह
क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ही के
अनुग्रह (कृपा) से नौका समुद्र में चलती
है। (क्र०:31-31)

अलम त—र अन्नल्ला—ह
यूलिजुल्लै—ल फ़िन—नहारि व
यूलिजुन—नहा—र फ़िल लैलि व
सख—खरश—शम—स वल क—म—र
कुल्लुंय यजरी इला अ—
जलिम्मुसम्मैव—व अन्नल्ला—ह बिमा
तब्लमू—न खबीर

क्या तुम नहीं देखते अल्लाह रात को दिन
में प्रविष्ट करता है और सूर्य और चन्द्रमा
को काम में लगा रखा है, हर एक नियत
समय तक चलता रहेगा; और यह कि
अल्लाह तुम्हारे सब कर्मों की पूरी खबर
रखता है। (क्र०:31-29)

निअमतम्मिन इन्दिना, कजालि—क
नजजी मन शकर।

यह हमारे पास से एक वरदान है कि जो
धन्यवाद करता है हम उसे ऐसा ही सिला
दिया करते हैं। (क्र०:54-35)

.... इन्नल्ला—ह ला युहिल्लु मन
का—न मुखतालन फ़खूरा।
निस्सन्देह अल्लाह ऐसों को दोस्त नहीं
रखता जो इतराने वाले और ढींग मारने
वाले हैं। (क्र०:4-36)

वल्लाहु यअलमु मा फ़िस्समावति व
मा फ़िल अर्ज, वल्लाहु बिल्लिल
शैइन अलीम।

वेद नावः समुद्रियः

वह समुद्र की नौकाओं को जानता है।
(ऋ०:1-25-7)

अहोरात्रणि विदघद् विश्वस्य मिष्ठो
दशी

समस्त प्राणियों को वश में रखने वाले
ईश्वर ने दिन और रात का क्रम स्थापित
किया। (ऋ०:10-190-2)

यद्गु. दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि।
तवेत तत् सह्यमङ्गुरः।

हे प्रकाशस्वरूप ईश्वर! आप धर्मात्मा पुरुष
का कल्याण करते हैं। यह आप का सच्चा
स्वभाव है। (ऋ०:1-1-6)

ऋतस्य पथा नमसा दिवासेत्

मनुष्य को चाहिये कि सत्य के मार्ग में
विनम्रता से चले। (ऋ०:10-31-2)

यो विश्वाभि वि पश्यति मुवना
संच पश्यति

और अल्लाह आकाशों और धरती में जो कुछ है उसे जानता है और अल्लाह सब चीज़ों को जानता है। (क्र०: 49-16)

..... यअलमु सिर-रकुम व जह-रकुम
व यअलमु मा तकसिबून् ।

वह तुम्हारी छिपी और तुम्हारी खुली सब बातों को जानता है, और जो कुछ तुम करते हो उसे जानता है। (क्र०: 6-3)

...वहु-व म-अकुम ऐ-न-मा कुन्तुम,
वल्लाहु विमा तभ-मलू-न बसीर ।
और जहां भी तुम हो वह तुम्हारे साथ है।
और जो कुछ भी तुम करते हो उसे अल्लाह देख रहा है। (क्र०: 57-4)

व हुवल काहितु फौ-क इबादिही, ..
उसे (अल्लाह को) अपने बन्दों पर पूर्ण प्रभुत्व प्राप्त है। (क्र०: 6-18)

यअलमु मा यलिजु फिल अर्जि वमा
यखुरुजु मिन्हा वमा यन्जलु
मिनस्समाइ वमा यअरुजु फीहा,
वह उसे भी जानता है जो चीज धरती के अन्दर प्रविष्ट होती है और जो उस में से निकलती है और जो आकाश से उतरती है और जो उस में वापस चढ़ती है।

(क्र०: 57-4)

व हुवल-लजी अरसलरिंया-हुशरम
वै-न य-दइ रहमतिही

और वही है जो अपनी दयालुता के आगे शुभसूचना के रूप में हवाओं को भेज देता है। (क्र०: 25-48)

वहुवल-लजी ज-अ-ललै-ल वन
नहा-र खिलफतन.....

वह ईश्वर सारे संसार को भलीभांति जानता है। (ऋ०: 10-187-4)

यस्तिष्वति चरति यश्व वञ्चति,
यो निलायं चरति या प्रतङ्गम्
द्वौ संनिष्ठ्य यन् मन्त्र येते
राजातद् वेद वरुणस्तृतीयः।
जो खड़ा होता, चलता, धोखा देता है,
छिपता फिरता है, दूसरे की हिंसा करता है। दो चुपके-चुपके कुछ बात करते हैं।
तीसरा ईश्वर उन सब को जानता है।
(अर्थव: 4-16-2)

विश्वस्य मिष्टो वशी
वह सब प्राणियों को वश में रखता है।
(ऋ०: 10-190-2)

सर्वतद् राजा वरुणो विच्रष्टे
यदन्तरा रोदसी यत् परस्तात्

जो कुछ पृथ्वी में या आकाश में या उसके ऊपर है उसका ईश्वर देखता है।
(अर्थव: 4-16-5)

वेद वातस्य वर्तनिमुरो ऋष्वस्य वृह्तः।

वेदा ये अध्यासते
वह ईश्वर वायु के सुखद मार्गों को जानता है और उन सब पदार्थों को जो उसके सहरे हैं। (ऋ०: 1-25-9)

अहोरात्राणि विदधः

और वही है जिसने रात और दिन को एक दूसरे के पीछे आने जाने वाला बनाया।
(क्र०: 25-62)

दिन और रात बनाए।
(ऋ०: 10-190-2)

व ज-अललै-ल स-कन्वशशम-

स वल क-म-र हुरखाना,

और उसने रात को आसम के लिये बनाया और सूरज और चाँद को हिंसाव (गणना) के लिये। (क्र०: 6-69)

..... अला लहुलखल्लु वल अग्र, तवा
रकल्लाहु रख्खुल आलमीन। उद्ध
रब-बकुम तजरुर्अंव-व खुपयः, इन्हू
ला युहिष्वल मुअतदीन।

जान लो ! उसी की सृष्टि है और हुवम भी। अल्लाह सारे संसार का रब बड़ी बरकत वाला है। तुम लोग अपने रब से विनम्रता से और चुपके-चुपके प्रार्थना किया करो। निस्सन्देह वह हृद से आगे बढ़ने वालों को पसन्द नहीं करता है।
(क्र०: 7-54, 55)

..... अल्कबीरलु मु-तआल।
(अल्लाह) महान और महामान्य है।
(क्र०: 13-9)

..... ला तब्दी-ल लि-
कलिमातिल्लाह, ...

अल्लाह की बातों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ करता। (क्र०: 10-64)

व लन तजि-द लिसुन्नातिल्लाहि
तब्दीला।

और तुम ईश्वर के नियमों में कोई परिवर्तन नहीं पाओगे। (क्र०: 48-23)

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत

सूर्य और चांद को विधाता ने पूर्व कल्पों के समान रखा। (ऋ०: 10-190-3)

होतारं सत्ययजं रोदस्योरुत्तानहस्तो
नमसा विवासेत

पृथ्वी और आकाश को ठीक मार्ग पर चलाने वाले पूजनीय प्रभु से नन्त्रता ने ऊपर हाथ उठा कर प्रार्थना करो।
(ऋ०: 6-16-46)

अद्वा देव महाँ असि।
ईश्वर बहुत बड़ा है। (अर्थव: 20-58-3)

अद्व्यानि वरुणस्य व्रतानि।
ईश्वर के नियम नहीं बदलते
(ऋ०: 1-24-10)

न किरस्य प्रभिनन्ति व्रतानि
ईश्वर के नियमों को कोई नहीं बदल सकता।
(अर्थव: 18-1-5)

व लिल्लाहि माफिस्-समावाति व
माफिल अर्जि लि यज-जियल-
लजी-न असाउ बिमा अभिलू व
यजजियल-लजी-न अहसनू बिल
हुस्ना।

और आकाशों और धरती में जो कुछ भी
है अल्लाह ही की सम्पत्ति है ताकि
जिन्होंने बुरे कर्म किये उन को बुरा बदला
दे और सुकर्म करने वालों को अच्छा
बदला दे। (कुः ५३-३१)

हुवल् अव-वलु वल-आखिरु
वज्ञ-जाहिरु वल् बातिनु, व हु-व-
बिकुल्लि शैइन अलीम्।

वही आदि है, वही अन्त है; और वही
भीतर है और वही बाहर है; और वह हर
चीज का ज्ञान रखता है। (कुः ५७-३)

क़द तब्यनर्झिदु मिनल गृथि,
फ़ मर्ट्यकफ़्रु र बित्तागूति व
यु अभिम्-बिल्लाहि फ़-क़दिस्
तम-स-क बिल् उर्वतिल् दुस्का....

सही बात नासमझी की बात से अलग
होकर बिल्कुल सामने आ गई है, अब जो
तागूत (दानव) को तुकरा दे और अल्लाह
पर ईमान ले आए उस ने एक बड़ा
मजबूत सहारा थाम लिया।

(कुः २-२५६)

... व अन्तुम तत्त्वनल् किताब,
अ-फ़ला तअकिलून।

यद्यपि तुम किताब' (इश्वरीय) पढ़ते
हो, तो क्या तुम समझ से काम ही नहीं
लेते ? (कुः २-४४)

इसे चित् तव मन्यवे वैपेते
मियसा मही यदिन्द्र बजिननोजसा
वृत्रं मरुत्वाँ अवधीर चंत्रनु स्वराज्यम्।

हे परमेश्वर! पृथ्वी और आकाश तेरे भय
से कांपते हैं। हे इश्वर, तू अपने कोप से
दुष्टों को मारता है और श्रेष्ठ पुरुषों को
आत्मिक प्रकाश प्रदान करता है।
(ऋ०: १-८०-११)

त्वमग्ने प्रथमो अहिस्सत्मः

हे परमेश्वर! तू सब से पहला है और सब
से अधिक जानने वाला दूसरे
का बोझ नहीं उठाएगा। (कुः ५३-३८)

दृष्ट्वारुपेव्याकरोत् सत्यानृते
प्रजापतिः अश्रद्धामनृते दधाव
षट्द्वां सत्ये प्रजापतिः

खुदा ने सत्य और असत्य के तथ्य को
समझकर सत्य को अस्त्य से अलग कर
दिया। उसकी आज्ञा है कि (हे लोगों) सत्य
में श्रद्धा करो। असत्य में अश्रद्धा करो।
(यजुः १९-७७)

उत त्वः पश्यन्न ददर्श वाचम्
उत त्वः शृणवन्न श्रणोत्येनाम
मूर्ख लोग वाणी देखते हुए नहीं देखते और
सुनते हुए नहीं सुनते। (ऋ०: १०-७१-४)

... व ला तशतर्ल बिआयाती स-मनन
कलीलैव व इत्या-य फृत-तङ्कून।

और थोड़ी सी कीमत के बदले मेरी
आयतों को बेच मत डालो और सिर्फ मुझ
ही से डरो। (कुः २-४१)

अल्ला तजिरु वाजि-रतुँव विज-र-
उखरा।

और यह कि कोई बोझ उठाने वाला दूसरे
का बोझ नहीं उठाएगा। (कुः ५३-३८)

इन्नल्ला-ह ला यजलिमुन्ना-स
शैअैव वलाकिनन्ना-स

अन्फु-सहुन यजलिमून।
देशक अल्लाह इन्सानों पर बिल्कुल
अत्याचार नहीं करता, बल्कि लोग स्वयं
अपने आप पर अत्याचार करते हैं।

(कुः १०-४४)

लन तनालुल बिर-र हत्ता तुन्फ़िकू
मिम्मा तुहिब्बून,

तुम नेकी को नहीं पहुंच सकते जब तक
उन चीजों को (खुदा की राह में) खर्च न
करों जो तुम्हें प्रिय हैं। (कुः ३-९२)

अल्लजी-न युन्फ़िकू-न फिस्सर्राइ
वज्जर्राइ वल् काजिमीनल् गै-ज
वल् आफ़ी-न अनिन्नास, वल्लाहु
युहिब्बुल् मुहसिनीन।

यह वह लोग हैं जो समृद्धि और तंगी दोनों
में खर्च करते हैं और गुरुसे को सहन करते
हैं और लोगों को क्षमा करते हैं, और
अल्लाह उत्तमकारों को दोस्त रखता है।

(कुः ३-१३४)

महेचन त्वामद्विवः पराशुल्काय देयाम्।
न सहस्राय नायुताय बज्जिवोन न शताय
शतामघ

हे एक रस प्रभु, तू इतना बहुमूल्य है कि
मैं तुझ को किसी मूल्य के लिये न त्यागू
न हजार के लिये, न अरब के लिये न
सैकड़ों लोगों के लिये। (ऋ०: ८-१-५)

स्वयं यजस्व स्वयं जुषस्व

तू ही कर्म कर तू ही उस का फल भोग।
(यजुः २३-१५)

क्रत्वः समह दीनता प्रतीप जगमा शुचे।
मूला सुक्षत्र मूलय

हे महान और पवित्र प्रभो! हम अपनी
मूर्खता से कुमार्ग पर चलते हैं। हे रक्षक!
हम पर दया करो। –
(ऋ०: ७-८९-३)

केवलाधो भवति केवलादी

जो अपनी कमाई को अकेला ही खाता है
वह पाप खाता है।

(ऋ०: १०-११७-६)

स इद भोजो यो गृहवे
ददात्यन्नकामाय चरते कृशाय

अरमस्मै भवति यामहूता
उत्तापरीषु कृषुते सखायम्
जो भूखों और असहायों को दान देता है
वही पुण्यशील है। उसी का भला होता है।
शत्रु भी उस का भित्र बन जाता है।

(ऋ०: १०-११७-३)

फृजालिकल्लजी यदुअ उल
यतीम। व ला यहुप्जु अला
तआगिल् मिस्कीन। फैल्लिलल्
मुसल्लीन।

सो वह व्यक्ति जो अनाथ को धक्के देता है और मोहताजों के लिये खाना देने की प्रेरणा नहीं देता। तो ऐसे नमाजियों के लिये बड़ी ख़राबी है।

(कृ०: १०७-२, ३, ४)

य आध्याय चकमानाय पित्वो
उन्वानृत्सन् रकितायोपजग्मुषे?
स्थिरं मनः कृपुते सेवते
पुरोतोचित् स नर्दितारं न विन्दते
जो रक्षा के पात्र अनाथ अन्न चाहने वाले
भूखे को अन्न होते हुए भी अन्न नहीं देता
या उपेक्षा करता है। स्वयं कठोर हृदय हो
कर खाता रहता है, उस को विपत्ति आने
पर कोई सुख नहीं मिलता।

(ऋ०: १०-११ ७-२)

अभी और परखिये

यदि आप का वर्षों से खोया हुआ भाई अचानक कहीं बाजार में मिल जाए तो क्या आप चेहरे मोहरे के कुछ परिवर्तन की वजह से उसे पहचानने या गले लगाने से इनकार कर देंगे? जब कि उस के चेहरे पर बचपन के जाने पहचाने स्पष्ट लक्षण भी हों? हाँ यह सम्भव है कि आकार-प्रकार की सदृशता के कारण पहले आप ठिठकें, फिर उस के अंतीत के बारे में प्रश्न करें और उन लक्षणों को ध्यानपूर्वक देखें। इस के बाद निःसन्देह आप उसे लिपटा लेंगे और पहले से कहीं ज़्यादा प्रेम, उस के लिये आप के दिल में उमड़ पड़ेगा। अगर वह आप को न पहचान सकेगा तो आप बड़ी उत्सुकता से अपनी पहचान कराने की कोशिश करेंगे। अब आइये आकाश-प्रकार में एक रुपता देखने के बाद उपने अंतीत में खोए हुए भाई की कुछ निशानियों को गौर से देखें और उस से कुछ प्रश्न करें :

प्रतित्यं चारुमध्वरं गौपीधाय प्रदूयसे। मरुद्विरग्न आ गहि
नहि देवो न मत्यो महस्तव क्रन्तु परः। मरुद्विरग्न आ गहि
ये महो रजसो विदुर्विवे देवासो अद्वृहः। मरुद्विरग्न आ गहि
ये उग्रा अकर्मानृ चुरना धृष्ट्यस ओजसा। मरुद्विरग्न आ गहि
ये शुभ्राघोरवर्पसः सुक्षत्रासो रिशादसः। मरुद्विरग्न आ गहि
ये नाकस्याधि रोचने दिवि देवास आसते। मरुद्विरग्न आ गहि
ये इङ्गन्ति पर्वतान् तिरः समुद्रमवर्णवम्। मरुद्विरग्न आ गहि
आ पे तन्वन्ति रश्मिभिस्तः सभुदमोजसा। मरुद्विरग्न आ गहि
अभि त्वा पूर्वपीतये सृजामि सौन्यं सघु। मरुद्विरग्न आ गहि

(ऋ० १-१९-१ से ९)

* नोट : श्री गगा प्रसाद उपाध्याय के वेद के अनुवादों से हमें कुछ स्थानों पर असहमति है, लेकिन यह हम ने उन ही के अनुवाद उद्धृत किए हैं। (ऋ० १-१९-१)

ऊपर दिये गए प्रत्येक मन्त्र के अन्त में एक ही वाक्य है—‘मरुद्विरग्न आ गहि’ अर्थात् अग्नि का रहस्य मरुस्थलीय या रेगिस्तानी उमत (मुसलमान) के मध्यम से प्राप्त होता है। इस वाक्य को बार-बार दोहराया गया है। क्या यह कुरआन की सूरए रहमान की सी वर्णन ईली नहीं है जिस में पूरी सूरः में एक जुमला ‘फृवि अद्य आलाइ रव्वि कुमा तुक़जिज्बान’ (फिर तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन से वरदानों को झुटलाओगे?) की ३। बार तकरार (पुनरावृत्ति) है। यह केवल इत्प्राक् नहीं है। यह पुनरावृत्ति ऋग्वेद के पहले मण्डल के अट्ठारहवें सूक्त में भी मिलती है जहाँ ‘द्युम्नैरभि प्रणोनुमः’ (बड़े प्रयोजन और शान के साथ हम हर दिशा से स्तुति करते हैं) को पांच बार इसी तरह दोहराया गया है। विस्तीर्ण होने के कारण हम यह सूक्त और इस जैसे दूसरे उदाहरण जिन को हम प्रस्तुत कर रहे हैं, उनके पूरे मन्त्र हम नकल नहीं कर रहे हैं। इसी तरह सामवेद में निरन्तर तीन श्लोकों के अन्त में निम्नलिखित वाक्य को दोहराया गया है :

‘न भन्तामन्यकेषा ज्याका अधिघन्वस’ (दुश्मन की खिंची हुई कमानें टूट जाएं) सामवेद (प्रपाठकः ९, भागः १४)

ऋग्वेद (१०-१०५) में निरन्तर १३ बार यह दोहराया गया है : ‘विचं मे अस्य रोदसी’ (हे स्वर्ग की सरजनीन मेरे दुख पर ध्यान दो)

ऋग्वेद (१०-१२१) में ‘कस्यै देवाय हविषा विधेम’ (हम किस खुदा को कुरबानी पेश करें?) लगातार ९ बार आया है।

यजुर्वेद के २।१ वें अध्याय के एक भाग में मन्त्र ४८ से ५५ तक लगातार हर मन्त्र के अन्त में यह पुनरावृत्ति है : ‘दधुरिन्द्रियं वसुधेयस्य व्यन्तु यज’

कुरआन शरीफ में भी इस किस्म की तकरार सिर्फ़ सूरए रहमान ही में नहीं है बल्कि निम्नलिखित सूरतों में भी यह मिसालें हमें मिलती हैं।

सूरए मुसलाम में ‘वैलुध्यै-म इजिललिल मुक़जिज्बीन’ (बड़ी ख़राबी है उस दिन झुटालने वालों के लिये) १० बार, सूरए क़मर में व-ल-क़द यस्सरनल कुरआन : लिज्जिक्रि फ़हल मिम-मुद-दकिर (और नसीहत हासिल करने वालों के लिये कुरआन को हम ने आसान कर दिया है, सो है कोई नसीहत हासिल करने वाला?) चार बार दोहराया गया है।

इस प्रकार के और भी उदाहरण कुरआन शरीफ और वेदों में हैं। रिसालत (ईशदूतत्व) और आखिरत (परलोकवाद) के विषयों को अलग-अलग अध्यायों में प्रस्तुत किये जाने की आवश्यकता है जिनकी चर्चा हम आगे करेंगे।

जहाँ तक पिछले पवित्र ग्रन्थों से वेदों की तुलना का प्रश्न है, इबानी व यूनानी भाषा की जानकारी न होने की वजह से हम पूर्व ग्रन्थों (तौरेत, जबूर, इजील आदि)

के अंग्रेजी अनुवाद ही पढ़ सके हैं। स्पष्ट है, इन अनुवादों में अनुवादकों के अपने विचार और धर्म-विश्वासों का प्रतिविष्ट शामिल होगा लेकिन वेदों का अध्ययन करते समय हमने उनके अधिकतर भाग को उन की मूल भाषा सस्कृत में भी देखने और समझने की कोशिश की है। इस तुलनात्मक अध्ययन में तौरेत और इंजील पर रिसर्च करने वाले मुसलमान स्कालरों की वह कृतियां भी हम ने सामने रखीं जो हमें उपलब्ध हो सकीं।

हम ने इन तमाम किताबों को कुरआन की कस्तौटी पर परखने की कोशिश की है और हम ईश्वर को साक्षी मान कर पूरी ईमानदारी के साथ कह सकते हैं कि मुमकिन है यह किताबें अपनी मूल भाषाओं में वेदों के समकक्ष साबित हो सकें लेकिन वर्तमान रूप में वेदों को हमने अंग्रेजी में अनूदित बाइबिल (तौरेत, जबूर, इंजील और दूसरे नवियों की किताबें) से इतना आगे पाया कि दोनों में कोई मुकाबला ही नहीं।

यह तो कुरआन की कस्तौटी पर इन किताबों (वेद और बाइबिल) के विषयों की शुद्धता को परखने का परिणाम था लेकिन वास्तविक और अन्तिम कस्तौटी अभी शेष है। स्वयं कुरआन, वेदों के बारे में क्या कहता है?

कुरआने अंजीम हमें बताता है कि हर उम्मत में अल्लाह ने अपने पैगम्बर भेजे: 'बलिकुलिल उम-मतिर रसूल' (और हर उम्मत के लिये एक रसूल था)

(कु: 10-48)

अन्तिम गवाही शोष है:

जिन पवित्र ग्रन्थों की कुरआन ने चर्चा की है वह केवल तौरेत, जबूर, और इंजील समझी जाती है। श्री गंगा प्रसाद उपाध्याय अपनी पुस्तक में इस पर आपत्ति करते हुए लिखते हैं :

"कुरआन शरीफ में ह० आदम (अलै०) के पश्चात चार और मुलहिमों का उल्लेख है। ह० मूसा (अलै०), ह० दाऊद (अलै०), ह० ईसा (अलै०) और ह० मोहम्मद (सल्ल०)। इन में से हर एक का संबंध एक किताब (शास्त्र) से है। ह० मूसा (अलै०) पर तौरेत शास्त्र उत्तरा, ह० दाऊद (अलै०) पर जबूर, ह० ईसा (अलै०) पर इंजील और ह० मोहम्मद (सल्ल०) पर कुरआन। ह० आदम (अलै०) का नाम न मुलहिमों में परिगणित है और न उन पर कोई शास्त्र उत्तरा द्युआ बताया जाता है। ह० आदम (अलै०) से लेकर ह० मूसा (अलै०) तक एक दीर्घकाल व्यतीत हो जाता है। इसमें मानवीय इतिहास के बहुत से उतार चढ़ाव आते हैं। बहुत से राज्य उत्पन्न हुए और मिट गए। कोई 'अहले किताब' उत्पन्न नहीं हुआ।"¹³

आप उत्तर में कह सकते हैं कि कुरआन शरीफ बुनयादी तौर पर मार्गदर्शन

करने वाली किताब है। यह पैगम्बरों के नामों या उन की किताबों के नामों का विश्वकोश नहीं है। लेकिन श्री गंगा प्रसाद की आपत्ति से अलग, यह प्रश्न तो निश्चित रूप से पैदा होता है कि जिन उल्लं अज्ञ (उच्चोत्साही) रसूलों का जिक्र कुरआन ने विशेष महत्व के साथ बार-बार किया है यानी ह० नूह अलै०, ह० इब्राहीम अलै०, ह० मूसा अलै०, ह० ईसा अलै०, और ह० मोहम्मद सल्ल०-इन सब की किताबों के नाम यताए। सिवाय ह० नूह अलै० की किताब के-यहां तक कि ह० दाऊद अलै० की किताब का नाम भी बताया लेकिन ह० नूह अलै० के लाए हुए सहीफों (ग्रन्थों) के नाम कुरआन क्यों नहीं बताता?

यहां प्रश्न दूसरे शब्दों में यूं दोहराया जा सकता है कि जिन बड़ी-बड़ी जातियों का कुरआन एक साथ जिक्र करता है, वे मुसलमान, ईसाई, यहूदी और 'साथिईन' हैं। इन में से कुरआन ने पूर्व की तीन जातियों के पास आए गन्थों का नाम तो बताया लेकिन साथिईन के पास ह० नूह अलै० कौन से गन्थ लाए, यह क्यों न मालूम हो सका? इस प्रश्न का महत्व उस स्थिति में और भी बड़ा जाता है जब हमें यह मालूम होता है कि साथिईन, कुरआन अंजीम में वैदिक जाति को कहा गया है और इस वैदिक जाति के परिवर्तित होकर इस्लाम में प्रविष्ट होने की भविष्यवाणियां भी मौजूद हैं। इतना ही नहीं, हठीसों से हमें यह भी मालूम होता है कि तब्दील होकर आने वाली कौम या 'आजबुल कौम' (अंजीब तरीन कौम) प्रत्यक्ष रूप से कुरआन पर ईमान नहीं लाएगी बल्कि अपने गन्थों में ही विद्यमान कुरआन की शिक्षाओं की प्रुष्टि कर लेने के बाद ईमान लाएगी।¹⁴

अव्वलीन सहाइफ़ (आदि-ग्रन्थ) के नाम से ढूँढ़िए:

यह तथ्य इस बात की मांग करते हैं कि कुरआन में वैदिक धर्म-ग्रन्थों को हम तलाश करें। कुरआन में जब हम पिछली किताबों का उल्लेख ढूँढ़ते हैं तो हमें तौरेत, जबूर, इंजील और सोहफ़े इब्राहीम के अलावा पिछली किताबों के लिये 'सोहफ़े ऊला' और 'जुबुरुल अव्वलीन' के शब्द मिलते हैं, जिन के शाब्दिक अर्थ हैं, सब से पहले सहीफ़े और सब से पहले खिचरे हुए औराक। इन दोनों शब्दों के सर्वकृत समानार्थवाची 'आदि-ग्रन्थ' और 'आदि-ज्ञान' हैं। वेदों के विषय में हिन्दुओं का दावा है कि यह आदि-ग्रन्थ और आदि-ज्ञान है। क्या कभी आप ने यह सोचा है, कि कुरआन जिन्हे 'जुबुरुल अव्वलीन' और 'सुहफ़े ऊला' कहता है। वह कहीं यही किताबे तो नहीं है जिन्हे हिन्दु 'आदि-ग्रन्थ' कहते हैं। यहां इस बात का ध्यान रहे कि अगर वेद नाम की किसी किताब को हम ने कुरआन से ढूँढ़ने की कोशिश की तो यह प्रयास निरर्थक सिद्ध होगा। वर्तमान में ह० दाऊद अलै० से सम्बन्धित ग्रन्थ का नाम साम है। अब अगर साम के नाम से आप कुरआन में ह० दाऊद अलै० के ग्रन्थ को तलाश करे तो स्पष्ट है कि नहीं

मिलेगा। कुरआन ने इस किताब का नाम जबूर रखा है। यह ऐसा ही है जैसे हम पिछले अध्याय (3) में यह मिसाल दे चुके हैं कि आज कोई ईसाई अपने आप को 'नसार' नहीं कहता लेकिन हम जानते हैं कि कुरआन ने नसारा उस कौम को कहा है जो अपने आप को ईसाई कहती है।

हम से कैसी लापरवाही हो गई! जो लोग अपने आप को नसारा नहीं कहते, उन्हें तो हम नसारा के नाम से जानते हैं, जो अपनी किताब को जबूर नहीं कहते उन की किताब को हम जबूर के नाम से जानते हैं और यहां एक बहुत बड़ी कौम हजारों साल से कुरआन उत्तरने से भी पहले से यह दावा करती चली आ रही है कि उस के पास 'सुहफे ऊला' और 'जुबुरुल अब्लीन' है। अपनी भाषा में वह यही शब्द अपनी संसार के लिए प्रयुक्त करती चली आ रही है और हम एक हजार साल से इसी देश की कौमें इस नाम की किताब रखने का दावा करती हों जिस से सब की बात सी कौमें इस नाम की किताब रखने का दावा करती हों जिस से सब की बात संदिग्ध प्रतीत हो रही हो। बल्कि विश्व में केवल यही एक धार्मिक कौम है जो इस संदिग्ध प्रतीत हो रही हो। अब कोई अस्तित्व ही नहीं है। और फिर ऐसा भी तो नहीं है कि बहुत सी कौमें इस नाम की किताब रखने का दावा करती हों जिस से सब की बात संदिग्ध प्रतीत हो रही हो। अब कोई अस्तित्व ही नहीं है। और हम एक हजार साल से यही मसलिहत थी कि बात की बावेदार है। अल्लाह हमें माफ़ करे! शायद उस की यही मसलिहत थी कि यह राज़ उस समय ही खुले जो कौम के परिवर्तन के लिये निर्धारित किया जा चुका हो, नहीं तो हमें कुरआन में यह स्पष्ट बता दिया गया होता कि 'सुहफे ऊला' या 'जुबुरुल अब्लीन' किस रस्तू के माध्यम से आए लेकिन इस बात से हमारी लापरवाही के अपराध में कभी नहीं होती। कुरआन में स्पष्ट शब्दों में पहचान सिफ़े उन कौमों की अपराध में कभी नहीं होती। कुरआन में स्पष्ट शब्दों में पहचान सिफ़े उन कौमों की अपराध में कभी नहीं होती।

और वे (न मानने वाले) कहते हैं कि यह व्यक्ति (नोहम्मद सल्लू०) अपने रब की ओर से (अपने ईशदूत होने का) हमारे पास कोई असामन्य प्रमाण क्यों नहीं लाता! और क्या उन के पास सुहफे ऊला (आदि ग्रन्थों) में जो कुछ भी नहीं लाता!

आदि-ग्रन्थ मौजूद हैं!

आदि-ग्रन्थों का विश्व में आज भी अस्तित्व है, इस पर कुरआन की निम्नलिखित आयत प्रमाण के रूप में प्रस्तुत है:

'और वे (न मानने वाले) कहते हैं कि यह व्यक्ति (नोहम्मद सल्लू०) अपने रब की ओर से (अपने ईशदूत होने का) हमारे पास कोई असामन्य प्रमाण क्यों नहीं लाता! और क्या उन के पास सुहफे ऊला (आदि ग्रन्थों) में जो कुछ भी

है (उस के रूप में) खुली दलील नहीं आ गई?"

-(कु०: 20-133)

यह आयत इस बात का प्रमाण है कि अब्लीन-सहीफे या आदि-ग्रन्थ लुप्त-प्राय नहीं हैं बल्कि दुनिया में आज भी मौजूद हैं। इस बात को तो कुरआन, दलील और चमत्कार के रूप में पेश कर रहा है कि हजारों वर्ष बीत जाने के बाद भी आदि ग्रन्थों में वह शिक्षाएं विद्यमान होने के पक्ष में जो लोग सुबूत मांगते हैं, उनके लिये उक्त आयतों में अल्लाह ने एक खामोश चैलेन्ज प्रस्तुत किया है।

कुरआन की दलील चाहते हो? अल्लाह के शब्दों में प्रमाण मांग रहे हो? सुहफे ऊला (आदि ग्रन्थ) को उता कर तो देखो—हमारा सुबूत, हमारा चमत्कार, हमारी दलील तुम्हारे सामने आ जाएगी।

इस आयत से जो अभिप्रेत आज तक समझा जाता रहा है, वह यह है कि पिछली किताबों में जो भी उपदेश थे, जिनने भी विषय थे, उन के सार के रूप में समस्त ग्रन्थों का संग्रह 'कुरआन' हमारे पास आ गया है और यह नवी उम्मी सल्लू० का अल्लाह की तरफ़ से मोजजा (आश्चर्य-कर्म) है। बेशक यह अभिप्राय भी इस आयत का है, लेकिन क्या इस में भी स्पष्ट रूप से वही चुनौती आप को महसूस नहीं हो रही है? जब तक आपको यह पता नहीं चल जाता कि कुरआन से पूर्व के ग्रन्थों में क्या था, तो जजे का यह पहलू कैसे उजागर होगा? यह कैसे मालूम होगा कि कुरआन इन सभी विषयों का सार-सकलन है?

यह है कि कुरआन में पूर्व ग्रन्थों के उपदेश खोजने का आग्रह और इस आग्रह का तात्पर्य यह है कि आदि-ग्रन्थ दुनिया से लुप्त नहीं हुए हैं।

वेद ही आदि-ग्रन्थ हैं :

कुरआन में प्रयुक्त शब्द 'सुहफे ऊला' बहुत ही ग्राह्य शब्द है। इस में सामान्यता भी है और विशिष्टता भी। समस्त पूर्व-ग्रन्थ भी इसके भावार्थ में शामिल हैं तथा सर्वप्रथम ग्रन्थ भी। कुरआन विशेषतया जिन पूर्व ग्रन्थों की चर्चा करता है, वह— सुहफे-इशाहीम*, तौरेत, जबूर और इंजील हैं। यह सभी वे ग्रन्थ हैं जिनसे अरबवासी परिचित थे।

ह० नूह अलौ० के व्यक्तित्व, तूफ़ाने नूह का घटना क्रम, उन की कौम के हालात तथा उन पर अवतरित ग्रन्थों के विषय में कुरआन के सर्वप्रथम सम्बोधित 'अरब' नहीं जानते थे, इस के प्रमाण के रूप में स्वयं कुरआन मजीद की सूराहूद में ह० नूह अलौ० और तूफ़ाने नूह की घटना का वर्णन करने के बाद अल्लाह का यह फ़रमान है—

*'सुहफे इशाहीम' के नाम से चन्द लोगों के पास कुछ विविध पृष्ठ पाये जाते थे।

“यह परोक्ष की सूचनाएं हैं जो हम तुम्हारी तरफ वह्य कर रहे हैं। इस से पहले न तुम उन को जानते थे और न तुम्हारी कौम...” (क्र०: 11-49) कुरआन ने अपनी विशिष्ट शैली में, जिन नवियों की किताबों से उस समय के कुरआन के सम्बोधित परिचित थे, उन का नाम ऐसे शब्दों में लिया कि लोग आसानी से पहचान लें। लेकिन उन से पहले की किताबों का भी उल्लेख किया और इसके लिये ऐसे ग्राह्य व दो अर्थ वाले शब्दों का प्रयोग किया जो सिफ़ अल्लाह रब्बुल इज़ज़त की ही अनोखी शान है। सुहफ़े ऊला और जुबुरुल अब्लीन के परिभाषिक शब्दों से ‘उस युग’ के लोगों को भी समझने में कठिनाई नहीं हुई वर्योंकि इन शब्दों का अभिप्राय वे लोग उन ग्रन्थों से लेते थे जिनसे वे पूर्व परिचित थे और इन्हीं शब्दों ने ‘इस्लाम के दीपक’ के लेखक श्री गंगाप्रसाद उपाध्याय को भी बता दिया कि कुरआन में तुम्हारे शास्त्रों की भी चर्चा की गई है। उस में अब्लीन सहाइफ़ यानी आदि-ग्रन्थों का भी प्रसंग है। हमारी तत्वदर्शिता से तुम वर्यों उम्मीद रखते हो कि संसार की बड़ी-बड़ी जातियों के जिन पेशवाओं (ह० नूह अलै०, ह० इब्राहीम अलै०, ह० मूसा अलै०, ह० ईसा अलै० और ह० मोहम्मद सल्ल०) का हम ने एक साथ नाम लिया है (सूरा अहजाब: 7, सूरा शुअरा: 13), इन में से सब की किताबों के नाम तो बताएं लेकिन तुम्हारे अगदूत ह० नूह अलै० के ग्रन्थ का जिक्र कुरआन में न करें।

अब आइए- ‘जुबुरुल अब्लीन’ के शब्दों पर चिन्तन करें। कुरआन बताता है : “निस्सन्देह जुबुरुल अब्लीन में यह (कुरआन) है।” (क्र०: 26-196)

जुबुर का शाब्दिक अर्थ है - बिखरे हुए औराक़ (पृष्ठ) सब से पहले साहिये शरीअत (धर्म-नियमावली लागू करने वाले) रसूल ह० नूह अलै० थे। हिन्दू जाति, ह० नूह अलै० की उम्मत है। वे अपने पवित्र ग्रन्थों अर्थात् वेदों के ‘आदि-ज्ञान’ होने का दावा करते हैं और वेदों के इतिहास (जो संक्षेप में आप की नज़र से गुज़रा) पर नज़र डालने से ‘सब से प्राचीन बिखरे हुए पृष्ठों’ की परिभाषा उन पर चरितार्थ होती है।

आइए अब एक और पहलू से देखें। दिव्य कुरआन में अल्लाह का सत्य वचन है :

“और आप से पहले भी हम ने पुरुष (ही) भेजे थे जिन पर हम वह्य करते थे। यदि तुम को नहीं मालूम तो जिक्र वालों (अर्थात् किताब वालों से) से पूछ लो! उन को हम ने ‘बय्यनात’ और ‘जबूरों’ के साथ भेजा था।” (क्र०: 16-43,44)

यहां दूसरे अर्थों की गुन्जाइश के साथ एक सूक्ष्म सकेत यह भी छिपा हुआ है कि पैग़म्बरों पर जो किताबें नाज़िल हुईं, उनमें से कुछ ‘बय्यनात’ थीं और कुछ

‘जुबुर’-अर्थात् जुबुर और बट्यनात एक दूसरे से भिन्न हैं। बट्यनात के माने हैं ऐसे ग्रन्थ जिन में स्पष्ट रूप से समझ में आने वाली भाषा में वर्णन हो जब कि जुबुर की प्रकृति इससे भिन्न है। जुबुर ऐसे ग्रन्थ हैं जिन में घटनाओं व तथ्यों का वर्णन तमसीली भाषा (अल्कृत शैली) में हो। ऋग्वेद में कहा गया है कि ‘मैं घटनाओं का प्रशंसा की शैली में अलंकृत भाषा में वर्णन करता हूं।’ (क्र०: 8-6-11)

वेदों का आसमानी कलाम ‘जुबुर’ की परिभाषा पर खरा उत्तरता है और वेद के ‘सर्वप्रथम’ होने के विचार पर तो किसी को भी आपत्ति नहीं है।

वेदों के ‘सुहफ़े ऊला’ या ‘जुबुरुल अब्लीन’ होने तथा ह० नूह अलै० से सम्बन्धित होने का एक अन्तिम तर्कसंगत प्रमाण यह है पुराणों व अन्य धार्मिक पुस्तकों में तो बहुत से ईश्वरों की उन के नामों के साथ भविष्यवाणियां मिलती हैं लेकिन वेद में केवल आदम अलै० व नूह अलै० के प्रसंग मिलते हैं। आत्मालोक के पहले सन्देश्य होने की हैसियत से ह० अहमद सल्ल० का विस्तार से वर्णन मिलता है या फिर ह० मोहम्मद सल्ल० के शुभागमन की पेशिनगोइयां मिलती हैं। अन्तिम सन्देश्य की खबरे तो हर एक पवित्र ग्रन्थ में हैं। इस के अतिरिक्त नवियों में से ह० नूह-अलै० से आगे किसी नवी का वृत्तात न पाया जाना इस बात का प्रमाण है कि वेद न तो नूह अलै० से पूर्व के ग्रन्थ हैं और न उन के युग के बाद के। वेदों को कलामे रब्बानी या पवित्र ग्रन्थ मानें या न मानें, इस विषय में जो भ्रम पैदा हो सकता था, वह हमारे ख्याल से अब दूर हो गया होगा। वेदों के स्वयं के विषयों के साथ वेद के कुछ मुस्लिम विद्वानों के विचार और सब से बढ़ कर पवित्र कुरआन की गवाही के बाद इसमें कोई शक नहीं रह जाता कि वेद कलामे रब्बानी के हिस्से हैं।

वेद एवं अन्य हिन्दू धार्मिक ग्रन्थ:

हिन्दू मत के अनुसार वेदों को प्रभुवाक्य माना जाता है। वेद के किसी एक शब्द में परिवर्तन भी उन की वृष्टि में अवैध है। अन्य धार्मिक ग्रन्थ जैसे पुराण, ब्राह्मण, उपनिषद, आरण्यक व स्मृतियों इत्यादि को वेदों का भाष्य माना जाता है। वेदों को छोड़ कर शेष सभी धर्म ग्रन्थों के वचन प्रत्यक्ष रूप से ईश्वर से सम्बन्धित नहीं हैं बल्कि इन का केवल अभिप्राय ईश्वर की ओर से माना जाता है। इन के रचयिता विभिन्न ऋषि-मुनि थे और इन के शब्दों में यदि इस प्रकार हेरफेर हो कि भावार्थ बदलने न पाए तो कोई आपत्ति नहीं होती है। यह विल्कुल ऐसा ही है जैसे कुरआन और हडीस की परस्पर तुलना करने से पता चलता है।

कल्याण के पदम पुराण अंक में यह बात इस तरह कही गई है :

‘प्रभु वाक्य के शब्दों को कोई वक्ता वैसे ही अर्थवाले अन्य शब्दों से बदल नहीं सकता। यदि बदले तो उसे प्रभुवाक्य नहीं कहा जाएगा। इस नियम

के अनुसार वेद-वाक्य प्रभुवाक्य ही हैं...यही नहीं, इन शब्दों का क्रम भी नहीं बदला जा सकता...पुराण-वाक्य, सुदृढ़वाक्य (नेक लोगों के वाक्य) के समान है। इन सुदृढ़वाक्यों में शब्द बदलने में कोई क्षति नहीं मानी जाती है। हाँ, उन के वाच्यार्थ में कोई अन्तर नहीं आना चाहिये...”¹⁵

हिन्दू विद्वानों का दावा है कि वेदों को याद करने में इतनी तकनीकी सावधानी बरती गई है कि वे आरम्भ से परिवर्तित हुए थिना वैसे ही चले आ रहे हैं। लेकिन हम जानते हैं कि हजारों साल से कंठस्त चले आ रहे वेदों को अट्ठारहीं शताब्दी के अन्त में पहली बार मैवस मुलर ने पुस्तक के रूप में प्रकाशित कराया। यदि हम समस्त सावधानियों को स्वीकार भी कर लें तब भी स्मरण शक्ति में वेदों के साथ पुराणों और दूसरी किताबों के विषयों का गडमड हो जाना अधिक युक्तिसंगत प्रतीत होता है। वेदों दूसरी किताबों के विषयों का गडमड हो जाना अधिक युक्तिसंगत प्रतीत होता है। (इसके दृष्टांत दिये जा चुके हैं) हमारे के अंग्रेज टीकाकार इस बात की पुष्टि करते हैं। (इसके दृष्टांत दिये जा चुके हैं)

सन्दर्भ-सूची अध्याय : 5

1. ‘भूमिका सामवेद’ – लेठोः पंडित श्रीराम शर्मा जी, पृ०: 3-4
 2. Quoted by Griffith in the preface of the first edition of the ‘Hymns of Rigveda’ Volume:1
 3. -- do --
 4. Hindu Mythology’ —W.J.Wilkins Page: 3
 5. Hindu Mythology’ —W.J.Wilkins Page: 5
 6. ‘वैदिक साहित्य’ – लेठोः पं० राम गोविन्द त्रिवेदी, पृ०: 23-24 प्र०: भारतीय ज्ञान पीठ-काशी
 7. ‘तारीखे मशाइखे चिश्त’ खंठोः 5, पृ०: 58, स००: मौ० अखलाक हुसैन काशमी, पत्रिका रसी –दिल्ली फरवरी 1988, पृ०: 13
 8. -- उपरोक्त --
 9. ‘अलफुरकान’ –वरेली –शाह वली उल्लाह नम्बर 1941, पृ०: 282
 10. -- उपरोक्त --
 11. -- उपरोक्त --
 12. -- उपरोक्त --
 13. ‘इस्लाम के दीपक’ –लेठोः गंगा प्रसाद उपाध्याय, पृ०: 40
 14. ‘मिरकात’, अ०: सवाब हाज़रिल उम्मता, कथन-अम्र बिन शुएब रजिं
 15. ‘कल्याण’ –पदम पुराण अंक, अक्तूबर 1944, पृ०: 3
- ♦♦♦-----

अध्याय : 6

सूष्टि रचना का आरम्भ हज़ारत अहमद सल्लूल०

हकीकते अहमदी (अहमदी तत्त्व):

हमने जगह-जगह पर इस बात का उल्लेख किया है कि हिन्दू कौम ने अपनी मूल धार्मिक विरासत को दन्तकथाओं में गुम कर दिया है। इस में से एक अत्यन्त महत्वपूर्ण तथ्य जिस से यह कौम परिवर्तित थी और जिस पर इनकी अधिकांश दन्त कथाओं की बुनियाद है, वह ‘हकीकते अहमदी’ है। इस बात की पुष्टि करने के लिये सर्वप्रथम हकीकते अहमदी को समझना नितात आवश्यक है; जिस का जिक्र हमारे उन तमाम आलिमों ने किया है जिन का सम्बन्ध तस्वुफ़ (इस्लामी रहस्यवाद) से भी रहा है। यह उन वास्तविकताओं में से एक है जिन को वर्तमान शताब्दी में समझना और उन पर चिन्तन करना बेहद जरूरी है। इस के बावर न तो हम हिन्दू जाति की दन्तकथाओं की हकीकत को समझ सकेंगे और उन ही उस का उपचार कर सकेंगे।

दिव्य कुरआन में सूरे सफ़क़ की निम्नलिखित आयत के अनुवाद पर नजर डालें:

“और (वह समय भी याद करो) जब मरयम के पुत्र ईसा ने कहा कि हे इस्लाइल की सन्नान! मैं तुम्हारे पास अल्लाह का रसूल आया हूँ, पुष्टि करने वाला तौरेत की जो मुझ से पहले से है और एक रसूल की शुभसूचना देने वाला जो मेरे बाद आने वाले हैं, जिन का नाम अहमद है। फिर जब वह उन के पास स्पष्ट प्रमाण लेकर आए तो वे लोग बोले कि यह तो खुल्लम खुल्ला जादू है।”
(कु०: 61-6)

इस आयत में बताया गया है कि ह० ईसा अलै० ने आने वाले रसूल की शुभसूचना दी थी और उन का नाम अहमद (सल्लूल०) बताया था।

इस आयत की व्याख्या में भाष्यकारों ने बहुत विस्तार से यह समझाया है कि इंजील में 'अहमद' (सल्ल०) के नाम से आने वाले नवी की खुशखबरी मौजूद थी लेकिन ईसाई इस के अनुवादों में रद्दवदल कर रहे हैं। अधिकाश विद्वानों ने यहां इस बात को स्पष्ट नहीं किया है कि रसूलुल्लाह सल्ल० का नाम अहमद सल्ल० कैसे था? यहां केवल वह हीदीसे उद्धृत की गई है जिन में रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रामाया कि मेरा नाम 'अहमद' (सल्ल०) है। वेशक यह हमारा ईमान है कि ह० मोहम्मद सल्ल० का एक नाम 'अहमद' भी था। लेकिन कैसे था? कहा था? कब था?

रसूलुल्लाह सल्ल० की हीदीसों पर हमारा ईमान है लेकिन अगर इन हीदीसों से हमें यह मालूम न हो कि अहमद सल्ल० नाम की क्या हकीकत है तो हम गैर ऐश्याई विद्वानों के आरोपों का क्या उत्तर देंगे? ईसाई यह कहते हैं कि हमारी किताबों से मोहम्मद सल्ल० को यह मालूम हुआ कि आने वाले नवी का नाम 'अहमद' होगा और यह सुन कर उन्होंने (नउज़ोबिल्लाह) कुरआन की आयत गढ़ ली और जबानी भी यही कहना शुरू कर दिया कि मेरा नाम 'अहमद' है हालांकि उन का नाम तो मोहम्मद सल्ल० था।

देखिये एक ईसाई लेखक सर विलियम म्योर के शब्द :
(अंग्रेजी से अनुवाद) "...बच्चे का नाम मोहम्मद (सल्ल०) रखा गया। यह नाम अरबों में बहुत कम मिलता था, लेकिन था। इस शब्द का मूल तत्त्व 'हम्द' है जिस से 'मोहम्मद' का अर्थ 'प्रशंसा के काबिल' निकलता है। हम्द से ही 'अहमद' बनता है। इंजील के कुछ अरबी अनुवादों में सुरयानी शब्द पैराक्लीट का गलत अनुवाद अहमद किया गया है और यह अर्थ मुसलमानों की ईसाइयों और यहूदियों से वार्तालाप में बहुत ज्यादा प्रचलित हो गया। क्योंकि उन के कहने के अनुसार इसी नाम से उनकी किताबों में ईशदूत की भविष्यवाणी थी। .."

(अंग्रेजी से अनुवाद) "...मोन्ट्नास के कथन से हमें पता चलता है कि 'पैराक्लीट' के आगमन का 'वादा' के बहुत से भाव बिगड़ कर निर्धारित किये जा सकते हैं और यह मुमकिन है कि उन्हीं में एक छांटा हुआ भाव मोहम्मद सल्ल० के सामने बयान किया गया हो जिस से आयत बना ली गई हो जो सूरए सफ़्फ़ में है..."^{1,2}

इतिहास में हमें ह० मोहम्मद सल्ल० का नाम अहमद सल्ल० कही नहीं मिलता। आप (सल्ल०) के यह बताने के बाद कि 'मैं ही अहमद सल्ल० हूं', 'अहमद' सल्ल०

नाम प्रचलित हुआ।

आप के दादा अब्दुल मुल्लिब ने आप का नाम मोहम्मद (सल्ल०) रखा था। बचपन ही से तमाम मक्कावासी आप को केवल 'मोहम्मद' सल्ल० के नाम से ही युकारते थे। सादिक (सत्यवादी) और अमीन (न्यासधारी) की उपाधि भी आप को प्रदान की गई। लेकिन 'अहमद' (सल्ल०) नाम का कहीं जिक्र नहीं था। आप के तमाम सहाबी (सत्संगी) आप को मोहम्मद सल्ल० के नाम से ही जानते थे। पहली बार आप (सल्ल०) ही के हाथ यह रहस्योदयाटन हुआ कि आप (सल्ल०) ही अहमद सल्ल० थे। वया अहमद सल्ल० नाम की यथार्थता समझने की हमें कोई आवश्यता नहीं है? यह मालूम होते हुए भी कि दुनिया में आप का नाम मोहम्मद सल्ल० होगा, ह० इसा अलै० ने बनी ईसाईल (यहूदी) को यह क्यों बताया कि 'उस का नाम अहमद सल्ल० है। हालांकि यह ईश्वर को ज्ञात था कि इससे आपत्तियों का द्वार खुलेगा। क्या रसूलुल्लाह सल्ल० के अहमद सल्ल० नाम की वास्तविकता मोहम्मद सल्ल० से अलग कुछ और है जिसकी तरफ़ पिछली उम्मतों का ध्यान आकर्षित कराना उद्देश्य था!

अहमद सल्ल० दरअस्त आप का नाम रहे (आत्माओं) की दुनिया में था। इस शारीरिक संसार में भेजे जाने से पहले, समस्त मानव-जाति की उत्पत्ति से पहले और ह० आदम अलै० के पी इस संसार में आने से पूर्व हम सब का अस्तित्व था। आत्माओं के संसार में हम सब की आत्माएं पहले पैदा की गई थीं। तत्पश्चात शरीर देकर हमें इस संसार में भेजा गया। क्यामत (महाप्रलय) तक जन्म लेने वाले तमाम इन्सानों की आत्माएं अब भी मौजूद हैं। इसी आत्मा-लोक में हम सब से अल्लाह ने अपने रब (प्रभु) होने की शपथ ली थी। कुरआन शरीफ़ इस का जिक्र करते हुए कहता है:

"और (हे नवी! लोगों को याद दिलाओ वह समय) जब कि तुम्हारे 'रब' ने आदम के बेटे की पीठों से इन की सन्तान को निकाला था और (स्वयं उन को) उन के ऊपर गवाह बनाते हुए पूछा था: क्या मैं तुम्हारा 'रब' नहीं हूं? उन्होंने कहा : क्यों नहीं? (आप ही हमारे रब हैं) हम इस पर गवाही देते हैं। (यह हम ने इस लिये किया कि) कहीं तुम 'क्यामत' के दिन यह न कह दो कि हम तो इस बात से बेखबर थे, या यह न कहने लगो कि शिर्क (बहुदेवाद) का आरम्भ तो हमारे पूर्वजों ने हम से पहले किया था और हम बाद में उन की नस्ल से पैदा हुए। फिर क्या आप हमें उस अपराध में पकड़ते हैं जो निध्यादियों ने किया था!"
(कु०: 7-172, 173)

इस आयत के भाष्य परशिया—सुनी सभी भाष्यकार एक मत हैं—कि यह सकल्प शरीरों के अस्तित्व में आने से पूर्व समस्त आदम (अलै०) की सन्तान की आत्माओं

से लिया गया था। मिसाल के तौर पर अल्लामा हाफिज़ इब्ने क़थियुम रह० 'किताबुर्रहम' में लिखते हैं:

(उर्दू से अनुवाद) "...ज़ाहिर है कि यह संकल्प आत्माओं से लिया गया था क्योंकि कि उस समय शारीर कहाँ थे।" ³

(उर्दू से अनुवाद) "कअब करजी, आयत के भाष्य में फ़रमाते हैं—सब आत्माओं ने शरीर पैदा किये जाने से पूर्व अल्लाह पर ईमान लाने का और उसकी मारिफ़त (आत्मज्ञान) का वचन दिया था।" ⁴

इसी किताब से एक और दृष्टांत देखिएः

(उर्दू से अनुवाद) "हक़ तआला (ईश्वर महान) ने फ़रमाया : व लकड़ ख़लक़नानुम सुम्मः सव्वरनाकुम...अलख़ (सूरए आराफ़: 11)—(सो और हम ने तुमको पैदा किया—फिर तुम्हारी सूरतें बनाई...) कहते हैं, सुम्मः (फिर)—क्रम तथा विलम्ब के लिये प्रयुक्त किया जाता है...पता यह चला कि 'ख़लक़' (सृष्टि करने) से अभिप्राय आत्माओं की सृष्टि से है।" ⁵

उस 'आत्मा-लोक' में जहाँ हम सब ने अल्लाह तआला को वचन दिया था कि आप हमारे रब हैं, वहाँ भी रिसालत का मनसब (पद) था। लेकिन उस लोक में केवल एक रसूल थे; और वह थे जनाब अहमद मुजतबा सल्ल०। अल्लाह के नज़्दीक रसूलुल्लाह सल्ल० का नाम अहमद सल्ल० था और मलाइका (देवतागण) भी इसी नाम से जानते थे। अहमद सल्ल० और मोहम्मद सल्ल० एक ही व्यक्तित्व की दो अलग—अलग हकीकतें हैं। सूफ़िया (सूफ़ी सम्प्रदाय) की भी उक्त अकीदे पर सहमति है।

(उर्दू से अनुवाद)—"और अहमद सल्ल०, रसूलुल्लाह सल्ल० का दूसरा नाम है। कि आसमान वालों में वह इसी नाम से परिचित हैं...और इस पवित्र नाम को जाते अहद जल्ले शा—नहू (ईश्वर जो महान प्रतापी है) के साथ बहुत समीपता है और दूसरे नाम (मोहम्मद सल्ल०) से एक मंजिल अल्लाह के नज़्दीक ज़्यादा क़रीब है।" ⁶

(उर्दू से अनुवाद) "उनका नाम आसमान में मलाइका के नज़्दीक अहमद सल्ल० मशहूर है और ज़मीन वालों के नज़्दीक मोहम्मद सल्ल० है।" ⁷

इस दुनिया में ह० मोहम्मद सल्ल० का नाम 'अहमद' कहीं साबित नहीं होता, इस के बावजूद कुरआन बताता है कि ह० ईसा अलै० ने अहमद सल्ल० के आने की

भविष्यवाणी की थी। आप ही अन्तिम रसूल थे, यह बात तो पूर्व ग्रन्थों में बताई गई अन्य कई निशानियों से साबित होती ही है। लेकिन यहाँ वास्तव में इस ओर ध्यान आकर्षित कराना था कि तमाम उम्मतों को यह भी बताया गया था कि आखरी रसूल वही होगा जो दिव्य-लोक का पहला रसूल 'अहमद सल्ल०' था और इस हैसियत से समस्त मानव जाति की आत्माओं का रसूल रह चुका था। यही ह० ईसा अलै० ने बनी इसाईल (यहूदी) को बताया था कि वह रसूल जो तुम्हारा और मेरा सब का रसूल आकाश में अहमद सल्ल० के नाम से था, वह दुनिया में मेरे बाद शारीरिक रूप में अन्तिम रसूल बन कर आने वाला है।

अहमदी तत्त्व प्रत्येक पवित्र ग्रन्थ में हैः

तैरेत और इंजील में अहमद नाम की वास्तविकता पर हमारे व्याख्याकार विस्तार से दृष्टांत प्रस्तुत कर चुके हैं, इसलिये उन्हें उद्धृत न करते हुए हम हिन्दुओं के धार्मिक ग्रन्थों और बौद्ध—मत में अहमदी तत्त्व के कुछ नमूने पेश कर रहे हैं। आइये पहले वेद में देखेंः

"वेदाहमेत पुरुष महान्तमादित्यर्ण तमसः प्रस्तात ...यनाय"

"वह समस्त विद्याओं का स्रोत 'अहमद' महानतम व्यक्तित्व है। यह सूर्य के समान अन्ध्यारों को दूर भगाने वाला है। इस चम्कते सूर्य (सिराजम मुनीरा) को जान लेने के पश्चात ही मृत्यु पर विजय प्राप्त की जा सकती है। मुकित्त का अन्य कोई नार्थ नहीं है।" — (यजु०:३१-१८)

"अहमिद्वि पितुव्यरि मेधामृतस्य जग्रभ । अहं सूर्य इवाजनि"

"अहमद ने सबसे पहला बलिदान किया और सूर्य के समान हो गया।" — (ऋ०: ८-६, ९, १०)

(ज्ञातव्य है कि कुरआन में रसूलुल्लाह सल्ल० को 'सिराजम मुनीरा' यानी चमकता हुआ सूरज कहा गया है।)

अयमिद् दै प्रतीवर्त ओजस्वान् संजयो मणिः।

प्रजां धनं च रक्षतु परिपाणः सुमङ्गलः॥

"अहमद वह हैं जो लौटते हैं तो तेजवान शक्तिशाली हीरा सिद्ध होते हैं, प्रजा एवं धन की रक्षा हर पहलू से करते हैं तथा अति उत्तम मोक्षदाता सिद्ध होते हैं।" — (अर्थर्व०: ८-५-१६)

इसी तरह अथर्ववेद (२०-१२६-१४) में उत्ताहमर्दमि शब्द इस्तेमाल हुआ है।

उपरोक्त चारों मन्त्रों के अनुवादों में गुलतियां की जा रही हैं। मिसाल के तौर पर पहले मन्त्र में 'अहमत' शब्द का प्रयोग हुआ है। संस्कृत में 'द' की जगह प्रायः त इस्तेमाल होता है। इस शब्द को अहम + अत, दो शब्दों में विभाजित करके अनुवाद किया जा रहा है। अहम का अर्थ है मैं और अत का अर्थ है 'उस - इस तरह अनुवाद कुछ का कुछ हो जाता है। इसी तरह की गड्बड़ दूसरे दोनों मन्त्रों में भी है।

बौद्ध-मत में भी अहमद नाम की यथार्थता देखते चले। बौद्ध मत में 'बुद्ध' पैगम्बर को कहते हैं। गौतम बुद्ध ने अपने शिष्य नन्दा को संबोधित करके बताया था, "आनन्द! मैं न तो पहला बुद्ध हूं और न अन्तिम बुद्ध हूं"⁸

पहले बुद्ध के सम्बन्ध में डा० राधा कृष्णन अपनी किताब में लिखते हैं: "जापान में पहले बुद्ध का नाम 'अमिताभ' मिलता है"⁹

(अंग्रेज़ी से अनुवाद) "और जापान में इस शब्द का उच्चारण एमिड (Amid) है, "यानी अहमद"।¹⁰ — डा० राधा कृष्णन

अमिताभ शब्द 'अमित' और 'आभा' से मिल कर बना है। अमित, अहमद का बिंदा हुआ उच्चारण है और आभा का का अर्थ, नूर (प्रकाश) है। इस तरह अमिताभ के माने हुए 'नूरे अहमद' या अहमद का नूर।

इस तरह बौद्ध-मत में भी यह सत्य खोया हुआ है कि पहले पैगम्बर 'नूरे अहमद सल्ल०' थे।

यह तो थे पूर्व ग्रन्थ, आइए देखें हृदीसें क्या कहती हैं?

"ह० अबू हुरैश रजि० कहते हैं कि एक दिन सहाबा रजि० ने पूछा कि या रसूलुल्लाह सल्ल०! नुबूवत (ईशदौत्य) आप पर किस समय वाजिब हुई? तो आप सल्ल० ने फ़रमाया: उस समय जब कि आदम अलै० आत्मा और शरीर के बीच थे।"¹¹

तिरमिजी ने कहा है कि यह हृदीस हसन (उत्तम) है।

"अरबाज दिन सारिया से रिवायत है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया कि मैं अल्लाह की दृष्टि में ज़रूर उस समय नहीं था कि आदम अलै० अपने मिट्टी के बदन में पड़े थे। (यानी अभी आत्मा नहीं डाली गई थी)"¹²

"ह० अंसबी से रिवायत है कि उन्होंने कहा कि मैंने पूछा या रसूलुल्लाह सल्ल०! आप कब नहीं थे? आप ने फ़रमाया: मैं उस समय ज़रूर नहीं था कि

आदम अलै० आत्मा और शरीर के दरमियान थे।"¹³

इस हृदीस को इमाम बुखारी ने अपनी तारीख में और अबू नईम ने अपने 'हुलये में रिवायत किया है और हाकिम ने इसे सही कहा है।¹⁴

तर्कसंगत प्रमाण:

आप सल्ल० के आत्मा लोक में पैगम्बर होने का एक तर्क के अनुकूल प्रमाण देखिए। समस्त बायकार इस बात पर सहमत हैं कि ह० आदम अलै० की नुबूवत स्वर्ग में नहीं थी बल्कि दुनिया में भेजे जाने से उन की नुबूवत का आरम्भ हुआ था जैसा कि पवित्र कुरआन में अल्लाह ने फ़रिशतों से फ़रमाया:

"मैं धरती में एक खलीफ़ा (प्रतिनिधि) नियुक्त करने वाला हूं।"

— (कु०:2-3०)

यह भी हमें कुरआन से मालूम होता है कि समस्त नामों का ज्ञान (अल अस्माआ कुललहा) ह० आदम अलै० को पैदा करने के बाद दिया गया था।

"और उसने आदम को नाम सिखाए कुल के कुल फिर उन्हें फ़रिशतों के सामने पेश किया।"
— (कु०:2-3१)

अब यहां सोच विचार किया जाए तो यह सवाल पैदा होता है कि अल्लाह ने ह० आदम अलै० को यह नामों का ज्ञान प्रत्यक्ष रूप से स्वयं दिया था या ह० जिबरईल अलै० या किसी और फ़रिशतों के माध्यम से दिया था? दोनों परिस्थितियों में यह वह्य (आकाशावाणी) हुई और अगर आदम अलै० पर वह्य उत्तरना सिद्ध होता है तो वह आत्मा लोक में भी इशदूत साधित हुए हालांकि ऐसा नहीं था।

रिवायतों से यह भी पता चलता है कि ह० मोहम्मद सल्ल० ने फ़रमाया कि 'कुल नामों का ज्ञान या तो मुझे दिया गया था या आदम अलै० को।'

वैलमी ने अबू रफे से नक्ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया: 'मुझे मेरी उम्मत मिट्टी और पानी में दिखाई गई और मुझे कुल नामों का ज्ञान दिया गया जो आदम अलै० को दिया गया था।'¹⁵

इसका अर्थ यह है कि केवल दो व्यक्तित्व ऐसे थे जिनको यह ज्ञान दिया गया था। इन में से ह० आदम अलै० उस समय नहीं नहीं थे। स्पष्ट है कि अहमद सल्ल० के ज़रिये यह ज्ञान ह० आदम अलै० को दिया गया होगा। यह दिव्य लोक में अहमद सल्ल० के सन्देष्टा होने का तर्कसंगत प्रमाण है।

विज्ञान, मार्गदर्शन पर आश्रित है :

पृथ्वी पर मानव जीवन को आरम्भ हुए हजारों वर्ष बीत गए। असंख्य गौरवगाथाओं, हीनताओं, प्रकाश स्तम्भों और इद्रत (सीख) की दास्तानों को अपने दामन में समेटता हुआ कालचक्र निरन्तर आगे बढ़ता जा रहा है, उस अन्तिम क्षण की ओर जब एक धमाके से इन विचित्रताओं का क्रम समाप्त हो जाएगा और एक नए अनन्त जीवन का आरम्भ होगा। समय बीतने के साथ-साथ ही मानव बुद्धि भी विकास की नई मन्जिलें तय कर रही हैं और अपनी तरक्की की चरम सीमा पर पहुंच कर यह भौतिक बुद्धि भी नष्ट हो जाने वाली है। आज से चौदह सौ वर्ष पूर्व जब मानव-मस्तिष्क बचपन से निकल कर वयस्कता के युग में प्रविष्ट हुआ तो ईश्वर ने अन्तिम ईश्वरू (सत्त्वल०) को संसार में अन्तिम पवित्र-ग्रन्थ के साथ भेजा जिस में समय के अन्तिम छोर तक जन्म लेने वाली एक-एक समस्या का समाधान मौजूद है। कुरुआन, ह० मोहम्मद सत्त्वल० का सबसे बड़ा चमत्कार है और इस के आश्वर्य रहती दुनिया तक सामने आते रहेंगे। अल्लाह का फ़रमान है :

“हम शीघ्र ही इन को अपनी निशानियां (इस्ती) संसार में दिखाएंगे और स्वयं इन की आत्माओं में भी, यहां तक कि चन पर खुल कर रहेगा कि यह (कुरआन) सत्य है।” — (द्रु: 41-53)

मानव बुद्धि ईश्वर द्वारा प्रदान किए गए ज्ञान के भण्डार को पूर्ण रूप से ग्रहण करने में असमर्थ है। जिन्होंने इस नितात ज्ञान से लाभ उठाने की कोशिश की उन की एक मिसाल नोविल पुरस्कार से सम्मानित वैज्ञानिक डा० अद्युत्सलाम हैं जिन्होंने क्लुरआन से लाभान्वित होने के बाद विज्ञान को यह सिद्धान्त दिया कि सृष्टि में विविध प्रकार की शक्तियां नहीं बल्कि एक ही केन्द्रीय शक्ति कार्यशील है जो विभिन्न रूपों में दृष्टिगोचर होती रहती है। दूसरी ओर वे वैज्ञानिक हैं जो आज तक इस गुरुत्वी को सुलझाने में लगे हुए हैं कि पृथकी पर मानव की उत्पत्ति कैसे हुई? डारविन की यह ध्योरी कि इन्सान बन्दर का विकसित रूप है, आज तक उसे विज्ञान एक असिद्ध दृष्टिकोण से मानता है। मानव-बुद्धि ने अपनी समस्त शक्तियां खर्च कर दी लेकिन वह न तो आज तक डारविन के सिद्धान्त को सिद्ध कर सकी है और न भविष्य में ऐसा कर पाएगी। इन्सान की अद्वल जिस जगह पहुंच कर येदसे हो जाती है, वहां पर उसे महाज्ञानी एवं सर्वसूचित ईश्वर की आवाज सुनने की कोशिश करना चाहिए जो करआन में कह रहा है:

‘तो क्या यह लोग कुरआन में गौर नहीं करते या दिलों पर ताले लगाकर हैं।’ - (कु ४ 7-24)

जब भौतिक सृष्टि विज्ञान, इस बात की खोज ही नहीं कर सका कि मानव की उत्पत्ति कैसे हुई तो सृष्टि रचना की प्रक्रिया का ज्ञान उसे क्यों कर हो सकता है? इस मैदान में भी वैज्ञानिक अंधेरे में ही हाथ-पैर मार रहे हैं।

अंग्रेजी पत्रिका 'The Reader's Digest' के अगस्त 1977 के एक लेख का अंश देखिये:

(अंग्रेजी से अनुवाद) " हाल के वर्षों में हमारे वैज्ञानिकों के सामने रोंगटे खड़े कर देने वाले अचरजों का एक क्रम चला आ रहा है जिस ने ब्रह्मांड के बारे में हमारे कुछ सम्पूर्ण और केन्द्रीय दृष्टिकोणों को बैलेंज कर दिया है और सुष्टि रचना का एक हेरतअंगेज दृष्टिकोण सामने आ रहा है।' ¹⁶

दृष्टिकोण बनते और बिगड़ते रहेंगे, क्योंकि खोज ही दिशाहीन है। जब तक सही दिशा में प्रयास नहीं होगा, सच्चाई किस तरह सामने आएगी? हीस और कुरआन में सृष्टि रचना से सम्बन्धित ज्ञान की दिशा में मार्ग दर्शन मौजूद है और पिछले ग्रन्थों में भी यह ज्ञान विद्यमान है। फिलहाल हम सृष्टि रचना के आरम्भ की चर्चा कर रहे हैं क्योंकि इस का सम्बन्ध हमारी पुस्तक के पिछले पृष्ठों और 'हकीकते अहमदी' से है।

सरवरे कायनात (जगत गुरु) सल्लू० ही सृष्टि का आरम्भ हैः

महसे पहले मध्यीयन के अनवार से नक्शे रेए मोहम्मद बनाया गया।

मिछ उसी नक्षा से सांग कर रौशनी बजाए कौनो मुकाँ को सजाया गया ॥

हदीसों से केवल इतना ही मालूम नहीं होता कि रसूलुल्लाह सल्लूल्लाह की नुबूवत है। आदम अलौ० के शरीर में आत्मा डाले जाने से पहले थी, बल्कि यह भी साधित होता है कि है। अहमद सल्लूल्लाह की रचना सम्पूर्ण सृष्टि, मलाइका (फरिश्ते-देवतागण), धरती-आकाश व अन्य सजीव रचनाओं और अर्थे इलाही (ईश्वर का सिंहासन) से भी पहले हुई थी और फिर नूरे अहमद ही को अल्लाह ने अन्य सभी जीवधारियों की उत्पत्ति का माध्यम बनाया।

नीचे हम ह० मुजहिंद अल्फ़सानी अहमद सरहन्दी रह० के मकतूबाते रखानी से कुछ हदीसे नकल कर रहे हैं।

‘भशहर’ हड्डीसे कुदसी में आया है, मैं एक गुप्त खजाना था, मैंने पसंद

किया कि मैं पहचाना जाऊँ। फिर मैंने मखलूक (सृष्टि) को पैदा किया ताकि मैं पहचाना जाऊँ।’¹⁶

‘सब से पहले जो चीज़ इस गुप्त ख़ज़ाने से प्रकट हुई वह मुहब्बत थी जो कि जीवधारियों की उत्पत्ति का कारण बनी।’¹⁷

इस हीरो को इमाम गिज़ाली रह० और ह० मुहीउद्दीन इब्ने अरबी ने भी बयान किया है।¹⁸

“हीरो कुदसी में हबीबुल्लाह (अल्लाह के प्रिय) सल्ल० की शान में आया है— अगर तू न होता तो मैं आकाश—समूह को पैदा न करता और न अपनी रबूबियत (ईश्वरत्व) को प्रकट करता।”*

नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया:

‘सब से पहले अल्लाहने मेरा नूर (ज्योति) पैदा किया।’#

उपरोक्त तमाम हीरों से मालूम हुआ कि समस्त सजीव रचनाओं में सब से पहली कृति ‘नूरे अहमद सल्ल०’ ही थी। यही बौद्ध—मत और हिन्दू—मत से भी सिद्ध हो चुका है, जिस की चर्चा पहले हो चुकी है। हिन्दू धर्म में आदि सृष्टि का विषय कितना महत्वपूर्ण है, यह निम्नलिखित उद्घारणों से स्पष्ट है:

“आदि—सृष्टि विषयक इन बातों को जो मनुष्य जान लेता है, वह आयुष्मान, कीर्तिमान, धनवान्, पुत्रवान् और विद्वान् हो जाता है तथा उसे मानोभिलाषित गति की प्राप्ति होती है।”¹⁹

आदि सृष्टि का हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों में कितना महत्व है यह जान कर प्रसिद्ध स्कालर डा० चमन लाल गौतम आश्चर्य प्रकट करते हुए कहते हैं:

- * मकतुबाते रवानीके उक्त खण्ड के प्रस्तुत मकतुब 93 के फुटनोट में दर्ज है कि वेलमी ने मसनदे फिरदौस में इब्ने अब्बास रजि़० से इसी विषय से मिलती—जुलती एक हीरो का विवाहित की है। इसी तरह ‘मवाहिद’ में है और हाकिम ने भी अपनी मुस्तदरक में इस विषय की हीरो का उल्लेख किया है। अल्लामा सुबकी ने शिफाउलसकाम में इसे बनाये रखा। अल्लामा बिलकीनी ने अपने फ़ताव में उल्लेख किया। अतः इस हीरो के उत्तम होने में कोई सन्देह नहीं है।
- # मकतुब 93 के फुटनोट में अवित्त है— इस हीरो का अल्लामा जरकानी ने ‘शारहुल मवाहिद’ में जिक्र किया है और ‘महाजरतुल अवाइल’ में है कि यह हीरो उत्तम है और शेष मुहम्मदीन इब्ने अरबी ने ‘फ़ुज़ुला’ में भी इसे जिक्र किया और मुहम्मदिस अब्दुर्रज़ाक ने ह० ‘जाविर राज़०’ के हवाले इस विषय की एक हीरो रिवायत की है।

“...परन्तु उन का न कोई पुराण बनाया गया न मन्दिर बनाए, न उन की उपासना प्रचलित हुई, यही आशर्य है। अदिति को तो सर्वोच्च देवी केरूप में प्रतिष्ठित करना चाहिये था।”²⁰

यहां हमने कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। आकाश का पहला ईशादूत या नूरे अहमदी या पहली रचना पर हिन्दू कौम ने कितनी दन्तकथाएँ खड़ी की हैं और उन दन्तकथाओं की मूल वास्तविकता क्या है, यह येहद दिलचस्प और कारामद लेकिन अत्यन्त विस्तृत विषय है जिस की संक्षिप्त चर्चा हम बाद में करेंगे।

कुरआन से भी प्रमाणित है :

हीरो व अन्य ग्रन्थों में विस्तार से चर्चा हो, और इतनी महत्वपूर्ण हकीकत, कुरआन में मौजूद न हो, भला यह कैसे मुमकिन है? आइए देखें:

‘कुल इन का—न लिरहमानि व—लदुन फ़—अना अव—वलुल आबिदीन
(कु० 43-8-1)

“आप कह दीजिये कि यदि रहमान (कृपाशील अल्लाह) के सन्तान हो तो सर्वप्रथम इबादत करने वाला तो मैं हूं।”
(उर्दू से अनुवाद) “इस आयत का अक्सर भाष्यकारों ने यह भावार्थ बताया है कि कल्पना भात्र भी यदि रहमान की सन्तान होती तो सब से पहले मैं (रसूलुल्लाह सल्ल०) उस की इबादत करता। लेकिन चूंकि ‘उस’ के लिये सन्तान का होना निरर्थक है, इसलिये मेरा उस की (सन्तान की) इबादत करना भी निरर्थक है”²¹

आयत की यह व्याख्या सही है—लेकिन इसमें एक कठिनाई यह है कि अल्लाह की सन्तान का होना निरर्थक व्याख्या है ही नहीं। रसूल की तरफ़ से यह मान लेना भी कि ‘अगर सन्तान होती तो वह उस की इबादत करते’ जहां इस से येहतर कोई व्याख्या ढूँढ़ता है। ऊपर लिखित आयत में अरबी शब्द ‘इन’ के माने ‘अगर’ और नहीं दोनों होते हैं। शायद इसी लिये इमाम बुखारी रह० ने किताबुत्फसीर में इस आयत का निम्नलिखित अर्थ नकल किया है

‘कह दीजिये कि रहमान के सन्तान नहीं—सो मैं तो सन्तान मानने से पहला नाराज़ होने वाला हूं।’

इमाम बुखारी रह० ने ‘आबिदीन’ का अनुवाद इबादत करने वाले के बजाय

नाराज होने वाले किया है। अरबी शायरी में यह शब्द इन अर्थों में भी इस्तेमाल हुआ है, लेकिन इतने अप्रत्यक्ष स्पष्टीकरण पर भाष्यकारों ने उन की कड़ी आलोचना की है। अतः अल्लाहा शौकानी रह० ने तफ़सीर फ़तहुलक़दीर में इस पर आपत्ति की है।

गौर कीजिये कि अगर यह नियम सही है कि हदीसें कुरआन की व्याख्या करती हैं तो ऊपर वर्णन की हुई हदीसों की रौशनी में इस आयत का अर्थ कितना स्पष्ट हो जाता है जिससे उपरोक्त दोनों प्रकार की आपत्तियों का निदान हो जाता है और हदीसों की पुष्टि भी होती है। यानी “आप कह दीजिये कि रहमान के औलाद नहीं हैं और मैं अब—बलुल आविदीन यानी सब से पहला आविद (इबादत करने वाला) हूं।”

इस सृष्टि की प्रत्येक वस्तु—फ़रिश्ते, ज़मीन, आस्मान, समुद्र, पर्वत, पेड़, पौधे सब अल्लाह की इबादत कर रहे हैं और उस के आविद (उपासक) हैं। सब से पहली इबादत करने वाली हस्ती वही हो सकती है जो इन सब इबादत करने वालों से पहले पैदा हुई। अल्लाह ताला ने आप (सल्ल०) को आदेश दिया कि आप यह ऐलान कर दें कि रहमान की कोई औलाद नहीं हैं, और इस का सबसे बड़ा प्रमाण मैं (रसूल सल्ल०) स्वयं हूं, क्योंकि मैं ‘आदि सृष्टि’ हूं। औलाद होने का दावा करता तो मैं करता। जब मैं स्वयं यह कह रहा हूं कि मैं अल्लाह का बन्दा हूं और दूत हूं तो फिर रहमान के कोई औलाद किस तरह हो सकती हैं?

इसके अतिरिक्त (कुरआन: 4-1) का आप्त—वचन है :

“हे लोगों! अपने ‘रब’ से ढरो जिसने तुम सबको एक ही नफ़्س (जीव) से पैदा किया और उसी से उस का जोड़ा पैदा किया।”

यहां समस्त मानवों की उत्पत्ति का माध्यम एक नफ़्स को बताया गया है। नफ़्स का अर्थ है—जीव या जान और इससे तात्पर्य शरीर और आत्मा दोनों हैं। जब जीव का तात्पर्य हम शरीर से लेंगे तो इस आयत में ह० आदम अलै० व ह्वा से समस्त मानव जाति की उत्पत्ति का अर्थ समझ में आता है और जब जीव का अभिप्राय आत्मा हो तो पहली आत्मा अर्थात् नूरे अहमद सल्ल० से सभी आत्माओं का उत्पन्न होना सिद्ध होगा। (स्पष्ट रहे कि आत्मा का जोड़ा शरीर है। पहले समस्त आत्माओं को एक आत्मा से पैदा किया फिर उन के जोड़े अर्थात् शरीर बनाए।)

कुरआन शरीफ़ से जब हम मालूम करते हैं कि मानव शरीर किस वस्तु से बनाया गया तो इस विषय पर विभिन्न शब्द जो हमें मिलते हैं, वे यह हैं—अत़ीन (कीचड़), तुराब (खाक) अलक़ (खून की फुटकी), माएदाफ़िक़ (उछलने वाला पानी), सल्साल (खनखनाती हुई और सड़ी हुई मिट्टी), हमद्दू मस्नून (सना हुआ गारा)

और नुतफ़ा (बीर्य)।

अर्थात् कुल मिलाकर जब हम देखें तो मानव शरीर अपवित्रताओं का संग्रह है। यह अपवित्रताएं और दोष मनुष्य के खमीर में विद्यमान हैं। भनुष्य शरीर के ढाँचे में आने के बाद स्वर्ग में भी शैतान (शतन) से धोखा खा गया। अब देखिये, अल्लाह का उपदेश है कि उसने इन्सा० को अपने स्वभाव पर पैदा किया:

“...अल्लाह के उस स्वभाव का अनुसरण करो जिस पर उसने मनुष्य की सृष्टि की है।”

— (कु०: 3०-३०)

यह पहली आत्मा है जिसे अल्लाहने अपने गुणों से सुशोभित किया और कुरआन में इसे ‘रज़फ़ुरहीम’ (करुणामय और दयाशील) कहा।

— (कु०: 9-12)

इस पवित्रतम आत्मा से सभी मनुष्यों की आत्माएं पैदा हुईं। जब शरीर में आत्मा डाली गई तो मानव, सर्वश्रेष्ठ गुणों और हीनतम अपवित्रताओं का मिश्रण यन गया।

कुरआन करीम की आयतों में इस ओर इशारा किया गया है:

“निश्चय ही हमने मनुष्य को अच्छी से अच्छी प्रकृति का बनाया। फिर उसे नीचे से नीचे गिराते चले गए।”

— (कु० 9 5-45)

अर्थात् आत्मा का जन्म पहले हुआ जो ईश्वर की प्रकृति पर है और फिर उस आत्मा का सम्बन्ध शरीर से हुआ जो अपवित्र था। अब इन्सान दोनों प्रकार के लक्षणों का संगम है।

यह स्पष्ट है कि श्रेष्ठतम आकृति पर वही आत्मा पैदा की गई जिसे ‘रज़फ़ुरहीम’ कहा गया। ऊपर लिखी आयतें भी ह० अहमद सल्ल० की सब से पहली आत्मा होने का सुबूत है। और यह तो ‘रब्बुल आलमीन’ ने सरवरे कौनैन (सल्ल०) को रहमतुल—लिल—आलमीन (तमाम जहानों के लिये रहमत) के शब्दों का प्रयोग करके ही बता दिया था। जाहिर है आखरी रसूल सल्ल० का मानवजाति सम्बन्ध अगर केवल इस सासारिक जीवन तक ही सीमित होता तो आप सल्ल० सम्बन्धित के लिये वजहे रहमत (करुणा का माध्यम) कैसे होते?

ईश्वर के कलाम में जगह—जगह ह० मोहम्मद सल्ल० को ‘रसूलुम’ अन्फुसिकुम बताया गया है— अगर नफ़्स से अभिप्राय रुह या आत्मा लिया जा तो इसका अर्थ होगा— तुम सब की आत्माओं का रसूल न कि सिर्फ़ अरबों का रसूल इस से आप (सल्ल०) को विश्वव्यापकता सिद्ध होती है।

इसके अतिरिक्त कुरआन (33-7) का भी अवलोकन करें :

“ और (वह समय भी ज्ञातव्य है) जब हमने तमाम पैगम्बरों से संकल्प लिया और आप से भी और नूह और इब्राहीम और मूसा और मर्यम के बेटे इसा से भी और हमने उनसे कड़ा बचन लिया । ”

इस आयत पर अगर आप गौर करें तो संकल्प लेने के क्रम में आप (सल्ल०) का नाम पहले लिया गया है।

यह है रसूले अकरम सल्ल० के आदि-सृष्टि होने का स्पष्ट कुरआनी वृत्तांत और यह है ‘नूर अहमदी’ की वास्तविकता । चूंकि आदि-सृष्टि होने की हैसियत से और ‘आत्मा-लोक’ में सब आत्माओं का पहला सन्देष्टा होने की हैसियत से आप (सल्ल०) का प्रसंग अन्य समस्त ग्रन्थों में मौजूद था (और आज भी है), इसलिये कुरआन ने पिछली उम्मतों पर यह स्पष्ट कर दिया कि यह ‘रसूल’ किसी अन्य कौम का नहीं बल्कि वही रसूल है जो तुम सब का एकमात्र रसूल था आलमे बाला (द्यावा पृथ्वी) में! उस लोक के निवासियों में!!

सन्दर्भ-सूची अध्याय : 6

- 1. 'Life of Mohammad' Edition, by Sir William Mure, London, P:5
- 2. - - do - - P:164
- 3. 'रहों से मिलिये खालों को समझिये'- अनुवाद 'किताबुर्लह', लेःः हाफिज इब्ने क़य्यिम रह०, अनु०: मौ० रामिक रहमानी, प्र०: मकत्बा अलफ़लाह, देवबन्द, पृ०: 24.9
- 4. - - उपरोक्त - - पृ०: 253
- 5. - - उपरोक्त - - पृ०: 249
- 6. ह० मुज़दिद अलक़सानी रह०-'मक्तुबाते रब्बानी', उर्दू अनुवाद, दफ्तर सोम (3), भाग: 2, मक्तुब: 94
- 7. 'सीरते मुहम्मदिया'-उर्दू अनु०-'मवाहिबुल्लदुनिया' 1342 हिंजी, प्र० अफ़ज़लुल मुताला-हैदराबाद, पृ०: 170
- 8. 'Gospels of Buddha' By: Carus, Page: 217
- 9. 'गौतम बुद्ध धर्म और दर्शन'-लेःः डॉ. राधा कृष्णन, पृ०: 150
- 10. 'Recovery of Faith'-Dr. Radha Krishnan, Page : 154
- 11. 'तिरमिजी', स०: 'प्रिश्कात', अ०: सच्यदुल मुरसलीन फरस सनी
- 12. बेही, अहमद, हाकिम, स०: 'सीरते मुहम्मदिया' (उर्दू अनुवाद मवाहिबुल लदुनिया) 1342 हिंजी, पृ०: 7
- 13. डमाम अहमद, स०: 'सीरते मुहम्मदिया' प०: 5
- 14. - - उपरोक्त - -
- 15. 'तहसीर पठनहान कलीर'-ख्व० 1, पृ०: 52

16. 'New visions of the Universe' by Era Volfert? Reader's Digest' August 1977, Page : 29-33
17. 'मक्तुबाते रब्बानी' (उर्दू अनुवाद), दफ्तर: 3, भाग: 2, मक्तुब नं०: 122, पृ०: 160, प्र०: मदीना पब्लिशिंग कम्पनी-बन्दर रोड, कराची
18. 'कुरआन और तसव्वुफ़' लेःः डॉ. मीर वली उद्दीन-विभागाध्यक्ष दर्शन शास्त्र विभाग-जामिया उस्मानिया, प्र०: नदवतुल मुसन्निफ़ीन-दिल्ली-1945
19. 'हरिवंश पुराण' भाग: 1, लेःः पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य, इलोक: 54, पृ०: 59
20. 'विष्णु रहस्य' लेःः डॉ. चमन लाल गौतम, पृ०: 276
21. 'तुगातुल कुरआन'-मौ० अब्दुर्रशीद नोमानी, ख्व०: 4, पृ०: 156



कुरआन

शाह फ़ज़लुर्रहमान गंज मुरादाबादी

सारा संसार मिटनहार है। और तेरा पालनहार ज्योत का दाता सदा जीवनहार है। फिर तुम ऐ मनई परी अपने पालनहार की कौन सी दया से फिराते हो। सारा संसार उसी के द्वारे का भिखारी है, वह निस दिन निरंकार है। फिर तुम ऐ मनई परी अपने पालनहार की कौन सी दया से सर फिराते हो।

(क़ुः सूरए रहमान)



गर हसीं मौत की हसरत न निकाली जाए
जिन्दगी कौन सी फ़ेहरिस्त में डाली जाए।

शम्स नवेद उस्मानी

वेदों में अग्नि-रहस्य

ऋग्वेद का पहला मन्त्र अग्नि के गुणगान से आरम्भ होता है :

अग्निमीले “सब उपासनाएं अग्नि के लिये ही है” (ऋग्वेद १-१-१)। हिन्दू धर्म के दोनों बड़े संप्रदायों, आर्यसमाज व सनातन धर्म के विद्वान् इस बात पर सहमत हैं कि ‘अग्नि’ शब्द दरअस्ल ‘अग्रणी’ है जिस का अर्थ है सर्वप्रथम, सब से आगे या जिस के आगे कोई न हो। उपर्युक्त मन्त्र को जब भी कोई मुसलमान देखेगा तो यही कहेगा कि ‘अग्नि’ वेद में अल्लाह का नाम है। यदि आप वेदों का आगे अध्ययन करें तो अग्नि की वास्तविकता उलझती जाएगी। कहीं अग्नि मानव प्रतीत होता है और ही ईश्वर। मिसाल के तौर पर :

‘अग्निं दूतं वृणीमहे’—अर्थात् हम अग्नि को दूत चुनते हैं। (ऋ०: १-१२-१) दूसरा मन्त्र देखिये: ‘त्वमर्ने प्रयत दक्षिणं नरं’ अर्थात् अग्नि वह मानव है जो उपासना करने वालों से प्रसन्न होता है। (ऋ०: १-३-१-५)

‘अहमदी तत्त्व’ से परिचित लोगों को यहाँ कोई कठिनाई नहीं होगी। ईश्वर ने ‘आदि-सृष्टि’ (तख़लीके अवल) को अपने सिफारी (सगुण) नाम दिये थे। ‘रज्जफ़’ और ‘रहीम’ अल्लाह के अपने नाम हैं। कुरआन में रज्जफ़ और रहीम अपने उस प्रिय बन्दे का नाम भी बताया जिस को उसने आत्मा-लोक में सबसे पहले बनाया था। (कु०: ९-१२८)

अल्लाह ने अपने सगुण नामों से आदि-सृष्टि को भी सुशोभित किया। यह नविकता समस्त पवित्र ग्रन्थों में विद्यमान थी और यही विकृत होकर विश्व के द्वारा ऐसे बहुदेवावाद एवं दन्तकथाओं की आधारशिला बन गई। यहीं से ईश्वर के नामों से संबोधित की जाने वाली ‘आदि-सृष्टि’ का रहस्य लुप्त होकर अवतारवाद की यह कल्पना आई कि ईश्वर स्वयं मानव की देह में पृथकी पर आता है या अवतार लेता है। इसी वास्तविकता के दुर्बोध होने के कारण यहूदियों ने ह० उज़ेर अलै० को और

ईसाइयों ने ह० ईसा अलै० को खुदा का बेटा बनाया और ह० मोहम्मद सल्ल० को बन्दगी (ईश्वर की दासता) से ऊंचे पद पर उठाने की कोशिश की गई।

अग्रणी या सर्वप्रथम होना, ईश्वर का गुण है और आदि-सृष्टि होने की हैसियत से यह पहले उपासक का गुण भी ठहराया गया। इस रहस्य के उलझने की संभावना ईश्वर से छिपी हुई नहीं थी और उसने जगह-जगह स्वयं वेदों में ‘अग्नि-रहस्य’ की खोज करने पर अत्यन्त बल दिया है। ‘उस’ ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि इस रहस्य को ‘मेघावी-जन’ अर्थात उच्च कोटि के विद्वान् तलाश करेंगे (ऋग्वेद १०-७-१-३)। वेद ने ही यह भविष्यवाणी की कि ‘मन्थन’ या शोध कार्य से अग्नि का रहस्य खुलेगा। इसी पर तुम्हारा कल्पाण निर्भर है और इस रहस्योदयाटन के बाद तुम विश्व का नेतृत्व करेंगे—(ऋ०: ३-२९-५)। यह भी संकेत दिया कि ‘भरुतगण’ यानी रेगिस्तानी उम्मत के लोग (मुसलमान) इस रहस्य की खोज करेंगे—(ऋ०: ५-३-३), और यह भी भविष्यवाणी कर दी कि सब से बाद वाली मशाल (कुरआन) को सब से पहली मशाल (वेद) के ऊपर रखना पड़ेगा (यानी कुरआन की ज्योति में वेद का अध्ययन किया जाएगा) तभी ‘अग्नि’ का रहस्य खुलेगा—(ऋ०: ३-२९-३)।

‘अहमदी तत्त्व’ के प्रत्येक पवित्र ग्रन्थ में विस्तार के साथ वर्णित होने का उद्देश्य यह था कि जब कौमें अपनी तरफ़ भेजे गए रसूलों को अपने लिये आरक्षित कर लेंगी और दूसरे रसूलों का इनकार करेंगी, उस समय अखिल विश्व को इस एकता पर इकट्ठा किया जाएगा कि अन्तिम सन्देश्य जिस को यह नकार रहे हैं, उस को सब धार्मिक कौमें बाद में आने वाले रसूल की हैसियत से नहीं अल्पक सब से पहले रसूल (अहमद सल्ल०) के रूप में जानती थीं। आवश्यकता इस बात की है कि वार्जाल बनी हुई अहमदी वास्तविकता को उन के पवित्र ग्रन्थों में से कुरआन के प्रकाश में धूल और भूल से शुद्ध करके पूरे विश्व को एक रसूल की वास्तविकता पर इकट्ठा किया जाए।

हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों में ‘अग्नि’ किसे कहा गया है, यह समझे बिना न तो इन ग्रन्थों में तौहीद (एक-ईश्वर वाद) की धारणा स्पष्ट हो सकती है और न रिसालत (ईशदूत पद) की; क्योंकि अग्नि शब्द कहीं ईश्वर के लिये प्रयुक्त हुआ है और कहीं ह० अहमद सल्ल० के लिये। इसीलिये इस की व्याख्या को तौहीद, रिसालत और आखिरत (पारलौकिक जीवन) के अध्यायों से पूर्व स्पष्ट कर देना आवश्यक है।

इस्लाम और हिन्दू धर्म नामों की समानता

अन्य शोधकर्ता क्या कहते हैं?

पिछले पृष्ठों में हमने जगह-जगह यह बताया है कि वैदिक धर्म में आस्मानी कलाम (देववाणी) मौजूद होने के कुछ और प्रमाण हम प्रस्तुत करेंगे, लेकिन इससे पूर्व हम कुछ अवतरण प्रस्तुत कर रहे हैं जिन से यह स्पष्ट हो सके कि मुसलमानों के अग्रामी शोधकर्ता हिन्दू कौम और धर्म के बारे में क्या दृष्टिकोण रखते थे। (उर्दू से अनुवाद) ‘इस से इन्कार नहीं कि हिन्दू धर्म में एकेश्वरवाद भी है, लेकिन यह धर्म इतना प्राचीन हो चुका है कि काल के हरफेर से इस में शुद्ध एक-ईश्वर-वाद बाकी नहीं रहा।’¹

(उर्दू से अनुवाद) अलबैरुनी भी जो हिन्दुओं के धर्मों का सब से बड़ा ज्ञाता है, हिन्दू विशिष्ट जन को तौहीदपरस्त (एक-ईश्वर-वादी) और जनसाधारण को मुशरिक (बहुदेववादी) मानता है। किंतु हिन्दू ग्राहकों अध्याय में लिखा है :

‘मूर्ति-पूजा, जनमानस का धर्म है, विशिष्ट जन का दामन ईश्वर के अतिरिक्त अन्य शक्तियों की उपासना से कलंकित नहीं है। मुसलमान प्रतिष्ठित जन में मिर्जा मजहर जाने जाना रहा, हिन्दुओं की मूर्ति पूजा की तापील (बनावटी दलील) को स्वीकार करते थे और उन को मूल रूप से ‘एकेश्वरवादी’ मानते थे।’²

अन्त में हम शाह वलीउल्लाह रहा का एक लेख्य प्रस्तुत कर रहे हैं:

“पवित्र कुरआन की आयत (व इमिन उम—मतिन इल्ला ख़ला क़ीहा

नजीर) का हेतु यह है कि हर कौम में खुदा से डराने वाले गुजरे हैं। ...प्रायः हिन्दुओं के अवतार सत्य का प्रतीक थे, लेकिन हिन्दू जनसाधारण अपनी निराधार परिकल्पनाओं के कारण जाहिर और मजहर (मूल और स्थूल प्रतीक) में भेद नहीं कर सके और सब को पूज्य बनाकर भटकाव से ग्रस्त हो गए। यही हाल मुसलमानों के बहुत से ताजिया बनाने वालों, क़ब्रों के मुजाविरों, जलालियों और मदारियों का है।”³

हिन्दू मत का इस्लामी नाम :

अब आइये सब से पहले हिन्दू धर्म के नाम पर विचार करें। वैदिक धर्म का नाम ‘हिन्दू-मत’ नहीं है बल्कि इस का अस्ल नाम ‘सनातन धर्म’ और ‘शाश्वत धर्म’ है। सनातन के माने हैं—‘सदा से सीधा चला आया हुआ और प्राचीन’ तथा शाश्वत का अर्थ है—‘आकाश से पृथ्वी तक सीधा चला आया हुआ।’ ‘सनातन धर्म’ और ‘शाश्वत धर्म’—‘दीने कृत्यमः’ के पर्यायवाची शब्द हैं। गीता में इस के लिये ‘स्वधर्म’ तथा ‘स्वभाव नियत कर्म’ (गीता: १८-४५, ४७) के शब्द इस्तेमाल हुए हैं जिस का अर्थ है, प्रकृति का सिखाया हुआ धर्म न कि माता पिता से उत्तराधिकार में मिला हुआ। कुरआन, इस्लाम को ‘अद्दीनः इन्दल्लाह’ ‘दीने कृत्यमः’ और ‘दीने कृत्यमः’ बताता है। हमारा अवृद्धीदा है कि हर नवी ने अपनी कौम को इस्लाम धर्म पेश किया था। ह० आदम अलै० व ह० नूह अलै० भी इस्लाम को ही स्थापित करने आए थे। समय बीतने के साथ-साथ उनकी शिक्षाएं विकृत हो गईं। दुनिया के अन्य धर्मावलम्बियों ने अपने—अपने धर्मों के विभिन्न नाम रख लिये लेकिन इस प्राचीनतम जाति ने इस्लाम धर्म के संगुण नामों के रूप में मौलिक नाम को जीवित रखा है।

‘अल्लाह’ नाम सब धर्मों में है:

नामों के अन्तर तथा भेदभाव से अल्लाह का नाम भी नहीं बचा है; लेकिन इस पवित्र नाम की समता प्रत्येक धर्म में बाकी है। ‘खुदाए वहिद’ को विभिन्न कौमों और धर्मों में अल्लाह, भगवान, ईश्वर, खुदा, गाड़ आदि नामों से पुकारा जाता है। इस पर किसी को असहमति नहीं है कि एक खुदा को किसी भी नाम से संबोधित किया जा सकता है। भाषाओं की विविधता पर कोई आपत्ति नहीं है। कुरआन हमें बताता है कि अल्लाह के बहुत से अच्छे—अच्छे नाम हैं लेकिन व्यक्तिगत नाम ‘अल्लाह’ ही है। अल्लाह शब्द जो ‘अल+इलाह’ से मिल कर बना है, हमें मासूली स्वर परिवर्तनों के साथ आज भी लगभग हर धर्म में मिलता है।

(उर्दू से अनुवाद) “ह० मौ० उबैदुल्लाह सिन्धी रह० की रिसर्च यह है कि तिब्बत का केन्द्रीय शहर ‘लासा’ वास्तव में ‘लाह सा’ है यानी ख़ुतुल्लाह (अल्लाह का घर)। यह शहर आर्य जातियों की धार्मिक सभ्यता का प्राचीन केन्द्र है। फ़रमाते हैं— हमने जब यह विचार मौ० हमीदुदीन फ़राही रह० के सामने प्रकट किया तो फ़रमाने लगे कि ‘खुदा तआला’ के नाम का यह मूल तत्व धर्म की दुनिया का प्राचीनतम पारिभाषिक शब्द मालूम होता है जो समस्त धर्मों में थोड़े अन्तर से प्रचलित है।”⁴

अतः ईल, ईलिया, इलौह, इलोहीम, इलाह, लाह, लाहूत आदि सब एक ही मूल तत्व के शब्द हैं जो माबूद (पूज्य) के अर्थ में विभिन्न धर्मों में हमें मिलते हैं। मौ० आजाद ने भी इस बात का अनुमोदन किया है :

(उर्दू से अनुवाद) “इन तमाम कौमों में एक ‘अदृश्य खुदा’ के अस्तित्व की मान्यता विद्यमान थी और वह ‘अल-इलाह’ या अल्लाह के नाम से पुकारा जाता था। यही इलाह है जिसने कहीं ‘ईल’ का रूप धारण किया, कहीं ‘इलोह’ और कहीं ‘इलाहिया’ का।”⁵

(अंग्रेजी से अनुवाद) “कुरआन सब से महान अस्तित्व को ‘अल्लाह’ के नाम से नामांकित करता है। ऋषवेद में ईश्वर के लिये जिन नामों का प्रयोग हुआ है, उनमें से एक ‘इला’ है जिस का मूल तत्व ‘इल’ या ‘ईल’ है और जिस का अर्थ है स्तुति करना, पूजा करना। लगभग ٧: हजार वर्ष पूर्व सुमेरिया की भाषा में ‘ईल’ शब्द खुदा के लिये था।

सुमेरियन नगर ‘बाबिलोन’ शब्द दरअस्त ‘बाबेईल’ था अर्थात् खुदा का दरवाज़ा। यही वह शब्द था जिस के माध्यम से उस के किसी न किसी रूप में इब्रानी, सुरायानी तथा कलदानी भाषाओं में खुदा का अस्तित्व समझा जाता था। सामान्य रूप इलिया या इलोह था। यह बात विदित है कि ऋषवेद के युग से वर्तमान युग तक ‘अल्लाह’ शब्द किसी न किसी रूप में खुदा के लिये इस्तेमाल होता आया है।⁶

आर्य समाजी विद्वान् श्री गंगा प्रसाद उपाध्याय लिखते हैं:

“हम नहीं जानते कि ह० आदम (अलै०) जिन को मुलसमान लोग सब से पहला पुरुष मानते हैं किस भाषा को बोलते थे? और ईश्वर के लिये किस नाम का प्रयोग करते थे? हर पूजनीय वस्तु का नाम ‘इलाह’ है और इलाह में ‘अल’ लगा कर ‘अल्लाह’ एक नियत वस्तु के लिये विशिष्ट हो गया है।

(अल्लाह का अर्थ है विशेष पूजनीय वस्तु) ऋषवेद में जो लाखों वर्ष प्राचीन पुस्तक मानी जाती है, आरम्भ में ही ईश्वर के लिये ‘ईल्य’ शब्द का प्रयोग हुआ है। ‘ईल्य’ का धात्वर्थ है ‘पूजनीय’। वेद में यह शब्द ईश्वर के लिये विशेषतया प्रयुक्त हुआ है। वेद मन्त्र (ऋ०: 1-1-2) का स्पष्ट अर्थ यह है कि हे ईश्वर (अल्लाह)! तू पूर्व और नूतन, छोटे और बड़े सभी के लिये पूजनीय है। तुझे केवल विद्वान् ही समझ सकते हैं।”⁷

रहमान और रहीम भी...

अल्लाह के इस्मे जात (व्यक्तिगत नाम) की समानता के बाद इस के पहले इस्मे सिफ़त (संगुण नाम)– अर्रहमान (अल+रहमान, अर्थात् वह रहमान) को देखिये। ब्राह्मणवाद ने इसाइयों के ‘त्रिगुट’ के समान ईश्वर के अस्तित्व को तीन टुकड़ों में बांट दिया—ब्रह्मा (जन्म दे, वाला ईश्वर), विष्णु (पालने वाला ईश्वर) और शिव (मारने वाला ईश्वर)। यद्यपि वेदों में इस बात की शिक्षा दी गई है कि एक ही ईश्वर पैदा करता, पालन—पोषण करता तथा मृत्यु देता है। ईश्वर की इन तीनों शक्तियों का जब नाम लिया जाता है तो सर्वप्रथम ‘ब्रह्मा’ ही का नाम आता है। ‘ब्रह्मा’ या ‘ब्रह्म’ शब्द पर जरा गौर करें। संस्कृत भाषा का यह नियम है कि शब्द के अन्त में प्रायः एक बिन्दी (०) ऊपर लगाई जाती है जो ‘म’ और ‘न’ का स्वर देती है— जैसे अंग्रेजी के नामों के आगे ‘A’ लगा देते हैं। अशेक को ‘अशोका’ या राम को ‘रामा’ बोलते हैं संस्कृत में ब्रह्मा के ऊपर बिन्दी लगाने से ‘ब्रह्मान्’ का स्वर निकलता है। इस शब्द को संस्कृत में जब लिखा जाएगा तो यह ‘ब्रह्मा’ ‘ब्रह्मान्’ या ‘वह रहमान’ या ‘अल रहमान’ के समकक्ष होगा। रहम (करुणा) के गुण के प्रदर्शन का आरम्भ पैदा करने से ही होता है। इसलिये पैदा करने वाले खुदा को हिन्दू धर्म में ब्रह्मान् (अर्रहमान) तथा ब्राह्मीम (अर्रहीम) पुकारा जाता है (और जैसे रहमान इस्लाम में खुदा का व्यक्तिगत नाम नहीं है वैसे ही हिन्दू मत में भी ब्रह्मान् संगुण या सिफ़ती नाम है।

यहां यह भी याद करते चलें कि अरबवासी ह० मोहम्मद सल्ल० के शुभआगमन से पूर्व ‘रहमान’ नाम से बहुत चिढ़ते थे— और उसे दूसरे धर्मों का खुदा समझते थे। अन्य धर्मों में से हिन्दू धर्म में तो यह शब्द ‘खुदा’ के लिये प्रयुक्त होता ही था, इसाइयों के यहां भी खुदा के लिये ‘रहमान’ शब्द मौजूद था। इस बात की पुष्टि के लिए यह प्रमाण प्रस्तुत है—यमन में इसाइयों के शिलालेखों पर यह शब्द अंकित है :

(उर्दू से अनुवाद) “रहमान, मसीह और रुहुलकुदुस (पवित्र आत्मा) की कुदरत (माया) व मेहरबानी से इस यादगारी पत्थर पर ‘अबरहा’ ने कतबा (शिलालेख)

लिखा जो कि हस्ता के राजा..... का नाइबुल हुकूमत (उपशासक) है।⁸

इस प्रकार हम ने देखा कि धर्म का नाम दोनों जगह एक ही है और धर्म पर आचरण करने का जिस हस्ती ने आदेश दिया, उस का नाम भी मूलतः दोनों जगह एक ही है। भाषा, शैली और सब से बढ़ कर वृष्टिकोण में अन्तर आ गया है।

आइये अब अगले अध्याय में देखें कि ईश्वर की इस वाणी में अज्ञात काल की धूल और भूल के बावजूद मौलिक शिक्षाएं आज भी किस तरह विद्यामान हैं जो हिन्दू कौम के वेदों से पूर्णरूपेण दूर हो जाने की वजह से उन की निगाहों से ओझल हैं।

सन्दर्भ-सूची अध्याय : 8

- पत्रिका 'मआरिफ' नं:3, खं: 95, 'इस्लाम में दसरे मजाहिद और अडले मजाहिद की हैसियत'-लें: मौ० शाह मुईनुद्दीन नववी, पृ०: 178
- उपरोक्त, पृ०: 180-181
- 'फ़तावए अजीजी', खं० : 1, पृ०: 132-134
- मौ० नूरुल हक़ अलवी, फ़ुटनोट-अलफुरकान-शाह वली उल्लाह नम्बर' 1941, पृ०:332
- 'तरजुमानुल कुरआन', खं० : 1, पृ० : 247, प्र०: साहित्य अकादमी-दिल्ली
- 'गीता और कुरआन', लें: पंडित सुन्दर ताल, अंग्रेजी अनुवाद : सायद असदुल्लाह, पृ०: 5, प्र०: इन्डो मिडिल इस्ट कल्चरल स्टडीज, हैदराबाद दकन
- 'इस्लाम के दीपक', पृ० : 12-13
- 'सीरतुनवी सल्ल०', भाग : 1, लें: अल्लामा शिल्पी, संपादन : सायद सुलेमान नववी रह०, पृ० : 111



"आप कह दीजिये कि अल्लाह कह कर पुकारो या रहमान कह कर। जिस नाम से भी पुकारो, उसके लिये सब अच्छे ही नाम हैं।"

-(खं०:17-110)

अध्याय : 9

बैदिक धर्म में तौहीद (एक-ईश्वर-वाद)

हिन्दू धर्म में एक-ईश्वर-वाद की धारणा:

तौहीद के अकीदे को वेदों में देखने से पहले कुछ जाने माने लेखकों के विचार इस विषय में देख लीजिये :

"ऋषियों ने मूर्ति पूजा की प्रथा चलाई ताकि इस मूर्ति को माध्यम बना कर वे उस अनन्त को साकार रूप में अपने सामने देख सकें।"¹

"केवल एक सर्वशक्तिमान ईश्वर को अपना स्वामी मानते हुए स्वार्थ और अहकार छोड़ कर निष्पक्षता की भावना और सच्चे प्रेम के साथ निरन्तर विन्तन करना ही ऐसी उपासना है जो दुराचार से पवित्र है।"²

"ज़रा सोचो तो प्रेम करने वाली पत्नी का एक ही पति होता है। इसलिए जो भक्त ईमान रखता है उसका एक ही खुदा है। दूसरे खुदाओं का साथ कदापि न ढूँढो। दूसरे खुदाओं का नाम लेना व्यभिचार है।"³

अब देखिये हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों के सैकड़ों प्रमाणों में से कुछ एक जिन के आधार पर हम यह विश्वास के साथ कह सकते हैं कि अस्ल हिन्दू धर्म में एक खुदा की धारणा बिल्कुल उसी अन्वाज़ में है जैसी कि इस्लाम ने प्रस्तुत की है।

'उत्तर मीमांसा दर्शन' में वेदान्त का सार यह है-

एकम् ब्रह्म द्वितीय नास्ते: नेह ना नास्ते किंचन (एक ही ईश्वर है-दूसरा नहीं है-नहीं है-नहीं है- अश मात्र भी नहीं है।)⁴

हिन्दू धर्म में ही खुदा के लिये कहा गया है- एकम् एवम् अद्वितीयम् (एक

ही है, दूसरे के साझे के बिना)

१. आज्ञा

“वह समस्त जीवित तथा निर्जीव जगत का बड़े वैभव के साथ अकेला शासक है। वह जो मनुष्यों तथा पशुओं का प्रभु है (उसे छोड़ कर) हम किस ईश्वर की स्तुति करते हैं और भेंट चढ़ाते हैं?” — (ऋ०: 10-121-3)

“उसी से आकाश मण्डल मे दृढ़ता तथा पृथ्वी में स्थायित्व है। उसी की वजह से उजालों का साम्राज्य है। और आकाश महराब (के ऊपर में) टिका हुआ है। अन्तरिक्ष के क्षेत्रों को फैलाने पाला भी वही है। (उसे छोड़कर) हम किस ईश्वर की स्तुति करते हैं और भेंटे चढ़ाते हैं?” — (ऋ०: 10-121-5)

“उस अस्तित्व की कोई मूर्ति या तस्वीर नहीं है। उस का नाम ही साक्षात् प्रशंसा है।” — (यजु०: 32-3)

“जो लोग अस्तित्वहीन देवी—देवताओं की उपासना करते हैं, वे (अज्ञानता के) अन्धा कर देने वाले धोर अन्धाकर में झूब जाते हैं।” — (यजु०: 40-9)

“ईश्वर के अतिरिक्त किसी को भत्त पूजो।” — (ऋ०: 8-1-1)

“वह एक ही है, उसी की उपासना करो।” — (ऋ०: 6-45-16)

“वह एक ही सर्वश्रेष्ठ प्रजा और दासता किये जाने के योग्य है प्रभु है।” — (अथर्व०: 2-2-2)

“ईश्वर ही अग्रणी है तथा समस्त जीवधारियों का अकेला स्वामी है। वह धरती और आकाश मण्डल का मालिक है। उसे छोड़कर, तुम कौन से खुदा को पूज रहे हो?” — (ऋ०: 10-121-1)

हिन्दू धर्म में जितने देवताओं के नाम लिये जाते हैं, वे वास्तव में एक ही खुदा के संगुण नाम हैं। उसी का नाम ‘ब्रह्मा’ है, उसी का नाम ‘तिष्णु’ वही ‘इन्द्र’ कहलाया और वही ‘सरस्वती’ है। इस का प्रमाण वेदों से ही मिलता है।

“हे अग्नि (ईश्वर)! तुम ही सदाचारियों की मनोकामनाएँ पूरी करने वाले इन्द्र हो। तुम ही उपासना के योग्य हो। तुम ही अनेक लोगों के प्रशंसनीय विष्णु हो। तुम ब्रह्मा और ब्रह्मनस्पति हो।” — (ऋ०: 12-1-3)

“हे अग्नि (ईश्वर)! तुम वचन पूरा करने वाले राजा वरुण हो। तुम प्रशंसा के योग्य मित्र हो। तुम वास्तविक नायक अरथम हो।” — (ऋ०: 12-1-4)

“हे अग्नि (ईश्वर)! तुम रुद्र हो। तुम पुषा हो। दिव्य लोक के संरक्षक रांकर हो। तुम रेगिस्तानी पंथ की शक्ति का माध्यम हो। तुम अन्न देने वाले साक्षात् ज्योति, वायु के समान हर जगह विद्यमान, लाभ प्रदान करने वाले और उपासना करने वाले के संरक्षक हो।” — (ऋ०: 2-1-7)

“हे अग्नि (ईश्वर)! तुम आदिति (सब से अच्चल) हो, तुम भारती (सज्जनों का कोष) हो, तुम इडा हो और तुम ही सरस्वती हो।” — (ऋ०: 2-1-11)

वेदों के इन स्पष्ट प्रभाणों के बाद अनेक नामों से पूजे जाने वाले विभिन्न देवी—देवताओं की कल्पना निराधार हो जाती है। यह पहले ही स्पष्ट हो चुका है कि उस एक खुदा की मूर्ति नहीं बन सकती। अब देखिये कि वेद इस का भी स्पष्ट उल्लेख करते हैं कि ईश्वर के समस्त संगुण नामों से विद्वान् लोग एक ही ईश्वर को पुकारते हैं:

“(इन्द्र, भित्र, वरुण, अग्नि, गुरु, यम, वायु, मातरिश्वा आदि) एक ही सत्ता के विभिन्न नाम हैं और भेघावी जन (बुद्धिमान व ज्ञानी लोग) ने ईश्वर को (गुणों के आधार पर) अलग—अलग नामों से संबोधित किया है।”

उपर्युक्त मन्त्र कुरआन के इस विषय के समान है; — (ऋ०: 10-114-5)

“एक अल्लाह के सिवा कोई माबूद (पूज्यनीय) नहीं उस के बहुत से अच्छे—अच्छे नाम है।” — (कु०: 20-8)

वेद खिल्कुल कुरआन की शैली में आव्वान करते हैं कि जिन माबूदों को तुम पुकार रहे हो, यह तो स्वयं अपने एक खुदा की इबादत कर रहे हैं।

“ईश्वर ही आत्मिक एवं शारीरिक बल प्रदान करने वाला है और उसी की उपासना समस्त देवता किया करते हैं। उस ईश्वर की प्रसन्नता सदा का जीवन प्रदान करने वाली है और मृत्यु का अन्त करने वाली है। उस ईश्वर को छोड़कर तुम किस देवता को पूज रहे हो?” — (ऋ०: 10-121-2)

अब इसी विषय को कुरआन में देखिये:

“जिन को यह पुकारते हैं वे तो स्वयं अपने ‘रब’ तक पहुंचने का साधन ढूँढते हैं कि कौन उन में ज्यादा से ज्याद करीब हो जाए, और वे उस की दयालुता की आशा रखते हैं और उस की यातना (अजाब) से डरते हैं। वास्तव में तेरे ‘रब’ की यातना डरने ही की चीज़ है।” — (कु०: 17-57)

एक खुदा की इतनी पावन और स्पष्ट धारण होते हुए भी इतने बहुत से खुदा क्यों बना लिये गए, इस के निम्नलिखित कारण समझ में आते हैं :

□ वेद का लिखित रूप में मौजूद न होना:- वेदों के अत्यन्त प्राचीन होने तथा केवल स्मरण शक्ति में सुरक्षित होने की वजह से जनमानस के लिये वेदों में विद्यमान देववाणी और बाद में मिश्रित मानवाणी में भेद करना सम्भव न था। इसलिये हजारों साल से हर सुनी सुनाई बात व हर समझ में न आने वाली बात पर बनी हुई दन्तकथा को 'धर्म' समझ लिया गया। यद्यपि मात्र दो सौ वर्ष पूर्व लिखे गए वेदों की सुरक्षा का अब पूरा ध्यान रखा जा रहा है, लेकिन संकलित करने वालों ने वेद के नाम पर जो कुछ इकट्ठा किया है वह सब का सब अस्त वेद ही है, इस का दावा वे स्वयं भी नहीं करते। वेदों के संग्रहकार्ताओं तथा भाष्यकारों की विभिन्न टिप्पणियों अध्याय (5) में हम देख चुके हैं। वेदों में की गई भिलावट को स्वीकार करते हुए गांधी जी लिखते हैं :

"शास्त्रों के वे अर्थ जो सत्य के विरोधी हैं, सही नहीं हो सकते।"⁵
दूसरी जगह गांधी जी लिखते हैं :

"प्रश्न उठता है कि उन स्मृतियों का क्या किया जाए, जिन में ऐसे श्लोक हैं जो उसी में दिये हुए अन्य श्लोकों के विपरीत और नैतिक भावना के विरुद्ध हैं... मैं इन पृष्ठों में अनेक बार लिख चुका हूँ कि धर्मग्रन्थों के नाम पर जो कुछ छपता है, उस में सभी को ईश्वर की वाणी अथवा देववाणी के रूप में नहीं लेना चाहिये।"⁶

□ गलत अनुवाद या पुनराख्यान -वेदों का अधिकांश भाग चूंकि अलंकृत भाषा में है इस लिये मानव बुद्धि केवल अपने ज्ञान के बल पर उन का शुद्ध अनुवाद करने में असमर्थ है। ईश्वर की अन्तिम, प्रमाणित और शुद्ध वाणी 'कुरआन' की ज्योति में वेद का शुद्ध अनुवाद मुमकिन है। इस का विवरण पिछले पृष्ठों में दिया जा चुका है।

□ हिन्दू जनमानस की वेदों से दूरी:- विद्वानों ने आम लोगों को वेदों से अनभिज्ञ कर दिया है। यदि जनमानस का वेदों से संपर्क बना रहता तो अनेक भटकाव दूर हो सकते थे। मसलन बहुत से देवी-देवताओं की पूजा को ही लोजिये। वेद में आया है कि एक ईश्वर को अनेक नामों से सम्बोधित किया गया है। यह तथ्य न जानने के कारण हिन्दूओं में इन सब नामों के अलग-अलग देवता मान लिये गए।

इस प्रकार हम देखते हैं कि तौरों द गा एक-ईश्वर वाद का आधारभूत स्वीकृत मत दिन्कुल कुरआन की वार्तानीलों में गनातन धर्म में विदामान है।

सन्दर्भ-सूची अध्याय : 9

1. 'विष्णु रहस्य'-दा० चमन लाल गौतम, पृ०: 1-4-9
2. भाष्य गीता, पृ०: 3-2-6, प्र०: 'कल्याण'-गोरखपुर
3. 'इस्लाम का हिन्दू तहजीब पर असर' ले०: दा० ताराचन्द, उर्दू अनु०: चौधरी रहम अली अली हाशमी, पृ०: 1-5-3-5-4 प्र०: आजाद किताब घर, देहली
4. 'इस्लाम दर्शन', ले०: दा० गणेश दत्त सारस्वत, प्रोफेसर हिन्दी विभाग, आर.एम.पी. पॉस्ट ग्रेजुएट कालिज सीतापुर, पृ०: 1-9
5. 'अहिंसा और सत्य' संपादक: श्री राम नाथ सुमन, पृ०: 3-1
6. स्त्रियों की समस्याएं, ले०: महात्मा गांधी, 'हरिजन' सम्पादक: रामनाथ-सुमन, प्र०: साधना सदन, इलाहाबाद

-----♦ ♦ ♦ -----

कुरुआन

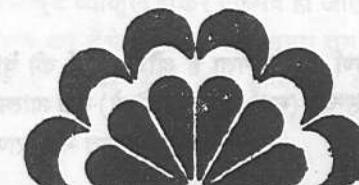
"हे हमारे रब! हम से भूल-चूक में जो ग़लतियाँ हो जाएं, उन पर गिरफ्त न कर"

-(कु०: 1-126)

वेद

हे देव (रब)! हम से जो पाप अन्जाने में होते हैं, उनकी वजह से आप हमें मत त्याग दीजिए।

-(ऋ०: 7-89-5)



वैदिक धर्म और रिसालति (ईशदूत-पद)

अग्नि के समान ब्रह्मा के साथ भी यही हुआ। 'ब्रह्मा' अर्थात् 'रहमान' वैदिक धर्म में 'जन्मदेने वाले खुदा' के लिये भी इस्तेमाल हुआ है, अहमद सल्लू० की आत्मा के लिये भी और आदि मानव-ह० आदम अलौ० के लिये भी। तीनों जगह पर सही अभिप्राय समझने के बजाय पैगम्बर ही देवता बन गए और 'सन्देष्य' के स्थान पर 'अवतार' की परिकल्पना आ गई। मुसलमान अपने ज्ञान के प्रकाश में हिन्दुओं में विकारस्वरूप आए हुए बहुदेववाद के विचारों को संशोधित कर सकते थे लेकिन यह तभी सम्भव था जब कि स्वयं उन्हे इस शिर्क (बहुदेववाद) की बुनियादों का पता होता। 'ब्रह्मा' राष्ट्र 'हरिवंश पुराण' में ह० आदम अलौ० के लिये भी इस्तेमाल हुआ है।

ईशदूतों के वृताँतः

'अन्त में स्वयं सृष्टि ने अपने दाहिने भाग से 'मनु' और वाम भाग से 'शतरूपा' को प्रगट किया। यह जोड़ी सृष्टि बनाने में प्रवृत्त हुई।'¹

किसी मुसलमान की नजर जैसे ही इस हिस्से पर पढ़ेगी, वह तुरन्त पहचान लेगा कि यह ह० आदम अलौ० की बायी परती से ह० हव्वा अलौ० की पेदाइश तथा उन दोनों से समस्त मानव जाति की उत्पत्ति का वृतांत है।

अब आप हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों में ईशदौत्य और ईशदूतों के विषय में कुछ अवतरण देखिये:

"जब भी धर्म कीर्ण होने लगता है और अधर्म की वृद्धि होती है, तब सर्वशक्तिमान हरि निस्सन्देह (भाग दर्शन के लिये) एक आत्मा पैदा करता है।"

—(श्रीमद भागवत महापुराण: 9-24-56)

यह था ईशदूतों के संसार में भेजे जाने का उद्देश्य। अब ह० नूह अलौ० और 'नूह के तूफान' से संबंधित कुछ अवतरण हम उद्घृत करते हैं—सबसे पहले प्रारंभ के लेखक 'ड्यूबाइस' के विचार :

... 'संक्षेप में, एक प्रसिद्ध व्यक्तित्व जो कि हिन्दुओं के यहां बहुत पवित्र है और जिसे वे महानूवों के नाम से जानते हैं (सैलाब के) विनाश से एक नौका के द्वारा बच निकला जिस में सात प्रसिद्ध ऋषि सवार थे ... 'महानूवों' यो लोहों 'महा' और 'नूव' का मिश्रण है। महा का अर्थ महान और नूव निरस्त्वेह नूह (अलौ०) है।'²

... व्यावहारिक रूप से यह स्वीकार किया जाता है कि हिन्दुस्तान नूह (अलौ०) के उस महान सैलाब के बाद तुरन्त आबाद हुआ था जिसने शारीर दुनिया को बीरान कर दिया था।³

... मारकण्डेय पुराण और भागवत में इस का बहुत स्पष्ट वर्णन है कि इस दुर्घटना में समस्त मानव जाति समाप्त हो गई थी, सात प्रसिद्ध तपस्या करने वाले ऋषियों के अतिरिक्त जिन का मैंने अनेक स्थानों पर उल्लेख किया है। इस नौका को विष्णु स्वयं चला रहा था। एक और महान व्यक्तित्व जो बच जाने वालों में था, वह 'मनु' का था जिसे मैंने दूसरे स्थानों पर सिद्ध किया है कि नूह (अलौ०) के अतिरिक्त कोई नहीं था।⁴

अब मत्स्य पुराण से कुछ अवतरण समूह देखिये

"तब भगवान, मनु से यूं बोले—ठीक है, ठीक है। तुम ने मुझे भलीभांड़ि पहचान लिया है। भूपाल! थोड़े ही समय में पर्वत, वन और उपवन के सहित यह पृथ्वी जल में निमग्न हो जाएगी। इस कारण पृथ्वीपते! सम्पूर्ण जीव—समूहों की रक्षा करने के लिये समस्त देवगणों द्वारा इस नौका का निर्माण किया गया है। सुदृढ़त!... जितने भी प्रकार के जीव हैं, उन सभी अनाधियों को इस नौका में चढ़ा कर इन सब की सुरक्षा करना।"⁵

—(मत्स्य पुराण, अ० १ श्लोक २९ से ३५)

"तब सातों समुद्र व्याकुल होकर एकमेव हो जाएंगे और इन तीनों लोकों को पूर्ण रूप से एक कर देंगे। सुवत! उस समय तुम इन वेद रूपी नौकाओं की ग्रहण करके इस पर समस्त जीवों और बीजों को लाद देना।"

—(मत्स्य पुराण अ० २ श्लोक १०-११)

“... (सैलाब के) प्रलय काल में जब इसी प्रकार सारी पृथ्वी एकार्णव में निमग्न हो जाएगी और तुम्हारी सृष्टि का प्रारम्भ होगा, तब मैं देवों का पुनः प्रवर्तन करूँगा तथा मनु भी वहीं स्थित रह कर भगवान् वासुदेव की कृपा से प्राप्त हुए योग (तपस्या और साधना) का तब तक अभ्यास करते रहे, जब तक पूर्वसूचित प्रलय का समय उपस्थित न हुआ।”

—(मतस्य पुराण, अ०: 2 श्लोक 14, 16)

यह तो थी ह० नूह अलै० की चर्चा। अब पंडित वेद प्रकाश उपाध्याय की पुस्तक 'देवों और पुराणों के आधार पर धार्मिक एकता की ज्योति' से हम भविष्य पुराण के कुछ श्लोकों के अनुवाद नक़ल कर रहे हैं जिन में दूसरे नवियों के स्पष्ट वृत्तांत उनके मूल नामों के साथ वर्णित हुए हैं।

“आदम और हृथ्यवती विष्णु की गीली मिट्टी से उत्पन्न होंगे। प्रदान नगर (स्वर्ग) के पूर्वी भाग में परमेश्वर द्वारा बनाया गया सुन्दर चार कोश के क्षेत्र का बहुत बड़ा वन था। पाप वृक्ष के नीचे जा कर पत्नी को देखने की उत्कण्ठा से आदम, हृथ्यवती (हवा) के पास गए। तभी सर्प का रूप बना कर वहां कलि (शैतान) शीघ्र आया। उस धूर्त के द्वारा आदम और हृथ्यवती ठग लिये गए और विष्णु की आज्ञा को भंग कर दिया तथा संसार का मार्ग प्रदान करने वाले उस फल को पति ने खा लिया। उन दोनों के द्वारा गूलर के पत्तों से वायु का आहार किया गया, तब उन दोनों से बहुत सी संतानें उत्पन्न हुईं, सब म्लेच्छ कहे गए। आदम की आयु नौ सौ तीस वर्ष हुई।”

“उस से न्यूह (नूह) नामक पुत्र हुआ। उसने पांच सौ वर्ष तक राज्य किया*। उस के सीम (साम), शाम और भाव तीन पुत्र हुए, विष्णु का भक्त न्यूह (नूह) सोऽहमस्मि (वहदतुल त्रुजूद) ध्यान में परायण था। एक बार भगवान् विष्णु ने उसे स्वप्न में बताया कि हे प्रिय न्यूह सुनो! सातवें दिन प्रलय होगी। तुम लोगों के साथ नाव में शीघ्र बैठ जाना, हे भक्तेन्दु अपना जीवन बचाओ, तुम सर्वश्रेष्ठ हो जाओगे। वैसा स्वीकार करके उस मुनि ने तीन सौ हाथ लम्बी और पचास हाथ चौड़ी नाव का निर्माण कराया। तीन सौ हाथ ऊपर उठी हुई (छंची) सुन्दर सभी जीवों के जोड़े तथा अपने कुल वालों के साथ चढ़ कर विष्णु के ध्यान में तत्पर हो गया... चालीस दिनों तक महान् वृष्टि (बारिश) की।

* तौरेत के अनुसार तूफान से पहले ह० नूह अलै० सादे छ: सौ साल के थे।

नोट: अनुवाद में हमने पुस्तक— 'Islam, The first and Final religion' के पृष्ठ 8-9 पर दिये गये इन्हीं श्लोकों के अनुवादों से भी मदद ली है।

सम्पूर्ण भारतवर्ष जल में झूब गया, और चार समुद्र मिल गए और विशाल हो गए... ब्रह्मवादी मुनि (अल्लाह वाला बरगुजीदा) न्यूह अपने कुलों के साथ जल के अन्त होने पर वहां वास करने लगा। न्यूह के पुत्र सिम (साम), हाम, याकूत के नाम से प्रसिद्ध हुए।

—(पृ०: 14)

“उसके पुत्र तीन—अबिराम* (इब्राहीम अलै०) नहूर और हारन इस प्रकार म्लेच्छ वंश के गुरु होंगे।”

—(पृ०: 16)

“...एक बार शकाधीश हिमतुंग (हिमालय) पर गए और हूण देश के मध्य पर्वत में स्थित गोरे अंग वाले, श्वेत वस्त्र पहनने वाले शुभ पुरुष को बलवान राजा ने देखा और आनन्दित होकर पूछा कि आप कौन हैं? उन्होंने कहा कि मुझे कुमारी के गर्भ से उत्पन्न ईशा (ईसा अलै०) सनज्ञे, मैं सत्य के व्रत में परायण म्लेच्छ धर्म का उपदेशक हूं। ऐसा सुन कर राजा ने पूछा कि धर्म में आप का क्या विचार है?

यह सुन कर ईसामसीह बोले कि सत्य के नष्ट हो जाने पर म्लेच्छ देश के मर्यादाहीन होने पर मैं मसीहयां आया हूं... हे राजन् मेरे द्वारा म्लेच्छों में स्थापित धर्म को सुनो—स्नान करो या नहीं, मन को निर्मल करके वैदिक जप को आश्रित करके निर्मल होकर जपो (खुदा की इबादत करो)। न्याय, सत्यवधन और मन की एकता से मनुष्य सूर्यमण्डल में स्थित ईश्वर को ध्यान से पूजे। यह प्रभु अचल है जैसे कि सूर्य अचल है। ईश्वर की हृदय में नित्य शुद्ध तथा कल्याणकारी भूर्ति प्राप्त होती है, इसी लिये ईसामसीह मेरा नाम है। यह सुन कर राजा ने उस म्लेच्छ पूजक को वहीं दारूण म्लेच्छ स्थान में स्थापित किया। ..(राजा ईसा मसीह का मो तकिद हो गया) (भविष्य पुराण, प्रतिसर्ग पर्व, तृतीय खण्ड, द्वि अध्याय) #

* यहां इब्राहीम की जगह संस्कृत में अबिराम शब्द प्रयुक्त हुआ है। यह बात भी उल्लेखनीय है कि तौरेत में बताया गया है कि ह० इब्राहीम अलै० का नाम पहले Abram था और बाद में अल्लाह ने उनका नाम Abraham रख कर कहा कि तुम समस्त मानव जाति के अंगुआ होगे। इसलिये मैं तुम्हारा यह नाम रख रहा हूं।

यह अनुवाद भविष्य पुराण के जिन श्लोकों से लिया गया है, वह पंडित वेद प्रकाश उपाध्याय के अनुसार प्रतिसर्ग पर्व, तीसरे खण्ड, और दूसरे अध्याय के नम्बर 21 से 30 तक के श्लोक हैं, जब कि पंडित श्री राम शर्मा के अनुसार यह प्रसंग अध्याय 22 के नम्बर 21 से आगे तक के श्लोक हैं। अस्ति भविष्य पुराण हमारे सामने नहीं हैं। पंडित श्री राम शर्मा के सन्दर्भ में ही त्रुटि मालूम होती है। उपरिलिखित श्लोकों में मूल भाषा में ईसा की जहग ईशा, हिमालय की जगह हिमतुंग, मसीह की जगह मसी के शब्द हैं। हिमतुंग का अनुवाद पंडित श्रीराम शर्मा ने हिमालय किया है।

“उसी बीच शिष्यों की शाखाओं से युक्त महामद (मोहम्मद) नामक म्लेच्छ आचार्य वहां आते हैं। राजा भोज उन से कहेगा— हे मरुस्थल में निवास करने वाले त्रिपुरा सुरनाशक (शैतान को शिकस्त देने वाले), अत्यधिक चमत्कारों को जानने वाले, शुच एवं सत्य, चैतन्य और आनंद स्वरूप शंकर जी (खुदा के इश्क व मारफत की तस्वीर) तुम्हें नमस्कार है। तुम मुझे शरण में उपरिथित अपना दास समझो। राजा भोज के पास स्थित पत्थर की मूर्ति के लिये महामद (मोहम्मद सल्लू०) यह कहेंगे कि वह तो मेरा झूठा खा सकती है जिसे तुम पूजते हो, ऐसा कह कर भोज को वैसा ही (चमत्कार) दिखा देंगे, यह सुन कर और देख कर राजा भोज को बड़ा आश्चर्य होगा और उस की आस्था म्लेच्छ धर्म में हो जाएगी।”*

—(भ०पु०प्र०म०प०, त०० अ० त००, श्लोक १५-१६)

उपर्युक्त श्लोकों से आगे बताया गया है कि ‘रात्रि में कोई देवदूत राजा भोज के पास आकर बताएगा कि— ख़तना किया हुआ, चौटी से हीन, दाढ़ी रखने वाला... शुद्ध पशुओं का आहार करने वाला, ईश्वर का ख़ास आदमी है।’

‘भविष्य पुराण’ जिस के हवाले अभी आप ने देखे, उन प्रमाणों में से एक है जिसे हिन्दू धर्म के कुछ जिम्मेदार लोगों ने अब छिपाना आरम्भ कर दिया है। हिन्दुओं का आर्यसमाजी वर्ग तो अब सिरे से इसे नकारने लगा है लेकिन सनातन धर्मी जो परम्परावादी होने के कारण अपनी सम्पूर्ण धार्मिक विरासत में से कुछ भी छोड़ने को तैयार नहीं हैं (और यही लोग भारी बहुमत में हैं), भविष्य पुराण को प्रमाणित धार्मिक पुस्तक मानते हैं। एक युग वह था जब संस्कृत सीखने की अनुमति साधारण लोगों को नहीं थी। ‘अलबेर्नी’, ‘गिरिफ्थ’ तथा ‘मैक्समुलर’ सरीखे शोधकर्ताओं ने घोर विरोध और पंडितों की नाराजगी के माहौल में अपने अथक प्रयासों से संस्कृत सीखी थी। उस युग में इन सुबूतों का आम लोगों के हाथ लगने का भय इन पंडितों को नहीं था। लेकिन अब जब कि सरकार की छत्र छाया में संस्कृत भाषा को पुनः जीवित किया जा रहा है और संस्कृत सीखने वाली वर्तमान पीढ़ी पंडितों के धर्मादेशों से भयभीत नहीं है (जैसा कि अतीत में वेदों का अध्ययन करना जन-साधारण के

* इन श्लोकों में ‘मोहम्मद’ की जगह मूल संस्कृत में ‘महामद’ शब्द आया है। यहां से यह भी ज्ञात हुआ कि ‘म्लेच्छ’ शब्द वास्तव में गैर आर्य जाति के लोगों के लिये प्रयुक्त होता था जैसा कि ‘अरब’ गैर अरबों के लिये ‘अजम’ तथा यदूदी, गैर यदूदियों के लिये ‘Gentiles’ शब्द इस्तेमाल करते हैं। अब ‘म्लेच्छ’ शब्द का प्रयोग गुलत अर्थों में होने लगा है लेकिन वैदिक भाषा में ऐसा नहीं था।

लिये निषिद्ध था), तो कुछ समुदायों ने उन चीजों को अब गायब करना शुरू कर दिया है जो धर्म की मूल वास्तविकता की ओर ले जाती हैं— विशेष रूप से वह सामग्री जो इस्लाम धर्म का समर्थन करती है। गीता प्रेस, गोरखपुर जो हिन्दू धार्मिक पुस्तकों का सब से बड़ा प्रकाशन केन्द्र है, भविष्य पुराण को अब पुराण मानने सेइनकारकर रहा है। लेकिन सनातन धर्म के सब से प्रतिष्ठित गुरु स्व० पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जिन के अनुयायियों की संख्या दस लाख से अधिक है, भविष्य पुराण को स्वीकार करते हैं और उन के संगठन ‘शान्ति कुंज’ से प्रकाशित भविष्य पुराण के अवतरण हम पिछले अध्याय में (ह० ईसा अलौ०, हिन्दुस्तान में के सन्दर्भ में) दे चुके हैं।

भागवत में ह० मोहम्मद सल्लू० का उल्लेख:

भविष्य पुराण के वक्तव्य तो इतने स्पष्ट हैं कि उनमें अर्थ बदलना संभव ही नहीं था; दूसरी जगहों पर जहां ह० मोहम्मद सल्लू० के ईशदौत्य की भविष्यवाणियाँ हैं, वहां अनुवाद बदल दिये गए हैं। उदाहरण के लिए श्रीमद् भागवत पुराण के इस श्लोक को देखिए:

“....अज्ञान हेतु कृत मोहम्दान्धकार नाशं विधाय हि तदो दयते विवेकः”

“जब जन्म—जन्मान्तरों में सार्वजनिक कल्याण के उदय होने से भानव को सत्य का आध्यात्मिक लाभ प्राप्त होने वाला हो तब मोहम्मद (सल्लू०) के माध्यम से अन्धकार का नाश होकर विवेक की ज्योति का उदय होगा।”

—(श्रीमद् भागवत—महात्प्य: २-७६)

उपरोक्त श्लोक में ‘मोहम्मद’ शब्द को मोह+मद में विभाजित कर के अनुवाद इस तरह किया जा रहा है :

“— — — — तब लालच और शराब जैसे अन्धकारों का नाश होकर विवेक की ज्योति का उदय होगा।”

यह तो थे पुराण—अब वेदों में ह० नूह अलौ० का जिक्र और ह० मोहम्मद सल्लू० के गुणों का वर्णन देखिये। हां, इससे पूर्व यह अवश्य समझ लें कि नूह अलौ० की चर्चा वेदों में ‘मनु’ के नाम से है। यद्यपि ‘अरिन’ व ‘ब्रह्मा’ के समान ‘मनु’ भी विभिन्न व्यवितत्त्वों के लिये प्रयुक्त हुआ है तथा कुल चौदह ‘मनु’ में एक ह० नूह अलौ० है। लेकिन पुराण, वेदों और दूसरी धार्मिक पुस्तकों में सब से अधिक विस्तार से जिस मनु का वृत्तान्त है, वह ह० नूह अलौ० ही है। नबी सल्लू० का जिक्र जहां कहीं मोहम्मद सल्लू० की हैसियत से आया है, वहां वेदों में ‘नराशांस’ का शब्द इस्तेमाल हुआ है।

जैसा कि तौरेत व इन्जील में आप (सल्ल०) के लिये 'पैराक्लीट' शब्द से संबोधन है जिस का अर्थ है—प्रशंसा के योग्य (यही अर्थी भाषा में 'मोहम्मद' शब्द का है), इसी प्रकार वेदों में आप (सल्ल०) को नराशंस कह कर पुकारा गया है। इस शब्द का अर्थ भी वही है—'अत्यन्त प्रशंसा के योग्य व्यक्तित्व' संस्कृत के इस शब्द का शुद्ध 'पर्यायवाची अर्थी शब्द 'मोहम्मद' है।

निम्नलिखित वेद मन्त्रों के अनुवादों में जहां कहीं 'मनु' शब्द आया है, इस की जगह हम अनुवाद में 'नूह' (अलै०) लिखेंगे और नराशंस के स्थान पर 'मोहम्मद' सल्ल० लिखेंगे। पहले ह० नूह अलै० के वृत्तांत के कुछ दृष्टांत देखिये :

वेदों में ह० नूह अलै० का वृत्तांतः

"हे अग्नि! मनु (नूह अलै०) आप के ईशदूत—पद की पुष्टि करते हैं।"

—(ऋ० : 1-13-4)

इस मन्त्र के विषय में वेदों के अनुवादक गिरिफिथ ने अपने अंग्रेजी अनुवाद में नोट लिखा है कि 'नूह' अद्भुत व्यक्तित्व तथा मानव जीवन के प्रतिनिधि थे। समस्त मानव जाति के पिता (सैलाब के बाद दूसरे आदम के रूप में) और पहली धर्म—नियमावली के आरम्भ करने वाले थे। और देखिये:

"हे अग्नि! हम आप को मनु (नूह) के समान धर्म का अग्रदूत, आत्मानकर्ता, धार्मिक विधाएं सिखाने वाला तथा अत्यन्त बुद्धिमान व्यक्तित्व आनते हैं।"

—(ऋ० : 1-44-1)

"हे अग्नि ! मनु (नूह) ने आप की कान्ति समस्त मानव जाति में फैला दी है ।"

—(ऋ० : 1-36-19)

ऊपर के सभी मन्त्रों में अग्नि, अहमद सल्ल० की आत्मा को कहा गया है। चारों वेदों में इसी तरह नूह अलै० का नाम ७५ जगह आया है। ५१ बार ऋग्वेद में, २ बार यजुर्वेद में, १४ बार अथर्ववेद में और ८ बार सामवेद में 'नूह' नाम से जिक्र मौजूद है। अब ह० मोहम्मद सल्ल० के नाम का वृत्तांत देखिये:

वेदों में ह० मोहम्मद सल्ल० का वृत्तांतः

"हे प्रिय नराशंस (मोहम्मद सल्ल०)! मीठी बोली वाले, यज्ञ करने वाले! मैं आप के बलिदानों को माध्यम बनाता हूँ।"

—(ऋ० : 1-13-3)

"मैंने नराशंस (मोहम्मद सल्ल०) को देखा है। सब से अधिक उच्चोत्साही

और सबसे ज़्यादा प्रसिद्ध जैसा कि वे स्वर्ग में हर एक के होता (पैग्मन्डर) थे।"
—(ऋग्वेद : 1-18-9)

"महान नराशंस (मोहम्मद सल्ल०) की शक्ति में वृद्धि के लिये तथा पुष्टान (मेहदी अलै०) जो कि महान शासक है, उस के लिये हम प्रशंसा करते हैं। हे अत्यन्त कृपालु ईश्वर! हमें समस्त विपत्तियों से मुक्ति दे तथा दुर्गम मार्गों से हमारा रथ पार करा दे।"
—(ऋ० : 1-106-4)

ऊपर अंकित मंत्र के अनुवाद के संदर्भ में गिरिफिथ ने अपने नोट में लिखा है कि 'नराशंस' अग्नि का एक रहस्यमय नाम है।

ऋग्वेद में १६ जगह आप (सल्ल०) का नराशंस के नाम से वृत्तांत है। इसी प्रकार यजुर्वेद में १० जगह, अथर्ववेद में ४ जगह और सामवेद में एक जगह आप (सल्ल०) का उल्लेख मिलता है। इस प्रकार चारों वेदों में कुल मिलाकर ३१ जगह नराशंस के नाम से आप (सल्ल०) को संबोधित किया गया है।

इस सन्दर्भ में यह बात दिलचस्पी से खाली न होगी कि पंडित अमरनाथ पाण्डेय जो कि रहस्यवादियों में से हैं और जिन्होंने अर्थी अक्षरमाला पर रिसर्च की है, उन का कथन है कि हिन्दू तीस बार इनकार करता है— इकत्तीसवीं बार नहीं करेगा। अर्थी की अक्षरमाला में भी उनके अनुसार ३१ अक्षर हैं और 'सूरप रहमान' में ३१ बार अपने वरदान गिनाने के पश्चात अल्लाह ने यह प्रश्न किया है— "फिर तुम अपने 'रब' के कौन—कौन से वरदानों को झटलाओगे!"

अथर्ववेद में बीसवें काण्ड का यह सूक्त नराशंस के वृत्तांत में अत्यन्त महत्वपूर्ण है:

"लोगों सुनो! नराशंस (मोहम्मद सल्ल०) की बदाई की जाएगी। उस कौरम (विस्थापित) को हम साठ हजार और नवे शत्रुओं से अपनी शरण में लेंगे। उस की सवारी ऊंट होगी जिस के साथ बीस मादा ऊंटनियां होंगी। जिस की महिमा आसमानों को भी झुका देगी। उस मामह (महान) ऋषि को सौ निष्क (स्वर्ण मुद्राएं), दस मालाएं, तीन सौ घोड़े और दस हजार गाएं प्रदान की गई हैं।"
—(अथर्व० : 20-127-1,2,3)

उपर्युक्त तीनों मन्त्रों के अनुवाद पंडित वेद प्रकाश उपाध्याय ने अपनी पुस्तक 'नराशंस और अन्तिम ऋषि' में उद्धरित किये हैं जिनमें सिद्ध किया गया है, दस मालाओं से अभिप्राय दस अशारः मुबश्शरः हैं, तीन सौ घोड़ों से तात्पर्य 'जन्मे बद्र' (बद्र का धर्मयुद्ध) के तीन सौ तेरह मुजाहिदीन (पराक्रमी) और दस हजार गायों से अभिप्रायः दस हजार सत्संगियों का वह जत्था है जो मक्के पर विजय प्राप्त होने के

समय औंहजूरत (सल्ल०) के साथ था।

यह बात विशेषतया उल्लेखनीय है कि पुराणों व अन्य धार्मिक पुस्तकों में तो अनेक ईशदूतों की कथाएँ हैं लेकिन वेदों में केवल ह० आदम अलै० व ह० नूह अलै० के वृत्तान्त के साथ अन्तिम ईशदूत ह० मोहम्मद सल्ल० के शुभागमन की भविष्यवाणियाँ हैं जोकि प्रत्येक ईशदूत पर अवतरित ग्रन्थ में विद्यमान हैं। यह भी इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि वेद, ह० नूह अलै० के ग्रन्थ (जुबुरुल अव्वलीन या अव्वलीन सहाइफ़ या आदि ग्रन्थ) हैं। एक कमज़ोर रिवायत यह भी है कि “ह० नूह अलै० को दो सहीफ़ दिये गये थे— एक तूफ़ान से पहले और एक तूफ़ान के बाद।”⁵

इस दृष्टि से भी ‘जुबुरुल अव्वलीन’ अर्थात् ‘अव्वलीन सहाइफ़’ का शब्द जो कि बहुवचन है (जुबूर—यानी ग्रन्थ और जुबुरुल—यानी कई ग्रन्थ), वह हो सकता है कि बहुत से नवियों के लिये हो। यह भी सम्भव है कि एक ही नवी ह० नूह अलै० को दिए गए ग्रन्थों के लिये हो।

ऋग्वेद के मन्त्र (1-163-1) में अन्तिम सन्देष्टा ह० मोहम्मद सल्ल० के लिये ‘समुद्रादूत अरबन’ के शब्द इस्तेमाल हुए हैं। विना०श० सागर में ‘स’ का अर्थ साथ, ‘मुद्रा’ का अर्थ मुहर तथा ‘अरब’ एक देश का नाम है। न संस्कृत में प्रायः अतिरिक्त होता है। इस प्रकार ‘समुद्रादूत अरबन’ का अर्थ हुआ—‘मुहर’ के साथ अरब वाला’ अरबी शब्द ‘ख़ातम’ का अर्थ भी ‘मुहर है। ह० मोहम्मद सल्ल० को ख़ातमुन—नबियीन’ इसलिये कहा गया है नवियों के आगमन के क्रम पर आप (सल्ल०) ने आखरी मुहर लगाकर नई नुबूवत (ईशदूतत्व) का दरवाजा बन्द कर दिया।

वेदों, अन्य हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों तथा दूसरे ईश्वर प्रेषित ग्रन्थों में ह० मोहम्मद सल्ल० की रिसालत के दो और महत्वपूर्ण पदों (अहम्मद सल्ल० और महमूद सल्ल०) का भी स्पष्ट वृत्तांत है।

सन्दर्भ—सूची अध्याय : १०

1. ‘कल्याण’ गोरखपुर ‘हिन्दू संस्कृति अंक’ जनवरी १९५०, पृ०: ७९५
2. ‘Hindu Manners, Customs & Ceremonies’ - A.J.A. Dubois, P: 48
3. ----- do ----- P:100
4. ----- do ----- P:416, 417
5. ‘किताबुल्लेजान फ़ी मुलूक हमीर’ पृ० : ३७२, प्र०: मजलिसे दायरनुल मजारिफ़—उस्मानिया हैदराबाद, प्रथम संस्करण

-----♦♦♦-----

अध्याय : १।

दैदिक धर्म और आख्खरत (पारलौकिक जीवन)

पारलौकिक जीवन की आस्था तथा पुनर्जन्मः

‘परलोकवाद’ की धार्मिक आस्था इस दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण है कि समस्त धर्मों एवं जातियों में बहुत बड़े सम्प्रदाय ऐसे हैं जो ‘एकईश्वरवादी’ हैं। ईशदूत पद की धारणा भी इन सब सम्प्रदायों में विल्कुल स्पष्ट है, यद्यपि वे अन्तिम ईशदूत ह० मोहम्मद सल्ल० के ईशदूत होने को स्वीकार नहीं करते। लेकिन मूल धर्म विश्वासों में से ‘परलोकवाद’ ही एक ऐसी धारणा है जो इन सब के यहां विकृत हो चुकी है। अन्तिम दिन (पुनरोत्थान), पुरस्कार व दण्ड तथा स्वर्ग व नरक की कोई स्पष्ट कल्पना उन के पास नहीं है। किसी को आवागमन में श्रद्धा है, कोई अन्तिम दिन को मानता ही नहीं और कोई हिसाब—किताब का इनकार करके यह कहता है कि ह० ईसा अलै० ने फांसी पर चढ़ कर (ईश्वर क्षमा करे) सब के पापों का प्रायरिचत कर लिया था। तौरेत, जुबूर तथा इन्जील के वर्तमान रूप में परलौकिक जीवन की कल्पना बहुत अस्पष्ट और धुन्दलाई हुई है; लेकिन वेदों में बहुत विस्तार के साथ दूसरे जीवन, पुरस्कार व दण्ड और स्वर्ग-नरक का वर्णन विशुद्ध रूप में भौजूद है।

आवागमन का मत हिन्दू समाज में बहुत बाद के युग में आया। यद्यपि ऐसे संकेत मिलते हैं कि दैदिक युग में भी आवागमन के मानने वाले थे, लेकिन एक पूरी की पूरी कौम जन्म—जन्मांतर की कहानी को सत्य मानने लगे, ऐसा बहुत बाद में हुआ। किसी साधारण हिन्दू से मालूम कीजिए कि यदि पुरस्कार व दण्ड स्वरूप बार—बार इसी संसार में जन्म लेना है तो धार्मिक ग्रन्थों में स्वर्ग, नरक, परलोक एवं यमदूत का क्या अर्थ है? वह आप को कुछ न बता सकेगा। अधिकांश हिन्दू विद्वान भी इस सवाल पर बेतुके से तर्क प्रस्तुत करते हैं। वास्तविकता यह है कि वेदों से पूर्ण रूप से कट जाने के कारण ‘आख्खरत’ की धारणा में बिगड़ आया। आवागमन कैसे आया, इसकी

हकीकत क्या है? इस पर हम बाद में चर्चा करेंगे। अभी इतना समझ लें कि आवागमन के विषय में महत्वपूर्ण शब्द 'पुनर्जन्म' ही बार-बार जन्म लेने की बात को नकारता है। संस्कृत में पुनर या पुनः का अर्थ है दोबारा या दूसरी बार। इसलिये पुनर्जन्म का मतलब हुआ दूसरा जीवन या दोबारा मिलने वाला जीवन, न कि बार-बार जन्म लेना। इस विषय पर कुछ विद्वानों के वक्तव्य देखिये।

हिन्दू शोधकर्ताओं की स्वीकृति :

"ऋग्वेद में पुनर्जन्म का उल्लेख नहीं है..."¹

—डॉ राधाकृष्णन

ऐसा प्रतीत होता है कि डाँ० साहब की नज़र से पुनर्जन्म की चर्चा और आवागमन या बार-बार जन्म लेने के विचार को नकारने वाला हिस्सा नहीं गुजरा है।

"पुनर्जन्म के लिये एक शब्द 'प्रत्यभावः'... वह इस से भिन्न होकर अन्य लोक में जाकर फिर उत्पन्न होना है!"²

"पहले हम बता चुके हैं कि पुनर्जन्म का दूसरा नाम परलोक है।"³

"मृतक का शास्त्रों में परलोक में जाना कहा है..."⁴

वेदों में दूसरे जीवन की वही धारणा मौजूद है जिसे कुरआन में मआद या आखिरत कहा गया है। एक और विद्वान् राहुल सांकृत्यायन के विचार इस विषय पर देखिये:

"भारतीय प्राचीन साहित्य में छान्दोग्य ही ने सबसे पहले पुनर्जन्म (परलोक ही में नहीं, इस लोक में भी कर्मनुसार प्राणी जन्म लेता है) की बात कही। शायद उस समय प्रारम्भिक प्रचारकों ने यह न सोचा हो कि जिस सिद्धान्त का वह प्रचार कर रहे हैं, वह आगे कितना ख़तरनाक साबित होगा!"⁵

"डाक्टर फरीदा चौहान लिखती हैं : वेदों में पुनर्जन्म मिलता तो ज़रुर है लेकिन उसमें इस जन्म के बाद सिफ़े एक और जन्म का विवरण है, हजारों जन्मों का नहीं।"⁶

श्री सत्यप्रकाश विद्वालंकार लिखते हैं—वेदों में आवागमन का सिद्धान्त नहीं है, इस बात पर तो मैं जुआ भी खेल सकता हूँ...!"⁷

"वेदों में 'आखिरत' है या नहीं, यह सवाल बड़ा अजीब सा है, बिल्कुल ऐसा ही सवाल है जैसे कोई पूछे कि मनुष्य में आत्मा है या नहीं। पूरे के पूरे वेद पारलौकिक जीवन की पुष्टि करते हैं... अन्तिम दिन तो ईश्वरीय धर्मों का

एक प्रमुख सिद्धान्त है और वेद पूरे इसकी गवाही देते हैं... वेदों में भी कुरआन की तरह तीन सिद्धान्तों को धर्म का स्तंभ माना गया है : 1. एक-ईश्वर-वाद, 2. ईशदौत्य, 3. अन्तिम दिन⁸

कुछ हिन्दू शोधकर्ताओं की इन टिप्पणियों के बाद अब वेदों में अन्तिम दिन और स्वर्ग-नरक का वर्णन देखिये।

वेदों में आखिरत (पारलौकिक जीवन) की परिकल्पना :

"हे अग्नि! अपनी मुकित दिलाने वाली शक्तियों से पुण्य लोक की प्राप्ति कराओ।"
—(ऋ०: 10-16-4)

"हे अग्नि! इस मृत व्यक्ति को जीवन मिलेगा।"
—(ऋ०: 10-16-5)

वेदों में परलोक की कल्पना की यह दो मिसालें हैं, बार-बार जन्म न होकर केवल एक बार दोबारा जन्म लेने का वृतांत, परलोक के लिये वेदों में हर जगह आया है। यह परिकल्पना बहुत अस्पष्ट भी नहीं है, बटिक अत्यधिक विस्तार के साथ प्रत्युपकार व दण्ड का जिक्र और स्वर्ग व नरक का वर्णन है। कुछ उदाहरण हम नीचे प्रस्तुत करते हैं :

वेदों में जन्मत (स्वर्ग) का वृतांत :

"तुम वहां अपनी सच्चाई की सहायता से उस जगह को देखना जो अत्यन्त विस्तृत दृश्यों वाली है।"
—(ऋ०: 1-21-6)

इस मन्त्र के भाष्य की टिप्पणी में गिरिफिथ ने अपने अंग्रेजी अनुवाद में लिखा है कि सायणआचार्य की व्याख्या के अनुसार यह स्थान 'स्वर्ग' है।*

"तुम दोनों पति-पत्नी भेरे पास पंकितबद्ध होकर खड़े हो जाओ, सच्चे भक्त इस स्वर्ग की दुनिया में पहुँचाये जाते हैं।"
—(अथर्व : 6-122-3)

"तुम्हारे अनुयायी अपने दान पुण्य के द्वारा ईश्वर की सेवा करेंगे और इसके अतिरिक्त तुम स्वर्ग की प्रसन्नताओं से अलिंगित होगे।"
—(ऋ०: 10-95-18)

"जो ज्ञान रखते हैं, वे दूसरों से पहले जीवन प्रदान करने वाली श्वास लेकर इस शरीर से निकल कर आकाश में पहुँचकर अपने समस्त साधियों

* सायण आचार्य ही से भाष्य लेकर मैक्समुलर ने सर्वप्रथम जन साधारण के लिये प्रकाशित किया था।

के साथ रहते हैं। जिन मार्गों से देवताओं ने यात्रा की थी, उनसे गुजरते हुए स्वर्ग पहुंच जाते हैं।”
—(अर्थव : 2-3 4-5)

“पवित्र करने वाले के द्वारा पवित्र होकर ऐसे शरीर के साथ जिसमें अस्थियां न होंगी, वे प्रतापवान और प्रज्वलित होकर उजालों के संसार में पहुंचते हैं। उनके उल्लिखित शरीरों को आग नहीं जलाती है। स्वर्ग लोक में उनके लिये बड़ा आनन्द है।”
—(अर्थव : 4-3 4-2)

“शहद के किनारों और मखबन से बनी नहरें जो मदिरा, दूध, दही और पानी से भरी होंगी, वेहद मिठास उनसे अबली पड़ती होंगी। यह झरने स्वर्ग लोक में तुझ तक पहुंचेंगे। कंवल के फूलों से भरी हुई पूरी-पूरी झीलें तेरे पास आयेंगी।”
—(अर्थव : 4-3 4-6)

यह थे स्वर्ग के पुरस्कारों के विषय में वेदों में किये गये कुछ वादे और अब नरक का वर्णन देखें।

दोजख (नरक) का वर्णन :

वेद से पहले श्रीमद भागवत् पुराण के चार इलोकों का अनुवाद देखिये। यहां भी नरक का विस्तृत वर्णन है, जो कुरुआन की वर्णन शैली से बहुत मिलता जुलता है:

“वहां उसके शरीरों को धघकती हुई लकड़ियों आदि के बीच में डालकर जलाया जाता है, कहीं स्वयं और कहीं दूसरों के द्वारा काट-काट कर उसे अपना ही मांस खिलाया जाता है।”
—(भागवतः 3-3 0-2 5)

“यमपुरी (मौत की दुनिया) के कुत्तों अथवा गिर्दों द्वारा जीते जी उसकी आंतें खींची जाती हैं, सांप, बिछू और डांस आदि उसने वाले तथा डंक मारने वाले जीवों से शरीर को पीड़ा पहुंचायी जाती है।” — (भागवत 3-3 0-2 6)

“शरीर को काट कर टुकड़े-टुकड़े किये जाते हैं, उसे हाथियों से चिरवाया जाता है, पर्वत-शिखरों से गिराया जाता है अथवा जल या गढ़ में डालकर बन्द किया जाता है। यह सब यातनाएं तथा इसी पकार तमिच, अन्य तमिच एवं रौरव आदि नरकों की और भी अनेकों यन्त्रणाएं स्त्री हो या पुरुष, उस जीव को पारस्परिक संसर्ग से होने वाले पाप के कारण भोगनी ही पड़ती है।”
— (भागवत 3-3 0-2 7, 2 8)

और अब क्रांत्वेद से एक दृष्टात

“जो पापी हैं, उनके लिये यह अथाह गहराई वाला स्थान अस्तित्व में आया है।”
—(ऋ० : 4-5-5)

इस मन्त्र की व्याख्यातक टिप्पणी में वेदों के अंग्रेजी अनुवादक ‘गिरिफिथ’ ने लिखा है कि सायणाचार्य के अनुसार यह स्थान ‘नरक’ है।

आखिरत, जन्मत और दोजख की ऊपर दर्ज की गयी मिसालों को देखें और स्वयं फैसला करें कि कुरुआन व हडीसों में वर्णित इस्लामी मान्यताओं से यह कितनी समानता रखती है। अज्ञात काल पुराने वेदों में यह सूचनाएं जो इनके हजारों साल बाद इससे मिलती जुलती शैली में कुरुआन में वर्णित होना थी, क्या यह सिद्ध नहीं करती कि वेदों में आस्मानी कलाम मौजूद है? शाब्दिक और अर्थ सम्बन्धी क्षेपकों से गुजरते हुए, अज्ञात समय की धूल में खोए हुए इन ग्रन्थों को अगर उम्मत के कुछ विद्वान अल्लाह की अनित्त और शुद्ध किताब ‘कुरुआन’ की रौशनी में शुद्ध करें और उनमें से कुरुआन की सहायता से उन हिस्सों को स्पष्ट कर दें जो इस्लाम धर्म की शिक्षाएं हैं और फिर हिन्दू कौम को इन किताबों की ज्योति में तैहीद, रिसालत और आखिरत का निमन्त्रण दिया जाये तो क्या हिन्दुओं को उनके मूल धर्म अर्थात् सनातन धर्म की तरफ बुलाना आसान न होगा?

उपर्युक्त इलोकों और मन्त्रों के अनुवादों को देखिये। कहीं भी बार-बार विभिन्न शरीरों या योनियों में जन्म लेते रहने का जिक्र मिलता है? ऐसा नहीं है कि हमने आपके सामने केवल उन मन्त्रों का अनुवाद प्रस्तुत कर दिया हो जिनमें परलोक और स्वर्ग व नरक का यथार्थ वित्रण विद्यमान है, बल्कि वेदों के किसी भाग में भी आवागमन की चर्चा नहीं है। यह सब मानव मस्तिष्क की उपज है, जैसा कि पिछले पृष्ठों में हिन्दू अनुसंधानकर्ताओं के वक्तव्य भी सिद्ध करते हैं।

उपर्युक्त वेद मन्त्रों के अनुवाद हमने सनातन धर्मी, आर्य समाजी और गिरिफिथ के अंग्रेजी अनुवादों को सामने रखकर किये हैं। और अब देखें पंडित दुर्गा शंकर-सत्यार्थी के कुछ अनुवाद जो उन्होंने परलोक से सम्बन्धित अपने लेख में दिये हैं जो हिन्दी पत्रिका ‘कान्ति’ 8 जुलाई 1969 के अंक में प्रकाशित हुए हैं:

“वह वज्र देने वाला है, दस्युओं (शैतान) को मारने वाला, हजारों भयंकर, उग्र (मनुष्यों) को चेतना देने वाला और सैकड़ों पर कृपा करने वाला है। चंवर (छत्र) वाला है, शवों को पांच जन्म देने वाला नहीं है। हे हिन्दुओ! तुम सब विजलियों के स्वामी के होओ।”
—(ऋ० 1-100-12)

“पुनः पुनः उत्पन्न होने का वर्णन ससान शुम्म (शैतान) जैसा प्राचीन

काल (के लोगों के द्वारा) किया जाता (रहा) है। तब पापियों के समान उस प्रकार मानने वालों को विजित करो। मरने वालों की देवी आयु को जलाती है (अर्थात् जलदी करो, जीवन की अवधि समाप्त होती जा रही है) 10

— (ऋ० : 1-9-2-10)

“वे अन्तिम दिन का विस्मरण कर विद्या एवं बुद्धि का तिरस्कार कर हमारी निश्चित की हुई सीमा को पकड़ रहे हैं (अर्थात् फलांग रहे हैं) 11

— (ऋ० : 1-4-3)

“अपने दिल के लिये मधुर जिह्वा प्राप्त कर लोग अपनी शंकाओं की गणना करते हैं (अर्थात् आध्यात्म प्राप्त करके अपने पापों का हिसाब किताब करते हैं), देवों को नमस्कार करने वाले लोगों से कहो : तुम्हें फिर से स्थायी आयु एवं सदा का जीवन प्राप्त होना निश्चित है।” 12 — (ऋ० : 1-4-4-6)

पंडित दुर्गा शंकर सत्यार्थी ने अपने लेख में ऊपर नकल किये हुए मन्त्रों* के अतिरिक्त और बहुत से वेद मन्त्रों का उदाहरण देकर बहुत तर्कपूर्ण शैली में यह सिद्ध किया है कि वेदों में आख्यरत (परलोकवाद) का मत बिल्कुल कुरआनी धर्म-सिद्धान्त की तरह है, जिसमें अन्तिम दिन में पुरस्कार व व्यड के दूसरे स्थायी जीवन की चर्चा है। आवागवन का उल्लेख ही नहीं, बल्कि इसका खण्डन भी है और ऐसी आस्था रखने वालों को परास्त करने का आदेश है।

यहाँ एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि ऊपर लिखे मन्त्र जिनको हमने पंडित दुर्गा शंकर सत्यार्थी के हवाले से नकल किया है, उन्हें हमने दूसरे अनुवादों में देखना चाहा तो पता चला कि सारे अनुवादकों ने बिल्कुल एक दूसरे से भिन्न अनुवाद किये हैं, जिनके अभिप्राय तनिक भी आपस में मेल नहीं खाते। यह है अर्थ सम्बंधी क्षेपकों का एक और प्रमाणित उदाहरण।

जब—जब अनुवादकों ने ‘आकाशवाणी’ की वास्तविकता से हटना चाहा और परलोक के सही धर्मविश्वास को छिपाना चाहा तो उनमें आपस में भी सहमति न रही और उन सभी ने अपनी—अपनी पसन्द की व्याख्याएं कर ली।

आवागमन की यथार्थता :

हमें बहुत से पत्र प्राप्त हुए हैं, जिनमें यह इच्छा व्यक्त की गयी है कि हिन्दुओं नोटः उक्त मन्त्रों के अनुवाद में कोष्टक के शब्द लेखक के अपने हैं।

* पंडित जी के अनुवाद किये हुए मन्त्रों की जब हम ने अन्य विद्वानों के अनुवादों से तुलना की तो इन मन्त्रों का यह अनुवाद कहीं नहीं मिला, लेकिन इन मन्त्रों में सत्स्कृत के जो शब्द प्रयुक्त हुए हैं, उन में इस अनुवाद की गुन्जाइश मालूम होती है।

के आवागमन के अकीदे (प्रचलित मत) पर प्रकाश डाला जाये। वेदों और हिन्दू अनुसंधानकर्ताओं के जो उदाहरण हमने प्रस्तुत किये हैं, उन से यह तो बिल्कुल स्पष्ट है कि मूल हिन्दू धर्म में वर्तमान जीवन के बाद दूसरे अनन्तकालीन जीवन ही की धारणा थी, लेकिन फिर भी प्रत्येक मनवाङ्नत कहानी, देवमाला और असत्य काल्पनिक मत की कोई बुनियाद होती है। हमारी रिसर्च के अनुसार आवागवन का मत भी आधारहीन नहीं है, बल्कि ‘मुताशाशिहात’ (अलंकृत शैली) की भाषा में वर्णित कुछ वास्तविकताओं को समय से पहले समझने के प्रयास में वास्तविक अभिप्राय कही गुम हो गया और इस आवागवन की रोचक कहानी ने जन्म लिया। इस पहलू का विस्तृत वर्णन न करते हुए भी कुछ सीमा तक स्पष्टीकरण इसलिये आवश्यक है कि ‘असत्य’ को समझे बिना उस पर भरपूर प्रहार नहीं हो सकता। इस उपादेयता को दृष्टिगत करते हुए हम इन वास्तविकताओं में से केवल दो का ही लगभग मोहकमात (सरल ज्ञान) की भाषा में वर्णन कर रहे हैं जिन को न समझने के कारण आवागवन का तथाकथित धर्म विश्वास अस्तित्व में आया।

मानव शरीर में करोड़ों अरबों जीवित प्राणी मौजूद हैं। हमारे शरीर में जो रक्त प्रवाहित हो रहा है, वह भी असंख्य लाल और सफेद कणों पर आधारित है। जो खाद्य-पदार्थ हम सद्बिन्यों या मास के रूप में लेते हैं, उसमें लाखों जीवाणु होते हैं। इनकी बड़ी संख्या पकाने के बाद भी भोजन में जीवित रहती है। दूध, अण्डा, शहद या दूसरे खाद्य पदार्थों की भी यही स्थिति है। जो पानी हम पीते हैं, उसके माध्यम से भी हम प्रतिदिन लाखों करोड़ों जीवों को अपने शरीर में प्रविष्ट करते हैं। यह समस्त आहार मानव शरीर के कारखाने में दाखिल होकर विभिन्न प्रक्रियाओं से गुजरता हुआ रक्त बनता है या मल, मूत्र, आसू, पसीना इत्यादि के रूप में याहर निकल जाता है। पुरुष की पीठ में जो जीव-कण इकट्ठा होते हैं, उनमें से कोई ऐसा भी होता है जो स्त्री की देह में दाखिल होकर, परवरिश पाकर एक नये मानव का रूप धारण करता है। जो कण हमारे आसुओं, या मल-मूत्र आदि के रूप में शरीर से विसर्जित होते हैं, वे कहीं खाद में शामिल होकर विभिन्न पेड़ पौधों के शरीर में पहुँच जाते हैं, जहाँ से कहीं वे चौपायों के भोजन के रूप में उनके पेट में पहुँचते हैं। इनमें ऐसे जीव-कण भी होते हैं जो चौपायों के बच्चों के रूप में प्रकट होते हैं। किर उन पशुओं के द्वारा विसर्जित पदार्थों के रूप में भी यह जीव-कण विखर जाते हैं। कहीं चीटियों, मकिखयों, कीड़ों मकोड़ों के आहार के रूप में उनके शरीर में प्रविष्ट होते हैं। बहुत से मासाहारी जानवर दूसरे जानवरों को खाते हैं। मिसाल के तौर पर दरिन्दे जब चौपायों को खाते हैं तो यह कण उनके शरीर में स्थानान्तरित होते हैं। कुछ उनके बच्चों के रूप में खारिज होते हैं और कुछ मल-मूत्र के साथ विसर्जित होकर मिट्टी में मिलकर किर पेड़ पौधों

में पहुंचते हैं। उनके द्वारा फिर किसी और जगह किसी और मनुष्य के भोजन के रूप में उसके शरीर में स्थानान्तरित होते हैं। इस प्रकार यह एक असीमित और अन्तहीन जीवन का चक्र है जो महाप्रलय तक जारी रहेगा। जीव-कण विभिन्न रूपों, शरीरों से गुज़रते और यात्रा करते रहते हैं और यात्रा की हर अवस्था पर लाखों कणों में से केवल एक किसी मनुष्य, पशु या पेड़-पौधे के शरीर से गुज़रते हुए किसी और शरीर की ओर स्थानान्तरित होने की अपनी प्रक्रिया जारी रखते हैं, जब तक कि उनकी मंजिल न आ जाये। यूँ समझिये कि पुरुष की पीठ से केवल एक जीव-कण स्त्री के गर्भाशय में दाखिल होकर बच्चे के रूप में प्रकट हुआ। यह कण अपनी मंजिल को पहुंच चुका, लेकिन इसी मनुष्य के शरीर से निष्कासित होने वाले अन्य लाखों करोड़ों जीव-कण विभिन्न स्थानों पर विभिन्न रूपों में दृष्टिगोचर होते हैं। इनके फोकस के द्वारा मिट्टी में मिलकर एक पेड़ में बहुत से कण पहुंचे। अब इनमें से केवल एक की मंजिल आयी जो उस पौधे के रूप में प्रकट हुआ। अन्य सभी कण जो उस पौधे की पत्तियों और नाड़ियों में विभिन्न रूपों में विद्यमान हैं, उनकी मंजिल अभी नहीं आयी। मान लीजिये वह किसी बकरे का भोजन बनते हैं। अब बकरे के शरीर में प्रविष्ट होने वाले जीव-कणों में से केवल एक की ही मंजिल आयी जो किसी बकरी के शरीर में जाकर उसके बच्चे के रूप में प्रकट हुआ। शेष कण बकरे को खाने वाले किसी और जीव के शरीर में दाखिल हुए। यहाँ भी केवल एक की मंजिल आयी, बाकी फिर कहीं और स्थानान्तरित हुए। बकरी का दूध पीने वाले इसानों के शरीर में प्रवेश पाने वाले जीव-कणों में से कुछ की मंजिल आयी और अन्य कहीं उन इन्सानों के मल मूत्र के रूप में स्थानान्तरित हो गये। इस तरह यह क्रम चलता रहता है। यह है आवागमन की एक हकीकत जैसे हम किसी जगह यात्रा करने के लिये भांति-भांति की सवारियां बदलते हैं—ट्रेन, टैक्सी और रिक्षा से गुज़रते हुए अपनी मंजिल पर पहुंचते हैं और इन सवारियों में से कोई भी हमारी मंजिल नहीं होती। इसी प्रकार विभिन्न जीव-कण विभिन्न सवारियों (प्राणियों) में से गुज़रते हुए अपने अन्तिम गन्तव्य पर पहुंचते हैं। पिछले सब पड़ाव उनके बाहर थे। जीव-कणों का विभिन्न प्रकार के पौधों, पशु-पक्षियों और मानवदेह के रूप में प्रकट होना या उनके शरीरों से गुज़रना ही 'आवागमन' है। कोई जीव-कण लाखों शरीरों से गुज़र कर अपनी मंजिल पाकर किसी रूप में प्रकट हो जाता है और न जाने कितनों ने आज तक अपनी मंजिल ही नहीं पायी।

कुदरत की कारीगरी पर जितना बारीकी से चिन्तन करें, अकल की हैरानी बढ़ती जाती है और कुरआनी चेतावनियों का स्वर कानों में गूंजता है “क्या तुम फिर गौर नहीं करते?” “क्या फिर तुम चिंतन नहीं करते?” “क्या फिर तुम दूरदर्शिता से नहीं सोचते?” “क्या फिर तुम अल्लाह को याद नहीं करते?” “क्या फिर

तुम मन की आंख नहीं रखते?...” “क्या फिर तुम विवेक नहीं रखते?”

जब सृष्टि के कुशल प्रबन्धक की तत्त्वदर्शितापूर्ण व्यवस्था के अनुरूप एक मनुष्य के रूप में एक जीव-कण ने अपनी मंजिल प्राप्त कर ली तो उसकी यात्रा समाप्त हुई। अब इस मनुष्य को अपने मालिक के बताये हुए रास्ते पर जीवन बिताना है। उसकी मौत के बाद आने वाले दूसरे जीवन में स्थायी पुरस्कार व दण्ड स्वरूप उस को किसी और प्राणी के रूप में ‘इस संसार में’ जन्म नहीं लेना है। हाँ, मनुष्य के शरीर से जो दूसरे जीवधारी गुज़रे हैं और जिनकी यात्रा अभी समाप्त नहीं हुई है, वे अपने पड़ाव की ओर अग्रसर हैं। इसकी मिसाल को रसूल मकबूल (सर्वप्रिय, चयनित ईशदूत) सल्लूल की निम्नलिखित हडीस से समझें:

“ह० अबू हुरैरा रजि० कहते हैं कि रसूले करीम सल्लूल ने फ़रमाया— मुझको एक के बाद दूसरे हर काल के आदम की सन्तान के सर्वश्रेष्ठ वर्गों में हस्तान्तरित किया जाता रहा, यहाँ तक कि मैं इस वर्तमान काल में पैदा किया गया।”¹³

अर्थात् हुज़ूर नबी करीब सल्लूल के पवित्र जीवन का ज्योतिर्मय जीव-कण (नूरानीजरा) ह० आदम अलै० से लेकर आप (सल्लूल) के शुभ जन्म तक हर युग के श्रेष्ठतम मानव शरीरों से गुज़रता हुआ अन्ततः आप (सल्लूल) के पवित्र शरीर के रूप में प्रकट हुआ।

‘जीव-कण’ हमारा अपना तय किया हुआ पारिभाषिक शब्द है। इसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है, लेकिन यह ध्यान रखिये कि विज्ञान का ‘विकास का सिद्धान्त’ और ‘उत्पत्ति सम्बन्धी सिद्धान्त’ दोनों अभी अपूर्ण हैं और स्वयं विज्ञान इनके मात्र दृष्टिकोण होने या अपूर्ण सिद्धान्त होने को स्वीकार करता है। पिछले पुष्टों ने हमने जो कुछ वर्णन किया है वह निम्नलिखित हडीसों पर आधारित है

“इन्हे जब्बास रजि० से रिवायत है कि मकामे नोमान में अरफ़े के दिन आत्माओं से संकल्प लिया गया था और आदम अलै० की सुलब (पौठ) से निकाल कर कणों की तरह फैला दिया गया था और उन से यूँ गुफतुगू हुई थी— बताओ क्या मैं तुम्हारा रब नहीं? सब आत्माएं कहने लगीं—क्यों नहीं अवश्य।”¹⁴

“ह० अत्तार रजि० फ़रमाते हैं—मीसाक (संकल्प) के समय आत्माये ह० आदम अलै० की पीठ से निकाली गयी थीं, फिर पीठ में लौट दी गयी। जिहाक रह० फ़रमाते हैं कि अल्लाह ने जिस दिन ह० आदम अलै० को पैदा किया,

उसी दिन उनकी पीठ से प्रलय तक की दुनिया में आने वाली सब आलाएं च्यूटियों की तरह निकाल कर उनसे अपने ईश्वरत्व की स्वीकृति ले ली थी और फ़रिश्ते गवाह बन गये थे।¹⁵

उपर लिखित हडीस विभिन्न शैलियों में विभिन्न सनदों के साथ बयान हुई है। इन हडीसों से ज्ञात होता है कि प्रलय तक आने वाले समस्त मानव जीवन बारीक कीड़ों के रूप में ह० आदम अलै० की पीठ में विद्यमान थे, जिसे इन हडीसों में कणों की तरह या च्यूटियों के समान जैसे शब्दों में समझाया गया है। इसी का नाम हम ने अपनी पारिभाषिक शब्दावली में 'जीव-कर्ण' रखा है। इन जीव-कर्णों के विभिन्न वर्गों से गुज़रने का जिक्र जिस हडीस में आया है, वह पहले नक्ल की जा चुकी है।

इस हडीस में 'आदम अलै० की सन्तान' के शब्दों का प्रयोग होने से यह समझ में आता है कि रसूलुल्लाह सल्ल० को आदम अलै० की सन्तान के सर्वश्रेष्ठ वर्गों में हस्तान्तरित किया जाता रहा, लेकिन यहां यह संकेत मौजूद है कि अन्य मानव-जीवन आदम अलै० की सन्तान के बजाय दूसरे वर्गों में भी स्थानान्तरित होते रहे होंगे—दैसे सर्वज्ञानी तो ईश्वर ही है।

आज के वैज्ञानिक युग से पहले इस 'मु-तशाबिहात' के तत्व ज्ञान के खुलने का अजाम आवागमन के धर्म-विश्वास के रूप में प्रकट हुआ। प्रत्येक ईश्वर-प्रेषित ग्रन्थ में दो ज्ञान रखे गये थे—एक 'मोहकमात' (मन्त्र) का और दूसरा 'मु-तशाबिहात' (तन्त्र) का। दूसरा ज्ञान किसी और युग के लिये था। उस समय इसे खोलने की अनुमति नहीं थी। अन्तिम सन्देश्य ह० मोहम्मद सल्ल० के पावन शारीरिक युग के चौदह सौ वर्ष बाद, काबे की दुर्घटना के बाद दूसरा युग आरम्भ होने दाला था, जिसमें मु-तशाबिहात के ज्ञान के रहस्यों को क्रमशः खुलना था। इस दूसरे युग को हमने कैसे सुनिश्चित कर लिया, इसके सुबूत हम कुरआन और हडीस की रौशनी में किसी अन्य अवसर पर प्रस्तुत करेंगे। इस समय केवल इतना समझ लें कि मानव बुद्धि और विवेक जब तक वैज्ञानिक युग आ जाने के बाद परिपक्व नहीं हुआ, उस समय तक मु-तशाबिहात के ज्ञान को खोलने के प्रयास आवागमन के धर्म-विश्वास जैसे भटकावों के रूप में बरामद हुए। कुरआन से पूर्व विश्व के अन्य सभी धर्मों के बिंगड़ और उनकी दन्तकथाओं के पीछे यही वास्तविकता काम कर रही थी कि उनहोंने मु-तशाबिहात के ज्ञान को समय से पहले खोलने का प्रयास किया था।

आवागमन की पृष्ठभूमि में एक और तथ्य :

आवागमन के विकृत धर्म-विश्वास के पीछे जा वास्तविकताये ऐसी हुई थी और जिनको

समझ न पाने के कारण यह भ्रमात्मक विश्वास अस्तित्व में आया, उनमें से एक का विस्तार से वर्णन ऊपर किया गया। अब आवागमन का एक और रहस्यमय तथ्य देखिये और विचार कीजिये कि किस तरह साफ् सुधरी धारणाएं समझ में न आ सकने के कारण गुमराहियों में तब्दील हो जाती हैं। इस विचार के समर्थन में कुछ अवतरण समूह हम यहां प्रस्तुत कर रहे हैं:

सनातन धर्म की अलंकृत भाषा में जिसके विषय में ऋग्वेद ने हमें पहले ही सावधान किया था कि—“मैं स्तोता द्वारा वाणी को अलंकृत करता हूं।”¹⁶

“कठ मन्त्रायणी और अपिष्ठल आदि वेद की शाखाओं में एक सौ एक मृत्युओं का उल्लेख है। इनमें इन्द्रिय, वध, रोग, शोक और काम, क्रोध आदि सौ मृत्युएं हैं, इन सबका प्रतिकार (चिकित्सा) है।”¹⁷

“वेदों का अभ्यास न करने से, आचार विहीन होने से, आलस्य से, कुधान्य खाने से ब्राह्मण की मृत्यु हो जाती है।”¹⁸

“खुली हुई बात यह है कि रोग हो या पाप, अज्ञान हो या आलस्य इन से आदमी की वास्तविक मौत नहीं होती, किन्तु रोग उसके पूर्णतया स्वस्थ शरीर की ‘अलंकृत मौत’ अवश्य है तथा पाप उसके आवर्ष मानव चरित्र की ‘अलंकृत मौत’ है। अज्ञान, मान्सिक शक्ति की मौत है और आलस्य, कर्मशक्ति की; लेकिन चिकित्सा शरीर को, विशुद्ध ज्ञान मस्तिष्क को और संताप (तौबा) आत्मा को इसी लोक में पुनर्जन्म प्रदान कर सकते हैं।”¹⁹

“पाप द्वारा अन्दर ही अन्दर हमारे ही हाथों हमारी मानवता किस प्रकार बार-बार भर रही और आत्मा पशु बन रही है। एक आदमी जैसे ही लालच और जाति के पति युद्धों का अपराध करता है, खुदा की नजर में यह पाप उसकी आत्मा को कुत्ते का कुर्जप दे देता है। जीते जी, इसी लोक में क्योंकि कुत्ता उन दुर्गुणों का प्रतीक है, अश्लील कामवासना जैसे आत्मा को उस जुर्म के प्रतीक सुअर जैसा बना देती है, मूर्खता गधे जैसा, दानवता सर्प जैसा, हिंसक प्रवृत्ति बिच्छू जैसा आदि—आदि, किन्तु यह आत्मा का योनि परिवर्तन ब्रह्मान, (रहमत वाले रहमान) की ओर से सज्जा, वास्तविक दण्ड नहीं होता, वह तो परलोक में पापियों पर पूरी तरह जुर्म सिद्ध करके ही देगा।”²⁰

यह थी आवागमन की पृष्ठभूमि में एक और वास्तविकता। वेदों में तो साफ्-साफ् केवल एक बार दूसरे स्थायी जीवन का ही वर्णन है, जैसा कि हम पिछले पृष्ठों में हिन्दू अनुसधानकर्ताओं और वेदों के दृष्ट्यान्त प्रस्तुत करके बता चुके हैं, लेकिन वेदों की

कुछ शाखाओं में सैकड़ों मौतों का उल्लेख मिलता है। इस संसार के इसी शरीर में बार-बार आध्यात्मिक रूप से मरकर विभिन्न पशु प्रकृतियों का अपनाना मानो वैसा ही पशु बन जाने के तुल्य है, यह वास्तविकता न समझने के कारण इसी संसार में बार-बार शारीरिक मृत्यु को प्राप्त होकर तरह-तरह के जानवरों का रूप धारण करने की धारणा 'आवागमन' बन गयी।

यह एक उदाहरण है कि किस प्रकार मूल ग्रन्थों की वास्तविक शिक्षाओं की ओर ध्यान आकर्षित कराके बिंगड़ी हुई और भटकाने वाली धर्मनिष्ठाओं में विश्वास रखने वालों को साफ़ सुधरी धार्मिक निष्ठाओं पर लाया जा सकता है।

सन्दर्भ—सूची अध्याय : 11

1. 'उपनिषदों की भूमिका' — ले०: डा० राधाकृष्णन, प्र०: राजपाल एण्ड संस-देहली
 2. 'कल्यान-गोरखपुर' — परलोक एवं पुनर्जन्म अंक, जनवरी 1969, पृ०: 164
 3. — — उपरोक्त — — पृ०: 165
 4. — — उपरोक्त — — पृ०: 165
 5. 'दर्शन-दिग्दर्शन', पृ०: 403
 6. 'पुनर्जन्म और वेद' सं०: वेद और पुनर्जीवन, ले०: प० दुर्गाशंकर सत्यार्थी, प्र०: हिन्दी पत्रिका 'कान्ति', 8 जुलाई 1969
 7. 'आवागमन' सं०: उपरोक्त
 8. प० दुर्गाशंकर सत्यार्थी—सं०: उपरोक्त
 9. हिन्दी पत्रिका 'कान्ति', 8 जुलाई 1969
 10. — — उपरोक्त — —
 11. — — उपरोक्त — —
 12. — — उपरोक्त — —
 13. 'बुखारी' सं०: मिशकात, अ०: सच्चिदुल मुरसलीन सल्ल०
 14. 'तफसीर इब्नेकसीर' — उर्दू अनुवाद, सं०: 2 प्र०: एतेकाद पब्लिशिंग हाउस-देहली
 15. 'रह्में से मिलिये-खावों को समझिये—पृ०: 253, अनु०: किताबुरुह, ले०: अल्लामा हाफिज़ इब्ने कृथियम रह०, अनुवादक: मी० रामेश रहमानी, प्र०: मकतबा अलफलाह-देवबन्द
 16. हिन्दी पत्रिका—मार्गदीप, अप्रैल 1977, पृ०: 8
 17. 'कल्यान'-गोरखपुर, परलोक पुनर्जन्म अंक, जनवरी 1969, पृ०: 16
 18. तन्त्र महाविज्ञान I, ले०: प० श्रीराम शर्मा आचार्य, पृ०: 98
 19. हिन्दी पत्रिका मार्ग—दीप, अप्रैल 1977, पृ०: 8
 20. — — उपरोक्त — — पृ०: 10-11
- ❖❖❖-----

अध्याय : 12

वैदों की कुछ अन्य शिक्षाएं

जुए का निषेध :

"जुआ खेलनेवाले व्यक्ति की सास उससे घृणा करती है और उसकी भली भी उसे छोड़ देती है, जुआरी को कोई एक फूटी कौड़ी भी उधार नहीं देता।"

—(ऋ०: 10-34-3)

इसके बाद निरन्तर तीसरे मन्त्र से तेरहवें मन्त्र तक जुए की व्यक्तिगती और सामाजिक हानियों को गिनाकर तेरहवें मन्त्र में कहा गया :

"हे जुआरी! जुआ खेलना छोड़कर खेती कर, उसमें जो लाभ हो उसी में सन्तुष्ट रह।"

—(ऋ०: 10-34-13)

मद्य निषेध :

"शराब पीने के बाद उसका नशा शराब पीने वाले के हृदय में अपनी जगह बनाने के लिये संघर्ष करता है।"

—(ऋ०: 8-2-12)

"हे ईश्वर तपस्या न करने वाले मनुष्य शराब पीकर मदहोश हो जाते हैं और वे तुम्हें कष्ट पहुंचाने की ओर आसक्त होते हैं, इसलिये तुम ऐसे लोगों को धन होने पर भी अपना सहारा नहीं देते।"

—(ऋ०: 8-21-14)

ब्याज का निषिद्ध होना :

"अधिक धन प्राप्त करने की आशा से धन उधार देने वालों के धन को (हे ईश्वर) तुम छीन लेते हो।"

—(ऋ०: 3-53-14)

विवाह संस्कारों में सरलता का आदेशः

“जिन पथों से हमारे मित्र, सम्बन्धी कन्या के पिता के पास पहुंचते हैं, उन मार्गों को कांटों से साफ़ और सरल करो।” —(ऋ०: 10-85-23)

पुरुषों को स्त्रियों के वस्त्र पहनने पर रोकः

यदि पति, पत्नी के कपड़े पहने तो उस पर जादुई शक्तियों का प्रकोप होता है।” —(ऋ०: 10-85-30)

नारी के घरेलू जीवन का आदेशः

“वहाँ तुम सबसे कुशल गृहणी बनो और पति के घर में रहते हुए घर के नौकरों पर राज करो। हे नारी! पति के घर में मां बनकर सुख पाओ, पति से प्रेम के सम्बन्ध स्थापित करो और वृद्धावस्था तक अपने घर में राज करो।” —(ऋ०: 10-85-25, 26, 27)

नारी की लज्जा के आदेशः

“चूंकि ब्रह्मा ने तुम्हें नारी बनाया है, इसलिए नज़रें नीची रखो, ऊपर नहीं, अपने पैरों को समेटे हुए रखो, ऐसा वस्त्र पहनो कि कोई तुम्हारा शरीर न देख सके।” —(ऋ०: 8-33-19)



दिव्य सन्देशः

‘और हे नबी, आस्था लाने वाली नारियों से कठ हो कि अपनी नज़रें बचा कर रखें, और अपनी लज्जा इन्द्रियों की सुरक्षा करें, और अपना बनाव-सिंघार न दिखाएं उसके अतिरिक्त जो रख्यां प्रकट हो जाए, और अपने सीनों पर अपनी ओढ़नियों के आँचल डाले रहें...’’ —(वृ०: 24-31)

अध्याय : 13

हृदीस्यैं और पुराणः भविष्यवाणियों की सम्पानता

विभिन्न पुराणों में कलियुग (वर्तमान युग) के अन्त के समीप संसार में व्याप्त दोषों का सविस्तार वर्णन है। हम निम्नलिखित में हरिवंश पुराण और विष्णु पुराण के कुछ भाग उद्धृत करके हृदीसों में वर्णित अन्तिम युग में व्याप्त परिस्थितियों की भविष्यवाणियों से इसकी तुलना कर रहे हैं।

हृदीसः

“ह० जाविर रजि० कहते हैं कि रसूले करीम सल्ल० को यह फ़रमाते सुना कि कियामत (प्रलय) आने से पूर्व झूठों की पैदाइश बढ़ जाएगी अतः उन से बचे रहना।” —(मुस्लिम)

“ह० अबू हुरैरा रजि० का कथन है आप सल्ल० ने फ़रमाया—जब अमानत (धरोहर) बरबाद की जाने लगे तो कियामत की प्रतीक्षा करना। प्रश्न हुआ कि अमानत केसे बरबाद होगी? फ़रमाया जब शासन और राज्य का काम-काज अयोग्य लोगों के सुपुर्द हो जाये तो कियामत की प्रतीक्षा करना।” —(बुखारी)

“ह० अबू हुरैरा रजि० का कथन है कि रसूले अकरम सल्ल० ने फ़रमाया जब ‘माले गनीमत’* को दौलत ठहराया जाने लगे.. जब पति, पत्नी की आज्ञाकरिता करने लगे... जब कौम व जमाअत के कर्ता-धर्ता उस कौम व जमाअत के कमीने व्यक्ति होने लगे... और जब आदमी का सम्मान उस की दुष्टता और उपद्रव के भय से किया जाने लगे।” —(तिरमिजी)

* धर्मयुद्ध के पश्चात विजयी होने वाली सेना को निलने वाली सामग्री जो शत्रु द्वारा रणभूमि में छोड़ दी जाती है।

“ह० अनस रजि० कहते हैं कि मैंने रसूले करीम सल्ल० को यह प्रमाते सुना है कि निस्संदेह महाप्रलय के लक्षणों में से यह है कि ज्ञान उठा लिया जायेगा। अज्ञानता की बहुतायत हो जायेगी। पुरुषों की संख्या कम हो जायेगी। स्त्रियों की संख्या बढ़ जायेगी। यहां तक कि पचास स्त्रियों की देखरेख करने वाला एक पुरुष होगा।”
—(बुखारी व मुस्लिम)

हरिवंश पुराण और विष्णु पुराण:

“अनावश्यक होने पर भी लोग झूठी प्रतिज्ञा करेंगे और शपथ लेंगे। कलियुग में राजा अपनी इन्द्रियों के दास बनकर प्रजारक्षण से परामुख हो जायेंगे।”

“वास्तविक क्षत्रियों का राजसिंहासन पर अधिकार नहीं रहेगा और ब्राह्मण शूद्रों की जीविका अपनायेंगे। संसार में सभी लोग चौर्य वृति का अवलम्बन करके परस्पर एक दूसरे का धन अपहरण करते हुए अल्पआयास से ही धनी बन जायेंगे। नीचे दर्ज के लोग ही नहीं, लंची श्रेणी वाले भी ऋण लेकर हड्डप कर जायेंगे। उस समय धन की पूजा होगी—सज्जन उपेक्षणीय समझे जायेंगे और पतितों की कहीं निन्दा नहीं की जायेगी।”

“उस युग के अन्त में यही दशा दिखाई पड़ेगी। ब्राह्मण धर्म को बेचने वाले हो जायेंगे, विशिष्ट—जन और पामर—जनों से लेकर साधारण लोग तक ब्रह्मवाद के बहाने कर्मशृष्ट हो जायेंगे।”

“कलियुग में ब्राह्मण तपस्या और यज्ञों के फल को बेचेंगे। महिलायें अपने सौन्दर्य को बेचने लगेंगी। पूरी पृथ्वी कुंठा नारियों से भर जायेगी। स्त्रियां धनहीन पति का त्याग करेंगी और धन को ही पति बनायेंगी। कामान्धता की यह दशा होगी कि पांच या सात वर्ष की लड़की और आठ या दस वर्ष के लड़कों के सन्तानें होने लगेंगी। शूद्रगण मद्य—माँस त्यागने का बहाना करके श्वेतदन्त और सूक्ष्मदर्शी कहलायेंगे, लेकिन वास्तव में वेदविरुद्ध आचरण करेंगे। स्त्रियों की संख्या पुरुषों से अधिक हो जायेगी।”

-----♦♦♦-----

नोट: हरिवंश पुराण और विष्णु पुराण के प्रस्तुत विष्य हमने इन दोनों पुराणों में पं०श्रीराम शर्मा द्वारा लिखित भूमिका से लिए हैं।

वैदिक धर्म में काबे की हृकृष्णत

अहमद सल्ल० की चर्चा हो, मोहम्मद सल्ल० का जिक्र हो, अन्तिम ज्ञान (कुरआन) का उल्लेख हो और काबे का जिक्र न हो, यह कैसे मुसाकिन है? हम पहले भी बता चुके हैं कि हिन्दू कौम का काबे से बहुत घिनेट सम्बन्ध है। उनकी विभिन्न परिक्रमा रूपी पूजायें इसी को दर्शाती हैं। धुंधले से संकेत बाकी रह गये हैं, वास्तविक काबे को यह भूल चुके हैं। उनके पुराने और महत्वपूर्ण मन्दिरों का काबे की दिशा में निर्मित होना (जिसकी दजह उन्हें ज्ञात नहीं है), इसका स्पष्ट प्रमाण है। वेदों और पुराणों में काबे के लिये बहुत से अलग—अलग नाम हैं।

आज भी अनेक हिन्दू विशिष्ट—जन इस तथ्य से परिचित हैं, लेकिन जनसाधारण को ज्ञान नहीं है। वेद मन्त्रों के उपलब्ध अनुवादों से वेदों में काबे के वर्णन को स्पष्ट रूप से अलग करना लगभग असम्भव है। इसके अतिरिक्त वेदों में ‘काबे की वास्तविकता’ बहुत विस्तृत और जटिल विषय है जिसके पूरे वर्णन के लिये एक अलग किताब की आवश्यकता है। बहरहाल, काबे के लिये वेदों और पुराणों में जो शब्द प्रयुक्त हुए हैं, उनका विश्लेषण हम निम्नलिखित में प्रस्तुत कर रहे हैं, जिससे कम से कम यह सिद्ध हो सके कि काबे का विवरण कई नामों से हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों में सविस्तार भौजूद है। काबे को वेदों और पुराणों में जिन नामों से सम्बोधित किया गया है वे यह हैं:

- ❖ इलास्पद
- ❖ इलायास्पद
- ❖ नाभा पृथिव्या
- ❖ नाभीकमल
- ❖ आदि पुष्कर तीर्थ
- ❖ दारु काबन
- ❖ मकत्तेश्वर

अब बताइये इलायास्पद कौन सा पवित्र स्थान है? वेदों की इस परिभाषा के बाद क्या कोई शक बाकी रह जाता है?

ऋग्वेद के ३-२९-४ मन्त्र के आगे के समस्त मन्त्रों के अनुवाद अधिक विस्तृत होने की वजह से न देते हुए हम ग्यारहवें मन्त्र को प्रस्तुत कर रहे हैं जो ह० मोहम्मद सल्ल० से सम्बन्धित है और पिछले मन्त्र में काबे के वर्णन की पुष्टि करता है।

“जब अग्नि (अहमद सल्ल०) शारीरिक रूप में प्रकट होते हैं तब वह आसुर (बाद में आने वाले) और नराशंस (मोहम्मद सल्ल०) कहलाते हैं।”

नाभि कमल :

पद्म पुराण में कहा गया है कि यह तीर्थ है जहां से सृष्टि की उत्पत्ति का आरम्भ हुआ।

कुरान शरीफ में है कि “निस्सन्देह! पहला घर जो लोगों के लिये बनाया गया – वही है जो मक्का में है...”
—(कु०: ३-९६)

सृष्टि रचना की प्रक्रिया में काबे के उदय होने के बारे में हमें हडीस से मालूम होता है :

“ह० अब्दुल्लाह बिन उमर रजि०, मुजाहिद रह०, क़तादा रह० और सदी रह० ने फरमाया कि आकाश व पृथ्वी के उत्पत्ति काल में जलस्तर से सबसे पहले काबे का स्थान दृष्टिगोचर हुआ। आरम्भ में यह सफेद झाग थे जो जम गये थे फिर इसके बाद पृथ्वी इसके नीचे से फैलाई गई।”¹

‘नाभि कमल’ की ‘नाभा पृथीव्या’ से शाब्दिक समानता पर विचार कीजिये और पद्म पुराण में दी गयी इसकी परिभाषा पर विचार कीजिये क्या यह काबे के सिवा कुछ और हो सकता है?

हरिवंश पुराण में नाभेकमल का वर्णन देखिये, यद्यपि यहां कुछ देवमालाई रंग आ गया है, लेकिन वास्तविकता को इस किस्से में से आप आसानी से निकाल सकेंगे।

“भगवान नारायण ने सृष्टि रचना के उद्देश्य से उस कमल को रचकर उसके ऊपर योगियों में श्रेष्ठ समस्त जीवों के सृष्टि, सर्वतोमुख श्री ब्रह्मा जी को विराजमान कर दिया। उसमें समस्त पार्थिव गुण पाये जाते थे। उस (ब्रह्मा जी) का सिंहासन पृथ्वी ही थी। उस (पृथ्वी) के गर्भाकुर (गर्भाशय से निकलने

यह समस्त नाम वेदों और पुराणों में ऐसे महान तीर्थ के लिये इस्तेमाल हुए हैं जिसका स्थान और अता पता ज्ञात नहीं है। जी नहीं, ऐसा नहीं है कि हजारों वर्ष प्राचीन या इतिहास पूर्व होने के कारण इसके स्थान का पता ज्ञात नहीं रहा। हिन्दू ग्रन्थों में वर्णित अन्य समस्त स्थलों और विशाल व्यक्तित्वों को अपनेपन और श्रद्धा की भावना से भारत से जोड़ लिया जाता है, चाहे उनका कोई ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध न हो।

श्रीराम और श्रीकृष्ण की कोई ऐतिहासिक सनद नहीं है। इसका कोई लिखित प्रमाण उपलब्ध नहीं है कि श्री राम का सम्बन्ध वर्तमान अयोध्या से था और श्रीकृष्ण की जन्मस्थली वर्तमान मथुरा थी लेकिन इन श्रेष्ठ पुरुषार्थों से हिन्दू जन-मानस को इतनी श्रद्धा है कि प्रमाण न होने के बावजूद अयोध्या और मथुरा को इन व्यक्तित्वों का जन्मस्थान ठहराया गया। फिर अब ऐसा क्यों है कि वेदों और पुराणों में वर्णन किये हुए महानतम तीर्थ की हिन्दुस्थान में किसी स्थान पर होने की मान्यता नहीं है। इसका स्थान अज्ञात क्यों माना जाता है? आइये इस तीर्थ के इन सब नामों पर विचार करें :

इलास्पद :

इल, ईल्य, इल, इलाया यह सभी शब्द माध्यद (पूज्य) के अर्थ में संस्कृत भाषा और वेदों में इस्तेमाल हुए हैं। इसी की चर्चा हम अध्याय ४ में कर चुके हैं। ‘स’ यहां अतिरिक्त है और ‘पद’ का अर्थ है ‘स्थान’ इस तरह इलास्पद का शाब्दिक अर्थ हुआ इलाह का स्थान। सर मोनियर विलियम की संस्कृत-इंग्लिश डिक्शनरी में इलास्पद शब्द के आगे लिखा है ‘Name of Tirth’ यानी वह एक तीर्थ का नाम है। वेदों के अंग्रेजी अनुवादक ग्रिफिथ ने इसका अनुवाद ‘Ha’s Place’ अर्थात् ‘इला का स्थान’ किया है। उन्होंने इला किसी देवता का नाम माना है।

इलायास्पद :

यह शब्द ‘इलास्पद’ का पर्यायवाची है। पंडित श्री राम शर्मा आचार्य ने वेदों के अपने हिन्दी अनुवाद में इस शब्द का अनुवाद ‘पृथ्वी का पवित्र स्थान’ किया है।

नाभा पृथिव्या :

नाभा पृथिव्या का मतलब है नाफे जमीन (पृथ्वी की नाभि) और नाफे जमीन काबे को कहा जाता है, इससे मुसलमान भली भांति परिचित हैं। निम्नलिखित वेदमन्त्र में नाभा पृथिव्या के शब्दों का प्रयोग हआ है:

“इलायास्त्वा पदे वयं नाभा पृथिव्या अधि”

“हमारा इला का स्थान नाफे जमीन (पृथ्वी की नाभि) पर है।”

वाली कोंपलें) पर्वतों के रूप में परिणित हुए... इन पर्वतों का मध्यवर्ती स्थल ही जम्बूद्वीप* के नाम से प्रसिद्ध है, यह द्वीप यज्ञों का स्थल और कर्मभूमि है। उसी नामि कमल के जो केसर (पंखुड़ियाँ) हैं, वे ही पृथ्वी के भीतर वाले धातु पर्वतों के रूप में समझना चाहिये... अत्यन्त दुर्गम स्थल है, जो म्लेच्छों (गैर आर्य जातियों) के दलों से व्याप्त हैं। कमल के नीचे शैतानों के लिये पाताल है। इसके भी नीचे उदक नाम का स्थान है जिसे नरक कहा गया है। नाभिकमल के चारों तरफ जो केसर थे उसी को एकता का केन्द्र कहा जाता है और उसके चारों ओर पाई जाने वाली जलराशि (जमजम) को चार समुद्र कहा गया है... तत्पञ्चन से सम्पन्न प्राचीन महर्षियों ने भगवान नारायण के महापुष्कर प्रादुर्भाव का वृतांत इसी प्रकार बतलाया है। उनका यह नामि कमल ही संसार की उत्पत्ति का मूल होता है। उन भगवान के इसी नामि कमल ह्वारा पर्वत, नदी और जगत के विभिन्न प्रदेशों का आविर्भाव हआ था।”²

आदि पृष्ठकर तीर्थ :

इसका शाब्दिक अर्थ है—‘पालन पोषण करने वाले का प्राचीनतम तीर्थ।’ यह भी पदमपुराण में नाभिकमल के लिये इस्तेमाल हआ है।

“जो मन से भी पुष्कर तीर्थ के सेवन की इच्छा करता है, उस मनस्वी के सारे पाप नष्ट हो जाते हैं... जो पुष्कर तीर्थ की यात्रा करता है, वह अक्षय फल का भागी होता है... ऐसा मैंने सुना है... सब तीर्थों में पुष्कर ही आदि तीर्थ बताया गया है... ज्येष्ठ पुष्कर में जाकर स्नान करने से मोक्ष का भागी होता है” ३

जहाँ स्नान करने का वृत्तात आया है, वह 'आवे जमज़म' का प्रसंग तालूम होता है। इससे पूर्व पृष्ठ 95 पर कहा गया है कि ''यह ऋषियों का परम गोपनीय सिद्धान्त है।''

दारु काषन :

संस्कृत में 'दार' का अर्थ है पल्ला, और इसके गल को कहते हैं। आईडि... मे
यूहन्ना के प्रकारित वाक्य के । २ वे अध्याय में काबे दगे स्त्री कहा गया है और मक्के
को कुरआन में 'उम्मलकुरा' (वस्तियों की मा) कहा गया है... अरब को नगल कहा
जाता है। इस जटिल व्याख्या को छोड़ते हए कि किस १३ चालु काश्वर का अर्थ

* जम्बूद्वीप = ज + अजम्बूद्वीप (जीवन + जल + द्वीप) अर्थात् ऐसा जल से जीवन का आरम्भ हुआ अर्थात् 'काव्य'

नोट कोष्टक के शब्द लेखक के अपने हैं।

काबा होता है, आप प्रत्यक्ष रूप से दारु काबन का डिवशनरी में अर्थ देखें। नालन्दा विशाल शब्द सागर में इस शब्द के आगे जो माने लिखे हैं वह यह है :

“एक वन का नाम जिसे तीर्थ समझा जाता है।”

इस शब्द का जिस वेदमन्त्र में प्रयोग हुआ है, उसका अनुवाद देख लीजिए :

“हे उपासक! दूर देश में समुद्र तट पर जो दारु काबन है, वह किसी मनुष्य से निर्मित नहीं है। इसमें आराधना करके उनकी कृपा से बैकुण्ठ को प्राप्त हो।”

-(~~MS~~ : 10-155-3)

उक्त वेदमन्त्र स्वयं बता रहा है कि दारू-काबुन कहा है?

मकानेश्वर :

मरके के इस तीर्थ को दारू कहकर इसके विषय में लिखा है कि यह तीर्थ इस देश में नहीं है।⁴

सर मनेन्यर विलियम्स की संस्कृत-इंग्लिश डिक्षानरी से एक शब्द का अर्थ देख लेना पर्याप्त होगा।

मध्य 'The City of Mecca,' Yagya अर्थात् मक्का शहर, यज्ञ की जगह।

मक्तेश्वर का अर्थ हुआ ... ईश्वर का मक्का या ईश्वर के लिये यज्ञ का स्थान।'

यह कुछ भिसाले थीं जिनका हमने संक्षेप में वर्णन किया। इनके अतिरिक्त भी विभिन्न स्थानों पर काबे के लिये अलग—अलग नाम आते हैं जैसे सीता, मन्दार—वृक्ष और जम्बू-द्वीप इत्यादि।

सन्दर्भ-संची अध्याय : 14

- मारफते काबा, पृ० : 5, लें० : रहबर फारुकी, सं० : तफसीर-मवाहिदुर्रहमान, लें० : मौ० अनीर अली, खं० : 4, पृ० : 15
 - हरिवंश पुराण, भाग : 2, पं० श्रीराम शर्मा आचार्य, पृ० : 499-501
 - 'कल्याण' - गोरखपुर पदम पुराण नम्बर, अक्टूबर 1944, प० : 96
 - 'कल्याण' जनवरी 1980, प० : 225



“शुद्धता एवं पवित्रता ‘ईमान’ का आधा हिस्सा है।” (मस्तिष्म)

वेदों में हृजरत मोहम्मद सल्ल० का मक़ामे महमूद (परम पद)

ऑहजरत सल्ल० का आस्मानी नाम 'अहमद' और धरती का नाम 'मोहम्मद' है। सांसरिक युग के बाद आप (सल्ल०) को परम पद पर आसीन किया गया है जिसकी हम सभी अजान के बाद दुआ करते हैं। वेदों में आप (सल्ल०) के तीनों पदों का उल्लेख है:

"जिस अग्नि का व्यापक रूप (बिना शरीर की आत्मा) कभी नष्ट नहीं होता उसे (बिना शरीर की आत्मा) तनूनपात कहते हैं (यह अहमदी पदवी का उल्लेख है) जब वह साक्षात् (शारीरधारी) होते हैं, तब आसुर (सबसे बाद में आने वाला) और नराशांस (मोहम्मद सल्ल०) कहलाते हैं और अन्तरिक्ष में अपने तेज को फैलाते हैं, तब 'मातरिश्वा' होते हैं। जब वह प्रकट होते हैं, तब वायु के समान (आत्मिक) होते हैं।"

- (ऋ० 3-29-11)

ऊपर वाले मन्त्र में मात्रिश्वा आप (सल्ल०) के तीसरे पद का नाम है और स्पष्ट है कि यह 'परमपद' है। वेदों के अगेजी अनुवादक गिरिफ़िथ ने लिखा है कि यह सबसे रहस्यमय शब्द है। एक ही मन्त्र में इन तीनों पदों के एक साथ वर्णन के दो उदाहरण और देखिये:

नोट उपरोक्त वेद मन्त्रों के अनुवाद में कोष्ठक के भीतर के शब्द लेखक के अपने हैं।

"अग्नि का प्रथम जन्म स्वर्गलोक में विद्युत (नूर) के रूप में हुआ। उनका द्वितीय जन्म हम मनुष्यों के मध्य हुआ, तब वे जातवेद (अर्थात् जन्म से विद्वान्-ज्ञानी 'उम्मी') कहलाए। उनका तृतीय जन्म जल में (वेदों में जल आत्मवाद का लक्षण है) हुआ। मनुष्यों का हित करने वाले अग्नि सदा प्रज्जवलित होते हैं। उनकी स्तुति (नअत) करने वाले उनकी ही सेवा करते हैं।"

- (ऋ० 10-45-1)

"हे अग्नि! हम तुम्हारे तीनों रूपों के ज्ञाता हैं। जहां-जहां तुम्हारा निवास है, उन स्थानों को भी हम जानते हैं। हम तुम्हारे निगूढ़ (अत्यन्त गोपनीय) नाम और तुम्हारे उत्पन्न होने के स्थान को भी जानने वाले हैं। तुम जहां से आते हो यह भी हम जानते हैं।"

- (ऋ० 10-45-2)

-----❖❖❖-----

मुक्ति का मार्ग

आ वृत्तियत के परदे इक बार फिर उठा दें
विछड़ों को फिर भिला दें नक़शे दूर्झ भिटा दें
सूनी पड़ी हुई है मुद्रदत से दिल की वरती
आ इक नया शिवाला इस देश में बनादें
दुनिया के तीरथों से ऊंचा हो अपना तीरथ
दामाने आसमां से इस का कलस मिलादें
हर सुल्ह उठ के गाएं मंत्र वह मीठे मीठे
सारे पुजारियों को 'मैं धीत की पिलादें
शतित भी शांति भी भत्तों के गीत में हैं
धरती के वासियों की मुक्ति प्रीत में है

— शिवाला

बौद्धिक धर्म में काना दज्जाल (अन्धकृ-आसुर)

दज्जाल का प्रकट होना क्यामत (महाप्रलय) की निशानियों में से एक है। विभिन्न हीरों से यह ज्ञात होता है कि शैतान (दानव), मानव देह में दज्जाल (महारावण) बन कर निकलेगा। वह बेपनाह शक्तियों का मालिक होगा और कोई उसके मुकाबले पर टिक नहीं सकेगा। वह समस्त पृथ्वीपटल को विजित करता चला जायेगा और अपने आपको 'खुदा' कहलायेगा। जो लोग उससे अपने ईमान की रक्षा कर सकेंगे, उन्हे स्वर्ग का शुभ समाचार दिया गया है। फिर ह० इसा अलै० प्रगट होंगे और ह० मेहदी अलै० से फैज़ान (आध्यात्मिक लाभ) प्राप्त करके दज्जाल का वध करेंगे। रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया कि हर नबी ने अपनी उम्मत को दज्जाल के फ़ितने (उपद्रव) से डराया है। यह संसार का सबसे बड़ा उपद्रव होगा, लेकिन आप (सल्ल०) के फरमाने के मुताबिक् आप (सल्ल०) से पहले किसी नबी ने यह सूचना नहीं दी कि दज्जाल 'काना' होगा। आप (सल्ल०) ने यह भी फरमाया कि दज्जाल, मदीने और मक्के में प्रवेश पाने में सक्षम नहीं होगा। दज्जाल का स्पष्ट वर्णन बाइबिल में भी है। वहाँ उसे जानवर (Beast) और झूठा नबी (False Prophet) और मसीह का विरोधी (Anti Christ) कहा गया है। लेकिन हिन्दू धर्म में उसके काना होने का संकेत है। यद्यपि स्पष्ट शब्दों में काना नहीं कहा गया है—वहाँ उसे 'अन्धक आसुर' कहा गया है। आसुर यानी बाद में आने वाला और अन्धक यानी अध्ये की तरह। हरिवश पुराण में 'अन्धक आसुर' अर्थात् दज्जाल का जो वृतात् आया है उसे हम उदघृत कर रहे हैं। पुराणों के आधेकतर भागों की तरह यह भाग भी दत्तकथा की शैली धारण कर गया है फिर भी दज्जाल के वृतात् की स्पष्ट झलकिया विद्यमान है। निम्नलिखित अनुच्छेदों में भी

कोष्ठक के भीतर के शब्द हमारे बढ़ाये हुए हैं:

"उसके एक सहस्र हाथ (अर्थात् हर प्रकार शक्तियों को काबू में रखने वाला), सहस्र सिर (अर्थात् बहुत सूझबूझ रखने वाला) तथा दो सहस्र पांव (अर्थात् पृथ्वी के हर भाग पर सरलता से पहुंच जाने वाला) और दो ही सहस्र नेत्र (अर्थात् अत्यन्त दृष्ट्य) थे। दो हजार आंखों के होते हुए भी वह दैत्य अंधकार के कारण अन्धे के समान चलता था। इसीलिये वह अन्धक नाम से प्रसिद्ध हुआ।"¹

"इस प्रकार संसार के उपद्रव ग्रस्त होने पर सभी ऋषिगण उसके मारने में एकमत होकर उपाय सोचने लगे... नारद जी... कहने लगे मन्दार पर्वत (अर्थात् मक्के की पहाड़ियों) पर कामगम नामक एक श्रेष्ठ उपवन है, वह उपवन भगवान शंकर (ईश्वर का एक नाम) द्वारा निर्मित हुआ है। शिवजी (ईश्वर का एक नाम) की आज्ञा के बिना वहाँ कोई नहीं जा सकता... शिवजी की उन प्रथम गण (पहली उम्मत) को कोई भी नहीं नार सकता।"²

"उस मन्दार वृक्ष की ऐसी महिमा है... कि वैसा सुख और किसी भी स्थान में उपलब्ध नहीं हो सकता।"³

"अन्धकासुर-(अन्धे जैसा-दज्जाल) ने मन्दार पर्वत (मक्के की पहाड़ियों) पर जाने का विद्वार स्थिर किया और वह अपने साथ बहुत से दैत्यों (शैतानों) को लेकर दिवंजी के निवास स्थान (अर्थात् ईश्वर के घर) की ओर बेगपूर्वक चल दिया... मन्दार पर्वत (मक्के की पहाड़ियों) से कहा, 'अरे पर्वत! तुम जानते हो कि मैं अपने पिता से किसी के द्वारा भी न मारे जाने का वर प्राप्त कर चुका हूं।' (शैतान ने अल्लाह से क्यामत तक की मुहलत ली थी)

...मैं तुम्हें अभी चूर्ण किये डालता हूं... यह कहकर पर्वत का एक शिखर उखाड़ा... वे दानव पर्वत के जिस शिखर को उखाड़ कर फेंकते, वह उन दानवों पर ही गिर कर उन्हें नष्ट करने लगा... अन्धकासुर थोड़ा अत्यन्त क्रोध हुआ और उसने बड़ा भीष्ण गर्जन करते हुए कहा... मैं उस वन (जंगल या मरुस्थल अरब) के स्वामी को युद्ध के लिये आहवान कर रहा हूं... यह सुनकर भूतेश्वर भगवान रुद्र... त्रिशूल लेकर (त्रिशूल का आकार शब्द अल्लाह है) की तरह होता है—अर्थात् अल्लाह की सहायता लेकर) अन्धकासुर (दज्जाल) को मारने के

नोट: इस कथा को भी इस प्रकार से वर्णित किया गया है कि भविष्य की घटनाएँ अतीत की कहानियां बन गई हैं। कोष्ठक के भीतर के शब्द लेखक के अपने हैं।

लिये प्रथम गणों (पहली उम्मत) और भूतगणों (दूसरी उम्मत) के सहित उसके सामने आ गये।⁴

“उन्होंने अग्नि रूपी त्रिशूल को अन्धकासुर (दज्जाल) पर चलाया जो कि देत्यों के राजा के दिल पर वैठा मन्दराचल (मक्का) की गई हुई शोभा दोबारा लौट आई।”⁵

सन्दर्भ-सूची अध्याय : 16

1. हरिवंश पुराण, खंडः 1, पं० श्रीराम शर्मा आचार्य, पृ० 492
2. —— उपरोक्त —— पृ० 497-498
3. —— उपरोक्त —— पृ० 498-499
4. —— उपरोक्त —— पृ० 502-503
5. —— उपरोक्त —— पृ० 504

-----♦♦♦-----

○ जगत गुरु (सल्ल०) ने फ़रमाया:-

“हू० अबू हुरैरा रजि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा: कियामत नहीं आएरी जब तक तीस ‘दज्जाल’ मिथ्याचारी न पैदा हो लें, उन में हर एक का दावा होगा कि वह अल्लाह का ‘रसूल’ है (हालांकि वह झूठा और मक्कार होगा)।” - (तिरमिजी)

○ ईश्टदूत (सल्ल०) की प्रार्थना

“हे अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं कब्र की यातना से, मरीह दज्जाल के फ़ितने (उपद्रव) से और जीवन और मृत्यु के सभी फ़ितने से। हे अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं गुनाह और क़र्ज़ से।” - (मुस्लिम)

अध्याय : 17

यह रहस्य, रहस्य क्यों रहे?

हिन्दुओं में चली आ रही कुछ निगूढ़ बातें :

मुसलमान अपने आपको ह० मोहम्मद सल्ल० का अनुयायी कहते हैं। वे दुनिया से अज्ञानता के अंधकार को दूर करने के लिए उठे थे। उन्होंने इस धरती पर ईश्वर की सत्ता स्थापित करने का संकल्प लिया था। ज़रा सोचिये! क्या वे अब भी इस पद के योग्य हैं? अज्ञान के अन्धेरे को दूर करने के दावेदार स्वयं कितनी बड़ी अपराधपूर्ण अज्ञानता का शिकार है? इसका अन्दाजा इस बात से लगायें कि हम जो कुछ बहुत बड़ी रिसर्च के रूप में आपके सामने प्रस्तुत कर रहे हैं (और मुनक्किन है कि आपको विश्वास करने में बड़ी कठिनाई हो रही हो), इन सब तथ्यों से हिन्दू विशिष्ट जन भली-भांति परिचित हैं।

□ हिन्दू इस बात से परिचित हैं कि उनका सबसे बड़ा तीर्थ (जिसे वे आदि पुष्कर तीर्थ कहते हैं), सरके में है। उनके अनुसार उनका असली शिवलिंग मुसलमानों का ‘हजरे-अस्वद’ है। (शिवलिंग किसी गन्ती चीज़ का नाम नहीं है-शिव का अर्थ है खुदा और ‘लिंग’ निशानी को कहते हैं, अर्थात् ‘खुदा की निशानी’)

□ यह बात भी हिन्दुओं में मुसलमानों से राजू में रखी गई कि प्राण निकलने के समय सांस टूटने की तकलीफ़ से बचाने के लिये मरने वाले के कान में ‘अनकही’ की सरगोशी की जाती थी। बयान किया जाता है कि पुराने ज़माने में हिन्दुओं पर जब प्राणों का अन्त होने का समय आता था, तो उन्हें पलंग से उठाकर जमीन पर लिटा दिया जाता था और सांस टूटने के कष्ट से बचाने के लिये चुपके-चुपके मरने वाले के कान में ‘अनकही’ कही जाती थी। इस अनकही के शब्द साधारण हिन्दुओं को मालूम नहीं थे, लेकिन समाट अकबर के शासनकाल में एक ब्राह्मण ने यह शब्द बता दिये थे और यह भी कहा जाता है कि यह शब्द अथर्वद में मौजूद है। जैसा कि दिविस्तानुल मज़ाहिब, (प्रकाशन-नवल किशोर प्रेस) में भी मौजूद है।

ला इला हरनी पापन इल्ला लम्बा परम पदम
जन्म वैकुंठ पर अब होती तो जपे नाम मोहम्मदम

अनुवाद :- “ला इलाह कहने से पाप मिट जाते हैं। इल्लल्लाह कहने से परम पदवी मिल जाती है। अगर सदा के लिये स्वर्ग चाहते हो तो मोहम्मद (सल्ल०) का नाम जपा करो।”

यह है अनकही का भावार्थ जो मरते समय किसी जमाने में अन्तिम क्षणों में मरने वाले के कान में कही जाती थी।¹

अनुवाद करने वालों ने इस अनकही के अनुवाद में हुजूर (सल्ल०) के दूसरे दौर और मकामे महमूद का राज न जानने की वजह से हालांकि थोड़ी सी तब्दीली कर ली है, लेकिन फिर भी मिलता-जुलता भावार्थ सामने आ गया है। भविष्य में किसी अवसर पर इस मन्त्र के महत्व का वर्णन किया जायेगा।

□ हिन्दू विशिष्ट-जनों का यह अखण्ड धर्म-विश्वास है कि एक दिन पूरी हिन्दू कौम कुरआन पर ईमान लायेगी, लेकिन यह भी इन रहस्यों में से एक है जिन्हें हिन्दू जनसाधारण से और विशेष रूप से मुसलमानों से गुप्त रखा जाता है।

‘ड्यूट्याइस’ लिखता है :

(अंग्रेजी से अनुवाद) “जब बाह्यण अपने बच्चों को अपना वारिस बनाते हैं तो बच्चे को इस तरह बिठाते हैं कि उसका मुंह पूर्व की ओर हो और स्वयं पश्चिम की ओर मुंह करके अपने बच्चे के कान में सरगोशी करते हैं...हे पुत्र! याद रखना ईश्वर एक है, वही जन्म देने वाला, पालने वाला और बचाने वाला है और हर बाह्यण को गुप्त रूप से उसकी इबादत करनी चाहिये, लेकिन यह भी जान लो कि यह एक ऐसा रहस्य है जो अगर तुमने लोगों के सामने बयान कर दिया तो तुम्हारे...सौभाग्य के दिन समाप्त हो जायेंगे।”²

सेलाब वाले मनु से ह० नूह अलै० की हैसियत में हिन्दू इतनी भली भाँति परिचित है कि किस्से कहानियों में बच्चों को सुनाते हैं। उदाहरण के लिये बच्चों की पत्रिका टिक्कल से एक सम्पादकीय पढ़ें:

“मेरे नन्हे मुने दोस्तो ! एक बार प्रलयकारी बाद आयी। सारी पृथ्वी दूष गयी। यह कथा कई लोगों ने कई तरह से कही है। वेदों और मत्स्य पुराण में भी इसका वर्णन मिलता है। इस बाद की कथा बाइबिल में भी है। ईश्वर ने ह० नूह से कहा कि एक बड़ा जहाज बनाकर उसमें अपने परिवार के सदस्यों

के अलावा दो-दो हर प्राणी को चढ़ा लो। नूह ने वैसा ही किया। इसके बाद 40 दिनों तक लगातार दिन रात बारिश होती रही, सिर्फ ह० नूह और उनके जहाज में सावर प्राणी ही बचे। इसी अंक में ह० नूह और बाद पर आधारित एक रोचक कथा प्रस्तुत है, कैसी लगी तुम्हें?”

तुम्हारा आनन्द चाचा³
स्नेह

उक्त पंक्तियों में ‘नूह’ से पहले ‘हजरत’ का शब्द बता रहा है कि लिखने वाले ह० नूह अलै० को मुसलमानों के पैगम्बर के रूप में जानते हैं, लेकिन फिर भी उन्होंने बच्चों के सामने बाइबिल की चर्चा तो की, कुरआन का जिक्र नहीं किया।

इस बात के प्रमाण मौजूद हैं कि कुछ हिन्दू विद्वान अयोध्या के मूल यथार्थ से परिचित हैं और अन्य हिन्दू विशिष्टजनों के सामने उन्होंने इसे इस हैसियत से प्रस्तुत किया है कि उनकी अस्त अयोध्या पर मुसलमानों का घट्जा है। भारत के मुसलमानों की निगाहें अयोध्या की बाबरी मस्जिद की मुकित के आन्दोलन से आगे नहीं है लेकिन कुछ हिन्दू विशिष्टजनों के मन में यह इच्छा पल रही है कि उन्हें अपनी अस्त अयोध्या को एक दिन मुसलमानों के कब्जे से आजाद कराना है। यह उनके सीनों में छिपा एक अत्यन्त गोपनीय रहस्य है, जो कुछ लोगों की जबान पर भी आया है।

साजिद रशीद को इंटरव्यू देते हुए शिवसेना के प्रमुख श्री बालठाकरे की जबान पर यह इच्छा एक बार आई, लेकिन फिर वह शब्दों को दबा गये और साजिद साहब ने भी आगे नहीं बुरेदा। एक प्रश्न के उत्तर में श्री बालठाकरे ने कहा था:

(उर्दू से अनुवाद) ”देखिये आप इतना पीछे मत जाइये, अभी की बात कीजिये। इतिहास में बहुत पीछे जायेंगे तो मैं आपको ऐसी बहुत सी मस्जिदें बता सकता हूं जो पहले मन्दिर थे। जिनके बिन्ह अभी बाकी हैं। क्या आप उन्हें हिन्दुओं को देने को तैयार हैं? मैं कहना तो नहीं चाहता और न मैं कोई अधिकार जता रहा हूं। आप की बात पर कह रहा हूं। अगर आप बहुत पीछे जायेंगे तो आपका जो मक्का है इसमें पहले भूर्तियां थीं। अब अगर हम कहें कि यहां पहले हमारे लोगों की भूर्तियां थीं इसलिये यह हमको दो तो क्या आप इस बात को मानेंगे। मैं कहता हूं कि आज की बात करो, पुरानी बात छोड़ो।”⁴

इस प्रकार के अनेक उदाहरण और भी मौजूद हैं। मुसलमान अत्यन्त प्रसन्नता और गर्व के साथ अपने हिन्दू भाईयों को उनकी यह ‘इबादतगाह’ वापस कर देंगे, लेकिन उस समय जब हिन्दू भाई वेद, कुरआन और हडीसों की भविष्यवाणी के मुताबिक अपना खोया हुआ ‘मौलिक धर्म’ प्राप्त कर चुके होंगे।

मुसलमानों की लापरवाही:

सार्वेश यह है कि इन तमाम रहस्यों को हजारों साल से हिन्दू विशिष्टजन गोपनीय रूप से मुसलमानों और हिन्दू अवाम से छिपाते आ रहे हैं। अब यह रहस्य जनसाधारण तक भी पहुंच रहे हैं; लेकिन कौमों का मार्गदर्शन करने का दावा करने वाली मुसलमान कौम को इनकी खबर तक नहीं।

हिन्दू विद्वान यह भी जानते हैं कि परिवर्तन का समय अब निकट है। (उनका अहंवाद उनको इस बात से रोके हुए है कि वे अवाम के सामने सत्य की घोषणा कर सकें)। लेकिन मुसलमानों के सामने शोध प्रमाण प्रस्तुत करना पड़ रहे हैं, फिर भी वे यह कह रहे हैं कि यह सब अज्ञात रियायतों पर आधारित एक काल्पनिक कथा है। ऊपर वर्णित तमाम रहस्यों के लिखित दृष्टित प्रस्तुत नहीं किये जा सकते क्योंकि यथासंभव उनको छिपाने का भर्सक प्रयत्न किया जाता है और केवल मौखिक रूप से ही इन बातों की चर्चा होती रहती है। लेकिन इन समस्त गवेषणाओं को सिद्ध किया जा सकता है। हमें सिद्ध करने की आवश्यकता भी नहीं पड़ेगी। आप उनके करीब जाकर तो देखें, आपको भी सुबूत मिल जायेंगे।

कुरआन, रसूल और बैतुल्लाह (काबा) की हकीकतों को जानने वाले, जानते हुए भी छिपा रहे हैं। इस बात को कुरआन ने इस तरह बयान किया है :

“वे उसे ऐसे पहचानते हैं जैसे अपने बेटों को पहचानते हैं।”

हिन्दुस्तान की हिन्दू कौम के ज्ञानी भी विरोध रूप से इन वास्तविकताओं को अपनी पुस्तकों और अनुश्रुतियों के प्रकाश में भली-भाति पहचानते हैं।

हजारों वर्षों से साथ रहने वाले पड़ोसियों की चिन्तन शैली और विचारधारा का जब तक सही ज्ञान नहीं होगा, उनकी मनोवृत्ति को नहीं समझा जा सकता। और मनोवृत्ति को समझ बिना सही रुख पर आहवान भी नहीं किया जा सकता है। क्या इसे मुसलमानों की अक्षम्य अज्ञानता नहीं कहा जायेगा? क्या इस अज्ञानता पर अल्लाह की अदालत में उन्हें पकड़े जाने का भय नहीं होना चाहिये? क्या अब भी उनके जागने का समय नहीं आया है?

सन्दर्भ-सूची अध्याय : 17

- उर्दू दैनिक 'कौमी जग', 19 जनवरी 1981, पृ० : 4
 - Hindu Manners, Customs & Ceremonies—by Dubois Page: 166
 - बाल पत्रिका 'टिंकल', अंक: 83/109, पृ० : 15
 - उर्दू साप्ताहिक 'ब्लिट्ज', 21 मार्च 1987, पृ० : 14-15
- ❖❖❖-----

अध्याय : 18

पूर्व ग्रन्थों में आस्था

यह गलतफ़हमी दूर कीजिये :

अंगेजी कहावत है 'Seeing is believing' अर्थात् देखने के बाद विश्वास क्यों न करें? पिछले कुछ अध्यायों में हमने वेदों में पाई जाने वाली कुरआन की शिक्षाओं की जो कुछ मिसालें पेश की हैं (और उन जैसे विस्तृत वर्णनों से वेद भरे हुए हैं) उन्हें देखने के बाद इसमें संदेह की गुंजाइश नहीं रहती कि 'वेद' खोये हुए ईश्वर-प्रेषित ग्रन्थों का सामूहि नाम है जिनका विशिष्ट सम्बन्ध 'ह० आदम अलै० व नूह अलै०' से रहा है। यह किताबें मात्र नैतिक व सामाजिक सुधारों से सम्बन्धित नहीं थी जिन्हें हजारों वर्ष पूर्व किसी विचारक ने संकलित किया हो, बल्कि यह धर्म के आधारभूत विश्वासों और हकीकतों अहमद सल्ल० व मोहम्मद सल्ल० से सम्बन्धित वे शुद्ध रहस्य व वृत्तांत थे जो प्रत्येक युग में नवियों ने प्रस्तुत किये थे लेकिन वेदों में 'अहमदी तत्व' एक विशिष्ट केन्द्रीय विषय भी है।

यहां कुछ ज़हनों में यह शंकाएं जन्म ले सकती हैं कि हम इस्लाम व हिन्दू धर्म को एक समान सिद्ध करने की कोशिश कर रहे हैं या दोनों धर्मों को मिलाकर कोई नया दीन बना रहे हैं या दीने इस्लाम की श्रेष्ठता और बरतारी को घटाने की कोशिश कर रहे हैं। हम खुदा की पनाह चाहते हैं। शैताने रजीन (दुष्ट दानव) के ऐसे समस्त प्रयासों से जिनके द्वारा वह हमारी विचारधारा और मानसिकता को दूषित करे और धिक्कृत इल्लीस (दानव) की चालों से भी जिनसे वह निरवार्ध पाठकों के मन में सत्त्वर्धम के प्रचार के प्रभावशाली तरीके के विरुद्ध भ्रांतियां पैदा कर सकें, हम अल्लाह की मदद के अभिलाषी हैं।

दीन केवल इस्लाम है लेकिन!

कुरआन में दो जगह पर स्पष्ट रूप से अल्लाह ने इरशाद फ़रमाया है कि दीने इस्लाम के अतिरिक्त कोई दूसरा दीन खीकार्य नहीं है, लेकिन दोनों जगह यह व्याख्या

भी कर दी कि हर नवी ने अपनी उम्मत को इस्लाम धर्म की ही शिक्षा दी थी :

“आप कह दीजिये कि हम अल्लाह पर ‘ईमान’ रखते हैं और उस पर जो हमारे ऊपर उतारा गया है और उस पर जो इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक और याकूब पर और याकूब की सन्तान पर उतारा गया है और उस पर जो मूसा, ईसा और (दूसरे) नबियों को उनके ‘रब’ की ओर से दिया गया। हम उनमें से किसी के बीच कोई अन्तर नहीं करते, और हम तो अल्लाह के आज्ञाकारी हैं। और जो कोई इस्लाम के सिवा कोई और ‘दीन’ को चाहेगा तो वह उससे कदापि स्वीकार नहीं किया जायेगा और वह व्यक्ति ‘आखिरत’ में टोटा पाने वालों में से होगा।” – (कु० : 3-84,85)

समस्त ईशदूतों पर अवतरित शिक्षाओं में आस्था रखने का अर्थ यही है कि वे सब इस्लाम धर्म के ही आध्यानकर्ता थे। अब एक और आयत का अनुवाद देखिये:

“निश्चित रूप से ‘दीन’ तो अल्लाह के सभीप ‘इस्लाम’ ही है और इसमें जो ग्रन्थवालों ने विभेद किया वह आपस की जिद से इसके बाद किया कि उनको शुद्ध ज्ञान पहुँच चुका था और जो अल्लाह की आयतों से इनकार करेगा तो अल्लाह निश्चित रूप से शीघ्र हिसाब लेने वाला है।” – (कु० : 3-19)

यहाँ भी यह स्पष्ट है कि पूर्व ग्रन्थवालों (अहले किताब) को इस्लाम धर्म ही पहुँचा था फिर उन्होंने उसे बदल डाला। इसी बात को दूसरे अन्वाज में बयान करते हुए कुरआन कहता है :

“और इन्सान तो एक ही उम्मत (पंथ) थे, फिर उन्होंने भत्तभेद किया।” – (कु० : 10-19)

कोई भी पूर्व ग्रन्थ मूलतः निरस्त नहीं हुआ है:

कुरआन ने अनेक स्थानों पर यह स्पष्ट कर दिया है कि सही और शुद्ध धर्म हर युग में हर काल में इस्लाम ही था। तमाम ग्रन्थों और ईश्वर प्रेषित किताबों में इस्लाम धर्म की ही शिक्षायें थीं। आज एक सामान्य गलतफ़हमी, मुसलमानों के जहां में यह है कि ह० मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल० के शुभ आगमन के साथ ही पिछले तमाम ईशदूतों के लाये हुए धर्म निरस्त हो गये और कुरआन आ जाने के बाद पिछले नबियों पर अवतरित सहीफ़े (ग्रन्थ) भी निरस्त हो गये।

ईश्वर क्षमा करे, यह बात तो मुसलमानों के बुनियादी धर्मविश्वासों के ही विरुद्ध है। समस्त नबियों और उनकी लाई हुई किताबों में आस्था के बिना तो वे मुसलमान

ही नहीं हो सकते और जब तमाम ईशदूत इस्लाम धर्म ही लेकर आये थे तो उनके लाये हुए दीन के निरस्त होने का क्या अर्थ है? कुरआन ने अल्लाह की किसी किताब को निरस्त नहीं किया, बल्कि जगह-जगह कुरआन इन किताबों की पुष्टि करता है।

इस सामान्य भान्ति के दो कारण हो सकते हैं :

□ प्रत्येक नवी का दीन इस्लाम था लेकिन शरीयतें (धर्म-नियमावलियां अथवा धर्म-विधान) अलग-अलग थीं। अल्लाह फ़रमाता है “हमने तुममें से हर एक के लिये एक धर्म विधान और एक कर्म-पथ निश्चित किया।”

– (कु० : 5-48)

दीन और शरीयत में अन्तर है। दीन तो आधारभूत धर्मविश्वासों का संकलन है, जैसे-तौहीद, रिसालत, आखिरत और तक़दीर पर ईमान लाना। सभी नबियों की किताबों में एक ही धर्म-‘इस्लाम’ की शिक्षा थी लेकिन हर एक की शरीअत अलग-अलग थी। धर्म पर चलने की विधियों अर्थात उपासना पद्धति और नियमावली (जैसे-चोरी, शराब आदि की सजाओं) का नाम शरीअत है। प्रत्येक साहिबे शरीअत (शरीअत लागू करने वाले) रसूल के आ जाने के बाद उनकी लाई हुई शरीअत लागू हुई और पिछली शरीअतें निरस्त हो गयीं। अन्तिम ईशदूत ह० मोहम्मद सल्ल० के शुभागमन के साथ ‘शरीअते मोहम्मदी सल्ल०’ ने विगत तमाम शरीअतों को निरस्त कर दिया। दीन और शरीअत के अर्थ गडमड हो जाने के कारण यह भ्रम पैदा हो गया है कि पिछले नबियों के दीन, इस्लाम से भिन्न थे और अब वे निरस्त हो गये हैं। अमुस्लिमों का आह्वान करने के लिये पहले उनको मूल धर्म इस्लाम (असली सनातन धर्म) की तरफ़ बुलाया जायेगा जिसे वे छोड़ बैठे हैं। तत्पश्चात उनको मोहम्मद सल्ल० की शरीअत के अनुरूप आचरण करने को कहा जायेगा। पहले उनकी आस्थाओं का संशोधन होगा जिनमें बिगाड़ आ चुका है, तत्पश्चात ही व्यवहारिक जीवन में धर्म के लागू होने का नम्बर आयेगा। रसूले अकरम सल्ल० ने भी दीन के अजनबी होने के काल में यानी मवकी काल के आरम्भ में मवकी के मिश्रकों से यही कहकर आह्वान आरम्भ किया था कि मैं तुम्हारे सामने कोई नया धर्म लेकर नहीं आया हूं, बल्कि इब्राहीम अलै के ही धर्म को पेश कर रहा हूं, जिसका अनुयायी तुम अपने आपको बताते हो।

□ पिछले तमाम पवित्र ग्रन्थों के निरस्त होने की गलतफ़हमी की दूसरी वजह यह है कि वर्तमान में यह ग्रन्थ अपने मौलिक रूप में उपलब्ध नहीं है। इस समस्या का समाधान हम वेदों के अध्याय में प्रस्तुत कर चुके हैं।

सत्य और असत्य के मिले जुले वर्तमान रूप में इनका असत्य निरस्त है और

सत्य ज्यों का त्यों लोकप्रिय है और उम्मते मोहम्मदी सल्ल० का कर्तव्य इस सत्य और असत्य को शोधकार्य के माध्यम से इस प्रकार से अलग करना है जैसे दूध का दूध, पानी का पानी।

कुरआन से पूर्व के ग्रन्थों पर ईमान लाने का तात्पर्य:

दिव्य कुरआन ने जगह-जगह 'पूर्व ग्रन्थ वालों' को अपने ग्रन्थों पर आचरण करने का आह्वान किया है और उनके द्वारा आचरण न करने पर निन्दा की है। उदाहरण के लिये:

"और (हे नबी) यह (यहूदी) तुमसे कैसे निर्णय करते हैं, जबकि उनके पास 'तौरेत' मौजूद है जिसमें अल्लाह का आदेश (मौजूद) है? फिर ये इसके बाद भी भुंड मोड़ रहे हैं और यह लोग 'ईमान' लाने वालों के साथ नहीं है।" — (कु० : 5-43)

"कह दीजिये : हे ग्रन्थ वालो! तुम कदापि किसी बुनियाद पर नहीं हो जब तक कि तुम 'तौरेत' और 'इन्जील' और उन दूसरे ग्रन्थों को कायम (स्थापित) न करो जो तुम्हारे 'रब' की ओर से उतारी गयी है।" — (कु० : 5-68)

क्या यह आयतें स्पष्ट रूप से इस वास्तविकता की ओर संकेत नहीं कर रही हैं कि 'पूर्व ग्रन्थ वालों' को उन्हीं के ग्रन्थों के आधार पर आमंत्रित किया जाये। इसके अतिरिक्त आप इन आयतों का भावार्थ क्या निर्धारित करेंगे जिनमें उनकी 'तौरेत', 'इन्जील' और 'दूसरे ग्रन्थों' को स्थापित करने का आदेश दिया जा रहा है? स्पष्ट है कि इन ग्रन्थों पर आगर यह लोग सच्चे मन से ईमान लायें और उनके बदले हुए भाग को छोड़कर उनमें जो ईश्वर की वाणी है, उसके मोमिन (आस्तिक) बन जायें तो अपने ग्रन्थों में उन्हें वह सच्चाईयां मिलेंगी कि इस्लाम और कुरआन को माने बगैर रह नहीं सकते।

अब प्रश्न यह है कि यह कैसे निर्धारित हो कि कुरआन से पहले के इन ग्रन्थों का कौन सा भाग कलामुल्लाह (ईश्वर की वाणी) है और कितना भाग रद्दोबदल किया हुआ है। इसके लिये हमें कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी। कुरआन की ज्येति में दूसरे धर्मग्रन्थों का अध्ययन करना ही पड़ेगा ताकि इनमें से अल्लाह के कलाम को अलग कर सकें और उस पर ईमान लाने का इन कौमों को निमन्त्रण दिया जा सके।

कुरआन में पूर्व ग्रन्थ वालों ही को नहीं, मुसलमानों को भी बार-बार पूर्व ग्रन्थों पर ईमान लाने का आदेश दिया गया है।

"...यह सब मोमिनीन ईमान रखते हैं अल्लाह पर, उसके 'फरिश्तों' पर, उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर..." (कु० : 2-285)

जरा सोचिये कि पिछली किताबों पर ईमान लाने के आदेश का मतलब क्या है? न केवल कुरआन स्वयं यह कहता है कि इन किताबों में परिवर्तन हो गये हैं बल्कि इन किताबों के मानने वाले भी रद्दोबदल किये जाने को स्वीकार करते हैं।

आज यह समझा जाता है कि केवल इतनी सी बात मान लेने से कि यह किताबें अवतरित हुई थीं, इन पर ईमान लाने का कर्तव्य पूरा हो गया। कुरआन में यदि केवल एक वास्तविक घटना के वर्णन के उद्देश्य से भी इन किताबों के आने का ज़िक्र होता तब भी यह यकीन करना फ़र्ज होता कि यह किताबें ईश्वर ने अवतरित की थीं। इन पर ईमान लाने के शब्द जगह-जगह इसलिये प्रयुक्त हुए हैं कि इसके बिना मुसलमान का ईमान पूरा नहीं होता। मतलब साफ़ ज़ाहिर है कि पिछली किताबों के उन हिस्सों पर ईमान लाने को कहा गया है जिनकी कुरआन पुष्टि करता है और वे हिस्से तब ही स्पष्ट होंगे जब उन पर रोध विद्या यज्ञेगा। मुसलमानों में जो लोग इस काम के योग्य हैं, उन का यह कर्तव्य है कि इस ओर ध्यान दें ताकि 'अहले किताब' को उन की ही किताबों से इस्लाम की दावत पेश की जा सके और उनसे यह कहा जा सके कि देख लीजिये धर्म हर युग में एक ही था—'इस्लाम धर्म'।

यह प्रतिकूलता क्यों प्रतीत हो रही है?

कुरआन, पूर्व ग्रन्थ वालों को उनकी किताबों के अनुकूल आचरण न करने का दोषी ठहराता है—(कु० : 5-43)! कुरआन उन को तौरेत, 'इन्जील' और पिछली सभी किताबों को स्थापित करने का निमन्त्रण देता है—(कु० : 5-68) और कुरआन ही इन किताबों में रद्दोबदल की चर्चा भी करता है:

"...कलाम (वाणी) को उसके सही स्थानों से बदलते रहते हैं...

(कु० : 5-41)

फिर कुरआन इन किताबों की पुष्टि भी करता है:

"उसने (यह) किताब आप सल्ल. पर अवतरित की है हक् (सत्य) के साथ, उसकी तसदीक करने वाली जो इससे पहले आ चुकी है और उसने उतारा था 'तौरेत' व 'इन्जील' को।" (कु० : 3-3)

और कुरआन, ईमान वालों से उन किताबों पर ईमान लाने को कहता है:

"कह दो कि हम तो ईमान रखते हैं अल्लाह पर और उस पर जो हम

पर उत्तारा गया और जो इब्राहीम और इस्माईल और याकूब और याकूब की सन्तान पर उत्तारा गया और जो मूसा और ईसा को दिया गया, और उस पर भी जो दूसरे 'नवियों' को उनके 'रब' की ओर से दिया गया और हम उनमें से किसी के बीच भी अन्तर नहीं करते और हम अल्लाह ही के आज्ञाकारी हैं।”
— (कुँ : 2-136)

कुरआन की आयतों में परस्पर विरोध कई भी नहीं हैं, किंतु इस प्रकार का विरोधाभास इन आयतों में क्यों प्रतीत हो रहा है? ज़ेरा ठहरिये—कुछ ही दिनों पर भी नज़र डालिये। कुछ ही दिनों के कुछ हिस्सों का अर्थ स्पष्ट करने में सहायक होती है।

क्या ही दिनों में भी परस्पर विरोध है?

“ह० जाबिर रजि० का कथन है कि (एक बार) ह० उमर बिन ख्त्ताब रजि०, रसूलुल्लाह सल्ल० के पास तौरेत में से कुछ भाग लाए और कहा या रसूलुल्लाह सल्ल० यह तौरेत में से कुछ भाग है। आँहजूरत (सल्ल०) खानोरा रहे, किंतु ह० उमर रजि० ने (उनको) पदना आरम्भ किया। उधर हुजूर (सल्ल०) के शुभ चेहरे का रंग बदलने लगा। यह देखकर ह० अब बड़े रजि० ने कहा—उमर गुम करने वालिया तुम्हें गुम करें। क्या तुम हुजूर सल्ल० के पवित्र चेहरे को नहीं देखते? ह० उमर रजि० ने अत्यन्त प्रज्ज्वलित गुखमण्डल पर निगाह डाली और कहा—मैं अल्लाह के क्रोध और उस के रसूल सल्ल० के क्रोध से पनाह मांगता हूँ। हम अल्लाह के 'रब' होने पर, इस्लाम के 'दीन' होने पर और मोहम्मद सल्ल० के 'नबी' होने पर संतुष्ट हैं। आँहजूरत सल्ल० ने फ़रमाया—‘सौगन्ध है उस पवित्र अस्तित्व की जिसके कब्जे में मेरी जान है, अगर मूसा अलै० तुम्हारे बीच प्रकट होते और तुम उनका अनुसरण करते और मुझे छोड़ देते तो निश्चित रूप से तुम पथश्वर्षष्ट हो जाते (यद्यपि) अगर मूसा जलै० जीवित होते और मेरी नुबूवत (ईशदौत्य) का काल पाते तो वह भी निश्चित रूप से मेरा ही अनुसरण करते।”¹

अब दूसरी ही दिनों में भी प्रतिकूलता है?

“ह० अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० का कथन है कि सरकारे द्वे आलम (सल्ल०) ने फ़रमाया : बनी इस्माईल (यहूदी) से रिवायत किया करो, यह गुनाह नहीं है..।”²

अर्थात् यहूदियों के पास जो ज्ञान है उसे सुनकर दूसरों से बयान करो—इसका

व्यावहारिक उदाहरण ह० सलमान फ़ारसी (ईरानी) रजि० हैं जो ईसाइयों के अपने ग्रन्थ से ही इस्लाम और पैगम्बरे इस्लाम सल्ल० के शुभ आगमन की सूचनाएं लेकर मोहम्मद सल्ल० की खोज में मदीना आए थे और जब उन्होंने बज्मे रिसालत में आकर यह तौरेत व इन्जील वाली शास्त्रीय रिवायतें सुनाई तो आप (सल्ल०) का उज्जवल मुखमण्डल जगमगा उठा और न केवल आपने स्वयं यह ग्रन्थीय सूचना प्रसन्न होकर सुनी बल्कि तमाम सहाबा को इकट्ठा करके उन्हें भी सुनाई।

अब तीसरी ही दिनों का एक भाग जो बुखारी व मुस्लिम से लिया गया है और पूर्व ग्रन्थों की वैधानिक उपादेयता का प्रतीक है :

“...मदीने के यहूदी, रसूलुल्लाह सल्ल० के पास (साजिश की दुर्भावना से) आये और ज़िक्र किया कि हमारे एक पुरुष व महिला ने व्यभिचार किया है, उनके विषय में आप (सल्ल०) क्या इरशाद फ़रमाते हैं? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : तुम्हारे यहां तौरेत में क्या आदेश है? उन्होंने कहा—हम तो उसे अपमानित करते हैं और कोड़े मारकर छोड़ देते हैं। यह सुनकर अब्दुल्लाह बिन सलाम रजि० ने फ़रमाया—झूठ कहते हो! तौरेत में संगसार (पत्थर मार मार कर हलाक करना) करने का आदेश है, लाओ तौरेत प्रस्तुत करो। उन्होंने तौरेत खोली लेकिन 'आयते रज़म' पर हाथ रखकर आगे पीछे की सब पदावली पढ़कर सुनाई। ह० अब्दुल्लाह रजि० समझ गये और फ़रमाया—अपने हाथ उठाओ...हाथ उठाए तो संगसार करने की आयत मौजूद थी। अब उनको स्वीकार करना पड़ा। फिर हुजूर सल्ल० के आदेश से व्यभिचारियों को संगसार कर दिया गया...”³

यहां हम देखते हैं कि एक समस्या पर तौरेत में इस्लामी शरीअत के अनुसार आदेश मौजूद था। रसूलुल्लाह सल्ल० ने यहूदियों का निर्णय उन ही की किताब में उनको वह आदेश दिखाकर किया।

अब ज़ेरा गौर कीजिये कि क्या इन तीनों ही दिनों में भी प्रतिकूलता है?

यथार्थ पृष्ठभूमि में देखिये:

जी नहीं पहली घटना की पृष्ठभूमि यह है कि मदीना के प्रवास के आरम्भिक काल में जब कि अभी सहाबा—ए—कराम रजि० ज्ञान की दृष्टि से परिपक्व नहीं हुए थे, ह० उमर रजि० ज्ञान प्राप्त करने के शौक में यहूदियों के एक मदरसे 'बैतुलमिदरास' में जाकर तौरेत सुनते थे और नोट भी करते थे। वही से तौरेत के पृष्ठ रसूलुल्लाह सल्ल० के पास लेकर आये थे। आप सल्ल० नाराज हुए और यह स्पष्ट किया कि

उस दौर में केवल 'दीनेमोहम्मदी' का अनुसरण ही अपेक्षित था और दूसरी विद्याओं में दिलचस्पी न केवल अनावश्यक, बल्कि धातक भी थी। तत्पश्चात् मदनी काल के अन्तिम भाग में जब आप (सल्ल०) आश्वस्त हो गये कि अब आप (सल्ल०) के सहायी कुरआन की रौशनी में सही और ग़लत की परेख करने के योग्य हो गये हैं तो आप सल्ल० ने तौरेत और इन्जील के वे भाग उद्धृत करने की अनुमति प्रदान कर दी जिनकी कुरआन पुष्टि करता है।

दूसरी हड्डी उसी काल से सम्बन्धित है और तीसरी घटना से यह सिद्ध होता है कि अगर दूरअन्देशी की मांग हो और 'अहले किताब' पर हुज्जत (दलील) पूरी करना हो तो इस्लाम धर्म और शरीअते मोहम्मदी सल्ल० के अनुरूप उनके ग्रन्थों में जो शिक्षाएं पाई जाती हैं, वे उनको उन्हीं के ग्रन्थों में दिखाकर अपना कर्तव्य पूरा करना चाहिये। यही वे हिस्से हैं जिनकी कुरआन प्रमाण सहित पुष्टि करता है। उन्हीं रद्दोबदल से पवित्र हिस्सों को स्थापित करने की, कुरआन के नाजिल होने के बाद भी, 'पूर्व ग्रन्थ वालों' को दीक्षा दी गई है कि जब तक उन्हें स्थापित न करें वे सत्य को नहीं पा सकेंगे और कुरआन से प्रमाणित इसी भाग पर 'मोमिनीन' से कुरआन इमान लाने को कहता है।

सन्दर्भ-सूची अध्याय : 18

1. 'दारमी', स०: मिशकात, अ०: अलएतिसाम
2. 'बुखारी', स०: मिशकात, अ०: किताबुल इल्म
3. 'भाष्य सुरए अलमाइदा' – इब्ने कसीर

-----♦♦♦-----

"... प्रतिष्ठित 'साबिईन' तुम्हारे पास आएंगे और वह तुम्हारे हो जाएंगे। वह तुम्हारे बाद आएंगे, सांकलों में वर्धे हुए और तुम्हारे सामने झुक जाएंगे। वह तुम से अत्यन्त विनम्रता से कहेंगे- निःसंदेह ईश्वर के अतिरिक्त कोई ईश्वर नहीं है।"

(तात्त्विल, यथारागः 45-14)

अध्याय : 19

दावत (आह्वान)

की कार्य शैली

क्या हिन्दू 'अहले किताब' (पूर्व ग्रन्थ वाले) हैं?

जब यह मालूम हो जाये कि वेदों में देववाणी है और हिन्दू कौम ह० नूह अलै० की उम्मत है तो सबसे पहला प्रश्न प्राकृतिक रूप से यह पैदा होता है कि क्या हिन्दू कौम को 'अहले किताब' कहा जा सकता है? इस प्रश्न का महत्व और बढ़ जाता है जब हम देखते हैं कि हमारे कुछ बुजुर्ग हिन्दू कौम को कम से कम 'शुद्ध' अहले किताब (जिनके अहले किताब होने की सम्भावना हो) की श्रेणी में लाते रहे हैं। मिसाल के तौर पर :

(उर्दू से अनुवाद) "लेकिन मुसलमान इस मामले में बड़े उदारचेता हैं और अरबों ने हिन्दूओं को 'काफिर' व 'मुशरिक' की श्रेणी में शामिल नहीं किया है, बल्कि 'शुद्ध' अहले किताब' का दर्जा दिया है। इस विषय में सैयद सुलेमान नदवी ने अपनी किताब 'अरब व हिन्द के तालुकात' में अत्यन्त शोधपरक बहस की है।"¹

(उर्दू से अनुवाद) "सिन्ध के सबसे प्राचीन अरबी इतिहास 'चवनामा' के फ़ारसी अनुवाद में यह उल्लिखित है- मोहम्मद बिन कासिम ने बहमनाबाद (सिन्ध) के लोगों की प्रार्थना स्वीकार की और उनको अनुमति दी कि सिन्ध के इस्लामी राज्य में इसी हैसियत से रहें जिस हैसियत से इराक और शाम (सीरिया) के यहूदी, ईसाई और पारसी रहते हैं।"²

(उर्दू से अनुवाद) "बलाजरी में यह संशोधन है कि हिन्दुस्तान का बुतखाना

(मन्दिर) भी ईसाइयों और यहूदियों के पूजा-गृहों और पारसियों की अग्निशाला की तरह है।''³

हिन्दू कौम को काफिरों (अकृतज्ञ लोगों) व मुश्किलीन (बहुदेववादियों) के वर्ग में सम्मिलित करें या अहले किताब (पूर्व ग्रन्थ वाले) समझें, यह जान लेना इस लिए भी आवश्यक है कि विभिन्न वर्गों से व्यवहार व सम्बन्धों का आधार कुरआन आदेशों के अनुरूप अलग-अलग है; और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि किसी वर्ग विशेष का आह्वान करने की उचित कार्यप्रणाली कुरआन व सुन्नत की ज्योति में तभी निर्धारित की जा सकती है जब उस समुदाय विशेष के लिए कुरआन में प्रयुक्त होने वाली इस्तेलाह (पारिभाषिक शब्द) का ज्ञान हो।

अब आइए सोच-विचार करें कि 'मुश्किलीन (मिश्रक) तो अहले किताब को भी कहा गया है। यहूदी ह० उजैर अलै० तथा ईसाई ह० ईसा अलै० को खुदा का बेटा गानने के बाद 'बहुदेववादियों' की पंक्ति में सम्मिलित हैं। बहुत से मुसलमान भी अपने अकीदे यः कर्मों के आधार पर शिर्क (बहुदेववाद) से मुक्त नहीं ठहराए जा सकते। पता यह चला कि मुश्किलीन की परिभाषा अहले किताब पर भी लागू हो सकती है। ठीक यही स्थिति काफिरों की भी है। परिव्रत्र कुरआन का उपदेश है:

“निश्चय ही उन्होंने कुफ़्र किया जिन्होंने कहा : अल्लाह तो तीन में कोटीसरा है।” - (कु०: 5-73)

कुफ़्र का अभिप्राय है—इनकार करना। इस्लाम धर्म के अखण्ड विश्वासोंसे किसी स्तर पर भी विचलित होना कुफ़्र कहलाएगा। यहां तक कि कुछ विशेष परिस्थितियों में मुसलमान भी कुफ़्र की चपेट में आए बिना नहीं रह सकते। एक बहुचर्चित हडीस से इस बात की पुष्टि होती है :

“जिस ने जान बूझकर नमाज छोड़ी, उसने कुफ़्र किया।” इस प्रकार हम देखते हैं कि शिर्क के समान कुफ़्र की भी विभिन्न श्रेणियाँ हैं और किसी न किसी श्रेणी के अन्तर्गत सभी धर्मों के कुछ न कुछ मानने वाले आए बिना नहीं रह सकते। मुकम्मल काफिर (सम्पूर्ण नास्तिक) की श्रेणी में हम केवल मुलहिदों (अनीश्वरवादियों) को ही रख सकते हैं जिन के पास किसी 'खुदा' की कल्पना ही नहीं है। मुलहिदों के अतिरिक्त जितने समूह या जातिया है, वे आशिक रूप से काफिर हैं। वे पूरी तरह से काफिर नहीं कहे जा सकते।

हिन्दू कौम के पास शिर्क में गिरफ्तार होने के बावजूद 'ईश्वर' की परिकल्पना है। कलामे इलाही (ईश्वराणी) से अस्पष्ट सा ही सही, लेकिन सम्बन्ध अवश्य है।

ईश्वरों की धारणा विवृत हो जाने के बावजूद भी किसी न किसी रूप में विद्यमान है और मरने के बाद कुछ नहीं होगा, वे अनीश्वरवादियों की तरह ऐसा भी नहीं कहते। बल्कि उन के पास आवागमन के ग़लत विश्वास के रूप में भी जज़ा और सज़ा (पुरुस्कार एवं दण्ड) मिलने की मान्यता है।

इस प्रकार यदि हम संपूर्ण नास्तिकों को ही काफिर माने तो कम से कम इस श्रेणी में हिन्दू कौम की गणना कदाचित नहीं की जा सकती।

फिर क्या उन को 'अहले किताब' कहा जा सकता है? जब प्रत्येक जाति में अल्लाह ने पैग़म्बर भेजे तो केवल यहूदियों और ईसाइयों को ही कुरआन ने अहले किताब क्यों कहा है? ऐसा लगता है कि 'ग्रन्थ वाले' वे लोग हैं जिन का ईश्वर प्रेषित ग्रन्थ से (चाहे वे बिंगड़े हुए रूप में हो) सम्पर्क स्थापित है और इस सम्पर्क का माध्यम कोई ईश्वरूप है जिस के ईश्वरौत्य को भी वे स्वीकार करते हैं।

अहले किताब की उक्त परिभाषा हिन्दुओं पर लागू नहीं होती। 'किताब' होने के बावजूद 'नबी' से उन का सम्पर्क टूटा हुआ है और उन्होंने अपने ईश्वरूप को दन्तकथाओं में कही गुम कर दिया है।

अहले किताब नहीं 'उम्मीद्यीन' हैं:

हिन्दू कौम को यदि हम अहले किताब नहीं कह सकते तो उन के लिए कौन से कुरआनी पारिभाषिक शब्द का चयन करेंगे यह जानने के लिये हमें चौदह सौ वर्ष पीछे की ओर मुड़ कर देखना होगा। वहा इतिहास के झरोखे में हमें एक ऐसी कौम मिलती है जो अपने आप को एक रसूल (ह० इब्राहीम अलै०) की उम्मत कहती थी लेकिन सुहफ़े इब्राहीम (इब्राहीम अलै० पर अवतरित ग्रन्थ) उस के पास नहीं था अर्थात् 'किताब' से उस का संपर्क टूटा हुआ था। कुरआन ने उस कौम को 'उम्मीद्यों का गिरोह' कहा।

प्राचीन काल में 'उम्मी' शब्द का अर्थ अनपढ़ नहीं था। अनपढ़ के अर्थ में इस शब्द का प्रयोग बाद में होने लगा।

(उर्दू से अनुवाद) “जजाज ने स्पष्ट किया है कि उम्मी वह है जो उम्मते अरब (अरब पथ) की प्रकृति पर हो। अनपढ़ होना अरब का विशिष्ट स्वभाव था। कुछ विद्वानों के विचार में 'उम्मी' शब्द 'उम्म' से बना है चूंकि अनपढ़ व्यक्ति की प्रकृति वही होती है जिस पर उस को उस की मां ने जन्म दिया था, इस

* ऐसी कौम जो अपने ईश्वर-प्रेषित धर्म ग्रन्थ से पारोत्तन हो उम्मी निरक्षर को भी कहते हैं। ह० मोहम्मद स.न्न० की उपाधि।

दृष्टि से उस की निस्बत मां की ओर की जाने लगी। यह विचार इमाम बाकर रह० का बताया जाता है कि वह 'उम्मी' शब्द का प्रादुर्भाव 'उम्मुल कुरा' (नगरियों की माता) से होना बताते थे। चूंकि मकावासी अर्थात् कुरैश एक कौम की हैसियत से अनपढ़ थे, इस वजह से निरक्षर व्यक्ति को 'उम्मी' कहा जाने लगा।⁴

हिन्दू भी चौदह सौ वर्ष पूर्व की अरब जाति के समान 'काबे वाले' हैं। उन की समस्त धार्मिक परम्पराओं में काबे से सम्बन्धित संस्कारों की झलक है और उन के सभी प्राचीन मन्दिर वर्तमान में भी काबे की दिशा में खड़े हुए हैं।

उम्मियों की परिभाषा जब हम कुरआन में तलाश करते हैं तो हमें यह शब्द मिलते हैं :

"और उनमें से एक दूसरा गिरोह उम्मियों का है जो किताब का तो ज्ञान रखते नहीं, वस अपनी आधारहीन आशाओं तथा कामनाओं को लिये बैठे हैं और केवल अटकल के तीर तुकके चलते हैं।"
— (कु० : 2-78)

उपरिलिखित सभी विशेषताओं की तरह कुरआन की दराई हुई यह परिभाषा भी हिन्दू कौम पर शत-प्रतिशत पूरी उत्तरती है।

उम्मियों के वृत्तांत में कुरआन ने यह बिल्कुल स्पष्ट कर दिया है कि 'उम्मी' अहले किताब नहीं हैं बल्कि वे एक अलग समुदाय हैं :

"...और आप 'ग्रन्थ वालों' से और 'उम्मियों' से मालूम कीजिये कि तुम इस्लाम स्वीकार करते हो?..."
— (कु० : 3-20)

पता यह चला कि खुदा पर किसी न किसी रूप में आस्था रखने वालों को कुरआन दो गिरोहों में विभाजित करता है— 'अहले-किताब' और 'उम्मी'। उम्मियों की विशिष्टताएं कुरआन के विद्वानों ने निम्नलिखित बताई हैं :

ईश्वरीय ग्रन्थ को नहीं जानते। ग्रन्थ के विषय में उन का ज्ञान अनुमानों पर आधारित है।

प्राचीन अरब-पैथ के समान 'अहले किबला' (काबे वाले) हैं तथा 'उम्मुल कुरा' अर्थात् मक्के से उन का घनिष्ठ संबंध है। उन की उपासना पद्धति में काबे का केन्द्रीय स्थान है।

हम देखते हैं कि वर्तमान युग में केवल एक हिन्दू कौम ही ऐसी है जो उम्मी

होने की परिभाषा पर पूरी उत्तरती है।

कुरआन का गहन अध्ययन एवं चितन करने से यह विदित होता है कि कुरआन ने उम्मियों के दो गिरोह बताए हैं जिन के माध्यम से ह० मोहम्मद सल्ल० का सन्देश विश्वव्यापी स्तर पर पहुंचना पूर्व-निर्धारित है। एक पहला गिरोह जो चौदह सौ वर्ष पूर्व अरब में था और जिस में आप सल्ल० का शुभागमन हुआ और एक बाद में आने वाला 'आखरीन' का गिरोह।
(कु० : 62-2,3)

यही वह बाद में आने वाला गिरोह है जिसके इस्लाम कुबूल करने की पूर्व सूचना कुरआन ने कई जगह पर दी है तथा हदीसों ने जिस को स्पष्ट करते हुए हिन्दुस्तान की हिन्दू कौम की ओर संकेत किया है। (देखिए, अध्याय—।)

अहान की कार्य शैली—हदीसों की रौशनी में :

हदीस ने ही हमें इस कौम को आमन्त्रित करने की विधि बताई है। निम्नलिखित हदीसों आप के अवलोकन के लिये प्रस्तुत हैं :

"ह० अब्दुर्रहमान बिन अला हजरमी रजि० कहते हैं कि मुझ से उस व्यक्ति ने यह हदीस बयान की है जिस ने नवी करीब सल्ल० से सुना था कि आप सल्ल० ने फ़रमाया—निश्चित रूप से इस उम्मत के अन्तिम भाग में एक कौम ऐसी होगी जिस का सवाब (ईश्लाभ) प्रारम्भिक काल के लोगों (अर्थात् सहाबा रजि०) के सवाब के समान होगा। वे नेकियों का आदेश देंगे, बुराइयों से रोकेंगे और उत्पात करने वालों से युद्ध करेंगे।"⁵

"ह० अबू उबैदा रजि० का कथन है कि उन्होंने नवी करीब सल्ल० से पूछा कि या रसूलुल्लाह सल्ल०! क्या हम से भी श्रेष्ठ कोई हो सकता है कि हम ने (आप सल्ल० के हाथ पर) आज्ञाकारिता स्वीकार की और आप के कान्दे से कान्दा मिलाकर जिहाद किया। फ़रमाया 'हाँ! तुम लोगों के बाद एक कौम होगी, वह मुझ पर ईमान लाएंगे जब कि उन्होंने मुझे देखा भी न होगा।'"⁶

"ह० अम्र बिन शुरैब रह० अपने पिता से और वह अपने दादा से उल्लेख करते हैं कि रसूल करीब (सल्ल०) ने एक दिन सहाबा से पूछा : ईमान की दृष्टि से कौन सी सृष्टि तुम्हारी नज़र में सब से अद्भुत और संकल्पवाली है? सहाबा ने कहा : फ़रिश्ते। फ़रमाया : उन के ईमान में क्या अजीब बात है? वे ईमान क्यों न लाएं जबकि वे अपने रब (प्रभु) के निकट रहते हैं। सहाबा ने कहा :

फिर या रसूलुल्लाह सल्ल०, वे ईशदूतों का गिरोह हैं। फ्रमाया : वे ईमान क्यों न लाएं जब कि उन पर वह्य (आकाशवाणी) अवतरित होती है। सहाबा ने कहा : फिर या रसूलुल्लाह, वे हम लोग हैं। फ्रमाया : तुम ईमान क्यों न लाते जब कि मैं तुम्हारे बीच मौजूद हूँ। रावी* कहते हैं कि फिर रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ्रमाया : निस्सन्देह! समस्त रचनाओं में ईमान की दृष्टिकोण से श्रेष्ठ एवं अद्भुत वास्तव में एक कौन होती। वे मेरे बाद होंगे। वे कुछ ग्रन्थ पाएंगे, उन (ग्रन्थों) में किताब (कलामे इलाही) है। जो कुछ इन (ग्रन्थों) में है, उस पर वे ईमान लाएंगे।⁷

उपर दर्ज की गई इन हडीसों में किताब से अभिप्राय 'कुरआन' है। अर्थात् उस कौम को उन ग्रन्थों में कुरआन नज़र आएगा। इस भावार्थ को कुरआन की निम्नलिखित आयत से भी बल मिलता है :

"निस्सन्देह यह (कुरआन) अब्दलीन सहीफ़ों (आदि ग्रन्थों) में है।"
—(कु०: २६-१९६)

देखा आपने! हडीसें बताती हैं कि यह कौम प्रत्यक्ष रूप से कुरआन पर ईमान नहीं लाएगी, बल्कि पहले वह अपने खोए हुए ग्रन्थों को पाएगी अर्थात् यह वह कौम होगी जो अपने ग्रन्थों से दूर होती और मानो वह उन्हें पुनः खोज लेगी। इन ग्रन्थों में उसे कुरआन की शिकाएं नज़र आएंगी और इस पहलू से वह इस्लाम कुबूल करेगी। इस तरह इस कौम का ईमान इतना अद्भुत एवं श्रेष्ठ होगा कि इस का ईशलाभ हुजूर सल्ल० के सहायियों के ईशलाभ के समकक्ष होगा।

अब तक के विशेषण से यह विदित हो चुका है कि विश्व की धार्मिक जातियों में वह कौन सी एक मात्र जाति है जिस के पास ईश्वर-प्रेषित ग्रन्थ है और वह उस ग्रन्थ से कटी हुई है।

कुरआन की ज्योति में :

कुरआन की रौशनी में यदि हम आहवान के लिये आधारभूत मुद्दों की तलाश करें तो वे तीन मुख्य बातें हैं—अल्लाह पर ईमान (ईश्वरीय समर्पण), आखरत (परलोकवाद) पर ईमान और अमले सालेह (अनुकूल कर्म) :

"जो लोग 'यहूदी' हुए और जो 'ईसाई' हैं और 'साबिईन' में से जो कोई अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाए और सुकर्म करे सो उन के

* हडीस को रिवायत करने या उल्लेख करने वाला व्यक्ति

लिये उन के 'रब' के पास इन का प्रतिदान है और न कोई भय उन के लिये है और न वे दुखी होंगे।"

(कु०: २-६२)

समस्त ईश्वर प्रेषित धर्मों में मूल रूप से एक-ईश्वर-बाद तथा परलोक बाद की धारणाओं में ही विकार उत्पन्न हुआ। प्रत्येक धार्मिक जाति ने बाद में आने वाले पैगम्बर को इसीलिये नकारा किये 'उस' के कहने पर अपने उक्त विकृत धर्म-विश्वासों में संशोधन करने के लिए तैयार नहीं थे और इस के अतिरिक्त जो कुकर्म उनहोंने अपना लिये थे उन्हें वे त्यागने को तत्पर नहीं थे। यहूदियों ने इसी आधार पर ह० ईसा अलै० और ह० मोहम्मद सल्ल० की रिसालत का इन्कार किया। यदि वे अपने तौहीद और आखरत के बिंदु हुए अकीदों को सुधारने के लिये तैयार होते और कुकर्म छोड़ने की चेष्टा करते तो ह० ईसा अलै० को रसूल मानने में उन्हें कोई संकोच न होता क्योंकि 'वह' यही शिक्षाएं तो लाए थे। इसी प्रकार इन्हीं तीन बुनियादी बातों के परिवर्तित हो जाने के कारण ईसाइयों तथा यहूदियों ने ह० मोहम्मद सल्ल० के रसूल होने का इनकार किया यद्यपि वे जानते थे कि आप सल्ल० सच्चे रसूल हैं। यही बजह है कि कुरआन ने उक्त तीन बुनियादी बातों की चर्चा करके समस्त धार्मिक समुदायों को यह शुभसूचना दे दी कि यदि तुम इन में सुधार कर लो तो फिर तुम्हें किसी भय की ज़रूरत नहीं। यह स्पष्ट है कि आखरी रसूल व कुरआन पर भी ईमान लाना अनिवार्य है, फिर कुरआन ने केवल तीन मुख्य बातों को बयान करके प्रत्येक धर्म के मानने वालों को शुभ सूचना क्यों दे दी? इस का स्पष्ट कारण यह है कि महाज्ञानी, तत्वदर्शी ईश्वर इस बात से परिचित हैं कि अन्य धर्मावलम्बी उपरिलिखित सत्तदर्थ के तीन स्तंभों के विकार का उपचार कर लें तो वे कुरआन व रसूल पर ईमान अवश्य ही लाएंगे। सत्तदर्थ के यह तीनों आधार स्तंभ—एक-ईश्वर-बाद, परलौकिक जीवन तथा अनुकूल कर्म, हिन्दू कौम को उन के ही धार्मिक ग्रन्थों से उद्धृत करके प्रस्तुत किये जा सकते हैं।

आद्वान की रीति के विषय में कुरआन एक और निर्देश देता है :

"और अपने 'रब' के मार्ग की ओर बुलाइ—हिकमत (विवेक) से और (दिलों पर आद्रता लाने वाले) सदुपदेश से और उन के साथ उत्तम रीति से बाद-विवाद कीजिए।"

(कु० : १६-१२५)

विवेक से बुलाने का उद्देश्य न तो हीन भावना का शिकार होना है, न सत्य की सत्य और असत्य को असत्य कहने से हिचकिचाना है। विवेक सत्ताधारी वर्ग की चापलूसी या अकबर के 'दीने इलाही' जैसे किसी तथाकथित धर्म को मानने का नाम भी नहीं है। तो क्या ईंट का जवाब ईंट और पत्थर के जवाब में पत्थर? नि सन्देह!

इस्लाम ने इस की भी अनुमति प्रदान की है; लेकिन कुछ विशेष परिस्थितियों में जब कि इस के लिये मजबूर कर दिया जाए। दरअसल परिस्थितियों के सही विश्लेषण और आँकलन का नाम ही 'हिकमत' है। एक तरफ़ अल्लाह के रसूल सल्लू० ने ह० बिलाल रजि० व ख्याब रजि० को जलती रेत पर नंगे बदन लिटाए जाने की कठोर यातनाएं झेलते हुए देख कर मात्र सब किया है और दूसरी तरफ़ उपद्रव को कुचलने के लिये इस्लामी सेनाओं को आगे बढ़ने के आदेश भी जारी किये हैं। एक इस्लाम के अजनबी होने का समय था और दूसरा स्थायित्व की दिशा में अग्रसर होती हुई इस्लामी हुकूमत का।

आह्वान के लिये भी विभिन्न परिस्थितियों एवं परिवेशों में अलग-अलग कार्यशैलियां अपनाई गईं। पहले तीन वर्ष गुप्त प्रचार की रणनीति अपनाई गई यद्यपि उस समय भी सत्य अपनी जगह अटल था। इस के बाद पूरे मक्की काल* में अत्याचार की भट्टी में तपते हुए अपार कष्टों को ईश्वर की मरजी की खातिर सहते हुए दीने हनीफ (सत्तर्धर्म) के प्रचार का अटूट क्रम जारी रहा जिसके फलस्वरूप ऐसा समय भी आया कि अत्याचार का सिर उठते ही धराशायी कर दिया जाता था। धर्म-प्रचार में तत्वदर्शिता की सीख यदि हम ने उस पावन अस्तित्व से नहीं ली जिसे ईश्वर ने अपना विशेष अनुग्रह प्रदान किया था तो हर एक मोर्चे पर हम नाकाम होंगे। 'हिकमत' की तालीम अल्लाह के रसूल सल्लू० की शिक्षाओं का एक महत्वपूर्ण अंग है।

"और वह (रसूल) तुम्हें किताब और हिकमत की शिक्षा देता है ...।"

—(कु० : 2-151)

किताब (कुरआन) की शिक्षा के साथ 'हिकमत' का कितना महत्व है, इस का अन्दराजा कुरआन के इस वचन से लगाइए:

"वह जिसे चाहता है हिकमत प्रदान करता है और जिसे हिकमत दी गई उसे बड़ी दौलत दी गई; परन्तु चेतते तो वही हैं जो बुद्धि वाले हैं।"

—(कु० : 2-269)

हिन्दू धर्म को उस की खोई हुई मौलिकता दीजिए:

जब हिन्दू धर्म परिवर्तित करता है तो उस के बाद वह अपने समाज से कट जाता है। हिन्दू समाज में मुसलमानों के प्रति द्वेष का भाव कुछ और बढ़ जाता है और इस नवमुस्लिम को मुसलमान अपने साथ समायोजित नहीं कर पाते। उस की

* ह० मोहम्मद सल्लू० पर ईश वाणी अवतरित होने के उपरान्त मक्का निवास के तेरह वर्ष

परिवारिक एवं जीवन यापन सम्बन्धी समस्याएं कुछ और उलझ जाती हैं। भाई चारे की जो मिसाल मदीने के अन्सार ने मक्के के मुहाजिरों (विस्थापितों) के साथ कायम की थी उस का नमूना हम उस देचारे नवमुस्लिम के सामने पेश नहीं कर पाते। कभी-कभी तो बददिल होकर नवमुस्लिम के अपने पुराने धर्म पर लौटने के उदाहरण भी देखने में आए हैं। यह तो उन मुट्ठी भर लोगों की बात है जो इस्लाम धारण का साहस जुटा पाते हैं, अधिकांश लोग तो मुसलमानों के दिगाड़ को देखकर इस्लाम के गुणों से प्रभावित ही नहीं होते। ऐसी विषम परिस्थितियों में आह्वान की केवल एक ही प्रभावशाली विधि है—हिन्दू को मुसलमान न करके हिन्दू धर्म को उस के भूले हुए यथार्थ पर लाया जाए। यह केवल कुछ व्यक्तियों को नहीं वरन् सम्पूर्ण जाति को सत्तर्धम पर वापस लाने का एक मात्र विकल्प है; व्यक्ति विशेष के आह्वान के तरीके भिन्न-भिन्न हो सकते हैं।

वर्तमान में इस्लाम के प्रचार-प्रसार एवं आह्वान का तरीका किताब व सुन्नत की रौशनी में समस्त वर्मावलंबियों तथा विशेष रूप से इस कौम को आमन्त्रित करने के लिये यही सिद्ध होता है कि उनके वर्तमान धर्म को उस के मूल खोए हुए इस्लाम (मौलिक सनातनधर्म) की ओर लौटाने की विधि अपनाई जाए, ऐसी विधि न अपनाई जाय जिससे कि धर्मपरिवर्तन का आरोप लगे। ऐसी त्रुटिपूर्ण तथा विकृत कार्यशैली जो ईसाई मिशनरियों ने अपना रखी है, इस्लाम की प्रकृति से सर्वथा भिन्न है। हमें इस तरीके को छोड़कर आदम अलै० व नूह अलै० की मिल्लत (पंथ) के विषय में वही विधि अपनानी पड़ेगी जो स्वयं हुजूर सल्लू० ने मिलते इगाहीमी को इस्लाम से परिचित कराने के लिये अपनायी थी।

ऐतिहासिक विडंबनाएः

धर्म प्रचार में विवेक एवं युक्तिसंगत विधि अपनाने पर कुरआन ने क्यों इन बल दिया है, इस का उत्तर हमें स्वयं इतिहास से मिल जाता है। वर्तमान शताब्दी में इतिहास में दो ऐसे मोहू आ चुके हैं जब मुसलमानों द्वारा तत्वदर्शिता से काम न लेने की वजह से अमुस्लिमों की कूटनीति सफल हुई और दोनों बार करोड़ों की संख्या में पूरी की पूरी कौमें इस्लाम में प्रविष्ट होते होते वापस लौट गईं। इन दोनों ज़बरदस्त हादसों में से एक का सम्बन्ध भूतपूर्व सोवियत यूनियन से है और दूसरे का हमारे अपने देश भारत से।

रूसी साय्यावादी क्रान्ति के नेता कामरेड लेनिन, विश्व के तमाम धर्मों का अध्ययन करने के बाद इस्लाम से अत्यन्त प्रभावित हुए थे और रूस की जनता को इस्लाम के दायरे में लाने के इच्छुक थे। उन के बारे में यह विशिष्ट धारणा है कि उन

की इस्लाम से दिलवस्पी 'बुकरा खाँ' नाम एक महात्मा से सम्पर्क में आने के फलस्वरूप पैदा हुई थी। लेनिन उनकी विचारधारा से अत्याधिक प्रभावित हुए थे और लेनिन पर उनके सत्संग का गहरा असर था। बहरहाल लेनिन ने इस दिशा में प्रयास किया लेकिन मिस के मौलवियों की विवेकहीनता और ब्रिटिश सरकार की चतुर नीति की वजह से यह सुनहरी अवसर हाथ से निकल गया।

इस अशुभ घटना का विस्तृत वर्णन एक भारतीय साम्यवादी नेता ने किया है जिनके लेनिन से निकट संबंध थे। मोहम्मद अब्दुल्लाह (रिटायर्ड आइ० एस०) के शब्दों में सुनियें :

'एम० एन० राय हिन्दुस्तान के जाने माने नेता थे और 1921-23 के बीच वह 'कम्यूनिस्ट इन्टरनेशनल रस्स' के सरगर्म कार्यकर्ता थे। जर्मनी, फ्रांस और चीन के श्रमिकों के आन्दोलन में उन्होंने महत्वपूर्ण सेवाएँ अर्पित कीं। लेनिन से उनके अच्छे सम्बन्ध थे और उन्हीं के एक साथी और हिन्दुस्तानी ने उस समय की राजनैतिक परिस्थितियों के अन्तर्गत हिन्दुस्तान छोड़कर रस में पनाह ली थी। उन से भी लेनिन के निजी सम्बन्ध थे। उन्होंने अपनी स्वयं लिखित जीवनी में लेनिन की इस्लाम से दिलवस्पी और श्रद्धा के विषय में जो टिप्पणी की, वह देखने योग्य है।'

रस में 'जार' के शासन—काल की समाप्ति पर जब लेनिन सत्ता में आए और उन्होंने कम्यूनिस्ट सरकार स्थापित कर ली तो एक दिन अपने निकट सहयोगियों की एक मीटिंग बुलाई और उसमें उन्होंने कहा—हम अपनी सरकार स्थापित करने में सफल हो गए हैं लेकिन इस को बनाए रखने के लिए और इस को चलाने के लिए इस बात की आवश्यकता है कि हम किसी ऐसे जीवन दर्शन को अपनाएं जो मानव प्रकृति के अनुकूल हो, इसलिए कि इन्सान को अपने आस्तित्व के लिये केवल रोटी नहीं चाहिए बल्कि उस की आत्मा की सन्तुष्टि के लिये एक धर्म की भी ज़रूरत है। मैंने समस्त धर्मों का गहन अध्ययन किया है। मेरी दृष्टि में सिवाय एक धर्म के किसी और में वह योग्यता नहीं है जो हमारे साम्यवादी दृष्टिकोण का साथ दे सके। इसलिये मैं अभी इस धर्म का नाम ही बतलाऊंगा। इस विषय में राय कायम करने में आप जल्दी न करें, इस लिये कि यह प्रश्न साम्यवाद के जीवन और मृत्यु का है। आप समय लें और चिंतन करें—हो सकता है मैं गलती पर हूं लेकिन हमें अपने निर्णय के बारे में ठंडे दिल से विचार करना होगा। मैं समझता हूं कि इस्लाम ही एक ऐसा धर्म है जो अपनी भौतिक प्रवृत्तियों में साम्यवाद पर पूरा उत्तरता है। यह

सुनकर भीड़ में शोर होने लगा तो लेनिन ने ठंडे मन से फिर सोच विचार करने का निर्देश दिया कि आज से पूरे एक वर्ष बाद हम फिर मिलेंगे और उस समय तय करेंगे कि क्या साम्यवादी को कोई धर्म अपनाना चाहिए? और कौन सा?

ब्रिटिश सरकार के विदेश मन्त्रालय को जब इस का पता चला तो उसने, इसमें ब्रिटिश साम्राज्य के लिये बड़ा ख़तरा महसूस किया कि यदि साम्यवाद और इस्लाम मिल जाएं तो रस को ब्रिटेन पर एक अविजित शक्ति एवं श्रेष्ठता प्राप्त हो जायेगी। तुरन्त उन्होंने एक समस्या खड़ी की—''इस्लाम के लिये मार्क्सवाद जैसा खुदा से फेरने वाला और नास्तिकता का दृष्टिकोण स्वीकार करने योग्य हो सकता है?''

अपृहर (मिस का विषय पिधालय) के विद्वानों ने जो इस सवाल की पृष्ठभूमि से परिचित न थे, ऐसा फृतवा (धर्मदेश) जारी कर दिया जैसा कि ब्रिटिश सरकार चाहती थी। यह फृतवा छपवा कर संसार के कोने कोने में बन्टवा दिया गया यहां तक कि रस के इस्लामी क्षेत्रों में इस फृतवे की प्रतियाँ अभी तक कुछ मुसलमानों के पास हैं। विदित है कि इस का पता लेनिन को चल गया। उन्होंने अपना आशर्च्य प्रकट किया और कहा मैं समझता था कि मुसलमान समझदार होंगे लेकिन ऐसा मालूम होता है कि वे भी और धर्मों (के मानने वालों) की तरह बड़े कट्टर एवं रुदिवादी हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि योजना धरी रह गई है और उसके विरोधियों ने चैन की बनसी बजाई।⁸

अब अमुस्लिमों की सफल कूटनीति की एक दूसरी मिसाल देखिये जिसका संबंध हिन्दुस्तान से है।

शिवास किया जाता है कि डाक्टर अम्बेडकर जो दतितों तथा हिन्दू पिछड़ी जातियों के सबसे लोकप्रिय नेता थे, हिन्दुस्तान की पूरी दलित आबादी के साथ इस्लाम कुब्बल करने के पक्षधर थे। गांधी जी को जब यह मालूम हुआ तो उन्होंने डाक्टर अम्बेडकर से पूछा कि तुम कौन सा इस्लाम कुब्बल करना चाहते हो? शिया मुसलमान वाला या सुन्नी मुसलमान वाला! अगर शिया होना चाहो तो उन में भी बहुत से धार्मिक गुट हैं—देवबन्धी, बरेलवी, बहाबी इत्यादि; और इन सब में आपस में ऐसी ही नफरत है कि एक दूसरे को इस्लाम में दाखिल नहीं समझते। डाक्टर अम्बेडकर ने इस बातवीत के बाद अपना इरादा बदल दिया और कहा : मैं समझता था कि इस्लाम में धार्मिक मतभेद नहीं होते और इसीलिये मैं इस धर्म को पसंद करता था।

यह वह नसीहत की कहानियां हैं जिनकी सियाही अभी इतिहास के पन्नों में सूखने भी न पाई जाती है।

काश मुसलमान यह समझ लें कि...

रसूल अकरम (अत्यन्त प्रतिष्ठित) सल्ल० का सम्पूर्ण आद्वान का जीवन विवेक के साथ आचरण करने का व्यावहारिक नमूना था। इस्लाम के अजनबी होने के उस प्रारम्भिक काल में अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उस कौम से कहा था कि मैं तुम्हारे पास कोई नया धर्म लेकर नहीं आया हूँ; बल्कि दीने हीनीफ़ (सत्यनिष्ठ धर्म) तथा दीने इब्राहीमी (ह० इब्राहीम अलै० का धर्म) ही पेश कर रखा हूँ। क्या इस्लाम के बेघर होने के इस दौर में इस कौम के सामने 'दीन' इस हैसियत से पेश नहीं किया जा सकता कि इस्लाम कोई नया धर्म नहीं है बल्कि नूह अलै० का धर्म भी यही था और मुसलमान भी नूह अलै० (महा जलप्लावन वाले मनु) को दिव्य सन्देशवाहक मानते हैं और उन का सन्देश जो हिन्दुओं के पास अज्ञात काल की धूल में धुन्धला गया है, उसे ईश्वर के अन्तिम और शुद्ध सन्देश की ज्योति में साफ़ किया जा सकता है।

निश्चित रूप से हिन्दू कौम शताव्दियों से उन व्यक्तियों की खोज कर रही है जो उसे उस का धर्म समझा सकें। वह अपने धर्म को स्वयं ही न समझ पाने के बावजूद उसे सनातन धर्म मानते हुए उस में आस्था रखती है।

सोमनाथ के मन्दिर को ध्वस्त करने वाले महमूद गजनवी के लश्कर के साथ ही तो 'अलबेर्लनी' भी आया था जिस का उपकार हिन्दू आज तक मानते हैं वहों कि उस ने इन के धर्म को समझने की कोशिश की थी। अलबेर्लनी का ढंग कुछ और ही था। इस पुनीत कार्य को श्रेष्ठ विधि से कुरआन एवं हडीस के प्रकाश में पूरा किया जा सकता है। क्या इस्लाम को इस रूप में हिन्दुओं के सम्मुख प्रस्तुत नहीं किया जा सकता कि यही तुम्हारा मौलिक धर्म था? क्या कुरआन की ज्योति में उन के धर्म की गुरुथियां सुलझा कर यह प्रमाणित नहीं किया जा सकता कि यही वह धर्म है जिस का सैलाब वाले मनु या ह० नूह अलै० ने अपनी जाति में आद्वान किया था? इस दिशा में प्रयास करने से पहले मुसलमानों को हिन्दू धर्म का गहन अध्ययन करना होंगा।

मौ० अबुल हसन अली नदवी ने ह० उमर बिन ख़त्ताब (रजि०) से बयान की हुई एक हडीस उद्धरित की है :

"करीब है वह व्यक्ति इस्लाम की एक-एक कट्टी अलग कर दे जिस ने इस्लाम में ही आंखें खोलीं और जाहिलियत (अज्ञानता) से बिल्कुल

अपरिचित है।"⁹

चौदह सौ वर्षीय इस्लामी इतिहास में अनेक मुसलमान विद्वानों ने तौरेत, ज़बूर और इंजील को खगाल डाला लेकिन कितने आलिम ऐसे हैं जिन्होंने हिन्दू धर्म का अध्ययन किया? कुछ प्रयास सामने भी आए तो वे इस शैली के हैं जिन में हिन्दू धर्म की वर्तमान किताबों के त्रुटिपूर्ण अनुवादों में हिन्दू धर्म के अवगुण तलाश करके इस्लाम के गुणों से तुलना की गई है। ऐसी उर्दू किताबों के अनुवाद यदि हिन्दुओं के सामने रख दिये जाएं तो वे स्वीकार करने के बजाय इस्लाम से और धृणा करने लगेंगे।

यदि हिन्दुओं के समस्त धार्मिक ग्रन्थों का तर्कसंगत विधि से अवलोकन किया जाए तो यह महसूस होगा कि इस्लाम को हिन्दू कौम के अपने ही खोए हुए मजहब की हैसियत से पेश किया जा सकता है और उहै स्वीकार करने में कोई संकोच न होगा।

कम से कम इतना तो कीजिए!

उक्त शोध कार्य को प्रत्येक व्यक्ति तुरन्त आरम्भ नहीं कर सकता। केवल हिन्दी जानने से भी काम नहीं चलेगा। मूल रूप से भटकाव वेदों, पुराणों तथा उपनिषदों के हिन्दी अनुवाद से ही फैला है। मुस्लिम उम्मत में से ऐसे लोगों को संस्कृत सीखने के लिये सामने आना होगा जिन के पास अपने धर्म का भी अच्छा खासा ज्ञान हो। यह काम देखने में अत्यन्त कठिन लगता है, लेकिन असंभव नहीं है। रसूलुल्लाह सल्ल० के कातिब ह० जैद रजि० कुछ ही दिन में 'सुरयानी' सीख सकते थे, मौ० हमीदुदीन फ़राही रह० सुरयानी और इब्राहीमी दोनों भाषाएं सीख सकते थे, अलबेर्लनी संस्कृत का ज्ञान प्राप्त कर सकते थे तो कुरआन व हडीस का ज्ञान रखने वाली युवा पीढ़ी संस्कृत क्यों नहीं सीख सकती? आगामी कुछ वर्षों में जब तक मुस्लिम उम्मत में ऐसा युवा वर्ग तैयार हो, उस समय तक कम से कम एक दाम तो किया ही जा सकता है—यह काम है नफरतों की खाई को पाटना। वह काम जो अमरीका के मुसलमानों ने शुरू किया है। उस की एक संक्षिप्त रूप रेखा हम आपके सामने प्रस्तुत करते हैं ताकि आपसी द्वेष समाप्त होकर वही सौहार्दपूर्ण वातावरण उत्पन्न हो सके जिस का प्रयास अमरीका में किया गया है। यह प्रयास यदि हमारी तरफ़ से हो तो इस के परिणाम दूरगामी एवं विश्व स्तर के निकल सकते हैं। कारण यह है कि यहूदी व ईसाई भी नूह अलै० को अपना पैगम्बर मानते हैं। हम विश्व की दोनों बड़ी नस्लों, सामी और गैर सामी की एकता के लिये मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। इन नस्लों में हिन्दू, ईसाई, यहूदा और मुसलमान सब शार्मिल हैं।

अमरीकियों का उदाहरणः

तीन वर्ष पूर्व अमरीका के ईसाइयों और यहूदियों ने 'मिल्लते इब्राहीम' के आधार पर एक फ़ोरम की स्थापना की जिस का उद्देश्य एक दूसरे को समझने की कोशिश करना और धार्मिक द्वेष के माहौल को समाप्त करना था। अमरीका में मुसलमानों की संख्या भी अब इतनी हो गई है कि उनको अब अल्पसंख्यकों के रूप में स्वीकार किया जाने लगा है। मुसलमान आलिमों ने इस फ़ोरम से कहा कि ह० इब्राहीम अलै० हमारे अत्यन्त प्रतिष्ठित पैगम्बर थे। फिर आप ने इस फ़ोरम से हमें क्यों अलग रखा है? फ़ोरम का पुर्नगठन हुआ और उस का नाम 'मुस्लिम-ईसाई-यहूदी नेतृत्व फ़ोरम' (*Muslim, Christian, Jews Leadership Forum*) रखा गया। तीनों ने तय किया कि हम सब ह० इब्राहीम अलै० के अनुयायी हैं। धार्मिक मतभेदों के मामले में अपने अपने मार्ग पर जाने रहने के बावजूद हम में बहुत कुछ समानता है और इन समान मूल्यों को हमें एक दूसरे के सामने उजागर करना चाहिए।

पहले आठ-आठ विद्वान हर सम्प्रदाय के इकट्ठा हुए और उन्होंने दो-दो घट्टों के छः सत्रों में आपस में विचार विमर्श किया। अपने-अपने धर्म विश्वासों और धार्मिक विचारों से एक दूसरे को अवगत कराया। फ़ोरम के लिये कार्यक्रम तय किया। फिर एक निम्नस्तर का अधिक संख्या में प्रतिनिधियों का सम्मेलन बुलाया गया। उन्होंने एक दूसरे को अपने सामाजिक जीवन, संस्कृति, उत्सवों और धार्मिक रीति-रिवाजों से परिचित कराया। फिर 17 सितम्बर 1986 को अमरीकी राज्य डेट्रायट (Detroit) में बड़ी संख्या में प्रतिनिधियों का एक सामान्य सम्मेलन हुआ। इस में 29 मुसलमान, 36 यहूदी, 9 ईसाई और अन्य धर्मों के लोग भी सम्मिलित हुए। इस सम्मेलन में तीनों धर्मों के विद्वानों ने भाषण दिये। मुसलमान धर्मवेता डाक्टर मुज़म्मिल हुसैन सिद्दीकी जो भारत में ही जन्मे हैं इन तीनों जलसों में सम्मिलित हुए और रहन सहन, सामाजिक जीवन व अन्य पारस्परिक धार्मिक समस्याओं पर विस्तार के साथ समस्त प्रतिनिधियों से विचार विमर्श किया। इस के बाद से आज तक यह फ़ोरम बहुत अच्छे परिणामों के साथ काम कर रहा है। इस समय इस फ़ोरम की प्रतिनिधि पत्रिका 'हेलान' (Haelan) से कुछ अवतरण हम आपके सामने रख रहे हैं। अगरचे 48 पृष्ठ की इस पत्रिका का एक-एक शब्द देखने के योग्य है लेकिन परिचय कराने के लिये जिन हवालों को नक़ल करना आवश्यक है, वे हम पेश कर रहे हैं।

ईसाई पादरी 'आस्कर-जे-आइस' ने अपने भाषण में कहा—
(अंग्रेजी से अनुवाद) “... ह० इब्राहीम अलै० दुनिया के तीन बड़े धर्मों के बाबा आदम हैं। यहूदियत, ईसाइयत और इस्लाम—इन तीनों धर्मों में एकेश्वरवाद

का अकीदा, बहुत से पैगम्बरों में आस्था रखने की समानता और दूसरों के मुकाबले में मानव जीवन का अधिक सम्मान जैसे मूल्य समान हैं।...”¹⁰

(अंग्रेजी से अनुवाद) “आपसी माहौल में समझबूझ से हमारे अन्दर पारस्परिक विश्वास और अपनापन पैदा हो चला है और इस के साथ ही सब के सकुशल होने की विशुद्ध सोच भी।”¹¹

हेलान पत्रिका के इसी अंक के पृ० 6 से ही दो और उदाहरण देखिये:

(अंग्रेजी से अनुवाद) “... पिछले मार्च में टेलीविज़न पर एक प्रोग्राम दिखाया गया जिस में शिया मुसलमानों को आतंकवादियों की हैसियत से प्रस्तुत किया गया था। तीनों धर्मों के विद्वान एकत्र हुए और उन्होंने टेलीविज़न कारपोरेशन को इस विषय में विरोध पत्र भेजे कि कुछ लोगों की शरारत की बजाह से पूरी कैम के बारे में दूषित धारणा पेश न की जाए।”¹²

(अंग्रेजी से अनुवाद) “... सितम्बर के महीने में इस्तंबोल (तुर्की) में एक यहूदी पूजा-गृह पर बम्बारी हुई। जब अन्तिम संस्कार के लिये डेटरायट में यहूदी इकट्ठा हुए तो उन्हें फ़ोरम के दो मुस्लिम विद्वानों के संवेदना पत्र प्राप्त हुए जिन में पारस्परिक शांति की इच्छा को दोहराया गया था। एक मुस्लिम विद्वान अन्तिम संस्कार में सम्मिलित हुए ...”¹³

इमाम मुज़म्मिल हुसैन सिद्दीकी ने अपने संबोधन में कहा:

(अंग्रेजी से अनुवाद) “... यह और अन्य बहुत से मतभेद इस्लाम, यहूदियत और ईसाइयत में हैं लेकिन बहुत से समान मूल्य भी हैं जैसा कि मैं पहले कह चुका हूँ। समान और आपसी मेल-मिलाप का अर्थ यह है कि जब विरोध करें तो भी पारस्परिक विश्वास, आदरभाव और विनम्रता का ख़्याल रखें। वार्तालाप, तर्कपूर्ण और अच्छी से अच्छी शैली में हो। मुसलमान होने की हैसियत से हमें कुरआन का परामर्श मानना चाहिये—और अहलेकिताब से बाद-विवाद मत करो सिवाय सभ्य तरीके से”
—(कु०: 29-46)

(अंग्रेजी से अनुवाद) “... हमारी परम्पराएं बहुत सकारात्मक रोल निभा सकती हैं और इन गतिविधियों में शामिल होकर हनें जात होगा कि हमारे बीच मूल्यों में कितनी समानता है, जिन की हमने कभी कल्पना भी नहीं की थी। इस से हमें आपसी दूरिया समाप्त करने में मदद मिलेगी। हमारे बीच धार्मिक पक्षपात, भय और नफ़रत का ज़्यादा हिस्सा इसी एक दूसरे से दूरी के कारण है ...

करीब आने से हम एक दूसरे की समस्याओं को भलीभांति समझ सकेंगे और एक बेहतर समाज के निर्माण में सहायक होंगे ...”¹⁵

यहूदी विद्वान डाक्टर मार्क एच०तानीनबोम के भाषण के अंश भी देखिये : (अंग्रेजी से अनुवाद) “हमारी बुनियादी समस्या एक दूसरे के विषय में अपराध पूर्ण अज्ञानता है।”¹⁶

(अंग्रेजी से अनुवाद) “... यहाँ एक सामान्य धारणा यह है कि सभी मुसलमान बर्बरता के धजवाहक और आतंकवादी होते हैं। यह बात एक धार्मिक असत्य का रूप धारण करती जा रही है। हमें इन समस्त धार्मिक असत्यों को समूल नष्ट करना है, इससे पहले कि राजनीति उन्हें इस्तेमाल करके विश्वस्तरीय विनाश का कारण बन जाए ...”¹⁷

(अंग्रेजी से अनुवाद) “... प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक फ़राम कहता है कि हिन्दुस्तान में एक सामूहिक रोग है कि हर धर्म का अनुयायी अपने को श्रेष्ठ और दूसरे को हीन समझता है। मुसलमान समझते हैं कि तमाम सच्चाइयों और मुक्ति के मार्गों पर उनका एकाधिकार है। यही हिन्दू अपने बारे में और सिख अपने बारे में समझते हैं। यही समस्या विश्व के हर भूभाग में तनाव की बुनियाद है ...”¹⁸

इस फ़ोरम में जिन अन्य समस्याओं पर गौर किया जा रहा है, उन में से कुछ निम्नलिखित हैं:

- एक अच्छा मुसलमान, ईसाई, यहूदी कैसा होता है?
- दूसरे धर्मों के मानने वालों को अपने धर्म का निमन्त्रण कैसे दिया जाए?

इस शीर्षक के विषय में ईसाई पादरी ने बताया :

(अंग्रेजी से अनुवाद) “हम अपने आप को ऐसे मनमोहक अन्दाज़ में प्रस्तुत करते हैं कि दूसरों में हमारे साथ समिलित होने की इच्छा जागृत हो जाती है।”

मुसलमान विद्वान इमाम अब्दुल्लाह अल अमीन ने कहा :

(अंग्रेजी से अनुवाद) “हम उन तमाम लोगों को अपने धर्म की दावत देते हैं जो एक ईश्वर और परलोकवाद में आस्था रखते हैं।”

- हमारा ईश्वर के विषय में क्या धर्म-विश्वास है?

- समाज में आतंकवाद के प्रभाव।
- प्रचार साध्यमों और स्कूल की किताबों से धृणा की सामग्री को समाप्त करना।

यह थी अमरीकी मुसलमानों के प्रयास की एक झलक। एक दूसरे से नफ़रत करने वाली तीन कौमों ने समानता का एक आधार तलाश कर लिया ताकि अपने अपने धर्म पर बने रहते हुए वह अनुकूल वातावरण पैदा हो सके जिस में एक दूसरे को अपना धर्म समझाया जा सके। इस मित्रतापूर्ण कशमकश में इन्हाँ अल्लाह (यदि ईश्वर ने चाहा तो) सत्य की विजय होगी। क्या हम भारत में ह० नूह अलै० को अपना ईशदूत स्वीकार करने के आधार पर यहाँ की इन दो बड़ी कौमों को एक मंच पर इकट्ठा नहीं कर सकते?

सारांशः

कार्यशैली के विषय में कुरआन व सुन्नत और ऐतिहासिक उदाहरणों के प्रकाश में जो कुछ विवरण प्रस्तुत किया गया है, उसका सारांश निम्नलिखित है :

- मिल्लते नूह (नूह अलै० का पंथ) के आधार पर विश्व एकता की बुनियाद रखी जाए ताकि भ्रातियों की जगह विचार विमर्श का मार्ग खुले।
- ज्ञान की धरोहर रखने वाले लोग, हिन्दू धर्म ग्रन्थों का अध्ययन व उन पर शोध कुरआन के मार्गदर्शन में करे ताकि हिन्दूओं को उन के मूल धर्म के विषय में उन्हीं की किताबों के रूख से समझाया जा सके।

यह भी ध्यान रहे कि समय बहुत ज्यादा नहीं है। पन्द्रहवीं सदी हिजी आरम्भ हो चुकी है। पन्द्रह सौ वर्ष बाद किसी ऐतिहासिक परिवर्तन की कुरआन व हडीस की भविष्यवाणी का अवलोकन आप ने कर लिया। काबे में उपदेव के बाद और क़हतानी व अरबों के गढ़बड़ करने के बाद हडीस की यह चेतावनी आपने देख ली कि “अब यह न पूछना कि अरब कब हलाक होंगे?”

यह समय प्रतीक्षा का नहीं, कुछ कर दिखाने का है। जान लीजिए कि हम इतिहास के निर्णायक मोड़ के समीप हैं और सदियों से चढ़ा हुआ हिन्दू कौम का कर्ज़ मुसलमानों को चुकाना है।

हिन्दू धर्म-पंडित जानते हैं!

परिवर्तन का समय निकट है, यह हिन्दू विद्वान भी जानते हैं। इस का उदाहरण देखिये

“ऐसे प्रमाण भौजूद हैं कि युग बदलने का समय आ गया है। कलियुग अब बिदा हो रहा है और उस के स्थान पर ऐसा समय आ रहा है जिसे सत्युग बताया जा सके।

मनु—स्मृति, लिंग—पुराण तथा भागवत में दी गई गणनाओं के अनुसार हिंसा व फैलाने से पता चलता है कि वर्तमान समय संक्रमण काल है ... इन समस्त गणना आधारों को देखते हुए वह समय ठीक इन्हीं दिनों है जिस में युग बदलना चाहिये ... जो सन् 1980 से 2000 तक बीस वर्षों की है।”¹⁹

उन के आंकड़े कहा तक ठीक हैं; इस का अन्तिम निर्णय तो हम नहीं कर सकते लेकिन पन्द्रहवीं सदी हिंजी के निर्णायक होने के बारे में तो हमें यकीन होना ही चाहिये।

युग, परिवर्तित होने ही वाला है।

कुरआन और हडीस ने जिस ईमान अफरोज (ईमान को उज्जवल करने वाली) बाइरिशा की भविष्यवाणी की थी, उस के लक्षण प्रकट हो चले हैं। निगाहें उठा कर देल्लिये-घटाएं उठती हुई नजर आने लगी हैं। ठंडी हवा का पहला झाँका किसी भी समय आने ही वाला है। इन घटाओं में बिजलियां भी छिपी हुई हैं जिनसे सुरक्षा के उपाय ईश्वर हमें बता चुका है। गहरी नींद से तुरन्त जागने का समय है।

दलीले खुदावन्दी (ईश्वरीय प्रमाण):

विश्व की वे समस्त भाषाएं जिनमें आस्मानी ग्रन्थ अवतारित होने का मानव को ज्ञान है, मृतपराय हो चुकी थीं, सिवाय अरबी के जो अन्तिम आस्मानी ग्रन्थ कुरआन की भाषा है तथा जो महाप्रलय तक जीवित रहेगी। संस्कृत, कल्वानी, आरभी, सुरयानी व इत्यानी भाषाएं मृत होना भी प्रकृति की एक निशानी थी जो इस बात की साक्षी है कि कुरआन के अतिरिक्त अन्य दिव्य ग्रन्थ जन साधारण के लिये समझने के अयोग्य बना दिये गए। लेकिन यह क्या! उस युग के समीप जिस में उस प्राचीनतम धार्मिक जाति को उन्हीं के अपने धार्मिक ग्रन्थों के माध्यम से ईमान लाना सुनिश्चित था, दुनिया की तमाम निर्जीव भाषाओं में से सब से पुरानी भाषा संस्कृत में पुनः जीवन के लक्षण दिखाई देने लगे हैं। बेशक ईश्वर की माया, मानव बुद्धि की परिधि से बाहर है। सरकारी छत्रछाया में संस्कृत को इस तरह पुनर्जीवित किया जा रहा है कि हमारी आगामी पीढ़ी के बहुत से लोग जिन में हिन्दू और मुसलमान दोनों शामिल हैं, संस्कृत जानने और समझने वाले होंगे। यह ऐसी पीढ़ी होगी जो संस्कृत का ज्ञान प्राप्त करने के बाद, पंडितों द्वारा निषिद्ध वस्तु बना दिये जाने के बावजूद वेदों पर रिसर्च किये बिना नहीं मानेगी और उस पराकाष्ठा का यही आरम्भ होगा जिसे हिन्दू धर्म ने कलियुग जाने के बाद

सत्युग का आना बताया है।

मुसलमानों का कर्तव्य:

मुसलमान भाई विचार करें कि ईश्वर ने उन पर विशेष करुणा और दया की है कि उन्हें एक ऐसे देश में पैदा किया जहां उन के लिये दुनिया के दूसरे मुसलमानों की तुलना में इस ‘नूह की जाति’ के सामने ज्ञान और कर्म के माध्यम से आद्वान करने के अनगिनत अवसर उपलब्ध हैं। अब यह उन के ऊपर है कि वे इस पुरुषकार को पलकों से उठाते हैं या अकृतज्ञ होने का प्रमाण देते हैं। मुसलमान जो कि अन्तिम ईश्वरूप ह० मोहम्मद सल्लूलू की उम्मत हैं, परमेश्वर की तत्त्वदर्शिता के तहत मानव इतिहास के एक निर्णायक मोड़ पर उस कौम के बीच में भेजे गए हैं जो दुनिया के पहले छोर पर जन्म लेने वाली ह० नूह अलौ० की उम्मत है। इस बात के स्पष्ट संकेत मिल रहे हैं कि इतिहास स्वयं को दोहराएगा। जहां से आरम्भ हुआ, वहीं पर अन्त भी होगा। इतिहास में इस प्रकार के उदाहरण भरे पड़े हैं। क्या हमारे जागने का इसके बाद फिर कोई अवसर आएगा?

सबसे गम्भीर समस्या यह है कि मुसलमानों के विभिन्न संगठनों में आपस में तालमेल नहीं है, लेकिन एक आधार ऐसा है जिस पर मुसलमानों के सभी वर्ग संगठित हो सकेंगे और वह है—‘कुरआन’। कुरआन पर शिया, सुन्नी, बरेलवी, देवबन्दी तथा समस्त राजनैतिक एवं धार्मिक संगठन ईमान रखते हैं। कुरआन की फरयाद सुन्ने के लिए मुसलमानों के समस्त दलों एवं संगठनों को एक मंच पर इकठ्ठा किया जा सकता है।

“बधा इन लोगों ने कुरआन में चिन्तन नहीं किया। या उन के दिलों पर ताले चढ़े हुए हैं।”
—(कृ०: 47-24)

अल्लाह हम सब की सीधे रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करे। हमें हर समस्या का समाधान ‘कुरआन हकीम’ में तलाश करने की शक्ति प्रदान करे और ‘उस’ ने अपने दीन की सरबुलन्दी के लिए जिन लोगों का चुनाव किया है, उन्हें आमन्त्रित करने में हमें भी समर्पित करें—आमीन! (तथास्तु)

सन्दर्भ—सूची अध्याय 21

1. इस्लाम में दूसरे मजाहिद और अहले मजाहिद की ‘हैसियत’ लै० : मौ० शाह मुईनुदीन नवी.
प्र०: ‘मआरिफ’-3, ख०: 95, पृ०: 178
2. ‘यथनामा एलियट’ ख०: प्रथम पृ०: 186, स०: पत्रिका मआरिफ, न०: 3, ख०: 95,
पृ०: 180

3. --- उपरोक्त---
 4. 'लुगातुल कुरआन' - संकलन : मौ० अब्दुर्रशीद नोमानी
 5. बेहकी, स०: मिश्कात, अ०: सवाब हाज़िल उम्मत
 6. रजी, स०: मिश्कात, अ०: सवाब हाज़िल उम्मत
 7. बेहकी, स०: मिश्कात, अ०: सवाब दा जहिल उम्मत
 8. सोवियत यूनियन (उर्दू) खं०: 28, जून 1992, ले०: मोहम्मद अब्दुल्लाह रिटर्यर्ड आ०० ए० एस०
 9. भूमिका, 'अरकाने अरविंड', पृ०: 15, प्र०: 1981
 10. Haelan, volume vii, No.: 2, Pub: Ecumenical Theological Centre, Detroit, Michigan - P : 5
 - 11- --- do --- P : 6
 - 12- --- do --- P : 6
 - 13- --- do --- P : 6
 - 14- --- do --- P : 15
 - 15- --- do --- P : 36
 - 16- --- do --- P : 29
 - 17- --- do --- P : 32
 - 18- --- do --- P : 33
 19. 'अखेंड ज्योति'-मार्च 1981, ले०: पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य, पृ०: 39-40
- ♦♦♦-----



“आप कह दीजिए कि हे अहले किताब (पूर्व ग्रन्थ वाले) ! आओ इस बात की तरफ़ जो हमारे तुम्हारे बीच समाज है । वह यह कि हम अल्लाह के अतिरिक्त किसी की उपासना नहीं करेंगे और उसके साथ किसी को भी राझी नहीं ठहराएंगे ।”

(कु०:-३६४)



उन्हें स्वयं भी तलाश है!

हिन्दुओं में एक गुण बहुत मूल्यवान है। वह यह है कि वे अपने पुराणों, उपनिषदों तथा अन्य ग्रन्थों में विद्यमान प्रतिकूलताओं पर बहुत चिन्तित हैं। उन्हें सत्य की तलाश है। जिसे इच्छा नहीं होती उस पर ईश्वर का वरदान भी नहीं होता। हिन्दू अपनी धार्मिक विचासत को छोड़ने पर आमादा नहीं हैं, लेकिन उन्हें यह आभास हो चुका है कि उसके ग्रन्थों में दिए गये उपदेशों, दन्त कथाओं एवं धन्तनाओं की यथार्थता व उन के सही अर्थ कुछ और होने चाहिए। इस विचारधारा के दो नमूने प्रस्तुत हैं:

“भारतीय दार्शनिक परम्परा का एक नियम यह है कि जो व्यक्ति उपनिषद, ब्रह्मसूत्र और गीता-तीनों का समन्वय करके दिखादे और इस प्रस्थानत्रायी में से एक ही तत्त्वदान निचोड़ कर प्रस्तुत करदे, उसे आचार्य माना जाय और उसी की बात सुनी और मानी जाय ।”¹

“प्रश्न यह उठता है कि उन स्मृतियों का क्या किया जाय, जिन में ऐसे श्लोक हैं जो उसी में दिये हुए अन्य श्लोकों के विपरीत और नैतिक भावना के विरुद्ध हैं। मैं इन पृष्ठों में अनेक बार लिख चुका हूं कि धर्म-ग्रन्थों के नाम पर जो कुछ छपता है, उस में सभी को ईश्वर की वाणी अथवा देववाणी के रूप में नहीं लेना चाहिये। लेकिन हर कोई यह तय नहीं कर सकता कि कौन सी बात अच्छी और प्रमाणित है तथा कौन सी बात बुरी और प्रक्षिप्त है। इसलिये एक ऐसी अधिकारी संस्था की आवश्यकता है जो धर्म-ग्रन्थों के नाम पर जो सब छपा है उसका संशोधन करे, ऐसे श्लोकों को काट छाँट दे जो धर्म और नैति के मूल के विरुद्ध हैं..... यह विचार इस पवित्र कार्य के मार्ग में बाधक न होना चाहिए कि सर्वसाधारण हिन्दू और धार्मिक नेता माने जाने वाले व्यक्ति ऐसी संस्था की बात प्रमाणित नहीं मानेंगे, जो काम सच्चाई से और सेवा भावना

से किया जायेगा वह समय थीतने पर अपना प्रभाव ढालेगा और निश्चय ही उन लोगों की सहायता करेगा जो इस प्रकार की सहायता बुरी तरह चाहते हैं।²

“बुद्ध ने आत्मा और परमात्मा के विषय में भौतिक धारण किया, मानो उनका अस्तित्व है ही नहीं; शंकर ने कहा ‘केवल ब्रह्म ही है और कुछ नहीं संसार दुखःशय है, माया है, सर्वथा त्याऽय है अथवा मजबूरी का बन्धन है।’ यह भाव और भावनाएं हमारी जातीय चेतना में लगभग ढाई हजार वर्ष से रम रही है। परिणाम स्वरूप जहां हम ने अध्यात्मिक अनुभव में कुछ नई चपलविद्याँ प्राप्त की हैं, वहां संसार और जगत के जीवन में अनेक कष्ट भी छोले हैं; राज्य-पाठ खोया और शक्ति तथा प्रभाव से बंचित रहे, हम कह सकते हैं – हमने एक विशेष अध्यात्मिक अनुभव की सफलता तथा सीमा दोनों को जान लिया। इससे हम वैदिक और औपनिषदिक आदर्श की विशेषता को अनुभव करने के लिये विशेष रूप से तैयार हो गये हैं और निश्चय ही अब नई चेतना विकसित होगी, वह सम्भवतः पूर्णतर होगी।”³

क्या इन परिच्छेदों में छिपी हुई अपीलों पर आप आगे आने के लिये तैयार हैं? आप ही के पास तो अचूक समाधान है?

आप ही के पास तो इन वैचारिक प्रतिकूलताओं का सामजस्य है!

क्या आप बिलकूती और तड़पती हुई मानवता के सीमा नहीं बनोंगे?

याद रखिये! आज औषधि आप के पास है।

यदि आप उपचार में कंजूसी करेंगे तो ईश्वरेच्छा को दूसरे चिकित्सक ले आने में देर नहीं लगेगी।

सन्दर्भ-सूची अध्याय : 20

- ‘अनासक्ति योग’ – लै० : बालकृष्ण कालेकर, पृ०: 8
- ‘महात्मा गांधी’ – ‘स्त्रियों की समस्याएँ’-समाचार पत्र ‘हरिजन’, 28 नवम्बर 1936
- ‘कल्याण’-जनवरी 1950, डॉ इन्ड्रेसन, पृ०: 208-209

अध्याय : 21

कहसौटी केवल क्रुरआन

हमारे लेखों से पाठकों को कुछ जगहों पर यदि यह आभास हो रहा हो कि वेदों के वर्तमान अनुवादकों की सत्यनिष्ठा पर हमें सन्देह है तो इसे जहन से निकाल दें। ज्ञान को छिपाने वाला वर्ग प्रायः हर एक धर्म में होता है और मुसलमानों में भी है। जिन वेदज्ञों ने वेदों के अनुवाद किये हैं, उन की सेवाएं प्रशंसनीय हैं क्यों कि उन्होंने इस अमूल्य ज्ञान को जन-साधारण तक पहुंचाने की काशिश की है जिसे तथाकथित पड़ितों ने उन के लिए अनिश्चित काल से ‘निषिद्ध वृक्ष’ के समान बना दिया था तथा जो मौलिक हिन्दू धर्म की बुनियाद है। विशेष रूप से स्व० पंडित श्रीराम रामां आचार्य के विषय में हमें निजी रूप से ज्ञात है कि वह अत्यन्त योग्य व्यक्ति थे। समस्त धर्मों के अध्ययन के लिये उनके यहां विधित रूप से एक शोध केन्द्र स्थापित है। उनकी मूल गुटि यह है थी कि उन्होंने वेदों को कसौटी बनाकर सब धर्मों का अध्ययन किया। जो ज्ञान न जाने कब से प्रायः लुप्त था, उसे अभी समझने के लिए शोध कार्य की आवश्यकता है। पहले से स्थापित अद्वीदों (आस्थाओं) को जहन में रखते हुए केवल मानव बुद्धि के प्रकाश में स्वयं वेदों को ही नहीं समझा जा सकता, और जिस ज्ञान को प्रत्यक्ष रूप से समझा न जासके उसे कसौटी बनाकर अन्य धर्मों का अध्ययन करना कैसे सार्थक होगा? कलामे इलाही को बल्कि की रौशनी में नहीं, विवेक के प्रकाश में नहीं, केवल अल्लाह के कलाम की ज्योति में ही समझा जा सकता है और अल्लाह का अन्तिम सन्देश क्रुरआन है जिसके एक-एक शब्द के सुरक्षित होने पर पूरी दुनिया सहमत है। यदि वेदों के अनुवादक क्रुरआन की रौशनी में वेदों का अध्ययन करें तो वे तमाम रहस्य और गुरुथियाँ सुलझ जाएंगी जो वेदों में आज तक उनके लिए बाजाल बनी हुई हैं तथा जिन के आधार पर ‘मैवस्समुलर’ ने कहा था :

“एक स्कालर के लिए यह असम्भव है और शायद स्कालरों की पूरी पीढ़ी के लिये यह असम्भव होगा कि वे ऋग्वेद के गीतों को विधिवत हल कर

सकें।”

हम समझते हैं कि वेदों के अनुवादों में हिन्दू विद्वानों द्वारा गृलतियां जान बूझकर नहीं की जा रही हैं। गृलती का आधार पौराणिक धर्म पर आधारित वे परिकल्पनाएं, एवं धर्म विश्वास हैं जिन्हें वेदों के अध्ययन से पूर्व मस्तिष्क से निकालना अत्यन्त आवश्यक है।

अगर यह बात भाष्यकारों की समझ में आ जाये तथा कुरआन की ज्योति में वेदों का अध्ययन किया जाए तो वेदों के ऐसे अनुवाद सामने आयेंगे जिन से वेदान्त, गीता व उपनिषदों की समस्त प्रतिकूलताएं दूर हो जाएंगी और हिन्दू कौम उस विश्वस्तरीय क्रान्ति की आङ्गनकर्ता बनकर उठेगी जिस का कुरआन और वेद दोनों में वादा किया गया है।



“और इनकार करने वालों का अनुरसरण करने के बजाय उनसे दूरुरआन के ज़रिये एक ज़बरदस्त धर्म-संघर्ष करो।”
-(क़ुँ०: 25-52)

“ह० अबू हुरैरा रजि० से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा: मेरे पंथ में मुँझ से अत्याधिक प्रेम करने वाले वे लोग हैं जो मेरे बाद पैदा होंगे। उन में से प्रत्येक चाहेगा कि क्या ही अच्छा होता कि मुँझे देखता और अपने घर वालों और अपने माल को मुँझ पर निछावर करता।” (मुरिलम)

प्रस्तुति के बाद

एक

रिसालत की शामा के परवानों में क्या चीज़ एक समान थी? कुछ मौलिक अकीदे और रसूलाह सल्ल० के पावन आस्तित्व के सिवा कुछ भी तो नहीं! कार्य शैलियां, चित्त और स्वभाव सब के अलग-अलग थे।

एक ओर ह० उस्मान ग़नी रजि० हैं जो धनाधीष, वैभववान और कीमती वस्त्र धारण करने वाले हैं, दूसरी ओर ह० अबूजर गिफ़ारी रजि० और ह० बरा बिन मालिक रजि० हैं-दुरवेशी स्वभाव, अपर्याप्त लिबास और साधुता व आत्मसन्तुष्टि की प्रतिमूर्ति।

ह० अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रजि० हैं जो खाली हाथ मदीना आते हैं और मदीने के अत्यधिक धनाड़्य व्यक्ति बन जाते हैं, इसी श्रेष्ठता में ह० मुसअब बिन उमैर रजि० हैं जिनके इस्लाम लाने से पूर्व की सुवस्त्रप्रियता बहुचर्चित थी लेकिन बाद में अपने लिए ऐसे पेवन्द लगे हुए मोटे कपड़ों का चयन करते हैं कि रसूले खुदा सल्ल० उन्हें देखकर सजलनयन हो जाते हैं।

इसी निकेतन में ह० उमर रजि०, ह० अली रजि०, ह० इब्ने अब्बास रजि०, ह० इब्ने मसज़द रजि० और ह० उबई बिन कअब रजि० सरीखे अत्यधिक प्रतिष्ठित, सुवक्ता एवं निपुण विद्वान हैं और यहीं से प्रशिक्षित सम्यदना बिलाल रजि० है जिन की कुल तक़रीर केवल एक शब्द ‘अहद’ (वह एक है) पर आधारित होती थी।

ह० उमर बिन खत्ताब रजि० की न्यायसंगत कठोरता देखिये और ह० उस्मान बिन अफ़फ़ान रजि० की युकित्संगत कोमलता।

ह० कअब बिन मालिक हैं जिन से वर्षों की तपस्या के बाद भी गृज़वे* में शामिल

* वह धर्मयुद्ध जिसमें ह० मोहम्मद सल्ल० स्वयं सम्मिलित हुए।

न हो सकने की भूल हुई* और ह० उसैरम रजिं० भी है। जो बिना एक वक्त की नमाज अदा किये इस्लाम कुबूल करते ही गृज़ावे में शामिल होकर शहीद हुए।

ह० खालिद रजिं० सैफुल्लाह (अल्लाह की तलवार) जैसे कुशल सेनापति भी उसी लशकर में शामिल हैं जिसमें सुरक्षा वस्त्र पहने बिना ही रणभूमि में कूदने वाले सहाबी ह० जर्रार रजिं० हैं।

ह० मिकदाद रजिं० की सादगी देखिये, ह० उसामा रजिं० का विचार प्रकट करने का साहस देखिए और ह० उस्मान रजिं० का शर्मिला स्वभाव।

ह० फातिमा रजिं० की भाग्यतुष्टि व एकान्त वास पर नज़र डालिये और ह० आयशा रजिं० की शास्त्रीय सभाओं पर गौर कीजिए।

यह सभी सम्मान के योग्य हैं, ईश्वर के सभीपवर्ती बन्दे हैं, रसूले खुदा सल्ल० की आँख के तारे हैं, आप सल्ल० के स्वयं के प्रशिक्षित हैं— फिर भी उनके स्वभाव, आचरण, व्यवहार व पसन्द—नापसन्द एक दूसरे से कितने भिन्न हैं! उन को किस सरदार ने एक अदूत बंधन में बांध दिया था?

आज उसी 'महात्मा' की यदि हम हर समय अपने बीच होने की कल्पना करें तो क्या विभिन्न स्वभाव एवं व्यवहार रखने वाले मुख्लिस लोगों (निष्कामियों) का बिखरा हुआ संघटन पुनः एकत्र नहीं हो सकता है?

दो

रिसालत मआब सल्ल० की बारगाह (दरबार) क्या थी? ज्ञान की गतिविधियों का केन्द्र? व्यावहारिक गतिविधियों का केन्द्र? तपस्पांडों का केन्द्र? प्रशिक्षण का केन्द्र? सैन्य गतिविधियों का केन्द्र? शान्ति—स्थापना का केन्द्र? राज्य की राजधानी? साधुता का केन्द्र? अदालत? खानक़ाह (आश्रम)? मदररसा?

सरवरे कौनैन (जगन्नाथ) सल्ल० को उक्त में से किस पहलू में सीमित करें? इनमें से क्या नहीं था वहां? यह सब कुछ था उनमें— और इनके अतिरिक्त भी बहुत कुछ था।

वहां हुकूमत व सलतनत भी थी। फ़क़ीरी, दुर्वेशी, एकांतवास व एतिकाफ़

* ह० कबीर बिन मालिक ने बाद में तौबा की वह मिसाल कायम की जिसपर सहाबी (रजिं०) गर्व करते थे। वह उन चन्द्र भाग्यशाली लोगों में हैं जिनकी मुक्ति की घोषणा अल्लाह ने पवित्र कुरआन में की है।

(एकांत में ईश्वर की तपस्या) भी था। धर्म—संघर्ष व सरपरोशी के लिए प्रोत्साहन भी था। विपलव से बचने की शिक्षा भी थी। तीर व तलवार जैसे खेल कूद के मैदान भी थे। आध्यात्मिक प्रशिक्षण की सभाएं भी थी। फौजदारी व दीवानी की अदालतें भी थीं। बेतकल्पुफ लोगों की वैभवशाली महफिले भी थीं। चल फिर कर भी धर्म प्रचार होता था, बैठकर भी और इस उद्देश्य के लिये प्रवार—प्रसार के माध्यम भी इस्तेमाल किये जाते थे। ज्ञान का स्मरण भी किया जाता था और लिखित रूप में भी सुरक्षित किया जाता था। मुसलमान की तरबियत भी करना थी अमुस्लिम का आहान करना भी चांचित था। आसू मुस्कान, दूसरों के दुख समेटना.....।

सभी कुछ तो था वहां! एक ही समय में आर्थिक, समाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, वैधानिक, धार्मिक, विन्तन सम्बंधी तथा आहान के सोर्दौं पर काम जारी था।

आज दुनिया में जितनी जमाअतें काम कर रही हैं, वे सब उक्त में से किसी एक या कुछ विषयों पर कार्य कर रही हैं। लेकिन दुर्भाग्य यह है कि इन में से हर एक जमाअत केवल अपने आप को ईशदौत्य मार्ग या सुन्नते रसूल सल्ल० पर कारबन्द समझते हुए अन्य सभी जमाअतों की कार्यपद्धति को ग़लत समझती है।

एक तरफ़ सरवरे कायनात सल्ल० की अद्भुत एवं असीमित योग्यताएं हैं और कार्यक्षेत्र विश्व का एक छोटा सा हिस्सा, दूसरी ओर आप सल्ल० के गुलामों के पैंव की धूल से भी ज्यादा उत्त्थ व कमतर लोगों की जमाअते और कार्य क्षेत्र समूचा संसार! क्या कोई मुकाबला है? क्या विश्व की कोई जमाअत यह दावा कर सकती है कि उसने रसूले अकरम सल्ल० के व्यावहारिक व प्रचार सम्बन्धी जीवन के समस्त विभागों पर काम कर लिया है? कुरआन करीम दुनिया में केवल दो जमाअतों के आस्तित्व की चर्चा करता है: हिज्बुल्लाह (अल्लाह का दल) और हिज्बुशैतान (शैतान का दल)। जहां कहीं भी इस्लामी दल कार्यशील है, वे अल्लाह की पार्टी के अलग-अलग विभाग हैं जो रसूले करीम सल्ल० की सुन्नत के किसी एक विशिष्ट या कुछ पहलुओं पर काम कर रहे हैं। इसी तरह दुनिया में जहां-जहां जिस-जिस अन्दाज की दानवी शक्तियां सरगर्म हैं, वे शैतानी दल के विभिन्न अंग हैं।

खेद का विषय है कि दानव-दल के सभी विभाग और झूठ की तमाम शक्तियां एकता के सूत्र में बंधे हुए हैं; लेकिन रहमान-दल के विभागों में सहयोग और एकता का स्थान परस्पर विरोध और शत्रुता ने ले लिया है। इन विभागों में से हर एक अकेला स्वयं के 'हिज्बुल्लाह' होने का दावा करता है और दूसरे तमान विभागों की उपादेयता

को नकारता है।

विभिन्न विचारधाराओं वाले व्यक्तियों के समान ही अलग-अलग सोच रखने वाले दलों को संगठित कर सकने वाली हस्ती दुनिया में केवल एक है। उस पावन हस्ती को जब तक हम अपने बीच महसूस नहीं करेंगे, बिखराव का यह क्रम जारी रहेगा।

तीन

विश्व में बहुत सी दीनी जमाअतें सुन्नत के किसी न किसी पहलू पर काम कर रही हैं और अलहम्दोलिल्लाह ! उन के प्रयासों के सुखद परिणाम भी मिल रहे हैं, लेकिन एक विभाग अभी तक रिक्त था। हृदीसों ने परिवर्तित होने वाली जिस कौम की तरफ इशारा किया है, और उस का आहान करने की जिस कार्यशैली की ओर मार्गदर्शन किया है, उस पहलू से इस कौम में काम अभी तक आरम्भ नहीं हो सका था।

अल्लाह ने अपने एक बन्दे के दिल में तड़प पैदा की। उसे चिन्तन शक्ति एवं विवेकशीलता प्रदान की और उस में काम करने की ऐसी लगन पैदा की कि उस ने पन्द्रह वर्ष की लगातार मेहनत के बाद इस खाई को पाटने की सामग्री उपलब्ध कराई।

मौ० शम्स नवेद उसमानी रह० के महान उद्देश्य को लेकर कुछ नवयुवक उठ खड़े हुए हैं और आहवान के इस पहलू पर काम शुरू हो चुका है। संगठन का नाम (*Work*) रखा गया है—'World Organisation of Religions & Knowledge'.

इस कार्य का व्यावहारिक पहलू चूंकि ज्ञान अर्जन के बिना आरम्भ नहीं हो सकता, इसलिये कार्यकर्ताओं का एक न्यूनतम स्तर के पाठ्यक्रम में पारंगत होना अति आवश्यक है जिस में कुछ हिस्से कुरआन व हडीस के हैं और कुछ वेद एवं बाइबिल के हैं।

इस पाठ्यक्रम में महारत हासिल करने के बाद ही यह कार्यकर्ता सत्धर्म प्रचार के क्षेत्र में प्रविष्ट होने के योग्य बन सकेंगे। इस उद्देश्य के लिये आवश्यक पाठ्यक्रम की कक्षाओं का लगाना जारी है। शीघ्र ही अन्य शहरों में भी 'इन्शाअल्लाह' इस तरह की कक्षाएं आरम्भ करके वहां कार्यकर्ता तैयार किये जाएंगे। ईश्वर सहायता करे-आमीन!

इस संगठन के कार्यकर्ता एक विशिष्ट दिशा में काम करने के इरादे के बावजूद अन्य सभी दीनी जमाअतों के लिये शुभकामनाएं रखते हैं। उन्हें भी रहमान-दल का

एक अभिन्न अंग समझते हैं और आवश्यकता पड़ने पर उन के साथ सहयोग करने को भी अपने काम का ही एक हिस्सा मानते हैं। उन समस्त उपकारी लोगों से जिन्होंने इस किताब के अध्ययन के बाद इस काम की आवश्यकता को महसूस किया हो, ईश्वर से प्रार्थना के लिये निवेदन है।

विनीतः रस० अब्दुल्लाह तारिक
(इन्जीनियर) बाजार
नसरल्लाह खाँ, रामपुर

-----♦ ♦ ♦ -----



झूबते हुए सूरज ने कहा- “मेरे बाद इस दुनिया में मार्गदर्शन कौन करेगा? कोई है जो अन्धयारों के चिन्हाफ़ संघर्ष का साहस रखता हो?”

और फिर एक टिमटिमाता हुआ दीपक आगे बढ़कर कोला- “मैं अपनी जैसी कोशिश करूँगा !”



संकेत चिह्न

अ०:	अध्याय
अलै०:	अलैहिस्सलाम (उन परशान्ति हो)
ऋ०:	ऋग्वेद
कु०:	कुरआन
ख०:	खण्ड
मौ०:	मौलाना
प्र०:	प्रकाशक/प्रकाशन
पृ०:	पृष्ठ
रजि०:	रजियल—लाइब्रेरी (ईश्वर उन से राजी हो)
रह०:	रहमतुल्लाहि अलैह (उन पर रहमत हो)
ल०:	लेखक
सं०:	सन्दर्भ
सल्ल०:	सल—लल्लाहु अलैहि वसल्लाम (उन पर शान्ति हो)
ह०:	हज़रत



तुलनात्मक अध्ययन

कितने दूर कितने पास!!

वेद और कुरआन की रौशनी में एक शाधपरक पुस्तक जिसमें आदम (अ०) व नूह (अ०) की चर्चा के साथ ही वेदों और बाइबिल के माध्यम से ह० मोहम्मद (सल्ल०) की नराशास्त्र नामक पदवी के अतिरिक्त - **यवित्र आत्मा, जातवेद और महर्षि आग्नि** इत्यादि नामों पर भी बहस की गई है। **मूल्य: 25/-**

वही एक एकता का आधार

मूल सनातन धर्म में शुद्ध एकेश्वरवाद की धारणा को स्थापित किया गया था। इस पुस्तक में मूलधर्म ग्रन्थों के माध्यम से बहुदेववाद का खण्डन करते हुए एकेश्वरवाद के समर्थन में तर्क प्रस्तुत किए गए हैं।

मूल्य : 6/-

नमाज-सनातन धर्म की दृष्टि में

नमाज = नमः + अज

सृष्टि के आरम्भ से ही ईश्वर ने मानव मात्र के लिए निराकार उपासना की पर्द्धति अपने दिव्य-सन्देश के माध्यम से भेजी थी। गीता और वेद में इसी उपासना अर्थात् नमाज का उल्लेख है। नमाज के विभिन्न आसनों का सचित्र विवरण इस पुस्तिका में उपलब्ध है।

मूल्य : 3/-

गवाही

हिन्दी/उर्दू

इस्लाम और कुरआन के निषयों पर एक **अमुस्लिम विद्वान** के माध्यम से उठाई गई आपत्तियों का तर्कपूर्ण ढंग से इस पुस्तक में उत्तर दिया गया है।

मूल्य : 5/-

मिलने का पता:

रौशनी पब्लिशिंग हाउस बाजार नसरुल्लाहखाँ, रामपुर - 244 901

इस्लामिक पुस्तकें आधुनिक स्वरूप युनिकोड ओर ईबुक में पढ़ने के लिये देखें

islaminhindi.blogspot.com

1. मधुर संदेश संगम की वेबसाइट www.quranhindi.com पर उपलब्ध कुरआन ईबुक के रूप में उपलब्ध
2. मौलाना कलीम सददीकी की गैरमुस्लिमोंके लिये “आपकी अमानत आपकी सेवा में
3. डा. जाकिर नायक की ‘गल्तफहमियों का निवारण’ जिसमें हैं गैरमुस्लिमों के प्रश्नों के उत्तर
4. कादयानियों की असलियत उन्हीं की तहरीरों से पेश करने वाली पुस्तक “कादयानियत की हकीकत”
5. अल्लाह के सैंकड़ों चैलेंजों में से छ इस ब्लाग पर भी विस्तार से हिन्दी में उपलब्ध
6. नव—मुस्लिम 80 महिलाओं की दास्तान मधुर संदेश संगम की प्रस्तुति “हमें खुदा कैसे मिला
7. कुरआन और आधुनिक विज्ञान
8. अब भी ना जागे तो

.....
मुहम्मद सल्ल. को दूसरे धर्मों सेभी अंतिम—अवतार अर्थात् आखरी नबी साबित करने वाली पुस्तकें पढ़ने के लिये देखें

antimawtar.blogspot.com

1. “नराशंस और अंतिम ऋषि”— ऐतिहासिक शोध —: लेखक डा. वेद प्रकाश उपाध्याय
2. “कल्कि अवतार और मुहम्मद सल्ल.”—लेखक डा. वेद प्रकाश उपाध्याय
3. “हज़रत मुहम्मद सल्ल. और भारतीय धर्मग्रन्थ” —लेखक डा. एप. ए. श्रीवास्तव
इस विषय से संबन्धित 5 पुस्तकों की एक अंग्रेजी ईबुक भी उपलब्ध